आचार्य श्री १०८ पुष्पदन्त सागर जी महाराज

सिद्धान्त शतक

दिगम्बर जैन मुनि सौरभ सागर

ग्रन्थ — सिद्धान्त शतक

ग्रन्थकार - दि. जैन मुनि सौरभसागर

नौवाँ संस्करण — 1000

मूल्य - एक सौ एक रूपये

प्रकाशक — श्री अशोक जैन
डायमण्ड आर्ट प्रिंटर्स
यमुना विहार, दिल्ली 53
फोन : 22911847, 9810514340

प्राप्ति स्थल — सौरभ सागर साहित्य समर्पण समिति
C/o मुकेश जैन (पूर्व पार्षद)
2, देवनगर, निकट परम हंस कुटिया
पानीपत 132 103 (हरियाणा)
फोन (0180) 2631429, 2638902

नवोदित दि. जैन अतिशय क्षेत्र
पुष्पगिरि, सोनकच्छ, जि. देवास (म.प्र.)

भगवान पार्श्वनाथ पुष्पगिरी

आचार्य श्री १०८ पुष्पदन्त सागर जी महाराज

जैनत्व का बोध

जिनत्व की प्राप्ति
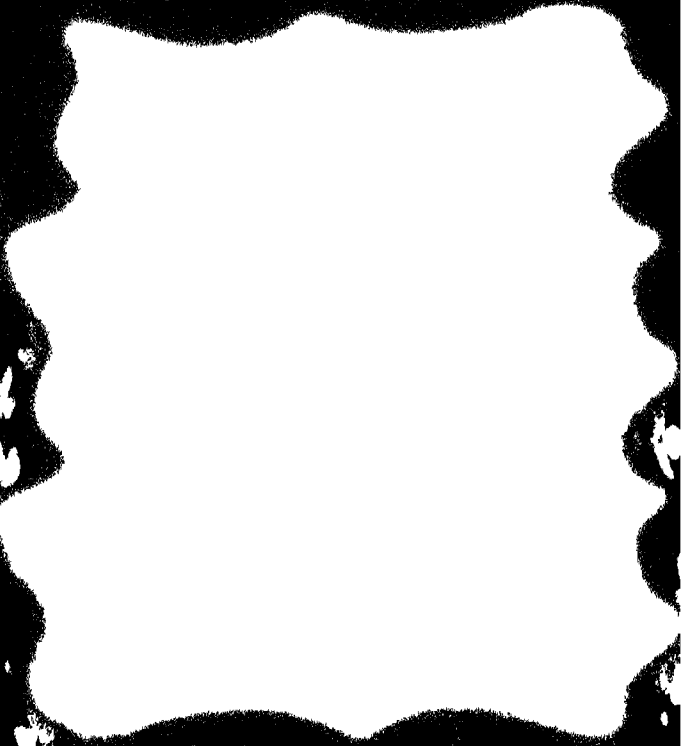
समर्पण

जिन्होंने

अनुभव में उतारकर

मुझे दिया

ऐसे

सिद्धान्ताकाश के ध्रुव तारे

आचार्यश्री 108

पुष्पदंत सागरजी महाराज

के कर कमलों में

सादर समर्पित

-मुनि सौरभ सागर

।। मेरा उद्देश्य ।।

"सिद्धान्त शतक" कोई पुस्तक नहीं एक ग्रन्थ है। इसमे निजवाणी का लेखन नहीं जिनवाणी का लेखन है। इमसें मिलावट नहीं सजावट है। यह ग्रन्थ आचरण के क्षयोपशम का जीवन्त रूप है इसमे व्यवहारिक, आध्यात्मिक जिज्ञासाओं का आगमानुरूप समाधान है। यह ग्रन्थ निश्चित रूप से आपके मन की ग्रन्थियों को खोलने मे कामयाबी हासिल करेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

यह ग्रन्थ व्यक्तियों के मन मे उठे अतीत व वर्तमान के सहज व सरल तात्कालिक जिज्ञासाओं के समाधान रूप मे है। आज का व्यक्ति बडे–बड़े आगम ग्रन्थो को आद्योपान्त पढना नहीं चाहता, पढ भी लेवे तो अर्थ नहीं समझ पाता, उसे तो बिना परिश्रम के पकी पकाई खीर चाहिए जिसमे स्वाद भी हो और शक्ति भी हो। प्रस्तुत ग्रन्थ इसी ध्येय को लेकर लिखा गया है। इस ग्रन्थ मे चारो अनुयोगो का सक्षिप्तिकरण है। इसे आप **"सर्वानुयोग"** भी कह सकते हैं क्योकि इस ग्रन्थ मे पदमपुराण जैन सिद्धान्त प्रवेशिका छहढाला, द्रव्य, सग्रह, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, तत्वार्थ सूत्र सर्वार्थसिद्धि, गोम्मटसार, मूलाचार षट्खण्डागम समयसार आदि कई ग्रन्थो का सार है, प्रस्तुत ग्रन्थ को पढने के उपरान्त स्वत ही अनेक ग्रन्थो का ज्ञान हो जाता है।

इस ग्रन्थ के लेखन का मुख्य उद्देश्य तो मात्र स्वय के परिणामो की निर्मलता व समय का सदुपयोग ही था। लेकिन तीन वर्ष बाद मन ने स्वत ही कहा, सौरभ! तू **"सिद्धान्त शतक"** के श्लोक को प्रश्नोत्तर के रूप मे ढालकर समाज के समक्ष प्रस्तुत कर ताकि भव्य जीवो के ज्ञान की वृद्धि व आचरण का जागरण हो सके तथा वे भी अपने परिणामो को निर्मल कर आत्मा का कल्याण कर सके। इस ग्रन्थ मे मैने उसी का लेखन किया है। जिसकी वर्तमान समाज को आवश्यकता थी, है। आशा है इसे भी मुनि त्यागी, व्रती ब्रह्मचारी, विद्वान, धर्मिक शिक्षक उसी प्रकार से समाज के समक्ष उपयोग (प्रस्तुत) करेगे जिस प्रकार से रत्नकरण्ड श्रावकाचार द्रव्य सग्रह, छहढाला तत्वार्थ सूत्र आदि का उपयोग करते हैं। ताकि आने वाली पीढी को शीघ्र ही जैन दर्शन व आचरण की यथार्थ प्रारम्भिक जानकारी पूर्णरूपेण हो सके।

इस ग्रन्थ मे सर्वप्रथम **"मंगलाचरण"** कर **"सच्चे देव शास्त्र गुरू"** का ज्ञान कराया गया है ताकि यह जीव वास्तविक देव शास्त्र गुरू को समझकर **"द्रव्य श्रावक"** के गुणो को अपने अन्दर उत्पन्न कर सके। तत्पश्चात **"सप्त व्यसन"** की मर्मान्तिक पीडा व **"शहद"** निर्माण की हिसा का बोध करा व्यवहार सम्यक् दर्शन का पात्र बना शिव सौख्य दाता **"धर्म"** व **"रत्नत्रय"** की जानकारी दी गई है। तत्पश्चात भावो से **"कषाय"** की आय कम कराकर महावीर के **"पाँच सिद्धान्त"** के प्रति आस्था प्रकट कराकर जीवन की भव्यता को साक्षात् जागृत करने **"मिथ्यात्व"** व **"मूढ़ता"** का स्पष्ट वर्णन करके उसका त्याग कराया गया है। इस प्रकार **सत्ताईस श्लोकों** के माध्यम से **जैनत्व का बोध** कराया गया है ताकि इस आचरण को स्वीकार करने वाले मनुष्य अपने आपको वास्तविक जैन कह सके।

जब व्यक्ति का नैतिक आचरण सुधर जाता है तब वह धार्मिक हो जाता है और परमात्मा का **"आह्वान"** करके उसे मनोवेदिका मे विराजमान कर **"भाव श्रावक"** बनकर **"षट् कर्त्तव्य"** का पालन कर उनकी दिव्यार्चना करता है ताकि सासारिक **"वासना"** को छोडकर **"चार गति"** के दु खो से मुक्त हो सके। दु खो से मुक्त होना ही जीव का सम्यक् **"पुरूषार्थ"** है सम्यक पुरूषार्थ महावीर के **"अनेकान्त सिद्धान्त"** को स्वीकारने वाला ही कर पाता है, क्योकि वह अनेकान्त सिद्धान्त के माध्यम से वस्तु की, ससार की विविधता को समझ लेता है और स्वय के प्रति **"सावधान"** होकर वैराग्य भाव से परिणत हो जाता है तथा **"बारह भावना"** का चिन्तन कर नर भव की दुर्लभता का बोध प्राप्त कर ससार से मन हटाकर सन्यास के पथ पर अपना कदम बढाता है और **"प्रतिमा"** को स्वीकार कर अपना वर्तमान व भविष्य सफल बनाता है। इस प्रकार द्वितीय भाग मे **सत्ताईस श्लोकों** के माध्यम से पूर्ण धार्मिकता के साथ **"श्रावकत्व की यात्रा"** कराई गई है ताकि इस क्रिया को स्वीकार करने वाले सभी मनुष्य

अपने आपको वास्तविक **श्रावक** कह सके।

जब मनुष्य को ससार से वैराग्य उत्पन्न हो जाता है तब वह अपने अतीत (बचपन) के बारे में सोचता है, **वर्तमान (यौवन)** को देखता है, भविष्य (बुढापे) की कल्पना कर थर–थर कॉपने लगता है। अपने **''त्रिपन''** की **यथार्थता का बोध** कर शीघ्र ही जीवन सुधार के लिए उत्तम **''क्षमादि''** दश धर्म को स्वीकार करता है, और समस्त **''राग-द्वेष''** को छोडकर **''समतादि''** षट्आवश्यक क्रिया को अंगीकार करता है, तथा स्वय के परमात्मा को जागृत **करने के लिए ''पाँच समिति''** का पालन करता है ताकि मन के ससार का सम्यक् प्रकार से इति हो सके। संसार **की इति** के लिए कटिबद्ध हुआ जीव **षट्काल** की जानकरी प्राप्त कर ईश्वरवाद की गलत धारणा को समाप्त कर **''मूल द्रव्यों''** का ज्ञान व चिन्तन से अपने मन को रजायमान करता है और **''षट् द्रव्य''** के स्वरूप को समझकर **स्वद्रव्य** मे प्रवेश करता है इस प्रकार तृतीय भाग मे **सत्ताईस श्लोकों** के माध्यम से **''मुनित्व की चर्या''** का सक्षिप्त **विवेचन है** ताकि इस क्रिया को स्वीकार करने वाले सभी जीव अपने आपको वास्तविक मुनि कह सके।

जब तक जीव मुनि पद को धारण करने के उपरान्त स्वद्रव्य में प्रवेश नहीं करता तब तक पूर्ण कर्मो की निर्जरा भी नहीं करता है। साइकिल की चैन की भाति ससार में भ्रमण कराने वाला यह **'कर्म'** बडा ही बलवान है। ससार से छूटने के लिए **''ज्ञानावरणादि अष्ट कर्म''** एव कर्म बन्ध के कारणो का ज्ञान आवश्यक है। क्योंकि प्राय. व्यक्ति कारण को जानकर ही उसके निवारण का उपाय करता है। लेकिन समस्त जगति का कल्याण चाहने वाले जीव अच्छे कारणों को स्वीकार कर स्वय का एव पर का कल्याण करते हैं। स्व पर कल्याण के पूर्व स्वय श्रद्धा की गहराई मे प्रवेश कर **''दर्शन विशुद्धि आदि सोलह कारण भावनाओं''** का चिन्तन मनन व आचरण का पालन करते हैं और भविष्य मे तीर्थकर बनकर दिव्य ध्वनि के माध्यम से जिस पथ से चलकर तीर्थकर पद को प्राप्त किया है उसी पथ का भव्य जीवो को दिग्दर्शन कराते है तथा देवाधिदेव बनने की प्रक्रिया बताते हैं। इस प्रकार चतुर्थ भाग में **सत्ताईस श्लोकों** के माध्यम से कर्म की जानकारी व **'जिनत्व की प्राप्ति'** का उत्तम उपाय बताया गया है।

इस ग्रन्थ मे मैनें सभी ग्रन्थो के आधार पर साधना की समाज के मध्य की अभाव रूप अनुभूति को प्रश्नोत्तर के माध्यम से दर्शाया है। आगम के रहस्यो को सरलता से प्रचलित भाषा में प्रस्तुत करने मैने 'प्रतापगढ' (चित्तौडगढ राजस्थान) के 'जूना जिनमन्दिर' मे १३० श्लोको का लेखन किया। इस ग्रन्थ मे मात्र १०८ श्लोको के १६५७ प्रश्न प्रस्तुत किये हैं। इस ग्रन्थ के लेखन मे **भगवान आदिनाथ की दिव्यता, माँ जिनवाणी की सौम्यता पूज्य गुरूदेव की मृदृता** का सबसे बड़ा सहारा रहा है। इन आराध्य त्रय की कृपा से ही श्लोक एव प्रश्नोत्तर का यथासभव लेखन हो सका। इस ग्रन्थ का वृहद् विवेचन प्रत्येक चातुर्मास मे करता हूँ। श्रावकगण सुनकर आचरण मे उतारते ही हैं साथ ही प्रत्येक घर में ग्रन्थ उपलब्ध हो ऐसी भावना भी भाते है। फलस्वरूप यह ग्रन्थ आठ बार प्रकाशित हो चुका है, नोवॉ सस्करण आपके हाथो मे है। इस सस्करण मे सर्वोपयोगी श्लोक सग्रह से कुछ उपयोगी श्लोक तथा दोहा एव प्रेरक वाक्य भी सग्रहित किये हैं ताकि ये दोहा श्लोक प्रेरक वाक्य जीवनोपयोगी होकर सम्यक् मार्ग प्रशस्त करे। जिन महानुभाव ने ग्रन्थ प्रकाशन हेतु चचल लक्ष्मी का सदुपयोग किया है, उनके घर स्थिर सरस्वती का वास हो केवल ज्ञान के पात्र बने यही मगल आशीर्वाद है। इस ग्रन्थ को साकार रूप प्रदान करना निश्चित ही भव्य जीवों के ज्ञान व आचरण वृद्धि में कारण बनेगा।

प्रस्तुत ग्रन्थ मे कोई त्रुटि हो तो, आचार्य, आगमज्ञ, उपाध्याय, साधु, आर्यिका, ऐलक, क्षुल्लक, ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणी एवं विद्वत् वर्ग मुझे सूचित करें ताकि भविष्य में सुधार कर आगम के अवर्णवाद से बच सकू।

- मुनि सौरभ सागर

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ

भाग - 3 मुनित्व की चर्या

भाग - 4 जिनत्व की प्राप्ति

सरस्वती वन्दना

माँ शारदे ! आ तारदे ! मुझमें विमल तू ज्ञान दे
हो शुद्ध जीवन ! बुद्धि पावन ! तू मुझे वरदान दे

स्वप्न सु साकार होवें ज्ञान के वरदान से
अज्ञान का तम दूर होवे तेरे आशीष दान से
श्वास में माला सदा तव नाम की जपता रहूँ
मनु की सन्तान हूँ सेवा सदा करता रहूँ
स्वार्थ मय परार्थ जीवन बीते ऐसा तान दे
हो शुद्ध जीवन ! बुद्धि पावन ! तू मुझे वरदान दे

उत्साह की ऊँचाई की कृपा से तेरी पा सकूँ
लक्ष्य जीवन का यहाँ कृपा से तेरी पा सकूँ
शुद्ध निश्चल सरल पावन दृढव्रती मैं हो सकूँ
भक्ति ही मैं पुण्य सलिला का जल बन बह सकूँ
दे न दे तू कुछ मुझे पर अपनापन का मान दे
हो शुद्ध जीवन ! बुद्धि पावन ! तू मुझे वरदान दे

नाम तेरा हंस वाहिनी ब्रह्मचारिणी
वागीश्वरी सरस्वती भारती तम हारिणी
कुमारी माँ जिनवाणी जिन उपदेश का सम्मान है
रात–दिन तुमको मेरा कोटिशः प्रणाम है
माँ बोधि दे ! समाधि दे ! वर दे केवल ज्ञान दे
हो शुद्धजीवन ! बुद्धिपावन ! तू मुझे वरदान दे।

सरस्वती नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणी
विद्यारंभ करिष्यामि सिद्धि भवतु में सदा
अज्ञान तिमिरान्धानां ज्ञानंज्जनशलाकया
चक्षुरुन्मिलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः

प्रश्न 21 . मंगलाचरण में किसी व्यक्ति को नमस्कार क्यों नहीं किया गया ?

उत्तर . जैन दर्शन व्यक्ति का पुजारी नहीं, आचरण का पुजारी है। इसलिये मंगलाचरण में किसी व्यक्ति को नमस्कार नहीं किया गया है।

प्रश्न 22 . मंगलाचरण में कितने सिद्ध परमेष्ठियों को नमस्कार किया गया है ?

उत्तर . मंगलाचरण में "**अनन्तानन्त**" सिद्ध परमेष्ठियों को नमस्कार किया गया है।

प्रश्न 23 . मंगलाचरण में किलने मुनिराजों को नमन किया गया है ?

उत्तर . मंगलाचरण में "**तीन कम नौ करोड़**" मुनिराजो को नमन किया गया है।

प्रश्न 24 . तीन कम नौ करोड़ मुनिराज कहाँ विराजमान हैं ?

उत्तर . तीन कम नौ करोड मुनिराज पूरे अढाई द्वीप में विराजमान हैं।

प्रश्न 25 . अढ़ाई द्वीप किसे कहते है ?

उत्तर . जम्बू द्वीप, छातकी खण्ड द्वीप, पुष्कराद्धं द्वीप को "**अढ़ाई द्वीप**" कहते हैं।

प्रश्न 26 . इस ग्रन्थ में क्या प्रतिज्ञा की गयी है ?

उत्तर . इस ग्रन्थ में अपने अज्ञान को समाप्त करने के लिए "**सिद्धान्त शतक**" ग्रन्थ अध्ययन करने की प्रतिज्ञा की गयी है।

प्रश्न 27 . इस ग्रन्थ का नाम "सिद्धान्त शतक" क्यों रखा ?

उत्तर . क्योकि इस ग्रन्थ में सिद्ध पद प्राप्ति के उपाय का विवरण अन्त तक कहा गया है तथा ग्रन्थ मे सौ से ज्यादा काव्य है। इसलिये इस ग्रन्थ का नाम "**सिद्धान्त शतक**" रखा है।

पढ्में मंगल करणे सिस्सा सत्थस्सपारगा होंति
मज्झिमें णीविग्घं विज्जा विज्जाफलं चरिमे

अर्थ– शास्त्र कें आदि में मंगल करने पर शिष्यजन शास्त्र के पारगामी होते हैं, मध्य में मंगल करने पर विद्या की प्राप्ति निर्विघ्न होती है और अंत में मंगल करने पर विद्या का फल प्राप्त होता है।

देव

2

केवल ज्ञानी वीतरागी, और हितउपदेश के दाता हैं।
दोष अठारह रहित जिनेश्वर, मोक्षमार्ग निर्माता हैं।
जग में उत्तम शरण यही है, भव दुःख नाशक मंगलकारी।
सुखदायक है पाप विनाशक, शरणागत के संकटहारी।।2।।

अर्थ

जो केवलज्ञानी (सर्वज्ञ) वीतरागी और हितोपदेशी है, अठारह दोषो से रहित हैं, वे ही मोक्ष मार्ग के निर्माता हैं। अर्थात् सच्चे देव हैं। ऐसे सच्चे देव ही ससार मे शरण है, उत्तम हैं, भव दु ख का नाश करने वाले हैं, मगलकारी है, सुख के दाता है, पाप के नाशक हैं और शरण मे आने वाले जीवो के सकट का हरण करने वाले हैं।

प्रश्न 1 . सच्चे देव किसे कहते हैं ?

उत्तर जो वीतरागी, सर्वज्ञ और हितोपदेशी होते है तथा अठारह दोषो से रहित होते है। उन्हे **"सच्चे देव"** कहते हैं।

प्रश्न 2 . वीतरागी किसे कहते हैं ?

उत्तर जिनके समस्त राग–द्वेष समाप्त हो चुके हो। उन्हे "वीतरागी" कहते हैं।

प्रश्न 3 . सर्वज्ञ किसे कहते हैं ?

उत्तर भूत, भविष्यत वर्तमान काल सम्बन्धी सभी पदार्थो को जो एक साथ एक समय में देखते व जानते है उन्हें "सर्वज्ञ" कहते हैं।

प्रश्न 4 . हितोपदेशी किसे कहते हैं ?

उत्तर जो सब जीवो को मोक्ष मार्ग रूप कल्याण का उपदेश देते हैं। उन्हे **"हितोपदेशी"** कहते है।

प्रश्न 5 . दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर जो आशा एव वासना से प्रकट होता है उसे "दोष" कहते हैं।

प्रश्न 6 . अठारह दोष कौन-कौन से हैं ?

उत्तर . 1. जन्म 2. मरण 3. बुढ़ापा 4. आश्चर्य 5. भूख
6. प्यास 7. अरति 8. खेद 9. रोग 10. मद
11. मोह 12. भय 12. निद्रा 14. चिन्ता 15. पसीना आना
16. राग 17. द्वेष 18. शोक ये अठारह दोष हैं।

प्रश्न 7 . मोक्ष मार्ग के निर्माता कौन हैं ?

उत्तर . मोक्ष मार्ग के निर्माता सच्चे देव अर्थात् "**अरहंत परमेष्ठी**" हैं।

प्रश्न 8 . सच्चे देव क्या करते हैं ?

उत्तर . सच्चे देव पाप का नाश करते हैं। सुख प्रदान करते है और शरण में आये जीवों के संकट का हरण करते है।

प्रश्न 9 . सुख किसे कहते हैं ?

उत्तर . समस्त अनुकूलता की प्राप्ति को 'सुख' कहते है।

प्रश्न 10 पाप किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस क्रिया से स्वयं का एवं सद्आचरण का घात हो उसे "पाप" कहते हैं।

प्रश्न 11 . भव दुःख किसे कहते हैं ?

उत्तर . ससार के दुःखो को "**भव दुःख**" कहते हैं।

प्रश्न 12 . उत्तम किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो वीतरागता सहित उच्च पद पर स्थित हों उन्हें "**उत्तम**" कहते हैं।

प्रश्न 13 . शरण किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो मरण से बचायें उन्हें "**शरण**" कहते हैं।

प्रश्न 14 . मंगल किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो पूर्व संचित पाप को समाप्त करने में कारण हों उन्हें "**मंगल**" कहते हैं।

शास्त्र

3

अरहंत देव की दिव्यध्वनि से, जो भी निकली है वाणी।
स्याद्वाद अनेकान्त मयी, वह कहलाती है जिनवाणी।।
नय निपेक्ष तत्व पदार्थ का, इसमें पूर्ण विवेचन है।
भव तरने की बात इसी में, संशय इसमें लेश न है।।3।।

अर्थ

अरहंत देव की दिव्य ध्वनि से स्याद्वाद अनेकान्तमयी जो वाणी निकलती है, वह जिनवाणी कहलाती है। इस जिनवाणी में नय–निक्षेप तत्व पदार्थ का पूर्ण रूप से विवेचन है। इस जिनवाणी का अध्ययन करके आचरण मे उतारने वाला जीव भव सागर से पार हो जाता है। इस बात में किंचित् भी संशय नहीं है।

प्रश्न 1 . दिव्य ध्वनि किसे कहते हैं ?

उत्तर . अरहंत देव के सवार्ग से निकलने वाली "**ॐकार**" ध्वनि को "**दिव्य ध्वनि**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . दिव्य ध्वनि कब एवं किस समय खिरती हैं ?

उत्तर . दिव्य ध्वनि चौबीस घंटे में चार बार सुबह, दोपहर, शाम एवं रात्रि के मध्य भाग में छः घड़ी पर्यन्त खिरती है।

प्रश्न 3 . एक घड़ी कितने मिनट की होती हैं ?

उत्तर . एक घड़ी "**24 मिनट**" की होती है।

प्रश्न 4 . दिव्य ध्वनि का स्वर कितनी दूर तक सुनाई पड़ता है ?

उत्तर . दिव्य ध्वनि का स्वर एक योजन (चार कोस) तक सुनाई पड़ता है।

प्रश्न 5 . क्या दिव्य ध्वनि अन्य समय में भी खिरती है ?

उत्तर . हाँ,! चक्रवर्ती आदि विशेष पुण्यशाली व्यक्ति के आगमन पर एवं गणधर स्वामी के द्वारा जिज्ञासा व्यक्त किये जाने पर अन्य समय में भी दिव्य ध्वनि खिरती है।

प्रश्न 6 . गणधर किसे कहते हैं ?

उत्तर . भगवान की दिव्य ध्वनि को झेलने वाले विशिष्ट ज्ञानी मुनिराज को "**गणधर**" कहते हैं।

प्रश्न 7 . दिव्य ध्वनि कितनी भाषाओं में खिरती है ?

उत्तर . दिव्य ध्वनि 700 लघु भाषा एवं 18 महाभाषा में खिरती है।

प्रश्न 8 . जिनवाणी किसे कहते हैं ?

उत्तर . सर्वज्ञ देव की दिव्य ध्वनि से निःसृत समस्त दिव्य वाणी को "**जिनवाणी**" कहते हैं।

प्रश्न 9 . स्याद्‌वाद किसे कहते हैं ?

उत्तर . वस्तु के कथन करने की शैली को स्याद्‌वाद कहते हैं। स्याद् अर्थात् कथंचित विवक्षित प्रकार से (अपनी विवक्षा को लिए हुए) अनेकान्त रूप से कथन करना "**स्याद्‌वाद**" है।

प्रश्न 10 . अनेकान्त किसे कहते हैं ?

उत्तर . एक ही वस्तु में वस्तुत्व (गुण एवं धर्म) को निष्पन्न करने वाली अस्तित्व नास्तित्व सरीखी दो परस्पर विरूद्ध सापेक्ष शक्तियो को जो प्रतिपादन किया जाता है उसे "**अनेकान्त**" कहते हैं।

प्रश्न 11 . नय किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो पदार्थ को एक देश ग्रहण करता है उसे "**नय**" कहते हैं।

प्रश्न 12 . निक्षेप किसे कहते हैं ?

उत्तर . अनिर्णित वस्तु के निर्णय के लिये जो सहारा लिया जाता है उसे "**निक्षेप**" कहते हैं।

प्रश्न 13 . निक्षेप के कितने भेद हैं ?

उत्तर . निक्षेप के चार भेद हैं –

1. नाम निक्षेप 2. स्थापना निक्षेप 3. द्रव्य निक्षेप
4. भाव निक्षेप

प्रश्न 14 . नाम निक्षेप किसे कहते हैं ?

उत्तर . गुण, जाति, द्रव्य, क्रिया की अपेक्षा के बिना इच्छानुसार किसी

का नाम रखने को "**नाम निक्षेप**" कहते हैं।

जैस – किसी का नाम सुरेन्द्र रखा यद्यपि उसमें इन्द्र के समान गुण नहीं हैं। फिर भी लोक–व्यवहार चलने के लिये उसका नाम सुरेन्द्र रख दिया।

प्रश्न 15 . स्थापना निक्षेप किसे कहते हैं ?

उत्तर . पाषाण, लकड़ी, कागज, धातु आदि मे प्रतिमा या चित्र बनाकर "**यह वह है**" इस प्रकार की कल्पना करना "स्थापना **निक्षेप**" है।

जैसे – बाहुबली की प्रतिमा में बाहुबली भगवान की कल्पना।

प्रश्न 16 . स्थापना निक्षेप के कितने भेद हैं ?

उत्तर . स्थापना निक्षेप के दो भेद हैं –

1. तदाकार स्थापना 2. अतदाकार स्थापना

प्रश्न 17 . तदाकार स्थापना किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस पदार्थ का जैसा आकार है उसे उस आकार मे स्वीकार करना "**तदाकार स्थापना**" है।

प्रश्न 18 . अतदाकार स्थापना किसे कहते हैं ?

उत्तर . भिन्न आकार वाले पदार्थ में किसी भिन्न आकार को स्वीकार करना "**अतदाकार स्थापना**" है।

जैसे – काले–पीले पत्थर को क्षेत्रपाल आदि कहना या शतरंज की गोटी में बादशाह, वजीर आदि की कल्पना करना।

प्रश्न 19 . द्रव्य निक्षेप किसे कहते हैं ?

उत्तर . भूत, भविष्यत् की मुख्यता सहित वस्तु को "**द्रव्य निक्षेप**" कहते हैं।

जैसे – सेवा मुक्त शिक्षक को शिक्षक कहना या राजा के लड़के को राजा कहना।

प्रश्न 20 . भाव निक्षेप किसे कहते हैं ?

उत्तर . वर्तमान पर्याय से युक्त वस्तु को "**भाव निक्षेप**" कहते हैं।

जैसे – जल को जल कहना, जम जाने पर बर्फ कहना, वाष्प बन जाये तो भाप कहना।

प्रश्न 21 . तत्व किसे कहते हैं ?
उत्तर . वस्तु के यथार्थ स्वरूप को "**तत्व**" कहते हैं।

प्रश्न 22 . तत्व के कितने भेद होते हैं ?
उत्तर . तत्व सात होते हैं –
1. जीव 2. अजीव 3. आश्रव 4. बन्ध
5. संवर 6. निर्जरा 7. मोक्ष।

प्रश्न 23 . जीव किसे कहते हैं ?
उत्तर . जिसमें चेतना का गुण पाया जाता है उसे "**जीव**" कहते हैं।

प्रश्न 24 . अजीव किसे कहते हैं ?
उत्तर . जिसमें चेतना गुण नहीं पाया जाता है उसे "**अजीव**" कहते है।

प्रश्न 25 . आश्रव किसे कहते हैं ?
उत्तर . कर्मों के आने को "**आश्रव**" कहते हैं।

प्रश्न 26 . बंध किसे कहते हैं ?
उत्तर . आत्मा से कर्मों के सम्बन्ध होने को "**बंध**" कहते है।

प्रश्न 27 . संवर किसे कहते हैं ?
उत्तर . आते हुए कर्मों को रोक देने का नाम "**संवर**" है।

प्रश्न 28 . निर्जरा किसे कहते हैं ?
उत्तर . आत्मा से कर्मों का एक देश का क्षय होना "**निर्जरा**" है।

प्रश्न 29 . मोक्ष किसे कहते हैं ?
उत्तर . आत्मा से कर्मों का अत्यन्त क्षय होना "**मोक्ष**" है।

प्रश्न 30 . सात तत्व के बारे में उदाहरण सहित समझाइये ?
उत्तर . एक कमरा है यह "अजीव" तत्व है। कमरे के अन्दर बैठा आदमी "जीव तत्व" है। कमरे के अन्दर आदमी प्रवेश कर रहे हैं यह "आश्रव तत्व" है। कमरे में सभी का बैठना "बंध तत्व" हुआ। कमरे में आते हुए आदमियों को रोक देना "संवर तत्व" हुआ। एक–एक करके कुछ आदमियों को बाहर निकाल देना "निर्जरा तत्व" हुआ। सम्पूर्ण कमरे का खाली हो जाना "मोक्ष तत्व" हुआ।

प्रश्न 31 . पदार्थ किसे कहते हैं ?

उत्तर . सात तत्व में पुण्य–पाप जोड़ देने पर नव पदार्थ बन जाते हैं। इसे ही "पदार्थ" कहते हैं।

प्रश्न 32 . जिनवाणी में किसका वर्णन है ?

उत्तर . जिनवाणी में स्याद्वाद, अनेकान्त, तत्व, पदार्थ, नय निक्षेप, तीन लोक आदि अनेक वस्तुओं का वर्णन है।

प्रश्न 33 . जिनवाणी में किन बातों का विशेष वर्णन है ?

उत्तर . संसार–सागर से पार कैसे होवें, इस बात का जिनवाणी में विशेष वर्णन है।

प्रश्न 34 . क्या जिनवाणी की सभी बातें सच्ची व हितकारी होती हैं ?

उत्तर . हॉं, जिनवाणी की सभी बातें सच्ची व हितकारी होती हैं। **जैसे** :- मिश्री सभी ओर से मीठी व गुणकारी होती है।

विमल गुण निधानं विश्व विज्ञान बीजं।
जिन मुनि गण सेव्यं सर्वतत्व प्रदीपम्।।
दुरित घन समीरं पुण्य तीर्थं जिनोक्तं।
मनइभ मदसिंह ज्ञानामाराधय त्वम्।।

अर्थ – जो निर्मल गुणों का खजाना है समस्त विज्ञान का बीज है जिन मुनियों द्वारा सेवनीय है समस्त तत्वों को प्रकाशित करने के लिए उत्तम दीपक है पाप रूपी मेघों को उड़ाने के लिए प्रचण्ड वायु है पुण्य प्राप्ति के लिए तीर्थ है तथा मन रूपी हाथी को वश में करने के लिए सिंह है ऐसे जिनेन्द्र कथित आगम (ज्ञान) की तुम आराधना करो।

गुरु

4

पिच्छी लेकर नग्न रहें, और केशलोंच जो करते हैं।
तन श्रृंगार रहित वे होकर, बाईस परिषह सहते हैं।।
स्व आतम कल्याण करें, व पर को मार्ग बताते हैं।
सुलझाते जो मन की ग्रन्थियाँ, सद्गुरु वे कहलाते हैं ।।4।।

अर्थ

जो नग्न रहते हैं, पिच्छी धारण करते है, केशलोंच करते हैं। तन श्रृंगार से रहित होते है, बाईस परिषह सहन करते हैं अपनी आत्मा का कल्याण करते हुए अन्य जीवों को कल्याण का मार्ग बतलाते हैं तथा भव्य जीवों के मन की ग्रन्थियो को सुलझाते है, वे सद्गुरु कहलाते हैं।

प्रश्न 1 . सद्गुरु किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो नग्न हों, पिच्छी कमण्डल के धारी हों, शरीर श्रृंगार से रहित हों, केशलोंच करते हों एवं विषय आशाओं से रहित हों। उन्हें "**सद्गुरु**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . मुनिराज नग्न क्यों रहते हैं ?

उत्तर . मुनिराज के मन में किसी भी प्रकार की काम वासना नहीं होती। इसलिए उन्हें वस्त्र की आवश्यकता नहीं पडती तथा वस्त्र परिग्रह होने से मोक्ष प्राप्ति मे बाधक है। इसलिए वे बाधक तत्व का त्याग कर "**नग्न**" रहते हैं।

प्रश्न 3 . नग्नता किस बात की प्रतीक हैं ?

उत्तर . नग्नता निर्विकारता, सरलता, वीतरागता, निस्पृहता की प्रतीक है।

प्रश्न 4 . पिच्छी किसे कहते हैं ?

उत्तर . मयूर के पंख से झाड़ू के समान बनाई गई एक उपकरण (वस्तु) विशेष को "**पिच्छी**" कहते हैं।

प्रश्न 5 . मुनिराज पिच्छी क्यों ग्रहण करते है ?

उत्तर . मुनिराज जीवों की रक्षा करने के लिए पिच्छी ग्रहण करते हैं।

प्रश्न 6 . क्या मयूर के पंख लाने से मयूर की हिंसा नहीं होती ?

उत्तर . नहीं, मयूर के पंख को उखाड़कर नही लाया जाता बल्कि मयूर कार्तिक मास में अपने पंखों को छोड़ देते हैं। उसी पंख का प्रयोग मुनिराज जीव रक्षा हेतु करते है ?

प्रश्न 7 . पिच्छी में कितने गुण होते हैं ?

उत्तर . पिच्छी में **पाँच** गुण होते है –

1. धूल को ग्रहण नहीं करना
2. सकुमारता
3. हल्कापन
4. पसीने से मलिन नहीं होना
5. मृदुता

प्रश्न 8 . केशलोंच किसे कहते हैं ?

उत्तर . अपने हाथों से या साधर्मी भाई के द्वारा स्वयं के सिर दाढ़ी एव मूछों के बालो को उखाडना "केशलोंच" कहलाता हैं ?

प्रश्न 9 . मुनिराज केशलोंच क्यों करते हैं ?

उत्तर . शरीर से ममत्व भाव हटाने के लिये, सौन्दर्य को समाप्त करने के लिए एवं आत्म शक्ति को बढाने के लिये मुनिराज केशलोंच करते हैं।

प्रश्न 10 . मुनिराज केशलोंच के पश्चात् उपवास क्यों करते हैं ?

उत्तर . बालों को उखाडने से जो आरम्भ की क्रिया होती है। सूक्ष्म जीवों का घात होता है। उसका प्रायश्चित करने के लिए मुनिराज उपवास करते है।

प्रश्न 11 . मुनिराज केशलोंच कब-कब करते हैं ?

उत्तर . मुनिराज केशलोंच दो माह, तीन माह या चार माह मे एक बार करते है।

प्रश्न 12 . मुनिराज शरीर श्रृंगार से रहित क्यों होते हैं ?

उत्तर . शरीर श्रृंगार करने से शरीर के प्रति ममत्व का भाव, सौन्दर्य दिखाने का भाव एवं दूसरों को आकर्षित करने का भाव उत्पन्न होता है जिससे अनेक दोषों का जन्म होता है। इसलिये मुनिराज शरीर श्रृंगार से रहित होते हैं।

प्रश्न 13 . परिषह जय किसे कहते हैं ?

उत्तर . परिषह का अर्थ दुःख होता है अर्थात दुःखो को समता भाव से

सहन करना "परिषह जय" कहलाता है। **अर्थात् "जो सह** जाये" उसे परिषह करते हैं।

प्रश्न 14 . मुनिराज कितने परिषह सहन करते हैं ?

उत्तर . मुनिराज "बाईस परिषह" सहन करते हैं।

प्रश्न 15 . बाईस परिषह कौन-कौन से हैं ?

उत्तर . 1. क्षुधा 2. तृषा 3. शीत 4. ऊष्मा 5. दंशमशक 6. नग्नता 7. अरति 8. स्त्री 9. चर्या 10. निषद्या 11. शय्या 12. आक्रोश 13. वध 14. याचना 15. अलाभ 16. रोग 17. तृणस्पश 18. मल 19. सत्कार पुरूस्कार 20. प्रज्ञा 21. अज्ञान 22. अदर्शन। ये 22 परिषह हैं।

प्रश्न 16 . क्षुधा परिषह जय किसे कहते हैं ?

उत्तर . भूख के दुःख को शान्त भाव से सहन करना "क्षुधा परिषह" जय है।

प्रश्न 17 . तृषा परिषह किसे कहते हैं ?

उत्तर . प्यास की बाधा को शान्त भाव से सहन करना "तृषा परिषह" जय है।

प्रश्न 18 . शीत परिषह जय किसे कहते हैं ?

उत्तर . सर्दी की वेदना को शान्त भाव से सहन करना "शीत परिषह" जय है।

प्रश्न 19 . ऊष्ण परिषह किसे कहते हैं ?

उत्तर . गर्मी की वेदना को शान्त भाव से सहन करना "ऊष्ण परिषह" जय है।

प्रश्न 20 . दंशमशक परिषह किसे कहते हैं ?

उत्तर . डंस, मच्छर, बिच्छू, चींटी आदि के काटने से उत्पन्न हुई वेदना को शान्त भाव से सहन करना "दंशमशक परिषह" जय है।

प्रश्न 21 . नग्नता परिषह किसे कहते हैं ?

उत्तर . नग्न रहते हुए लज्जा एवं विकार उत्पन्न न होना "नग्न परिषह" जय है।

प्रश्न 22 . अरति परिषह किसे कहते हैं ?

उत्तर . राग के कारण उपस्थित होने पर भी संयम से अप्रीति का न होना "**अरति परिषह**" जय है।

प्रश्न 23 . स्त्री परिषह जय किसे कहते हैं ?

उत्तर . स्त्री के हाव–भाव प्रदर्शन आदि उपद्रवों को शान्त भाव से सहन करना "**स्त्री परिषह**" जय है।

प्रश्न 24 . चर्या परिषह जय किसे कहते हैं ?

उत्तर . कंकरीली सड़क पर गमन करते समय काँटा, कंकड़ आदि के चुभ जाने पर खेद खिन्न नहीं होना "चर्या परिषह" जय है।

प्रश्न 25 . निषद्या परिषह जय किसे कहते हैं ?

उत्तर . ध्यान के लिए नियमित काल पर्यन्त स्वीकार किये गये आसन से उपसर्ग आने पर भी च्युत न होना "**निषद्या परिषह**" जय है।

प्रश्न 26 . शय्या परिषह जय किसे कहते हैं ?

उत्तर . विषम कठोर आदि स्थानों में एक करवट से निद्रा लेना और अनेक उपसर्ग आने पर भी शरीर को चलायमान नहीं करना "**शय्या परिषह**" जय है।

प्रश्न 27 . आक्रोश जय परिषह किसे कहते हैं ?

उत्तर . दुष्ट जनों द्वारा कठोर वचन गाली–गलौच को शान्त भाव से सहन करना "**आक्रोश परिषह**" जय है।

प्रश्न 28 . वध परिषह जय किसे कहते हैं ?

उत्तर . दुष्ट जनों के द्वारा शरीर छिन्न–भिन्न किये जाने पर भी क्रोध क्लेश प्रतिकार की भावना पैदा न होना "**वध परिषह**" जय है।

प्रश्न 29 . याचना परिषह जय किसे कहते हैं ?

उत्तर . प्राणों का वियोग होने पर भी तन के सुख के हेतु आहार–दवा आदि की याचना न करना "**याचना परिषह**" जय है।

प्रश्न 30 . अलाभ परिषह जय किसे कहते हैं ?

उत्तर . भोजन ने मिलने पर या अन्तराय आ जाने पर सन्तोष को धारण करना "**अलाभ परिषह**" जय है।

प्रश्न 31 . रोग परिषह जय किसे कहते हैं ?

उत्तर . अनेक प्रकार के रोग होने पर भी उसकी वेदना को शान्त भाव से सहन करना "**रोग परिषह**" जय है।

प्रश्न 32 . तृण स्पर्श परिषह जय किसे कहते है ?

उत्तर . चलते समय पाँवों में तृण वगैरह के चुभ जाने से उसकी वेदना को शान्त भाव से सहन करना "**तृणपरिषह**" जय है।

प्रश्न 33 . मल परिषह जय किसे कहते हैं ?

उत्तर . शरीर में पसीना धूल आदि लग जाने पर अपने मलीन शरीर को देखकर ग्लानि नहीं करना "**मल परिषह**" जय है।

प्रश्न 34 . सत्कार पुरस्कार परिषह जय किसे कहते है ?

उत्तर . अपने मन में गुणों की अधिकता होने पर भी दूसरों के द्वारा होने वाले अनादर को शान्त भाव से सहन करना "**सत्कार-पुरस्कार परिषह**" जय है।

प्रश्न 35 . प्रज्ञा परिषह जय किसे कहते है ?

उत्तर . ज्ञान की अधिकता होने पर भी ज्ञान का मान (अभिमान) नहीं करना "**प्रज्ञा परिषह**" जय है।

प्रश्न 36 . अज्ञान परिषह जय किसे कहते है ?

उत्तर . अज्ञान से हीन होने पर भी दूसरों के द्वारा प्राप्त तिरस्कार को शान्त भाव से सहन करना "अज्ञान परिषह" जय है।

प्रश्न 37 . अदर्शन परिषह जय किसे कहते है ?

उत्तर . बहुत समय तक कठोर तपश्चर्या करने पर मुझे विशेष ज्ञान या ऋद्धियों की प्राप्ति नहीं हुई इस प्रकार का मन में विचार न करना, धर्म के प्रति अश्रद्धान का भाव न होना "**अदर्शन परिषह**" जय है।

प्रश्न 38 . सच्चे गुरू क्या करते है ?

उत्तर . सच्चे गुरू हमारे मन की ग्रन्थियों को सुलझाते है तथा बुरे विचारों को एवं दुराचरण को समाप्त करते हैं और अपनी आत्मा का कल्याण करते हुए भव्य जीवों का भी कल्याण करते हैं।

श्रावक

5

देव गुरू के शब्द श्रवण कर, उस पर जो श्रद्धान करें।
उनके द्वारा कथित मार्ग पर, चलकर जो कल्याण करें।।
उनको श्रावक सदा कहो, जो श्रद्धा व विवेक धरे।
क्रियावान होकर भक्ति में, रात-दिवस को एक करें।।5।।

अर्थ

जो देव गुरू के वचन श्रवण कर उस पर श्रद्धान करता है, उनके द्वारा कथित मार्ग पर चलकर अपनी आत्मा का कल्याण कराता है। या जो श्रद्धावान हो, विवेक को धारण करने वाला हो तथा क्रियावान होकर रात–दिन भक्ति में तल्लीन रहता है, उसे श्रावक कहते हैं।

प्रश्न 1 . श्रावक किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो देव, शास्त्र, गुरू के वचनों को सुनकर श्रद्धा को उपलब्ध हो जाये उसे "**श्रावक**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . श्रावक कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर . श्रावक **दो** प्रकार के होते हैं –

1. द्रव्य श्रावक 2. भाव श्रावक

प्रश्न 3 . द्रव्य श्रावक के कितने लक्षण हैं ?

उत्तर . द्रव्य श्रावक के **चार** लक्षण होते हैं –

1. देव दर्शन
2. जल छानकर पीना
3. रात्रि भोजन का त्याग
4. तीन मकार का त्याग

प्रश्न 4 . देव दर्शन किसे कहते हैं ?

उत्तर . अपनी आत्मा की प्रतिभा को जागृत करने के लिए जिन प्रतिमा के दर्शन करना "**देव दर्शन**" है।

प्रश्न 5 . देव दर्शन करने का क्या फल है ?

उत्तर . देव दर्शन करने का अचिन्त्य फल है – देव दर्शन के विचार करने मात्र से 2 उपवास का, तैयारी करने से 3 उपवास का, आरम्भ करने से 4 उपवास का, घर से दर्शन हेतु निकलने से 5 उपवास का, कुछ दूर तक पहुँचने से 15 उपवास का, मन्दिर व घर के बीच पहुँचने से 30 उपवास का, मन्दिर के दर्शन से

छः मास के उपवास का, मन्दिर के द्वार प्रवेश करने पर एक वर्ष के उपवास का, वेदी की तीन प्रदक्षिणा देने से 1000 उपवास का एवं जिन प्रतिमा का मुखावलोकन करके भक्ति करने से एक करोड़ उपवास का फल प्राप्त होता है।

प्रश्न 6 . जिन प्रतिमा क्या है ?

उत्तर . जिन प्रतिमा आत्म शान्ति का निकेतन है। परम सुख सरिता है, आत्म–दर्शन का दिव्य दर्पण है, चेतना शक्ति का प्रदायक है एवं स्वरूप प्राप्ति का प्रेरणा केन्द्र है।

प्रश्न 7 . देव दर्शन कब व कैसे करना चाहिये ?

उत्तर . देव दर्शन प्रातः काल स्नान के उपरान्त स्वच्छ वस्त्र पहनकर करना चाहिए। दर्शन करने के इच्छुक गृहस्थ को अपने हाथों मे चावल, बादाम, लवंग या अन्य शुभ सामग्री लेकर घर से निकलना चाहिए। सामग्री का हाथ नाभि के नीचे नहीं होना चाहिए। नंगे पाँव चार हाथ आगे की भूमि को देखते हुए मन्दिर की ओर बढ़े। मध्यम स्वर में णमोकार या स्त्रोतादि पाठ पढ़े, मन्दिर जी में रेशमी वस्त्र, कोसे के वस्त्र, चमड़े की वस्तु पहनकर, लिपस्टिक आदि लगाकर नहीं आना चाहिए। मन्दिर जी के द्वार पर छने जल से एड़ी व पंजे को अच्छी तरह धोकर विनम्र भावों से "ॐ" निःसहि निःसहि जय–जय" की ध्वनि के साथ मन्दिर जी में प्रवेश करें और मन्दिर जी के दायें या बायें खडे होकर आँखें खोलकर हाथ जोड़कर णमोकार मंत्र मंगल, उत्तम, शरण या स्तुति पाठ पढ़ते हुए सौम्य, शान्त, वीतराग मुद्रा के दर्शन करें फिर अर्घ्य या फल समर्पित कर नमन कर तीन प्रदक्षिणा देकर नौ बार णमोकार मंत्र पढ़कर पुनः नमस्कार करना चाहिए अन्त में आसाहि–3 बोलते हुए बाहर आना चाहिए।

प्रश्न 8 . प्रदक्षिणा लगाते समय क्या पढ़ना चाहिए ?

उत्तर . प्रदक्षिणा लगाते समय भक्ति पाठ करना चाहिए व प्रतिमा के सम्मुख आने पर पहली परिक्रमा में "ओं ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय नमो नमः" दूसरी परिक्रमा में "ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय सम्यक्दर्शन ज्ञानचारित्र प्राप्ताय नमो नमः" तीसरी परिक्रमा में "ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय (मूल नायक तीर्थंकर का भी नाम ले सकते हैं) केवल ज्ञान मोक्ष लक्ष्मी प्राप्ताय नमो नमः" पढना चाहिए।

प्रश्न 9 . देवदर्शन करने से क्या लाभ है ?

उत्तर . देवदर्शन करने से अपने स्वरूप का ज्ञान होता है, पाप का नाश एवं पुण्य की प्राप्ति होती है। आत्मिक शान्ति मिलती है एवं दिवस मंगलमय व्यतीत होता है।

प्रश्न 10 . जल छानकर क्यों पीना चाहिये ?

उत्तर . जैनाचार्यों के अनुसार अनछने जल में असंख्य जीव होते हैं। उनका घात न हो जाये इसलिये जल छानकर पीना चाहिये। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अनछना जल हानिकारक है।

प्रश्न 11 . जल किस विधि से छानकर उपयोग करना चाहिए ?

उत्तर . जल छानने के लिए पात्र के मुख से तिगुना वस्त्र लेना चाहिए, सूर्य का प्रकाश दिखाई न पड़े इतना मोटा कपडा लेना चाहिए, तथा छानकर उसे उलटकर छने जल से धो लेना चाहिए। पुनः बिना छने पानी को उसी कुएँ में डाल देना चाहिए। हेण्ड पम्प का पानी लिया हो तो उस पम्प में दो पाइप लगाकर बिना छना पानी डालना चाहिए ताकि सूक्ष्म जीवों की सुरक्षा हो सके।

प्रश्न 12 . वैज्ञानिकों ने एक बूँद पानी में कितने जीव बतायें हैं ?

उत्तर . वैज्ञानिकों ने एक बूँद पानी में 36450 जीव बताये हैं।

प्रश्न 13 . जैन धर्मानुसार पानी की क्या मर्यादा है ?

उत्तर . जैन धर्मानुसार छने पानी की 48 मि., लौंग, इलायची सौंफ आदि मिले पानी की 6 घंटे, उबले हुए पानी की 24 घण्टे की मर्यादा है।

प्रश्न 14 . रात्रि में भोजन क्यों नहीं करना चाहिए ?

उत्तर . रात्रि में भोजन करने से स्वास्थ की हानि होती है, अजीर्ण होता है, हिंसा होती है, प्रमाद बढ़ता है, इसलिए **''रात्रि भोजन''** नही करना चाहिये।

प्रश्न 15 . वैज्ञानिक दृष्टिकोण से रात्रि भोजन करने से क्या हानि होती है ?

उत्तर . वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि रात्रि में (अल्ट्रावाइलेट किरण) कीटाणु नष्ट करने की सामर्थ्य वाला प्रकाश नहीं होता। इस कारण से रात्रि में जीव–जन्तु अधिक पैदा होते हैं इसलिए जो स्वास्थ्य खराब करने में कारण हैं इस लिए रात्रि भोजन नही करना चहिए।

प्रश्न 16 . रात्रि में भोजन करना एवं पानी पीना किसके समान है ?

उत्तर . रात्रि में भोजन करना मॉस खाने के समान, और पानी पीना खून पीने के समान है।

प्रश्न 17 . श्रावक को भोजन कब करना चाहिये ?

उत्तर . श्रावक को भोजन सूर्योदय के 48 मिनट बाद एवं सूर्यास्त के 48 मिनट पूर्व करना चाहिये।

प्रश्न 18 . मकार किसे कहते हैं ?

उत्तर . मद्य, (शराब) मॉस एवं मधु (शहद) को "**तीन मकार**" कहते है।

प्रश्न 19 . रात्रि भोजन एवं मकार सेवन करने वाले मरकर क्या बनते हैं ?

उत्तर . मकार सेवन एवं रात्रि भोजन करने वाले मरकर सिंह, गैंडा, चमगादड़, कौआ, बिल्ली, गिद्ध, शूकर, सॉप, छिपकली, बिच्छू आदि बनते है।

प्रश्न 20 . भाव श्रावक किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो श्रद्धावान, विवेकवान, क्रियावान होकर रात–दिन भक्ति मे लीन रहता हो एवं देव शास्त्र गुरू द्वारा कथित मार्ग पर चलकर अपनी आत्मा का कल्याण करता हो, उसे "**भाव श्रावक**" कहते हैं।

देव शास्त्र गुरूणां च भक्तिर्दानं दयार्चनम्।
मदाष्टव्यसनैर्हीनं श्रावकः कथिंतो जिनैः।।
यस्मिन देशे न तीर्थानि न चेत्यानि च धार्मिकाः।
तस्मिन देशे न गन्तव्यं स्वधर्म प्रतिपालकैः।।

अर्थ – जिसके देव शास्त्र गुरू की भक्ति दान दया और पूजन है तथा जो आठ मद और सात व्यसन से रहित है उसे जिनेन्द्र भगवान ने श्रावक कहा है। श्रावक को जिस देश मे न तीर्थ हो जिन प्रतिमाऐं नहो और धार्मिक पुरूष न हो उस देश में स्वधर्म के पालन करने वाले श्रावक को नहीं जाना चाहिए। "कदाचित् पहुँच जाये तो एक सौ आठ बार णमोकार मंत्र पढ़कर कार्य प्रारम्भ करना चाहिए"

जुआ खेलना

6

हार जीत की शर्त लगाकर, खेले सट्टा, जुआ, ताश।
शतरंज चौपड़ से क्रीड़ा कर, करता वह जीवन धन नाश।।
है अनर्थ का मूल कर्म यह, चीर हरण करवाया है।
पाण्डव जैसे बलशाली को, वन वन में भटकाया है।।6।।

अर्थ

हार जीत की शर्त लगाकर सट्टा, ताश चौपड़, शतरंज आदि से खेल करना जुआ खेलना कहलाता है। यह जीवन रूपी धन का नाश ताक करता ही है। समस्त अनर्थो की जड भी है। इस जुए ने ही भरी सभा मे द्रोपदी का चीरहरण करवाया था और पाण्डव जैसे बलशालियों को वन–वन मे भटकाया था।

प्रश्न 1 . जुआ खेलना किसे कहते हैं ?

उत्तर . हार–जीत की शर्त लगाकर ताश, शतरंज, चौपड़, लूडो, केरम खेलना, लाटरी टिकिट खरीदना आदि "**जुआ खेलना**" है।

प्रश्न 2 . जुआ खेलने से क्या होता है ?

उत्तर . जुआ खेलने से वस्तु दॉव पर लग जाती है और हाथ से चली जाती है। कभी–कभी वस्तु के चले जाने पर उसके अभाव में मरने का विचार उत्पन्न हो जाता है, जिससे जीवन रूपी धन का नाश होता है।

प्रश्न 3 . जुआ खेलना किस दृष्टि में बुरा है ?

उत्तर . जुआ खेलना आध्यात्मिक एवं व्यवहारिक दोनो दृष्टि में बुरा है।

प्रश्न 4 . जुआ खेलना आध्यात्मिक दृष्टि में क्यों बुरा है ?

उत्तर . जुआ खेलने से सर्वप्रथम आध्यात्मिक शान्ति का नाश होता है। कषायों की तीव्रता होती है। आत्मा में वैर का जन्म होता है। दुश्मनी की दीवारें खडी होती है। आत्मा में वैर का जन्म होता है। दुश्मनी की दीवारें खड़ी होतीं हैं इसलिये आध्यात्मिक दृष्टि से बुरा है।

प्रश्न 5 . जुआ खेलना व्यवहारिक दृष्टि से क्यों बुरा है ?

उत्तर . जुआ खेलने से सर्वप्रथम धन का नाश होता है। लोगों की दृष्टि में जुआड़ी बुरा नजर आता है। समाज व शासन की दृष्टि में अपराधी माना जाता है। अपयश का भागी होता है। सद्‍बुद्धि मस्तिष्क से पलायन कर जाती है, लक्ष्मी के स्थान पर दरिद्रता डेरा डाल देती है। इसलिये व्यवहारिक दृष्टि से बुरा है।

प्रश्न 6 . जुआ क्या है ?

उत्तर . जुआ समस्त अनर्थों की जड़ है।

प्रश्न 7 . जुआ खेलने में कौन प्रसिद्ध हुआ है ?

उत्तर . जुआ खेलने में पाण्डव प्रसिद्ध हुए। उन्होंने जुआ खेलते हुए अपनी पत्नी को दाँव में लगा दिया। जिससे कौरवों की भरी सभा में द्रौपदी के वस्त्र उतारने का दुस्साहस हुआ एवं पाण्डवों को अपमानित होकर वन–वन भटकना पड़ा।

विवादः कलहो बन्धः कोपो मानो मतिभ्रमः।।
पैशुन्यं मत्सरं शोकः सर्वे द्यूतस्य बान्धवाः।।

अर्थ– खेद, कलह, बन्धन, क्रोध, मान बुद्धि भ्रम चुगली मात्सर्य और शोक ये सब जुआ के भाई–बन्धु हैं।

द्यूताद् दश विनश्यन्ति धर्मः श्रीः सुमतिः सुखम्।
सत्यं शौचं प्रतिष्ठा च निष्ठा विश्वास सद्‍गति।।

अर्थ– जुआ से धर्म, लक्ष्मी, सद्‍बुद्धि, सुख, सत्य, शौच, प्रतिष्ठा, निष्ठा, विश्वास और सदगति ये दश वस्तुएँ नष्ट हो जाती हैं।

माँस खाना

7

वृक्षों में न लगता है, न भूमि से ही उपजता है।
दीन-हीन मूक प्राणी को, मारे से ही बनता है।।
जो भी प्राणी प्राणों को हर, रसना को करता है तृप्त।
राजा बक सम नरकों में जा, रहता है सदा संतप्त।।7।।

अर्थ

माँस न वृक्षों मे लगता है न भूमि से उत्पन्न होता है। यह माँस दीन–हीन मूक प्राणी को मारकर ही बनता है (प्राप्त होता है)। जो भी प्राणी अन्य प्राणियों के प्राणों को हरकर रसना इन्द्रिय को तृप्त करता है, वह "बकासुर" के समान नरको में जाता है और सदा दुःख को सहन करता है।

प्रश्न 1 . माँस खाना किसे कहते हैं ?

उत्तर . चैतन्य प्राणियों को मारकर या मरे हुए प्राणियों के शरीर का भक्षण करना "माँस खाना" है।

प्रश्न 2 . माँस खाने से क्या हानि होती है ?

उत्तर . माँस खाने से अनेक हानियाँ होती हैं –

1. पर के प्राणों का घात होता है।
2. अहिंसा धर्म का नाश होता है।
3. शरीर में टी0 बी0, केन्सर, हार्ट–अटैक, रक्तचाप, गुर्दे की बीमारी जैसे आदि भयंकर रोग होते हैं।
4. मन विकृत होता है, कुप्रवृत्तियों का जन्म होता है।
5. आयु कम होती जाती है।

प्रश्न 3 . प्रकृति ने मनुष्य के शरीर की रचना शाकाहारी जीवों जैसी ही बनाई है। यह कैसे जाना जाता है?

उत्तर . प्राकृति ने मनुष्य के शरीर की रचना शाकाहारी जीवों जैसी बनाई है। यह वैज्ञानिक आधार पर निम्न बातों से जाना जाता है –

1. **माँसाहारी** जीवों के पंजे तेज नाखून वाले होते हैं। दाँत नुकीले होते हैं। जिससे वे आसानी से अपने शिकार को चीर–फाड़कर खा सकें।
   शाकाहारी जीवों के पंजे नाखून वाले नहीं होते, दाँत चपटी दाढ़ वाले होते हैं। जिससे वा चीर–फाड़ नहीं कर सकते।
2. **माँसाहारी** जीव जीभ की सहायता से पानी चाट–चाट कर पीते हैं।
   शाकाहारी जीव मुँह को पानी में डुबोकर होंठों की सहायता से पानी पीते हैं।
3. **माँसाहारी** जीवों के भोजन का पाचन मुँह से प्रारम्भ होता हैं।
   शाकाहारी जीवों के भोजन का पाचन आमाशय से प्रारम्भ होता हैं।
4. **माँसाहारी** जीवों के आँतों की लम्बाई कम होती हैं।
   शाकाहारी जीवों के आँतों की लम्बाई ज्यादा होती हैं।
5. **माँसाहारी** जीवों की लार अम्लीय होती हैं।
   शाकाहारी जीवों की लार क्षारीय होती हैं।
6. **माँसाहारी** जीवों में सूँघने की शक्ति अत्यन्त तीव्र होती है। रात में आँखे चमकती हैं।
   शाकाहारी जीवों में सूँघने की शक्ति कम होती है। रात में दिन की भाँति देखने की क्षमता कम होती हैं।
7. **माँसाहारी** जीवों के शब्द कर्कश व भयंकर होते है।
   शाकाहारी जीवों के शब्द कर्कश व भयंकर नही होते हैं।
8. **माँसाहारी** जीवों के बच्चे पैदा होते ही माँस खा सकते हैं।
   शाकाहारी जीवों के बच्चे दो–तीन वर्ष तक अन्न व दूध पर ही जीते हैं।
9. **माँसाहारी** जीव कच्चा माँस व हड्डी खा सकते हैं।
   शाकाहारी जीव कच्चा माँस व हड्डी नहीं खा सकते हैं।
10. **माँसाहारी** जीव के शरीर से पसीना नहीं आता है।
    शाकाहारी जीव के शरीर से पसीना आता है। इन दस बातों से शाकाहारी एवं माँसाहारी जीवों में अन्तर पहचाना जा सकता है।

प्रश्न 4 . क्या मरे हुए जीवों का माँस खा सकते हैं ?

उत्तर . नहीं खा सकते ! चाहे तुरन्त मरे हुए जीव का माँस हो, चाहे बासी माँस हो। उस माँस में प्रतिक्षण उसी रंग व उसी जाति के अनन्त सूक्ष्म जीव उत्पन्न होते रहते हैं। उसके छूने मात्र से करोड़ों जीव तत्क्षण मरण को प्राप्त हो जाते हैं। अतः किसी भी प्रकार का मॉस नहीं खा सकते हैं।

प्रश्न 5 . क्या माँस बेचने, खाने व खिलाने इन तीनों से पाप का बन्ध होता है ?

उत्तर . जिस प्रकार चोरी करने वाला, चोरी का माल खरीदने वाला एवं चोरी के लिये प्रोत्साहित करने वाला ये तीनों सजा के पात्र होते हैं। उसी प्रकार मॉस बेचने से, खिलाने से एवं खाने से निश्चित रूप से पाप का बन्ध होता है।

प्रश्न 6 . क्या माँस त्यागी अण्डा खा सकता है ?

उत्तर . नहीं खा सकता। क्योंकि अण्डे के अन्दर पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च शरीर होता है। अण्डा मुर्गी की आन्तरिक गन्दगी का परिणाम है। इसे खाने से भी माँस खाने का पाप होता है।

प्रश्न 7 . अण्डा खाने से क्या हानि होती है ?

उत्तर . वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि अण्डे में "कोलेस्ट्रोल" नामक भयानक तत्व पाया जाता है। इससे दिल की बीमारी, हाई ब्लड–प्रेशर, धमनियों में जख्म आदि रोग हो सकते है। अण्डे में डी0 डी0 टी0 नामक विष भी होता है। जो पेट में सड़ांध उत्पन्न करता है और मनुष्यों के हाजमे को बिगाड़ता है। जैन धर्मानुसार अण्डे में एक पंचेन्द्रिय जीव होता है। जिसे खाने से पंचेन्द्रिय जीव की हत्या का पाप लगाता है।

प्रश्न 8 . माँस खाने में कौन प्रसिद्ध हुआ ?

उत्तर . माँस खाने में राजा बकासुर प्रसिद्ध हुआ। वह प्रतिदिन एक व्यक्ति का माँस खाता था। वह भी शाकाहारी भीम के हाथों से मारा गया और मरकर नरक गति का पात्र हुआ।

मदिरा पान

8

त्रस जीवों के घात किये से, बनती बुरी शराब है।
शांति शील, तप, बुद्धि आदि का, करती सदा को नाश है।।
बेसुध हो मतवाला हो वह, करता जीवन नष्ट है।
यादव सुत मदिरा पिये तब, हुई द्वारका भस्म है।।8।।

अर्थ

अनेक प्रकार के त्रस जीवों का घात करने से शराब बनती है। यह शराब बहुत बुरी है। शराब जीवों को मतवाला वे बेसुध करके शान्ति, शील, तप, बुद्धि और जीवन का नाश कर देती है। स्वर्णमयी द्वारका नगरी यादव पुत्रो के मदिरा पान करने से नष्ट हुई।

प्रश्न 1 . मदिरा पान किसे कहते हैं ?

उत्तर . महुआ, अंगुर, जौ आदि अनेक पदार्थों को मिलाकर पानी में सडाया जाता है। जिससे अत्यन्त सूक्ष्म जीवों का घात होता है। इन्हीं फलों के रस से बनी शराब को पीना ''**मदिरा पान**'' कहलाता है।

प्रश्न 2 . त्रस जीव किसे कहते है ?

उत्तर . दो इन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के जीवों को ''**त्रस जीव**'' कहते हैं।

प्रश्न 3 . शराब क्या करती है ?

उत्तर . शराब व्यक्ति को बेहोश व मतवाला करके शान्ति, शील, तप, बुद्धि एवं जीवन का नाश करती है।

प्रश्न 4 . शराब शान्ति का नाश कैसे करती है ?

उत्तर . शराब पीने से आदमी आलसी हो जाता है। आलस्य के कारण धन का अभाव होने लगता है। तब वह शराबी घर का सामान बेचने लग जाता है। जिससे घर में कलह का वातावरण बन जाता है और इस कलह के कारण उसके घर की शान्ति एवं जीवन की शान्ति का नाश होने लगता है।

प्रश्न 5 . शराब शील का नाश कैसे करती है ?

उत्तर . शराब पीने से व्यक्ति बेहोश हो जाता है। वह नशे में सब कुछ भूल जाता है कि कौन माँ है, कौन बहन है, कौन पत्नी है और सभी के साथ कुकृत्य करने लगता है और अपने व पराये के शील का नाश कर देता है।

प्रश्न 6 . शराब तप का नाश कैसे करती है ?

उत्तर . तप का अर्थ यहाँ गृहस्थ जीवन के कर्त्तव्य से है। शराबी शराब के नशे में धुत्त होकर परिवार की चिंता से मुक्त हो जाता है और अपने गृह कर्त्तव्य से च्युत हो जाता है। अर्थात् आपसी प्रेम, अतिथि सत्कार, साधु सेवा, परिवार–पोषण आदि छोड़ देता है और अपने कर्त्तव्य की तपस्या का नाश कर देता है।

प्रश्न 7 . शराब बुद्धि का नाश कैसे करती है ?

उत्तर . शराब पीने से हित–अहित का विवेक समाप्त हो जाता है। विवेक के अभाव का नाम ही बुद्धि का नाश है।

प्रश्न 8 . शराब पीने से व्यावहारिक व शारीरिक हानि कौन सी है ?

उत्तर . शराब पीने से शरीर में कैंसर, पेट मे छाले, शरीर के भीतर ही भीतर खोखलापन, दिमाग का विक्षिप्त पागल सा होना आदि अनेक रोग उत्पन्न होते है एवं लोगों की निगाह में उसकी इज्जत कम होती जाती है। यही शारीरिक एवं व्यावहारिक हानि होती है।

प्रश्न 9 . मदिरापान में कौन प्रसिद्ध हुआ ?

उत्तर . मदिरापान में यादव पुत्र प्रसिद्ध हुए। उन्होंने शराब पीकर अपना विवेक समाप्त कर दिया और द्वीपायन मुनिराज को पत्थर मारा उसी के कारण से स्वर्णमयी द्वारका नगरी समाप्त हुई थी।

जो शराब का हुआ शिकार।

उसने फूँक दिया घरबार।।

शराब अतृप्त आकांक्षा की तृप्ति का एक मीठा जहर है।

वेश्या सेवन

9

दु:ख का कारण वेश्या सेवन, कहती माँ जिनवाणी है।
नीच बना अपमान कराती, यह रोगों की खानी है।।
मीठी वाणी से वश करके, चारुदत्त को फँसा लिया।
सारा धन उसका हर करके पाखाना में धँसा दिया।।9।।

अर्थ

नीच बनाकर अपमान कराने वाली, रोगों की खानी, समस्त दु खों का कारण वेश्या सेवन है। यह जिनवाणी माता ने कहा है। वसन्ततिलका नाम की वेश्या चारुदत्त नाम के एक सेठ को मीठी वाणी से आकर्षित करके अपना बना लिया और उसका सारा धन हरण करके पाखाना (संडास) मे डाल दिया।

प्रश्न 1 . वेश्या सेवन किसे कहते हैं ?

उत्तर . काम वेदना से पीड़ित होकर दुराचारिणी बाजारू स्त्री से सम्बन्ध बनाना "**वेश्या सेवन**" है।

प्रश्न 2 . जिनवाणी माँ क्या कहती हैं ?

उत्तर . जिनवाणी माँ समझाते हुए कहती है कि वेश्या सेवन करना समस्त दु:खों को निमंत्रण देना है। यह समस्त रोगों की खान है। वेश्या व्यक्ति को नीच बनाकर जगह–जगह अपमान कराती है। अतः वेश्या सेवन मत करो।

प्रश्न 3 . वेश्या सेवन से क्या हानि है ?

उत्तर . वेश्या सेवन करने से लोक मर्यादा का, धन का, ब्रह्मचर्य का, सौन्दर्य का नाश होता है। शरीर भी कमजोर होता है। एड्स आदि भयंकर रोग उत्पन्न होते है।

प्रश्न 4 . वेश्या सेवन में कौन प्रसिद्ध हुआ ?

उत्तर . वेश्या सेवन में चारुदत्त प्रसिद्ध हुआ। वसन्ततिलका नामक वेश्या ने मीठी–मीठी बातों से आकर्षित करके, चारुदत्त को फँसा लिया और उसका 18 करोड़ दीनार का धन लेकर घर के संडास में डलवा दिया।

शिकार खेलना

10

प्रकृति के सौन्दर्य लाभ ले, मूक पशु वन में फिरते।
अस्त्र-शस्त्र बन्दूक आदि ले, दुष्ट प्राणी पशु वध करते।।
मनोरंजन के हेतु जो भी, दुःख देता प्राणी को अपार।
ब्रह्मदत्त सम दुःख को सहता, जो खेले जगति में शिकार।।10।।

अर्थ

अपने मनोरंजन के लिये प्रकृति की सुन्दरता में स्वतन्त्र विचरण करने वाले दीन–हीन मूक पशु–पक्षियों को अस्त्र–शस्त्र बन्दूक आदि लेकर उसे मारना, सताना शिकार खेलना कहलाता है। इस संसार में शिकार खेलने के कारण ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती को नर्क का दुःख सहन करना पडा।

प्रश्न 1 . शिकार खेलना किसे कहते हैं ?

उत्तर . अपने मनोरंजन के लिए प्रकृति में स्वतन्त्र विचरण करने वाले पशु–पक्षियों को मारना "शिकार खेलना" है।

प्रश्न 2 . दीन-हीन मूक पशु किसे कहते है ?

उत्तर . जिनका कोई सहारा नहीं होता, जो दूसरों से बदला लेने में सक्षम नहीं होते हैं। जो अपने कष्ट को किसी से कह नहीं सकते, वे दीन–हीन मूक पशु हैं।

प्रश्न 3 . पशु वध कौन करता है ?

उत्तर . दुष्ट मनुष्य अस्त्र, शस्त्र, बन्दुक आदि लेकर पशु का वध करता है।

प्रश्न 4 . क्या जंगल के पशुओं को मारना ही शिकार खेलना है ?

उत्तर . नहीं! अन्य प्रकार के जीवों को कष्ट देना भी शिकार खेलना है।

1. मच्छर–मक्खियों को टिक–ट्वन्टि डालकर मारना।
2. जुगनू, मक्खियों को पकड़कर जेब में, गिलास में भरना।
3. तालाब की मछलियों को जाल में फँसाना। खटमल, जूँ आदि मारना।
4. चूहे आदि को पिंजरे में कैद करना।
5. गर्भपात करना कराना।

6. जानवरों की आकृति के चाकलेट, केक आदि को काटना खाना। ये सभी शिकार के सूक्ष्म रूप हैं। क्योंकि ऐसा करने से प्राणियों को कष्ट होता है। भावों में हिंसा की भावना आती है।

प्रश्न 5 . शिकार खेलने से क्या हानि होती है ?

उत्तर . शिकार खेलने से अगले भव में अंगहीन और सन्तानहीन होना पड़ता है, असमय में मृत्यु होती है। जैसा व्यवहार हम पशु–पक्षियों के साथ करते हैं, वैसा ही व्यवहार अगले भव में हमारे साथ होता है।

प्रश्न 6 . शिकार खेलने में कौन प्रसिद्ध हुआ है ?

उत्तर . शिकार खेलने में ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती प्रसिद्ध हुआ। क्योंकि मुनिराज के प्रभाव से जंगल में शिकार खेलते समय इसे पशु नहीं मिला। तब इसने मुनिराज के बैठने की शिला गरम कर दी, जिसके फलस्वरूप इसे मरकर सप्तम नर्क में जाना पड़ा।

चोरी करना

11

असली में नकली मिलान कर, धोखा देता शाम सवेरा।
बिन पूछे पर वस्तु लेकर, जो कहता यह सारा मेरा।।
अधिकार रहित वस्तु को कहता, यह है सारी मेरी।
निर्धनता को देने वाली, छठवीं व्यसन है चोरी।।11।।

अर्थ

असली वस्तु में नकली वस्तु मिलाकर सुबह–शाम धोखा देना, बिना पूछे पराई वस्तु को लेकर अपना कहना, अधिकार रहित वस्तु को अपना करना चोरी है। निर्धनता को देने वाली छठवीं व्यसन चोरी है।

प्रश्न 1 . चोरी किसे कहते हैं ?

उत्तर . 1. अधिकार रहित वस्तु को ग्रहण करना "**चोरी**" है।
2. असली वस्तु में नकली वस्तु मिलाकर धोखा देना "**चोरी**" है।
3. बिना पूछे पराई वस्तु ग्रहण करना "**चोरी**" है।

प्रश्न 2 . असली में नकली वस्तु मिलाने का क्या अर्थ है ?

उत्तर . एक समान दिखने वाली अधिक कीमत की वस्तु में कम कीमत की वस्तु मिलाना असली में नकली मिलाना है।

जैसे :-

1. शुद्ध देशी घी में डालडा (वनस्पति) मिलाना।
2. हल्दी में पीली मिट्टी मिलाना।
3. काली मिर्च में पपीते के बीज मिलाना।
4. चावल में सफेद कंकड़ मिलाना,
   अपनी कम्पनी के नाम से नकली वस्तु तैयार करना चोरी है। इस कार्य में धोखा होने के कारण इसे भी पाप कहा है।

प्रश्न 3 . चोरी करने से क्या हानि है ?

उत्तर . चोरी करने से कई हानियाँ हैं।
1. चोरी करने से विश्वास समाप्त होता है।

2. सभी जगह तिरस्कार का पात्र होना पड़ता है।
3. जिस व्यक्ति की वस्तु चोरी से ले ली जाती है वह सदा दुःखी रहता है। कभी–कभी वस्तु के अभाव में वह मर भी जाता है, इसलिये हिंसा का भी पाप होता है।
4. अगले भव में निर्धनता का दुःख करना पड़ता है। इस भव में जेल का दुःख सहन करना पड़ता है।

प्रश्न 4 . चोरी व्यसन में कौन प्रसिद्ध हुआ ?

उत्तर . चोरी व्यसन में सत्यघोष प्रसिद्ध हुआ। उसने एक व्यक्ति से पाँच रत्न ले लिये और माँगने पर नही दिये। जिसके कारण उसे एक थाली गोबर खाना पड़ा, पहलवान के तीन मुक्के खाने पड़े और मुँह काला करवाकर देश निकाले का दण्ड भोगना पड़ा तथा अगले भव में सर्प बनना पड़ा।

अन्यायुपार्जितं वित्तं दशवर्षाणि तिष्ठति।
प्राप्ते तु एकादश वर्ष समुले च विनश्यति।।

अर्थ –अन्याय द्वारा उपार्जित धन अधिकतम दश वर्ष तक टिकता है ग्यारहवें वर्ष पूर्णरूपेण समाप्त हो जाता है।

पेट भरने के लिए ईमानदारी पेटी भरने के लिए बेईमानी आवश्यक है।

सरकार के एक रूपये की चोरी करने का अर्थ है एक अरब जनता के धन की चोरी करना।
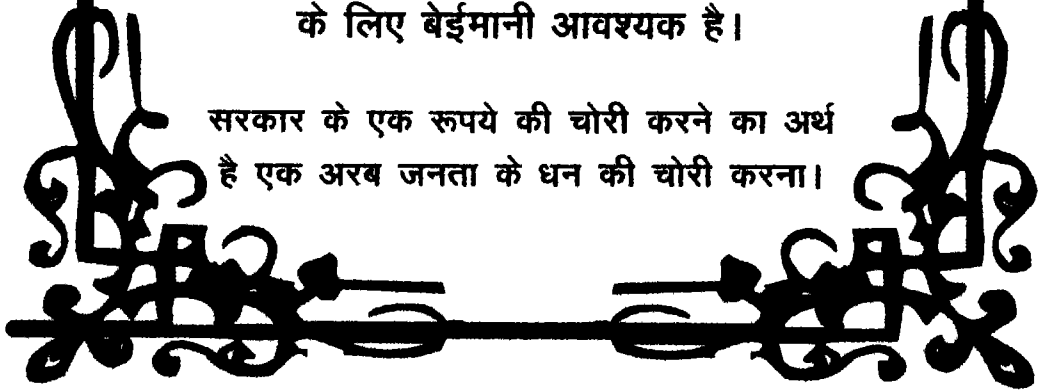
परस्त्री सेवन

11

मन यौवन धन हरती है, और मरे नर्क ले जाती है।
दृष्टि विष सम महा विषैली, कीर्ति नष्ट करवाती है।।
कुल कलंकित करती है, पर स्त्री इसका नाम है।
रावण पर स्त्री के कारण, हुआ अति बदनाम है।।12।।

अर्थ

मन यौवन धन हरण करने वाली, कीर्ति नष्ट करवाने वाली कुछ कलंकित करने वाली, दृष्टि विष सर्प के समान, महा विषैली, मरणोपरान्त नरकों के दु:ख प्रदान कराने वाली स्त्री का नाम पराई स्त्री है। ऐसी पराई स्त्री से सम्बन्ध बनाने के कारण 'रावण' इस संसार में बदनाम हुआ है।

प्रश्न 1 . परस्त्री सेवन किसे कहते हैं ?

उत्तर . दूसरी की स्त्री के साथ गलत व्यवहार करना, "परस्त्री सेवन" कहलाता है।

प्रश्न 2 . परस्त्री किसका हरण करती है ?

उत्तर . परस्त्री सर्वप्रथम मन का हरण करती है। मन के आकर्षित होने के उपरान्त व्यक्ति उसकी इच्छा पूर्ति के लिये धन को लुटाता है और अपने यौवन की शक्ति को भी क्षीण कर देता है। इसलिए कहा है परस्त्री मन, यौवन और धन का हरण करती है।

प्रश्न 3 . परस्त्री सेवन से क्या हानि है ?

उत्तर . परस्त्री सेवन करने से व्यक्ति का यश समाप्त हो जाता है। कुल कलंकित होता है और अगले जन्म में नरकादि गतियों के दु:ख सहन करने पड़ते हैं।

प्रश्न 4 . परस्त्री सेवन में कौन प्रसिद्ध हुआ ?

उत्तर . परस्त्री सेवन में रावण प्रसिद्ध हुआ वह सीता को अपनी स्त्री बनाने के लिए उठा लाया। जिस कारण स्वयं बदनाम हुआ, उसके कुल का नाश हुआ और मरकर उसे तीसरे नरक में जाना पडा।

कीचक ने भी द्रोपदी को अपनी स्त्री बनाना चाहा, जिस कारण भीम के द्वारा उसे कष्ट सहना पडा अपमानित होनापड़ा।

सन्मार्ग स्खलनं विवेक दलनं प्रज्ञालतोन्मूलनं।
गाम्भीर्योन्मथनं स्वकायदमनं नीचत्वसम्पादनम्।।
सद्ध्यानावरणं स्वधर्महरणं पापप्रपापूरणं।
धिक् कष्टं परदानवीक्षणमति क्लेशावहं स्यान नृणाम्।।

अर्थ– समीचीन मार्ग से स्खलित होना, विवेक का नष्ट होना, बुद्धि रूपी लता का उखाड़ा जाना, अपने शरीर का दमन नीचत्व की प्राप्ति सम्यक् ध्यान का आवरण, अपने धर्म का हरण और पाप रूपी प्याऊ का भरा जाना ये सब दोष परस्त्री–लम्पट को प्राप्त होते हैं परस्त्री का दर्शन ही मनुष्य के लिए क्लेशदायक होता है। परस्त्री सेवन नरक का द्वार है। अतः व्यसन में फँसे जीवों को धिक्कार है।

पर नारी पैनी छुरी तीन ठोर से खाय।
मन हरे धन हरे मरे नर्क ले जाय।

शहद

13

थूक, लार, मल, मूत्र आदि से, निंद्य शहद है बन जाता।
रसना का लौलुपी मानव, सुख से इसको है खाता।।
द्वादश ग्राम दहन बनकर, वे ही पाप कमाते हैं।
जान बूझकर कर जो मधुरस को, बड़े चाव से खाते हैं।।13।।

अर्थ

थूक, लार, मल–मूत्र आदि घृणित अशुद्ध पदार्थ से निंद्यनीय शहद बनता है। रसना इन्द्रिय का लौलुपी मनुष्य ही उसे सुख से खाता है। इस संसार में जो व्यक्ति जान–बूझकर चाव से शहद खाते हैं। वे बारह ग्राम के जलने के बराबर पाप कमाते हैं। ऐसा जैन शास्त्रों में कहा गया है।

प्रश्न 1 . शहद किसे कहते हैं ?

उत्तर . मधुमक्खी के छत्तों से जो रस निकाला जाता है। उस को "**शहद**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . शहद किससे बनता है ?

उत्तर . मधुमक्खियाँ फूलों का रस चूसकर लाती हैं। और छत्ते में आकर वमन करती हैं। उसी उल्टी, थूक, लार, मल–मूत्र आदि से निंद्यनीय शहद बनता है।

प्रश्न 3 . शहद को कौन खाता है ?

उत्तर . रसना इन्द्रिय का गुलाम इंसान शहद खाता है।

प्रश्न 4 . शहद खाने से कितना पाप लगता है ?

उत्तर . एक बार जान–बूझकर शहद खाने से "**बारह गाँव**" के जलाने के बराबर पाप लगता है।

प्रश्न 5 . शहद सेवन से इतना पाप क्यों लगता है ?

उत्तर . शहद प्राप्त करने के लिये मधुमक्खियों के छत्तों के नीचे धुआँ किया जाता है। जिससे अनेक मधुमक्खिाँ आँखों से अन्धी एवं

मरण को प्राप्त होती हैं। फिर उस छत्ते को तोड़कर मशीन से या हाथ से रस निकाला जाता है। जिससे उस छत्ते के आश्रित असंख्य जीवों का भी घात होता है। इस कारण से शहद खाने से पाप लगता है।

प्रश्न 6 . शहद खाने वाला किसके समान है ?

उत्तर . जिस प्रकार मनुष्य के मल को खाने वाला सूकर कहलाता है। उसी प्रकार मधुमक्खियों के मल को खाने वाला सूकर के समान है।

वक्ता के लक्षण

प्राज्ञः प्राप्त समस्त शास्त्र हृदयः प्रव्यक्त लोकस्थितिः।
प्रास्ताशः प्रतिभापरः प्रशमवान प्रागेव दृष्टोत्तरः।।
प्रायः प्रश्नसहः प्रभुः परमनोहारी परानिन्दया।
ब्रुयाद् धर्मकथां गर्णी गुणनिधिः प्रपष्टमिष्टाक्षरः।।

अर्थ – जो बुद्धिमान हो, समस्त शास्त्रों का ज्ञाता हो, लोकरीति का जानकार हो प्रतिभा सम्पन्न हो, प्रशम भाव से सहित हो उठने वाले प्रश्नों के उत्तर जिनने पहले ही देख लिया हो प्रायः प्रश्नों को सहन करने वाला हो, प्रभावशाली हो, दूसरों की निन्दा के बिना दूसरों के मन को हरण करने वाला हो, गुणों का भण्डार हो स्पष्ट व मिष्ट अक्षर वाला हो ऐसा गुणी प्रधान पुरुष धर्म कथा को कहने का अधिकारी है।

जिसके पास धन है वह धन्य नहीं
जिसके पास धर्म है वही धन्य है।

धर्म

14

जग से छुटकारा दिलवाता, और देता अव्यय शिव शर्म
जगत्पति का कहा हुआ, जग में कहलाता सच्चा धर्म।
करता निर्मल पावन मन है, ऐसा कहते हैं मुनिजन।
धर्म ही प्यारी नौका जग में, जिससे तिरते हैं भविजन।।14।।

अर्थ

जिनेन्द्र देव द्वारा कहा गया धर्म ही सच्चा धर्म है। यह धर्म जग से छुटकारा दिलवाकर अविनाशी मोक्ष सुख प्रदान करता है। करूणाधारी मुनिराज कहते है, कि यह धर्म जीवों को पार उतारने के लिए नौका के समान है तथा मन को निर्मल व पावन करने वाला है।

प्रश्न 1 . **धर्म किसे कहते हैं ?**

उत्तर . जो संसार के दुःखों से छुटकरा दिलवाकर अव्यय सुख प्रदान करता है, उसे ''**धर्म**'' कहते हैं।

प्रश्न 2 . **अव्यय शिव शर्म किसे कहते है ?**

उत्तर . कभी समाप्त न होने वाले कर्म रहित मोक्ष सुख को ''**अव्यय शिव धर्म**'' कहते हैं।

प्रश्न 3 . **सच्चा धर्म कौन सा है ?**

उत्तर . जगत्पति अर्थात् जिनेन्द्र भगवान द्वारा कथित वीतराग धर्म ही ''**सच्चा धर्म**'' है।

प्रश्न 4 . **जिनेन्द्र भगवान किसे कहते है ?**

उत्तर . जिन्होंने अपनी इन्द्रियों को जीत लिया है उन्हें ''जिनेन्द्र भगवान'' कहते हैं।

प्रश्न 5 . **करूणाधारी मुनिराज क्या कहते है ?**

उत्तर . करूणाधारी मुनिराज कहते हैं, कि सच्चा धर्म हमारे जीवन को निर्मल एवं पावन करता है।

प्रश्न 6 . सच्चा धर्म किसके समान है ?

उत्तर . सच्चा धर्म नौका के समान है।

प्रश्न 7 . सच्चे धर्म को नौका की उपमा क्यों दी है ?

उत्तर . जिस प्रकार नौका पर सवार होकर मनुष्य सागर पार कर जाता है। उसी प्रकार धर्म भी ससार रूपी सागर से मनुष्य को पार उतारती है। इसलिये धर्म को नौका की उपमा दी।

प्रश्न 8 . भव्य जीव किसे कहते है ?

उत्तर . रत्नत्रय प्राप्त करने की जिसमें योग्यता हो, उसे "भव्य जीव" कहते हैं।

ॐ ॐ

चलं चित्तं चलं वित्तं चले जीवित योवने।
चलं परिजनं सौख्यं धर्म एकोर्हि निश्चलः।।

अर्थ– चित्त चंचल है, धन चंचल है, जीवन और आयु चंचल है परिजन संबंधी सुख चंचल है धर्म ही एक निश्चल है।

तत्प्रति प्रीति चित्तेन येन वार्तापि हि श्रुता।
निश्चितं स भवेत् भव्यों भावि निर्वाण भाजनम्।।

अर्थ– जो जीव प्रीतिपूर्वक चित्त लगाकर धर्म की वार्ता को सुनता है वह जीव निश्चित रूप से भव्य है वह निश्चित ही निर्माण (मोक्ष) का अधिकारी होगा।

धर्म करत संसार सुखधर्म करत निर्वाण।
धर्म पंथ धारे बिना नर तिर्यञ्च समान।।

ॐ ॐ

सम्यक् दर्शन

15

श्रद्धा के सागर में खिलता, सु-दर्शन का श्वेत कमल।
विषय कषाय के पंक से ऊपर, सुख का बहता निर्मल जल।।
अष्ट अंग के धारण करते, निज प्रतीति होती मुख-रित।
मुक्ति रमा उसको लख करके, हो जाती झट आकर्षित।।15।।

अर्थ

श्रद्धा के सागर में सम्यक् दर्शन का श्वेत कमल खिलता है, विषय कषाय की कीचड़ से ऊपर सुख कानिर्मल जल बहता है। जैसे ही जीव अष्ट अंग को धारण करता है, उस समय से उसे आत्मा की प्रतीति(श्रद्धान) होने लगती है, और मुक्ति रूपी रानी उसको देख करके आकर्षित हो जाती है। अर्थात् वह जीवनिश्चित मुक्ति का पात्र होता है।

प्रश्न 1 . **सम्यक् दर्शन किसे कहते हैं ?**
उत्तर . देव–शास्त्र गुरू के प्रति निश्चल श्रद्धा को "**सम्यक् दर्शन**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . **सम्यक् दर्शन का कमल कहाँ खिलता है ?**
उत्तर . "**श्रद्धा के सागर**" में ही सम्यक् दर्शन का कमल खिलता है।

प्रश्न 3 . **श्रद्धा किसे कहते है ?**
उत्तर . संशय रहित देव–शास्त्र गुरू के प्रति तीव्र आस्था एवं पूर्ण समर्पण को "**श्रद्धा**" कहते हैं।

प्रश्न 4 . **सम्यक् दर्शन को श्वेत कमल क्यों कहा गया है ?**
उत्तर . श्वेत कमल किसी विशेष सरोवर में कदाचित् ही पाये जाते हैं। उसी प्रकार सम्यक् दर्शन किसी विशेष जीव में कदाचित् ही उत्पन्न होता है। इसलिये सम्यक्–दर्शन को श्वेत कमल कहा।

प्रश्न 5 . **सम्यक् दृष्टि क्या विचार करता है ?**
उत्तर . सम्यक् दृष्टि विचार करता है कि विषय–कषाय के कीचड़ में सुख नहीं बल्कि आत्मा में सुख का निर्मल जल बहता है। अतः विषयों में नहीं आत्मा में वास करना चाहिये।

प्रश्न 6 . सम्यक् दर्शन होने के उपरान्त क्या होता है ?

उत्तर . सम्यक् दर्शन होने के उपरान्त निज आत्मा ही प्रतीति अर्थात श्रद्धान होता है।

प्रश्न 7 . निज आत्मा की प्रतीति किसे होती है ?

उत्तर . जो सम्यक् दर्शन के आठ अंगों को धारण करता है उसे निज आत्मा में प्रतीति होती है।

प्रश्न 8 . सम्यक् दर्शन के आठ अंग कौन-कौन से है ?

उत्तर .
1. निःशंकित अंग।
2. निःकांक्षित अंग।
3. निर्विचिकित्सा अंग।
4. अमूढ़ दृष्टि अंग।
5. उपगुहन अंग।
6. स्थितिकरण अंग।
7. वात्सल्य अंग
8. प्रभावना अंग।

प्रश्न 9 . निःशंकित अंग किसे कहते है ?

उत्तर . जिनेन्द्र भगवान के वचनों में शंका नहीं करना "निःशंकित अंग" है।

प्रश्न 10 . निःकांक्षित अंग किसे कहते है ?

उत्तर . जिनेन्द्र भगवान के सम्मुख या धर्म धारण कर संसार सम्बन्धी सुखों ही आकांक्षा न करना "निःकांक्षित अंग" है।

प्रश्न 11 . निर्विचिकित्सा अंग किसे कहते है ?

उत्तर . मुनियों के नग्न व गन्दे शरीर को देखकर ग्लानि नहीं करना "निर्विचिकित्सा अंग" है।

प्रश्न 12 . अमूढ़ दृष्टि अंग किसे कहते है ?

उत्तर . देव, धर्म, गुरू व सिद्धान्त मे मूढ़ता का न होना "अमूढ़ दृष्टि अंग" है।

प्रश्न 13 . उपगुहन अंग किसे कहते है ?

उत्तर . निर्मल रत्नत्रय रूप मोक्ष मार्ग की अज्ञानता के द्वारा होने वाली निन्दा से दूर करना अथवा दूसरे के दोष को ढाँकना "उपगुहन अंग" है।

प्रश्न 14 . स्थितिकरण अंग किसे कहते है ?

उत्तर . कर्मोदय के निमित्त से धर्म व चारित्रय से पतित होते हुए जीवों को पुनः उसमें स्थित करना "**स्थितिकरण अंग**" है।

प्रश्न 15 . वात्सल्य किसे कहते है ?

उत्तर . धर्मात्माओं के प्रति निःस्वार्थ प्रीति-भाव रखना "**वात्सल्य अंग**" है।

प्रश्न 16 . प्रभावना अंग किसे कहते है ?

उत्तर . पूजन, विधान, प्रतिष्ठा, रथयात्रा, ज्ञान प्रचार आदि कार्य कर स्वयं के आचरण एवं संस्कार को शुद्ध रखकर जिन धर्म की प्रभावना करना "**प्रभावना अंग**" है।

प्रश्न 17 . सम्यक् दर्शन के कितने भेद है ?

उत्तर . सम्यक् दर्शन के दो भेद है –

1. व्यवहार सम्यक् दर्शन 2. निश्चय सम्यक् दर्शन

प्रश्न 18 . व्यवहार सम्यक् किसे कहते है ?

उत्तर . हिंसादि रहित धर्म, वीतरागता सहित देव एवं गुरू की उपासना, स्याद्वाद अनेकान्तमयी जिनवाणी पर श्रद्धाकरना "व्यवहार सम्यक् दर्शन" है।

प्रश्न 19 . निश्चय सम्यक् किसे कहते है ?

उत्तर . विशुद्ध ज्ञान दर्शन स्वभाव युक्त स्व पर भेद विज्ञान सहित निज आत्मा की अनुभूति करना "निश्चय सम्यक् दर्शन" है।

प्रश्न 20 . उपर्युक्त सम्यक् दर्शन किन्हें होता है ?

उत्तर . व्यवहार सम्यक् दर्शन गृहस्थ एवं मुनियों को होता है तथा निश्चय सम्यक् दर्शन मात्र वीतरागी दिगम्बर मुनिराजों को ही होता है।

प्रश्न 21 . हम सम्यक् दृष्टि हैं या मिथ्या दृष्टि, इस बात की क्या कसौटी है ?

उत्तर . सम्यक् दृष्टि मिथ्या दृष्टि की कसौटी निम्नलिखित है –

1. क्या आप प्रतिदिन देवदर्शन करते हैं। हाँ
2. क्या आप जिनवाणी को झूठा मानते हैं। नहीं

3. क्या आप मुनियों की निन्दा करते हैं। नहीं
4. क्या आप अस्त्र–वस्त्र शस्त्रधारी को देव–गुरू मानते है नहीं
5. क्या आप मुनियों की अर्चना वन्दना करते हैं। हाँ
6. क्या आप मद्य, मॉस, शहद का सेवन करते हैं। नहीं

उपर्युक्त "हॉ" "ना" के गुण आपमें विद्यमान हैं तो आप व्यवहार से सम्यक् दृष्टि हैं, अगर नहीं हैं तो आप मिथ्या दृष्टि हैं।

प्रश्न 22 . आठ अंगों में कौन प्रसिद्ध हुआ ?

उत्तर . निःशंकित अग – अंजन चोर
नि:कांक्षित अंग – अनन्त मति
निर्विचिकित्सा अंग – उद्घायन राजा
अमूढ़ दृष्टि अंग – रेवती रानी
उपगुहन अंग – जिनेन्द्र दत्त सेठ
स्थितिकरण – वारिषेण मुनिराज
स्थितिकरण – विष्णु कुमार मुनिराज
वात्सल्य – विष्णु कुमार मुनिराज
प्रभावना – व्रज कुमार मुनिराज प्रसिद्ध हुए।

प्रश्न 23 . सम्यक् दृष्टि मरकर कहाँ नहीं जाता ?

उत्तर . सम्यक् दृष्टि जीव मरकर नरक, तिर्यन्च, नपुसक, स्त्री, नीच, कुल, अल्पायु, दरिद्री आदि की पर्याय मे नही जाता।

प्रश्न 24 . सम्यक् दर्शन की क्या महिमा है ?

उत्तर . सम्यक् दर्शन को प्राप्त करने वाले जीव के प्रति मुक्ति रूपी लक्ष्मी सहज ही आकर्षित हो जाती है। अर्थात वह नियम से मोक्ष का पात्र होता है।

नास्ति चार्हत्परो देवो धर्मो नास्ति दयापरः।
तपो नास्ति च नैर्ग्रन्थ्यादेतत्यसम्यकत्वलक्षणम्।।

अर्थ– अरहन्त से बढकर देव नहीं है दया से बढकर धर्म नहीं है निर्ग्रन्थता से बढ़कर तप नहीं है ऐसा दृढ़ श्रद्धान ही सम्यकत्व का लक्षण है।

सम्यक् ज्ञान

16

जीवन की मावस को करता, पूर्ण चन्द सम उजियाला।
ज्ञान वही सद्ज्ञान कहाता, जो खोले निज पट ताला।।
पूर्ण ज्ञान बिना मुक्ति न होती, यही ज्ञान की महिमा है।
ज्ञान सह चारित्र होय तो, बढ़ती जीवन गरिमा है।।16।।

अर्थ

जीवन की अमावस्या में पूर्णिमा का सा प्रकाश प्रदान करने वाला एवं हृदय कपाट खोलने वाला ज्ञान ही सम्यक् ज्ञान कहलाता है। ज्ञान के साथ चरित्र होता है तब ज्ञान गरिमा बढ जाती है और वही ज्ञान पूर्ण ज्ञान अर्थात् केवल्य ज्ञान हो जाता है। यही ज्ञान की महिमा है।

प्रश्न 1 . **सम्यक् ज्ञान किसे कहते हैं ?**

उत्तर . संशय, विपर्यय एवं अन्ध्यवसाय से रहित ज्ञान को "**सम्यक् ज्ञान**" कहते है।

प्रश्न 2 . **संशय किसे कहते है ?**

उत्तर . वस्तु के यथार्थ स्वरूप में सन्देह को "**संशय**" कहते है।
जैसे – 1. त्याग करने से मोक्ष होगा कि नहीं।
2. यह नमक है या शक्कर

प्रश्न 3 . **विपर्यय किसे कहंते है ?**

उत्तर . विपरीत ज्ञान को "**विपर्यय**" कहते हैं।
जैसे – नमक को शक्कर जानना।

प्रश्न 4 . **अनध्यवसाय किसे कहते है ?**

उत्तर . "**यह क्या है**" ऐसे प्रतिभास को "**अनध्यवसाय**" कहते हैं। जैसे – रास्ते में चलते पैरों में कुछ चुभ जाये तो यह क्या चुभा "**काँटा या काँच**" इत्यादि।

प्रश्न 5 . सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति कब होती है ?

उत्तर . सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति सम्यक् दर्शन के साथ होती है।

प्रश्न 6 . सम्यक् ज्ञान क्या करता है ?

उत्तर . सम्यक् ज्ञान जीवन के अन्धकार में पूर्णिमा–सा दिव्य प्रकाश प्रदान करता है और हृदय के बन्द द्वार खोलता है। अर्थात् वैराग्य उत्पन्न कराता है।

प्रश्न 7 . सम्यक् ज्ञान प्राप्त करने के लिये हमें क्या करना चाहिये है ?

उत्तर . सम्यक् ज्ञान प्राप्त करने के लिये हमें अनुयोगों का अध्ययन करना चाहिये।

प्रश्न 8 . अनुयोग किसे कहते है ?

उत्तर . जितेन्द्र देव की वाणी के द्वादशांग रूप संकलन को "अनुयोग" कहते हैं।

प्रश्न 9 . जिनेन्द्र देव की वाणी को कितने भागों में विभक्त किया गया है ?

उत्तर . जिनेन्द्र देव की वाणी को सामान्य रूप से चार भागों में विभक्त किया गया है –

1. प्रथमानुयोग
2. करणानुयोग
3. चरणानुयोग
4. द्रव्यानुयोग

प्रश्न 10 . प्रथमानुयोग किसे कहते है ?

उत्तर . धर्म की प्रारम्भिक शिक्षा अर्थात् जिस ग्रन्थ में श्रेष्ठ शलाका पुरूषों के चरित्र का वर्णन मिलता है। उसे 'प्रथमानुयोग" कहते है।

जैसे - महापुरूष, पद्मपुराण, पाण्डव पुराण, प्रद्युम्न चरित्र आदि।

प्रश्न 11 . 63 शलाका पुरूष कौन-कौन से है ?

उत्तर . 24 तीर्थकर, 12 चक्रवर्ती, 9 नारायण, 9 प्रतिनारायण, 9 बलभद्र 24 शलाका पुरूष हैं।

प्रश्न 12 . प्रथमानुयोग पढ़ने से क्या लाभ है ?

उत्तर . प्रथमानुयोग पढ़ने से समता का जागरण होता है। मन की

शुद्धि होती है। संसार शरीर, भोगों से विरक्ति होती है और समाधि ग्रहण करने का भाव उत्पन्न होता है।

प्रश्न 13 . करणानुयोग किसे कहते है ?

उत्तर . जिस ग्रन्थ में लोक–अलोक, काल परिवर्तन गणित, गुण स्थान आदि का वर्णन हो उसे "**करणानुयोग**" कहते हैं। जैसे – तिलोय पण्णत्रि, षटखण्डागम, गोमटसार, क्षपणासार आदि।

प्रश्न 14 . चरणानुयोग किसे कहते है ?

उत्तर . जिस ग्रन्थ में मोक्ष मार्ग के अनुरूप श्रावकों के एवं मुनियों के चरित्र का वर्णन हो उसे "**चरणानुयोग**" कहते हैं।

प्रश्न 15 . द्रव्यानुयोग किसे कहते है ?

उत्तर . जिस ग्रन्थ में जीवों के यथार्थ स्वरूप का, तत्वों का, पदार्थो का, आत्मा का वर्णन हो उसे "द्रव्यानुयोग" कहते हैं।
जैस - द्रव्य–संग्रह, परमात्म–प्रकाश, समयसार आदि।

प्रश्न 16 . गृहस्थों को सर्वप्रथम किस अनुयोग का अध्ययन करना चाहिए ?

उत्तर . गृहस्थों को सर्वप्रथम जीवन, सुधारने प्रथमानुयोग एवं चरणानुयोग का अध्ययन करना चाहिए।

प्रश्न 17 . ज्ञान की महिमा किससे बढ़ती है ?

उत्तर . ज्ञान की महिमा चारित्र से बढ़ती है।

प्रश्न 18 . कौन सा ज्ञान क्या प्रदान करता है ?

उत्तर . अल्प सम्यक् ज्ञान चारित्र प्रदान करता है एवं एक पूर्ण सम्यक ज्ञान मुक्ति प्रदान करता है।

प्रश्न 19 . पूर्ण सम्यक् ज्ञान किसे कहते है ?

उत्तर . पूर्ण सम्यक् "केवल ज्ञान" को कहते हैं।

प्रश्न 20 . पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति कब होती है ?

उत्तर . महाव्रत रूप सम्यक् चारित्र ग्रहण करने के बाद ही पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति होती है।

सम्यक् चारित्र

17

रूक जाता आश्रव कर्मों का, जो ले लेता है चारित्र।
धुल जाता है कर्म मैल, और हो जाता जीवन पवित्र।।
धन खोया कुछ ना खोया, पर स्वास्थ्य खोया कुछ खोया है।
खोया गर चारित्र यहाँ तो, कई जन्मों तक रोया है।17।।

अर्थ

जो व्यक्ति सम्यक्–चारित्र को ग्रहण कर लेता है उसके कर्मो का आश्रव रूक जाता है। कर्म मैल धुल जाता है और जीवन पवित्र हो जाता है। इस ससार मे रहकर अगर धन खोया तो कुछ भी नही खोया, अगर स्वास्थ्य खोया तो कुछ खोया है और कही चारित्र खो दिया तो सब कुछ खो दिया, ऐसा समझना चाहिये क्योंकि चारित्र खोने वाला कई जन्मों तक रोता है अर्थात दु:ख को सहन करना पड़ता है।

प्रश्न 1 . सम्यक् चारित्र किसे कहते हैं ?

उत्तर . अंतरंग और बहिरंग क्रिया के निरोध से उत्पन्न आत्मा की शुद्धि विशेष को "**सम्यक् चारित्र**" कहते हैं।

अथवा

पाँच पापों से विरक्ति तथा मोक्ष मार्ग के अनुरूप आचरण को "**सम्यक् चारित्र**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . सम्यक् चारित्र ग्रहण करने से क्या होता है ?

उत्तर . सम्यक् चारित्र ग्रहण करने से कर्मो का आश्रव रूकता है। समस्त कर्म मैल धुल जाता है और जीवन पवित्र होता है।

प्रश्न 3 . सम्यक् चारित्र के कितने भेद हैं ?

उत्तर . सम्यक् चारित्र के दो भेद हैं –

1. देश चारित्र
2. सकल चारित्र

प्रश्न 4 . देश चारित्र किसे कहते है ?

उत्तर . श्रावक के व्रतों को "**देश चारित्र**" कहते हैं।

प्रश्न 5 . व्रत किसे कहते है ?

उत्तर . आत्म कल्याणार्थ लिये गये संकल्प को "व्रत" कहते हैं।

प्रश्न 6 . व्रत कितने व कौन-कौन से हैं ?

उत्तर . व्रत 12 होते हैं –

5 अणुव्रत, 3 गुणव्रत, 4 शिक्षाव्रत।

प्रश्न 7 . अणुव्रत किसे कहते हैं ?

उत्तर . पाँच पापों का एकदेश त्याग करना "**अणुव्रत**" है।

प्रश्न 8 . अणुव्रत कितने व कौन-कौन से हैं ?

उत्तर . अणुव्रत **पाँच** होते हैं –

1. अहिंसाणुव्रत 2. सत्याणुव्रत 3. अचौर्याणुव्रत
4. ब्रह्मचर्याणुव्रत 5. अपरिग्रहाणुव्रत।

प्रश्न 9 . अहिंसाणुव्रत किसे कहते है ?

उत्तर . मन–वचन–काय से संकल्पपूर्वक त्रस जीवों का घात न करना, न कराना न करने वाले को अच्छा कहना "**अहिंसाणुव्रत**" है।

प्रश्न 10 . सत्याणुव्रत किसे कहते है ?

उत्तर . स्थूल रूप से झूठ नहीं बोलना तथा ऐसा सत्य भी नहीं बोलना जिससे किसी के प्राण संकट में पड जायें उसे "**सत्याणुव्रत**" कहते हैं।

प्रश्न 11 . अचौर्याणुव्रत किसे कहते है ?

उत्तर किसी की रखी हुई, पड़ी हुई, भूली हुई वस्तु को बिना आज्ञा के न लेना "**अचौर्याणुव्रत**" है।

प्रश्न 12 . ब्रह्मचर्याणुव्रत किसे कहते है ?

उत्तर . अपनी विवाहित स्त्री को छोड़कर या स्त्री मात्र का त्याग करना "**ब्रह्मचर्याणुव्रत**" है।

प्रश्न 13 . अपरिग्रहाणुव्रत किसे कहते है ?

उत्तर . आवश्यक सामग्री की मर्यादा बनाकर सभी वस्तुओं का त्याग करना "**अपरिग्रहाणुव्रत**" है।

प्रश्न 14 . गुण व्रत किसे कहते है ?

उत्तर . जो अणुव्रतों के गुणों को बढ़ाये उसे "**गुणव्रत**" कहते हैं।

प्रश्न 15 . गुणव्रत कितने व कौन-कौन से है ?

उत्तर . गुणव्रत **तीन** होते हैं –

1. दिग्व्रत 2. देशव्रत 3. अनर्थदण्डव्रत।

प्रश्न 16 . दिग्व्रत किसे कहते हैं ?

उत्तर . पापों से बचने के लिए जीवन पर्यन्त दशों दिशाओं को मर्यादा बना लेना "**दिग्व्रत**" है।

प्रश्न 17 . देशव्रत किसे कहते हैं ?

उत्तर . दिग्व्रत में की गयी मर्यादा को और मर्यादित कर लेना "**देशव्रत**" है।

प्रश्न 18 . अनर्थ दण्डव्रत किसे कहते हैं ?

उत्तर . बिना प्रयोजन जिन कार्यों से पाप का बन्ध होता है। उन कार्यों का त्याग करना "**अनर्थ दण्डव्रत**" है।

प्रश्न 19 . अनर्थ दण्ड कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर . अनर्थ दण्ड "**तीन**" प्रकार का होता है –

1. मनोगत–मन में उपकार रहित खोटे विचारों का उत्पन्न होना।
2. वचनगत–वाणी से व्यर्थ का प्रलाप करना।
3. कायगत–काय की अप्रयोजनीय कुचेष्ठा करना। इन तीनों से बचना ही अनर्थ दण्डव्रत है।

प्रश्न 20 . शिक्षाव्रत किसे कहते है ?

उत्तर . जो व्रत मुनिव्रत धारण करने की शिक्षा देता है। उसे "**शिक्षाव्रत**" कहते है।

प्रश्न 21 . शिक्षाव्रत कितने व कौन-कौन से हैं ?

उत्तर . शिक्षाव्रत **चार** हैं –

1. सामायिक 2. प्रोषधोपवास
3. भोगोपभोग परिमाण 4. अतिथि संविभाग (वैय्यावृत्य)

प्रश्न 22 . सामायिक शिक्षाव्रत किसे कहते है ?

उत्तर . समस्त पाप कार्यों का मन–वचन–काय, कृत–कारित–अनुमोदना से त्याग करके निश्चित समय तक समता भाव रखना "**समायिक शिक्षाव्रत**" है।

प्रश्न 23 . प्रौषधोपवास शिक्षाव्रत किसे कहते हैं ?

उत्तर . प्रत्येक अष्टमी चतुर्दशी को उपवास एवं प्रत्येक सप्तमी, नवमी एवं तेरस, पूनम या अमावस को एकासन करना "**प्रौषधोपवास शिक्षाव्रत**" है।

प्रश्न 24 . भोगोपभोग परिमाण शिक्षाव्रत किसे कहते है ?

उत्तर . भोजन, वस्त्राभूषण आदि दैनिक भोगोपभोग सामग्री का परिमाण करके शेष का जीवनपर्यन्त के लिए त्याग कर देना "**भोगोपभोग परिमाण शिक्षाव्रत**" है।

प्रश्न 25 . भोग किसे कहते है ?

उत्तर जो एक बार भोगने मे आये उसे "**भोग**" कहते हैं।
जैसे - भोजन, पानी आदि।

प्रश्न 26 . उपभोग किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो बार–बार भोगने में आये उसे "**उपभोग**" कहते हैं।
जैसे - पेन, गाडी, घड़ी, वस्त्र आदि।

प्रश्न 27 . अतिथि संविभाग (वैय्यावृत्य) किसे कहते हैं ?

उत्तर . स्व पर धर्म के लिये उपकार, यश की इच्छा से रहित होकर शक्त्यानुसार चतुर्विध संघ को दान देना, गुणों में प्रेम रखना "**अतिथि संविभाग**" (वैय्यावृत्य) व्रत है।

प्रश्न 28 . बारह व्रतों का पालन करने वाला किस स्वर्ग तक जा सकता है ?

उत्तर . बारह व्रतों का निरतिचार पालन करने वाला "**सोलहवें स्वर्ग**" तक जा सकता है।

प्रश्न 29 . सकल चारित्र किसे कहते है ?

उत्तर . मुनियों के व्रतों को "**सकल चारित्र**" कहते हैं।

प्रश्न 30 . सकल चारित्र का पालन करने वाला कहाँ तक जा सकता है ?

उत्तर . सकल व्रतों का पालन करने वाला अगर भव का क्षय नहीं हुआ तो सर्वार्थ सिद्धि तक और भव का क्षय हो गया हो तो उसी भव में मोक्ष जा सकता है।

प्रश्न 31 . किस सम्पदा को खोने वाला कितने समय तक रोता है ?

उत्तर . धन–सम्पदा को खोने वाला तत्क्षण रोता है। स्वास्थ्य सम्पदा को खोने वाला मरणपर्यन्त या जब तक स्वास्थ्य ठीक न हो तब तक रोता है और चारित्ररूपी सम्पदा को खोने वाला जन्मों–जन्मों तक रोता है अर्थात दुःखित होता है।

चन्द्र बिना जिस रैन न सोहत
पद्म समुह बिना सर जैसे
पण्डित लोक विहीन सभा नहीं
सोहत दन्त बिना गज वैसे
गंध बिना जिमि पुष्प न सोहत
स्वामी बिना विधवा तिय तैसे
पण्डित शास्त्र विपन्न मुनिश्वर
चारित्र हीन न सोहत ऐसे

ऊँचे गिरी से जो गिरे मरे एकहि बार
जो चारित्र गिरी गिरे बिगडे जनम हजार।

कषाय

18

प्रीति विनय का नाश करे, वह क्रोध मान भुजंग है।
मैत्री को जो नष्ट करें, वह माया गिरगिट रंग है।।
त्याग तपस्या जीवन भर की, करती लोभ समाप्त है।
इन चारों से मुक्त हुआ, वह बनता पूज्य आप्त है।18।।

अर्थ

प्रीति का नाश करने वाला क्रोध एव विनय का नाश करने वाला मान भुजंग (सर्प) के समान है। मैत्री कोनष्ट करने वाली कषाय माया है यह प्रतिक्षण गिरगिट के समान अपना रंग बदलती है। जीवन भर की त्याग–तपस्या को लोभ समाप्त करता है जो प्राणी इन कषायों से मुक्त होता है, वह शीघ्र ही आदरणीय पूज्य भगवान बनता है।

प्रश्न 1 . कषाय किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो आत्मा के सद्‌गुणों का नाश करे और दुःख दे उसे "**कषाय**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . कषाय कितनी होती है ?

उत्तर . कषाय चार होती हैं–

1. क्रोध 2. मान
3. माया 4. लोभ।

प्रश्न 3 . क्रोध किसे कहते हैं ?

उत्तर . गुस्सा करने को "**क्रोध**" कहते हैं।

प्रश्न 4 . मान किसे कहते है ?

उत्तर . घमण्ड करने को "**मान**" कहते हैं।

प्रश्न 5 . माया किसे कहते है ?

उत्तर . छल, कपट को "**माया**" कहते हैं।

प्रश्न 6 . लोभ किसे कहते हैं ?

उत्तर . लालच करने को "**लोभ**" कहते हैं।

प्रश्न 7 . कौन-सी कषाय किस गुण का नाश करती हैं ?

उत्तर . क्रोध – प्रीति का नाश करता है।

मान – विनय का नाश करता है।

माया – मैत्री का नाश करती है।

लोभ – त्याग–तपस्या का नाश करता है।

प्रश्न 8 . प्रीति किसे कहते हैं ?

उत्तर . निःस्वार्थ आपसी प्रेम को "**प्रीति**" कहते हैं।

प्रश्न 9 . विनय किसे कहते है ?

उत्तर . पर जीवों के प्रति सम्मान को "**विनय**" कहते हैं

प्रश्न 10 . मैत्री किसे कहते है ?

उत्तर . पर जीवों को कष्ट न हो इस प्रकार के अभिप्राय को "**मैत्री**" कहते हैं।

प्रश्न 11 . त्याग-तपस्या किसे कहते है ?

उत्तर . वस्तु के ग्रहण का भाव न होना "**त्याग**" है और आत्म जागरण हेतु साधना करना "**तपस्या**" है।

प्रश्न 12 . चार कषाय को छोड़ने वाला क्या बनता है ?

उत्तर . चार कषाय को छोडने वाला भगवान बनता है।

वैरं विवर्धयति सख्यमपा करोति।
रूपं विरूपयति निन्द्यमति तनोति।।
दौर्भाग्यमानयति शातयते च कीर्तिं।
लोकेऽत्र रोष सदृशो नहि शत्रुरस्ति।।

अर्थ– क्रोध वैर को बढता है, मित्रता को दूर करता है, अनुकूल को प्रतिकूल करता है, निन्दा बुद्धि को विस्तृत करता है, दौर्भाग्य को लाता है, और कीर्ति को नष्ट करता है अतः इस जगत में क्रोध के समान कोइ शत्रु नहीं है।

अहिंसा

19

एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक, जग में जितने प्राणी हैं।
सबको निज सम मान अरे नर, यही अहिंसा वाणी है।।
तन-धन से सेवा करना, और प्रिय वचन का बरसाना।
मन में राग द्वेष न करके, धर्म अहिंसा को पाना।19।।

अर्थ

एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक ससार मे जितने भी प्राणी हैं, उन सभी प्राणियो को अपने समान प्राणधारी मानकर नवकोटि से घात नही करना अहिसा है। जो जीव तन–धन से प्राणियों की सेवा करता है, प्रिय वचन कहता है मन में राग–द्वेष नहीं करता है, वही अहिंसा धर्म को प्राप्त करता है।

प्रश्न 1 . अहिंसा किसे कहते हैं ?

उत्तर . एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के जीवों को अपने समान प्राणधारी मानकर नव–कोटि से घात नहीं करना "**अहिंसा**" है।

प्रश्न 2 . संसार में कितने प्रकार के जीव हैं ?

उत्तर . संरार मे **छः** प्रकार के जीव हैं –

1. पृथ्वी कायिक 2. जल कायिक
3. अग्नि कायिक 4. वायु कायिक
5. वनस्पति कायिक 6. त्रय कायिक

प्रश्न 3 . पृथ्वी कायिक जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर . पृथ्वी ही जिसका शरीर है। उसे "**पृथ्वीकायिक**" जीव कहते हैं। **जैसे** - मिट्टी, बालू, पत्थर, लोहा, अभ्रक, सोना, चॉदी आदि।

प्रश्न 4 . जल कायिक जीव किसे कहते है ?

उत्तर . जल ही जिनका शरीर हो उसे "**जल कायिक**" जीव कहते हैं। **जैसे** - पानी, ओस, तुषार, ओला आदि।

प्रश्न 5 . अग्निकायिक किसे कहते है ?

उत्तर . अग्नि ही जिनका शरीर है उसे "**अग्निकायिक**" जीव कहते हैं। **जैसे** - ज्वाला, बड़वानल, चिंगारी, बिजली आदि।

प्रश्न 6 . वायु कायिक जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर . वायु ही जिनका शरीर है उसे "**वायुकायिक**" जीव कहते हैं।
जैसे - हवा, तूफान आदि।

प्रश्न 7 . वनस्पतिकायिक जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर . वनस्पति ही जिनका शरीर है उसे "**वनस्पतिकायिक**" जीव कहते हैं।
जैसे- वृक्ष, पौधे, लता, घास आदि।

प्रश्न 8 . त्रसकायिक जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर . त्रस नाम कर्म के उदय से दो इन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के जीवों को "**त्रसकायिक**" जीव कहते हैं।

प्रश्न 9 . नव कोटि किसे कहते है ?

उत्तर . मन–वचन–काय, कृत–कारित–अनुमोदना और समरंभ–समारंभ–आरंभ को "**नवकोटि**" कहते हैं।

प्रश्न 10 . मन-वचन-काय किसे कहते है ?

उत्तर . मन – अच्छे–बुरे विचार करने की शक्ति को "**मन**" कहते हैं।
वचन – मुख से निकली ध्वनि को "**वचन**" कहते हैं।
काय – शरीर को "**काय**" कहते हैं।

प्रश्न 11 . कृत-कारित अनुमोदना किसे कहते है ?

उत्तर . कृत – स्वयं कार्य करना "**कृत**" है।
कारित – दूसरों से कार्य करना "**कारित**" है।
अनुमोदना – दूसरों के द्वारा किये गये कार्य की प्रशंसा करना "**अनुमोदना**" है।

प्रश्न 12 . समरंभ-समारंभ-आरंभ किसे कहते है ?

उत्तर . समरंभ – मन में विचार करने को "**समरंभ**" कहते हैं।
समारंभ – कार्य हेतु सामग्री जुटाने को "**समारंभ**" कहते हैं।
आरंभ – कार्य प्रारम्भ करने को "**आरंभ**" कहते हैं।

प्रश्न 13 . गृहस्थ कौन सी हिंसा का त्यागी होता है ?

उत्तर . गृहस्थ त्रस जीवों की हिंसा का त्यागी होता है।

प्रश्न 14 . हिंसा कितने प्रकार ही होती है ?

उत्तर . हिंसा **चार** प्रकार की होती है –

1. आरंभी 2. उद्योगी

3. संकल्पी 4. विरोधी

प्रश्न 15 . आरंभी हिंसा किसे कहते है ?

उत्तर . भोजन आदि बनाने में घर की सफाई आदि करते समय घरेलू कार्य में होने वाली हिंसा को "**आरंभी हिंसा**" कहते है।

जैसे - झाड़ू लगाना, भोजना बनाना, पानी खीचना आदि।

प्रश्न 16 . उद्योगी हिंसा किसे कहते हैं ?

उत्तर धन कमाने हेतु व्यापार आदि में होने वाली हिंसा को "**उद्योगी हिंसा**" कहते हैं।

जैसे - तेल मिल, आटा मिल आदि में होने वाली हिंसा।

प्रश्न 17 . संकल्पी हिंसा किसे कहते हैं ?

उत्तर . बिना किसी उद्देश्य से संकल्प एव प्रमादपूर्वक की जाने वाली हिसा "**संकल्पी हिंसा**" है।

जैसे - तेरे को जिन्दा नहीं छोडूगा, शिकार करना, लक्ष्य बनाकर किसी की हत्या करना, आत्महत्या करना आदि।

प्रश्न 18 . विरोधी हिंसा किसे कहते हैं ?

उत्तर अपनी एवं अपने आश्रितों को व देश की रक्षा के लिए युद्धादि में होने वाली हिसा को "**विरोधी हिंसा**" कहते है।

प्रश्न 19 . गृहस्थ कौन सी हिंसा का त्यागी होता है ?

उत्तर . गृहथि सकल्पी हिंसा का पूर्णतया, उद्योगी एवं आरम्भी हिंसा का ज्ञात प्रमाद पूर्वक त्यागी होता है। रक्षार्थ विरोधी हिंसा का त्यागी नहीं होता है।

प्रश्न 20 . अहिंसा धर्म को कैसे प्राप्त किया जा सकता है ?

उत्तर तन और धन से प्राणियों की सेवा व रक्षा करके, अपने वचन से प्रेमपूर्ण वचन कहकर तथा तन से समस्त जीवों के प्रति राग–द्वेष का अभाव करके अहिंसा धर्म को प्राप्त किया जा सकता है।

सत्य

20

कटुता हिंसा बैर घृणा की, जलती ना है जहाँ अगन।
हित-मित-प्रिय वाणी का कहना, कहलाता है सत्य वचन।।
भीतर-बाहर एक वचन की, बहती जहाँ सरिता है।
सुखमय पावन निर्मल जीवन, उसका सदा ही बीता है।20।।

अर्थ

जहाँ कटुता, हिंसा, वैर, घृणा की अग्नि न जलती हो ऐसी हित–मित–वाणी का कहना सत्य वचनकहलाता है। जिनके मुख व मन की एक सी सरिता बहती है। उसी का जीवन सुखमय, पावन व निर्मलव्यतीत होता है।

प्रश्न 1 . सत्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . जहाँ कटुता, हिंसा, वैर, घृणा की अग्नि न भडकती हो एसी हित–मित–प्रिय वाणी का कहना "**सत्य**" है।

प्रश्न 2 . सत्य कितने प्रकार का होता हैं ?

उत्तर . सत्य **दस** प्रकार का होता हैं –

1. जनपद सत्य 2.स्थापना सत्य
3. सम्मति सत्य 4.नाम सत्य
5. व्यवहार सत्य 6. प्रतीति सत्य
7. रूप सत्य 8. संभावना सत्य
9. भाव सत्य 10. उपमा सत्य

प्रश्न 3 . जनपद सत्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . देश के अनुसार वस्तु को भिन्न–भिन्न नामों से पुकारना, "**जनपद सत्य**" है।

जैसे - चावल को मध्यप्रदेश में चावल कहना। बागड़ प्रान्त में चोखा कहना, तमिल प्रान्त में सादम कहना इत्यादि

प्रश्न 4 . स्थापना सत्य किसे कहते है ?

उत्तर . पाषाण की प्रतिमा को उस रूप ही मानना "**स्थापना सत्य**" है।
जैसे - चन्द्रप्रभु की प्रतिमा को चन्द्रप्रभु ही कहना इत्यादि।

प्रश्न 5 . सम्मति सत्य किसे कहते है ?

उत्तर . स्वर्ग की स्त्रियों को देवी कहना एवं सामान्य स्त्रियों को भी देवी कहना "**सम्मति सत्य**" है।

प्रश्न 6 . नाम सत्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . गुण न होने पर भी उसे उस नाम से पुकारना "**नाम सत्य**" है।
जैसे - क्रोधी को शान्तिप्रसाद कहना

प्रश्न 7 . रूप सत्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . काले सफेद रंग की प्रधानता से वस्तु का कथन करना "**रूप सत्य**" है।
जैसे - काले बच्चे को कालिया कहना।

प्रश्न 8 . प्रतीति सत्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . अपेक्षाकृत छोट–बडे का भेद करना "**प्रतीति सत्य**" है।
जैसे - प्रखर से प्रणव चार साल बडा है।

प्रश्न 9 . व्यवहार सत्य किसे कहते है ?

उत्तर . नयों की प्रधानता से वस्तु का कथन करना "**व्यवहार सत्य**" है।

प्रश्न 10 . संभावना किसे कहते है ?

उत्तर . इन्द्र में जम्बूद्वीप पलटने की शक्ति है। मैं कल तक पहुँच जाऊँगा "**संभावना सत्य**" है।

प्रश्न 11 . भाव सत्य किसे कहते है ?

उत्तर . आगमोक्त विधि–निषेध के अनुसार अतीन्द्रिय पदार्थ में संकल्पित परिणामों को "**भाव सत्य**" कहते हैं।

जैसे - छिन्न–भिन्न फल प्रासुक है। पानी में लौंग डालने से पानी प्रासुक हो जाता है। इत्यादि।

प्रश्न 12 . उपमा सत्य किसे कहते है ?

उत्तर . प्रसिद्ध सादृश्य पदार्थ का कथन करना "**उपमा सत्य**" है। **जैसे** – इसका चेहरा चन्द्रमा के समान है। इसकी बोली गधे के समान है।

प्रश्न 13 . सुखमय जीवन किसका व्यतीत होता है ?

उत्तर . जिनके मन और मुख की एक सी धारा होती है। उसी का जीवन सुखमय निर्मल व पावन व्यतीत होता है।

सत्येन कीर्तिरमला विमला च लक्ष्मी,
विद्या विलास सुयशो भुवने प्रसिद्धि।।
संप्राप्यते बुध जनैर्जनमान्यत च,
तस्मात्सदानृतवचः प्रहरन्तु सन्तः।।

अर्थ-- सत्य से निर्मल कीर्ति, उज्ज्वल लक्ष्मी विद्या विलास सुयश ससार में प्रसिद्धि और विद्वत्‌जनों के द्वारा मान्यता प्राप्त होती है अतः सद्पुरूष सदा असत्य वचन का त्याग करते है।

सत्य का स्थान हृदय है मुख नहीं, सत्य आत्मोन्नति की परम खुराक है, सत्य जीवन का शृंगार है सत्य वक्ता देव के समान पूज्य गुरू के समान मान्य व दानी के समान यशस्वी होता है।

साँच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप
जाके हृदय साँच है ताके हृदय आप

अस्तेय

21

जिस पर हो अधिकार तुम्हारा, उसको लेना कहा उचित।
न्याय नीति बिन बेईमानी से, पर धन लेना है अनुचित।।
भर न सको गर घाव किसी का, मत खोदो फिर उसका वृण।
भय देकर स्तेन कर्म कर, न लेना धन वैभव स्वर्ण21।।

अर्थ

जिस धन पर स्वयं का अधिकार हो उस धन को लेना उचित है, जिस धन पर अधिकार न हो धन को न्याय नीति के बिना लेना अनुचित है। अगर हम किसी के घाव को नहीं भर सकते तो उसके घाव को खोदने का कोई अधिकार नही है अर्थात् हम किसी का भला नही कर सकते, दान नही कर सकते तो उसके धन की चोरी करने का भी कोई अधिकार नही है, इसलिए किसी को भयभीत करके या चोरी करके धन, वैभव स्वर्ण आदि नही लेना चाहिये।

प्रश्न 1 . अस्तेय किसे कहते हैं ?

उत्तर . न्याय नीति के बिना अधिकार रहित वस्तु का ग्रहण नहीं करना "**अस्तेय**" है।

प्रश्न 2 . व्यक्ति अस्तेय धर्म से कितने कारणों से विचलित होता हैं?

उत्तर . चार कारणो से विचलित होता है –

1. लोभ के कारण
2. अभाव के कारण
3. कुसस्कारों के कारण
4. परिस्थिति के कारण

प्रश्न 3 . लोभ के कारण अस्तेय धर्म से विचलित क्यों हो जाता हैं ?

उत्तर . जब व्यक्ति पर लोभ का भूत सवार होता है, तब वह बेईमानी से लूटकर, हत्या कर, दुश्मनी मोल लेकर, कानून के विरूद्ध चलकर अस्तेय धर्म से विचलित होता है।

प्रश्न 4 . अभाव के कारण अस्तेय धर्म से विचलित क्यों हो जाता है?

उत्तर . जब व्यक्ति के पास धन नहीं होता है तब वह अपने व परिवार का पेट पालने के लिये धन के अभाव में अपनी इज्जत बचाने के लिए व्यक्ति अस्तेय धर्म से विचलित हो जाता है।

प्रश्न 5 . कुसंस्कारों के कारण अस्तेय धर्म से विचलित क्यों हो जाता है ?

उत्तर . घर के आस–पड़ोस के दुर्जनों के खोटे मित्रों के कारण बुरे संस्कार पड़ जाते है और व्यक्ति अकर्मण्य हो जाता है तथा दूसरों को दुःख देने लगता है। इस कारण व्यक्ति अस्तेय धर्म से विचलित हो जाता है।

प्रश्न 6 . परिस्थिति के कारण अस्तेय धर्म से विचलित क्यों हो जाता हैं ?

उत्तर . 1. कोई सरकारी नौकरी करता है बडे अधिकारी उससे धन मॉगते हैं, तब वह व्यक्ति उसे खुश करके हल्के किस्म के माल का प्रयोग कर धन बचाता है यह परिस्थिति है।

2. किसी बच्चे का चोर हरण करके जब उसके माता–पिता से धन माँगते हैं और व्यक्ति पडोसी और रिश्तेदारों से धन मॉगता है पर धन की प्राप्ति न हो सकने की दशा में मजबूरन उसे चोरी करनी पडती है। यह परिस्थति अस्तेय धर्म से विचलित होना हुआ।

प्रश्न 7 . व्यक्ति को क्या नहीं करना चाहिये ?

उत्तर . व्यक्ति को भय देकर धन, वैभव व स्वर्ण नहीं लेना चाहिये।

प्रश्न 8 . व्यक्ति को किसका अधिकार नहीं हैं ?

उत्तर . अगर वह किसी का घाव ठीक नहीं कर सकता है तो उसके घाव को खोदने (बढ़ाने का) अधिकार भी नहीं है अर्थात दे नहीं सकते तो लेने का अधिकार भी नहीं है।

चौर्यार्जिताद् धनाद् दूरं निःस्वतैव नृणावरम्।
तक्रपानं च किं चारू सक्ष्वेऽक्षीरपानतः।।

अर्थ– चोरी से उपार्जित धन की अपेक्षा दीर्घ काल तक रहने वाली दरिद्रता ही मनुष्यों के लिए श्रेयस्कर है विष सहित दूध पीने की अपेक्षा क्या छाछ का पीना अच्छा नहीं है।

ब्रह्मचर्य

22

स्वर्ग वधु सम पर नारी लख, जो न होता कामासक्त।
माता, भगिनी, पुत्री मानकर, पर नारी से होय विरक्त।।
ब्रह्मचर्य जो पालन करता, शक्ति मिलती दिव्य विराट।
आत्म ओज का उद्भव होता, बन जाता है शिव सम्राट।22।।

अर्थ

स्वर्ग वधु के समान अर्थात देवांगनाओ के समान सुन्दर स्त्री को देखकर जो कामासक्त नही होता उसे माता, बहन या पुत्री मानकर उससे विरक्त होता है। तब ब्रह्मचर्य व्रत पालन करने से दिव्य शक्ति प्राप्त होती है। आत्म ओज का जन्म होता है और वह जीव भविष्य में मोक्षगाभी होता है।

प्रश्न 1 . ब्रह्मचर्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . संसार की समस्त स्त्री को माता, बहन, पुत्री मानकर उसका सर्वथा त्याग करना "**ब्रह्मचर्य**" है।

प्रश्न 2 . ब्रह्मचर्य का पालन कितने प्रकार से होता है ?

उत्तर . ब्रह्मचर्य का पालन **पाँच** प्रकार से होता है –

1. स्पर्श इन्द्रिय ब्रह्मचर्य
2. रसना इन्द्रिय ब्रह्मचर्य
3. घ्राण इन्द्रिय ब्रह्मचर्य
4. चक्षु इन्द्रिय ब्रह्मचर्य
5. कर्ण इन्द्रिय ब्रह्मचर्य

प्रश्न 3 . स्पर्श इन्द्रिय ब्रह्मचर्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . स्त्री के साथ शारीरिक सम्बन्ध नहीं बनाता "**स्पर्श इन्द्रिय ब्रह्मचर्य**" है।

प्रश्न 4 . रसना इन्द्रिय ब्रह्मचर्य किसे कहते है ?

उत्तर . मैं इस स्त्री या लड़की के हाथ का ही भोजन करूँगा, मर जाऊँगा। इस प्रकार का कृत्य नहीं करना "**रसना इन्द्रिय ब्रह्मचर्य**" है।

प्रश्न 5 . घ्राण इन्द्रिय ब्रह्मचर्य किसे कहते है ?

उत्तर . स्त्री के द्वारा दिये गये फूल को कामासक्त होकर न सूँघना, न रखना "**घ्राण इन्द्रिय ब्रह्मचर्य**" है।

प्रश्न 6 . चक्षु इन्द्रिय ब्रह्मचर्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . स्त्री को बुरी निगाह से न देखना, ऑखो के इशारे से कामुक चर्या न करना, अश्लील चित्र, नग्न चित्र आदि न देंखना "**चक्षु इन्द्रिय ब्रह्मचर्य**" है।

प्रश्न 7 . कर्ण इन्द्रिय, ब्रह्मचर्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . स्त्री की आवाज को कामासक्त होकर न सुनना, न टेप करना, न अश्लील गीत सुनना "**कर्ण इन्द्रिय ब्रह्मचर्य**" है।

प्रश्न 8 . पाँचों इन्द्रियों के ब्रह्मचर्य में स्थूल व सूक्ष्म ब्रह्मचर्य कौन सा है ?

उत्तर . पॉचों इन्द्रियों के ब्रह्मचर्य में स्पर्श इन्द्रिय ब्रह्मचर्य "**स्थूल ब्रह्मचर्य**" है। एवं चार इन्द्रिय का ब्रह्मचर्य "**सूक्ष्म ब्रह्मचर्य**" है।

प्रश्न 9 . ब्रह्मचर्य पालन करने से क्या होता है ?

उत्तर . ब्रह्मचर्य पालन करने से दिव्य शक्ति प्राप्त होती है। आत्म–तेज प्रकट होता है तथा भविष्य में वह जीव नियम से मोक्ष जाता है।

परस्त्री गमनं नूनं देव द्रव्यस्य भक्षणम्।
निश्चित नरकं यान्ति एततृनाऽत्रा संशयः।।

अर्थ– परस्त्री का सेवन करने से एवं मन्दिर में द्रव्य का भक्षण करने से निश्चित ही नरक गति ही प्राप्ति होती है इसमें किन्चित भी संशय नहीं है।

जब ऊर्जा प्रार्थना से जुड़ती है तब परमात्मा बनाती है।
जब ऊर्जा वासना से जुड़ती है तब पापात्मा बनाती है।

अपरिग्रह

23

धन वैभव का संग्रह करके, खत्म करो न शान्ति को।
सुख कर्ता न असन वसन धन, छोड़ो तुम इस भ्रान्ति को।।
जितनी आवश्यकता होवे, संग्रह उतना ही करना।
बाकी को दुःखकर्ता मानकर, न्याय मार्ग पर सब चलना।।23।।

अर्थ

हे भव्य जीव, धन वैभव का संग्रह करके आत्म शान्ति को समाप्त मत करो। अन्न, वस्त्र, धन आदि सुख कर्ता नहीं है। इसमे सुख मानना भ्रम है। जितनी आवश्यकता है उतना ही सग्रह करना तथा अन्य समस्त वस्तुओ को दुखकर्ता मानकर न्याय मार्ग पर चलना ही अपरिग्रह वृत्ति है क्योंकि परिग्रह अशान्ति का कारण है।

प्रश्न 1 . अपरिग्रह किसे कहते हैं ?
उत्तर . आवश्यकता से अधिक वस्तुओ का संग्रह न करना "**अपरिग्रह**" है।

प्रश्न 2 . व्यक्ति किस भ्रान्ति से वस्तु ओंका संग्रह करता है ?
उत्तर . धन, अन्न वस्त्र वगैरह सुख के देने वाले हैं। इस प्रकार की भ्रान्ति के कारण व्यक्ति वस्तु ओका संग्रह करता है।

प्रश्न 3 . धन की अधिकता किसका कारण है ?
उत्तर धन ही अधिकता अशान्ति एवं दुःख का कारण है।

प्रश्न 4 . परिग्रह कितने प्रकार का होता है ?
उत्तर परिग्रह **दस** प्रकार का होता है –
1. खेत 2. मकान 3. चाँदी 4. सोना 5. धन
6. अन्न 7. नौकर 8. नौकरानी 10. बर्तन।
ये दस प्रकार के परिग्रह है।

प्रश्न 5 . एक गृहस्थ को कितना परिग्रह रखना चाहिये ?
उत्तर . एक गृहस्थ को जीवन में जितना उपयोग में आये उतना ही परिग्रह रखना चाहिये, बाकी का त्याग कर देना चाहिए।

प्रश्न 6 . संसार का सबसे खतरनाक ग्रह कौन सा है ?
उत्तर . लौकिक दृष्टि से संसार का सबसे खतरनाक ग्रह शनि है। जो साढ़े सात वर्ष तक व्यक्ति को दुःख देता है। लेकिन आध्यात्मिक दृष्टि से परिग्रह सबसे खतरनाक ग्रह है। यह व्यक्ति को जीवन भर दुःख देता है और मरणोपरांत सर्प की पर्याय में ले जाता है।

मिथ्यात्व

24

रागी द्वेषी देवों की जो, भक्ति पूजा है करते।
मूक पशु को यज्ञ आदि में, झोंक ढोंग को धर्म समझते।
पंचाग्नि तप को तपते, और देते तन को कष्ट हैं।
है समीप मिथ्या तम उनके, करता जीवन नष्ट है।।24।।

अर्थ

रागी–द्वेषी देवी–देवताओं की भक्ति–पूजा करना, मूक पशुओ की हवन यज्ञ में बलि देना, पंचाग्नि तप तपना, तन को कष्ट देना आदि, ये सब मिथ्यात्व हैं। इससे जीवन को, आत्मा को कष्ट होता है।

प्रश्न 1 . मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उत्तर . राग–द्वेष से भरे हुए देवी–देवताओं की पूजा करना धर्म के नाम पर पशुओं का वध करना "**मिथ्यात्व**" है।

प्रश्न 2 . मिथ्यात्व कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर . मिथ्यात्व **दो** प्रकार का होता है –

1. ग्रहित मिथ्यात्व 2. अग्रहित मिथ्यात्व

प्रश्न 3 . ग्रहित मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उत्तर . परोपदेश के निमित्त से जो देव–शास्त्र–गुरू के प्रति विपरीत मान्यता हो उसे "**ग्रहित मिथ्यात्व**" कहते हैं।

प्रश्न 4 . ग्रहित मिथ्यात्व के कितने भेद हैं ?

उत्तर . ग्रहित मिथ्यात्व के **पाँच** भेद हैं

1. एकान्त मिथ्यात्व 2. विपरीत मिथ्यात्व
3. संशय मिथ्यात्व 4. विनय मिथ्यात्व
5. अज्ञान मिथ्यात्व

प्रश्न 5 . एकान्त मिथ्यात्व किसे कहते है ?

उत्तर . वस्तु में रहने वाले अनेक गुणों को, धर्मों को न मानकर एक ही मानना "**एकान्त मिथ्यात्व**" है।

जैसे - जीव शुद्ध ही है। मैं शिक्षक ही हूँ।

प्रश्न 6 . विपरीत मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उत्तर . धर्म के प्रति उल्टी मान्यता को "**विपरीत मिथ्यात्व**" कहते हैं।

जैसे - परिग्रह सहित भी गुरू होते हैं, स्त्री मोक्ष जा सकती है, पंचम काल में मुनि नहीं होते।

प्रश्न 7 . संशय मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उत्तर . जैन धर्म सच्चा है या झूठा, मुनि बनने से मोक्ष मिलेगा या नहीं इस प्रकार की चलायमान स्थिति को "**संशय मिथ्यात्व**" कहते है।

प्रश्न 8 . विनय मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उत्तर . सब प्रकार के देव गुरू में, सब प्रकार के मतों में समान भाव रखना "**विनय मिथ्यात्व**" है।

प्रश्न 9 . अज्ञान मिथ्यात्व किसे कहते है ?

उत्तर . हित–अहित की परीक्षा किये बिना, धर्म पर श्रद्धा करना उसे "**अज्ञान मिथ्यात्व**" कहते हैं।

प्रश्न 10 . अग्रहीत मिथ्यात्व किसे कहते है ?

उत्तर . परोपदेश के बिना जो अनादिकाल के मिथ्यात्व कर्म के उदय से होता है उसे "**अग्रहीत मिथ्यात्व**" कहते हैं।

प्रश्न 11 . पंचाग्नि तप किसे कहते है ?

उत्तर . अपने चारो तरफ अग्नि जलाना और सूर्य की पॉचवीं अग्नि मानकर तप करना "**पंचाग्नि तप**" है।

प्रश्न 12 . मिथ्यात्व सेवन करने से क्या होता है ?

उत्तर . मिथ्यात्व सेवन करने से जीवन व्यर्थ हो जाता है और दुर्गतियों के दुःख सहन करने पडते हैं।

प्रश्न 13 . क्या हम मिथ्यात्व से छूट सकते है ?

उत्तर . हाँ ! वीतरागी देव–शास्त्र–गुरू को छोड़कर किसी की भी मान्यता नहीं करेंगे इस प्रकार दृढ़–संकल्प करके हम मिथ्यात्व से छूट सकते हैं।

देव मूढ़ता

25

वस्त्र शस्त्र को धारण करते, जगति के ये मिथ्या देव।
धन सुत आदि की इच्छा से, करते इन कुदेव की सेव।।
सांसारिक सुख की वॉछा से, इनकी जो पूजा करता।
देव मूढ़ता कहलाता है, भव बन्धन भी है बढ़ता।।25।।

अर्थ

अस्त्र, शस्त्र, वस्त्र, युक्त सासारिक झूठे देवी–देवताओं की धन पुत्र आदि सांसारिक इच्छा से पूजा सेवा आदि करना "देव मूढता" कहलाता है। इनकी पूजा एवं वन्दना करने से ससार बढता है।

प्रश्न 1 . मूढ़ता किसे कहते हैं ?

उत्तर . अन्धविश्वास को "**मूढता**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . मूढ़ता कितनी व कौन-कौन सी होती है ?

उत्तर . मूढता **तीन** होती हैं –

1. देव मूढता 2. गुरू मूढता 3. लोक मूढता

प्रश्न 3 . देव मूढ़ता किसे कहते हैं ?

उत्तर . अस्त्र–शस्त्र–वस्त्र से परिपूर्ण रागी–द्वेषी देवी–देवता की पूजा करना "**देव मूढ़ता**" है।

प्रश्न 4 . क्या रागी-द्वेषी देवी-देवता भगवान नहीं हैं ?

उत्तर . नहीं हैं। ये देव (परमात्मा) नहीं बल्कि ये भी हमारे जैसे देव गति के एक जीव हैं।

प्रश्न 5 . पूज्य-अपूज्य की दृष्टि से देवों को कितने भागों में विभक्त कर सकते हैं ?

उत्तर . पूज्य–अपूज्य की दृष्टि से देवों को चार भागों में विभक्त कर सकते हैं –

1. अदेव 2. कुदेव 3. सुदेव 4. देवाधिदेव

प्रश्न 6 . अदेव किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो देव नहीं है मात्र लाल–पीले पत्थर को कल्पना के आधार पर देवता मानकर पूजा जाता है उसे "**अदेव**" कहते हैं।

प्रश्न 7 . कुदेव किसे कहते हैं ?

उत्तर . मिथ्या दृष्टि तथा स्वयं की पूजा कराने वाले परिग्रही देवी–देवताओं को "**कुदेव**" कहते हैं।

प्रश्न 8 . सुदेव किसे कहते हैं ?

उत्तर . सम्यक् दृष्टि भगवान की भक्ति से युक्त यक्ष यक्षिणी आदि को "**सुदेव**" कहते हैं।

प्रश्न 9 . क्या सुदेव की वन्दनादि कर सकते हैं ?

उत्तर . नहीं ! इनकी वन्दना पूजादि नहीं कर सकते मात्र अपने समान ही जिनेन्द्र भक्त समझकर मात्र "सत्कार" के रूप में "**जय जिनेन्द्र**" कर सकते हैं।

प्रश्न 10 . क्या सुदेव की कार्य सिद्धयर्थ पूजा उपासना कर सकते हैं ?

उत्तर . अष्ट द्रव्य की पूजा उपासना आदि नहीं कर सकते पर पूजा विधान आदि धार्मिक कार्य में इनका आह्वान करके तिल मोदक फल–फूल लेकर (एतत फलं, पुष्पं, मोदकं गृहाण) शब्द उच्चारण कर कुछ सामग्री भेंट कर सकते हैं।

प्रश्न 11 . क्या उपर्युक्त सभी देवों को मन में णमोकार मंत्र पढ़कर काय से नमस्कार कर सकते हैं ?

उत्तर . नहीं ! ऐसा करने से मायाचारी का दोष आता है जो तिर्यञ्च गति के बध में कारण है।

प्रश्न 12 . क्या रागी-द्वेषी देवी-देवता हमारी मनोकामना पूरी करते हैं ?

उत्तर . नहीं ! ये हमारी मनोकामना पूरी नहीं करते, बल्कि हमारे पुण्य उदय से मनोकामना पूरी होती है।

प्रश्न 13 . रागी-द्वेषी देवी-देवताओं की पूजा किसमें कारण है ?

उत्तर . रागी–द्वेषी देवी–देवताओं की पूजा, संसार वृद्धि में कारण है।

प्रश्न 14 . देवाधिदेव किन्हें कहते हैं ?

उत्तर . 18 दोषों से रहित 100 इन्द्रों से पूजित अरहन्त देव को "**देवाधिदेव**" कहते हैं।

प्रश्न 13 . क्या देवाधिदेव मनोकामना की पूर्ति करते हैं ?

उत्तर . नहीं करते ! पर देवाधिदेव की उपासना करने से तीव्र पुण्याश्रव होता है जिसमें पाप कट जाते हैं और पुण्य कर्म प्रकृतियों का उदय होता है, जिससे शीघ्र मनोकामना की पूर्ति हो जाती है।

पठन्नपि वचो जैनं मिथ्यात्वं नविमु चति।
कुदृष्टिः पन्नगो दुग्धं पिबन्निव महाविषम्।।

अर्थ– मिथ्यादृष्टि मनुष्य जैन शास्त्र पढ़ता हुआ भी मिथ्यात्व को उसी तरह नहीं छोड़ता है जिस प्रकार दूध पीता हुआ भी साँप महाविष को नहीं छोडता है।

न मिथ्यात्वसमः शत्रुर्न मिथ्यात्वसमं विषम्।
न मिथ्यात्वसमो रोगो न मिथ्यात्वसमं तमः।।

अर्थ– मिथ्यात्व के समान शत्रु नहीं है, मिथ्यात्व के समान विष नहीं हैं। मिथ्यात्व के समान रोग नहीं है, मिथ्यात्व के समान अन्धकार नहीं है।

मिथ्यादृष्टि जीव को जिनवाणी न सुहाय।
के ऊँगे के लड़ पड़े के उठ घर को जाय।।

गुरू मूढ़ता

26

चिमटा रखते छाल लपेटे, संगारंभ से युक्त है।
जग के झंझट में उलझे, वैराग्य भाव से युक्त है।।
ऐसे कुगुरू ही जो प्राणी, अर्चन आदर करते हैं।
गुरू मूढ़ता सहित स्वयं वे, जग पीड़ा को सहते हैं।।26।।

अर्थ

जो चिमटा आदि रखते है, छाल वस्त्र आदि लपेटे रहते हैं, जग के झंझट मे फँसे हुए हैं, वैराग्य भाव से रहित, मोह से युक्त हैं, ऐसे कुगुरू की सेवा अर्चना, पूजा आदि करना गुरू मूढता है। इनकी पूजा वन्दना करने से ससार की पीड़ा सहन करनी पड़ती है।

प्रश्न 1 . गुरू मूढ़ता किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो परिग्रह से युक्त हैं, छाल वस्त्र आदि लपेटते हैं, सांसारिक कार्यों में फॅसे हैं, वैराग्य भाव से रहित हैं ऐसे कुगुरू की सेवा, अर्चा, पूजा करना "**गुरू मूढ़ता**" है।

प्रश्न 2 . वस्त्रधारी गुरू क्यों नहीं हो सकते ?

उत्तर . वस्त्रधारी के पास नियम से वासना होती है, वासना से युक्त जीव वासना से मुक्त नहीं कर सकता इसलिय वस्त्रधारी गुरू नहीं हो सकता।

प्रश्न 3 . परिग्रहधारी को गुरू मानने वाले सम्यक् दृष्टि हैं या मिथ्या दृष्टि ?

उत्तर . परिग्रहधारी को रत्नत्रय के दाता के रूप में गुरू मानने वाला "**मिथ्या दृष्टि**" है।

प्रश्न 4 . परिग्रहधारी की पूजा वन्दना करने से क्या होता है ?

उत्तर . परिग्रहधारी की पूजा करने से संसार की वृद्धि होती है, जिससे संसार का पीड़ा सहनी पड़ती है।

लोक मूढ़ता

ढेर लगावें पत्थर का, या गिरि से कूदे मर जावे।
अग्नि कुण्ड प्रवेश करें, और धर्म मानकर नदी नहावे।।
काँटों की शय्या पर लेटे, इन सबको जो धर्म कहे।
मूढ लोक मूढ़ता में फँसकर, भव अरण्य में धूम रहे।।27।।

अर्थ

पत्थर का ढेर लगाना, धर्म मानकर नदी में स्नान करना, कॉटों की शय्या पर लेटना, अग्नि में जल मरना इन सब उल्टी क्रियाओं को लोक मूढता कहते हैं। लोक मूढताओं में फँसा प्राणी कभी संसार से पार नहीं होता।

प्रश्न 1 . लोक मूढ़ता किसे कहते हैं ?
उत्तर पत्थर का ढेर लगाना, धर्म मानकर नदी में स्नान करना, कॉटो की शय्या पर लेटना, वृक्ष की पूजा करना, सती होना आदि **"लोक मूढ़ता"** है।

प्रश्न 2 . क्या खानदानी परम्परा पर चलना भी लोक मूढ़ता है ?
उत्तर . हाँ ! खानदानी परम्परा पर चलना भी लोक मूढ़ता है।
यथा– 1. मृत्युभोज देना व करना।
2. घर में किसी के मरने पर सिर मुँडाना।
3. पति के मरने पर वर्षों काली साडी पहनना।
4. त्यौहार के दिनो में किसी पारिवारिक सदस्य की मृत्यु हो जाये तो हमेशा के लिए उस त्यौहार का मनाना बन्द करना।
5. प्रथम ग्राहक के पैसे को प्रणाम करना।
6. तीर्थो पर मुंडन कराना।
7. कुल देवता मानकर रागी–द्वेषी की पूजा करना व्रत करना आदि –2

प्रश्न 3 . क्या इन पारम्परिक क्रियाओं से धर्म का किञ्चित भी सम्बन्ध नहीं हैं ?
उत्तर . हॉ ! इन पारम्परिक क्रियाओं से धर्म का किञ्चित भी सम्बन्ध नही है, अज्ञानी पाखण्डी लोगों ने अपनी मान्यता के लिय, धन कमाने के लिए इस प्रकार झूठी रूढ़िता एवं धर्म का आविष्कार कर दिया है।

प्रश्न 4 . जीव को किससे सावधान रहना चाहिए ?
उत्तर आत्म–कल्याण के इच्छुक जीव को मूढता रूपी सभी क्रियाओं से सावधान रहना चाहिए।

प्रश्न 5 . मूढ़ता में फँसे जीव किसमे घूमते हैं ?
उत्तर . मूढता में फँसे जीव भव अरण्य (जगल) में घूमते हैं।

भाग दो

श्रावकत्व की यात्रा

जब व्यक्ति को स्वयं के जैनत्व का बोध हो जाता है तब वह श्रावकत्व की यात्रा प्रारम्भ करने हेतु परमात्मा का “आह्वान” करके, भाव श्रावक बनकर उनकी दिव्यार्चना करता है ताकि सांसारिक वासनाओं से छुटकर “चार गीत” के दुखों से मुक्त हो सके, यही जीवन का सम्यक् “पुरूषार्थ” है। सम्यक् पुरुषार्थ महावीर के “अनेकान्त सिद्धान्त” को स्वीकारने वाला कर पाता है। क्योंकि वह अनेकान्त के माध्यम से वस्तु की, संसार की विविधता की समझ लेता है और स्वयं के प्रति “सावधान” होकर वैराग्य भाव से [illegible] है तथा “बारह भावना” का चिन्तन कर नर भव [illegible]

[illegible]

आह्वान

28

पुण्य नहीं कीना है मैंने, पूर्व जन्म में हे भगवान।
वर्तमान भी ऐसे बीता, जैसे ढलता सूर्य महान।।
बीते आगामी भव कैसे, कब होगा मेरा उद्धार।
देव ! तुम्हें मैं आज पुकारूँ, कर दो मुझको भव से पार।।28।।

अर्थ

भक्त भगवान से अपनी व्यथा व्यक्त करते हुए कह रहा है, कि हे भगवान ! पूर्व जन्म में मैने किञ्चित भी पुण्य कार्य नहीं किया और वर्तमान भी मेरा व्यर्थ चला जा रहा है। जैसे सूर्य उदित होता है और डूब जाता है अब आगामी भव कैसा व्यतीत होगा ? यह समझ मे नही आ रहा, इसलिये हे देव ! मैं तुम्हें पुकार रहा हूँ आप आओ और मेरा उद्धार करो।

प्रश्न 1 . भक्त भगवान से क्या कह रहा है ?

उत्तर . भक्त भगवान से भूत, भविष्य और वर्तमान की व्यथा कह रहा है और अपने उद्धार की याचना कर रहा है।

प्रश्न 2 . क्या भगवान उद्धार करते हैं ?

उत्तर . भगवान स्वयं आकर उद्धार नही करते पर भगवान के नामोच्चारण, गुण स्मरण से जीव का उद्धार होता है।

प्रश्न 3 . भगवान का नामोच्चारण जीव का उद्धार कैसे कर सकता है ?

उत्तर . जैसे सूर्य आकाश में उदित होता है, पर तालाब के कमल को अपनी किरणों के माध्यम से खिलाता है। उसी प्रकार भगवान सिद्ध शिला (मोक्ष) मे विराजमान होते हैं, लेकिन उनकी भक्ति से अर्जित पुण्य के परमाणु से जीव का उद्धार होता है।

प्रश्न 4 . हमें वर्तमान में क्या करना चाहिये ?

उत्तर . हमें वर्तमान में धर्म कार्य, दान, दया परोपकार, साधु सेवा, अरहंत भक्ति आदि करनी चाहिये। ताकि आगामी भव सुखमय व्यतीत हो सके।

प्रश्न 5 . क्या पुनर्जन्म होता है ?

उत्तर . हाँ, पुनर्जन्म होता है। हम अपने शुभ–अशुभ कर्मानुसार चारों गति मे जन्म लेते रहते हैं और मरते रहते हैं।

प्रश्न 6 . पुनर्जन्म से कैसे बचा जा सकता है ?

उत्तर पुनर्जन्म से बचने के लिये देव, शास्त्र, गुरू के समक्ष भक्त बनकर जाना चाहिये और उनके जैसा ही नग्न वेश धारण करके कर्मो का क्षय करना चाहिये ताकि पुनर्जन्म न हो सके।

प्रश्न 7 . भगवान बनने के लिए क्या भक्त बनना आवश्यक है ?

उत्तर . हॉ, जैसे पेट भरने के लिए भोजन करना आवश्यक है उसी प्रकार भगवान बनने के लिये भक्त बनना आवश्यक है।

मंत्रं संसारसारं त्रिजगदनुपमं सर्वपापारिमंत्रं।
संसारोच्छेदमंत्रं विषमविषहरं कर्मनिर्मूलमंत्रंम्।।
मंत्रं सिद्धिप्रदानं शिवसुखजननं केवलज्ञानमंत्रं।
मन्त्रं श्री जैनमन्त्रं जप-जप-जपितं जन्मनिर्वाणमन्त्रम्।।

अर्थ— यह णमोकार मत्र ससार मे सार भूत है तीनों जगत् मे अनुपम है, समस्त पापों का शत्रु है ससार का उच्छेद करने वाला मन्त्र है विषय विष को हरने वाला है, कर्मो को निर्मूल करने वाला मन्त्र है सिद्धि को देने वाला मंत्र है, मोक्ष का सुख उत्पन्न करने वाला है केवल ज्ञान को उत्पन्न करने वाला है केवल ज्ञान मंत्र का बार–बार जाप करो क्योंकि जपा हुआ यह मत्र संसार से निर्वाण प्राप्त कराने वाला है। "इस मंत्र से 84 लाख मंत्रों की उत्पत्ति हुई है इस मत्र मे तीन कम नौ करोड़ मुनिराजों को एवं अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठियों को नमन किया गया है।"

षट् कर्त्तव्य

29

श्रावक पदवी को जो धारे, देवों की पूजा करता।
गुरू उपास्ति स्वाध्याय अरूँ, संयम में वह चित धरता।।
यथा-योग्य वह तप है करता, देता चारों दान सदा।
षट्-कर्त्तव्यों को जो पाले, दुर्गति पावे नहीं कदा।।29।।

अर्थ

भाव श्रावक पद को धारण करने वाला मनुष्य प्रतिदिन देव पूजा करता है। गुरू की उपासना करता है, स्वाध्याय और संयम में चित्त रखता है, अपनी शक्ति के अनुसार तप करता है, चारों प्रकार का दान देता है इन छ कर्त्तव्यों का पालन करने वाला व्यक्ति कभी भी दुर्गति का पात्र नहीं होता है।

प्रश्न 1 . भाव श्रावक के कितने कर्त्तव्य होते हैं ?

उत्तर . भाव श्रावक के **छ:** कर्त्तव्य होते हैं –

1. देव पूजा 2. गुरू उपास्ति 3. स्वाध्याय
4. संयम 5. तप 6. दान।

प्रश्न 2 . देव पूजा किसे कहते हैं ?

उत्तर . वीतरागी भगवान अरहन्त देव की द्रव्य से अर्चना करने को **''देव पूजा''** कहते है।

प्रश्न 3 . पूजन कैसे करना चाहिये ?

उत्तर . पूजन मन–वचन–काय की शुद्धि पूर्वक विकल्पों से रहित होकर शुद्ध वस्त्र पहनकर धुले हुए अष्ट द्रव्य से भगवान का **''पूजन''** करना चाहिये।

प्रश्न 4 . अष्ट द्रव्य कौन से हैं ?

उत्तर . 1. जल 2. चन्दन 3. अक्षत 4. पुष्प 5. नैवेद्य
6. दीप 7. धूप 8. फल

प्रश्न 5 . क्या वीतरागी देव की ही अष्ट द्रव्य से पूजा होती है ?

उत्तर . हाँ ! वीतरागी देव, सर्वज्ञ द्वारा कथित शास्त्र एवं दिगम्बर मुनियों की ही अष्ट द्रव्य से पूजा होती है।

प्रश्न 6 . पूजा कितने प्रकार की होती है ?

उत्तर . पूजा **दो** प्रकार की होती है –

1. द्रव्य पूजा 2. भाव पूजा

प्रश्न 7 . किस पूजा का कौन अधिकारी होता है ?

उत्तर . द्रव्य सहित भाव पूजा करने का अधिकारी **'गृहस्थ'** एवं भाव सहित भाव पूजा करने के अधिकारी **'मुनि'** होते हैं।

प्रश्न 8 . पूजन क्यों करनी चाहिये ?

उत्तर . पूज्य के गुणों की प्राप्ति के लिये "पूजन" करना चाहिये।

प्रश्न 9 . द्रव्य पूजा के कितने अंग हैं ?

उत्तर . द्रव्य पूजा के **सात** अंग है --

1. अभिषेक 2. आह्वान 3. स्थापना
4. सन्निधिकरण 5. पूजन 6. शति पाठ
7. विसर्जन।

प्रश्न 10 . अभिषेक किसे कहते है ?

उत्तर . मन–वचन–काय की शुद्धिपूर्वक जिनेन्द्र प्रतिमा का न्यवहन करना **"अभिषेक"** है।

प्रश्न 11 . क्या पूजा के पूर्व अभिषेक करना अनिवार्य हैं ?

उत्तर . नही। एक बार के पूर्व अभिषेक करना अनिवार्य है ?

प्रश्न 12 . आह्वानन किसे कहते हैं ?

उत्तर . पूजन प्रारम्भ करने से पूर्व "अत्र अवतर–अवतर" (हे भगवान यहाँ आइये--आइये) इत्यादि उच्चारण करना **"आह्वानन"** है।

प्रश्न 13 . स्थापना किसे कहते है ?

उत्तर . आह्वानन किये गये देवता को सम्मानपूर्वक ठौना (एक विशेष आसन) में **"अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः"** (यहाँ विराजमान होइये) इस प्रकार उच्चारण करना **"स्थापना"** है।

प्रश्न 14 . सन्निधिकरण किसे कहते हैं ?

उत्तर . स्थापना के पश्चात् "**अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्**" (यहाँ मेरे हृदय में विराजमान होइये) इस प्रकार उच्चारण करना "**सन्निधिकरण**" है।

प्रश्न 15 . पूजन किसे कहते है ?

उत्तर . भगवान के समक्ष भक्ति–भावपूर्वक अष्ट द्रव्य समर्पित कर विनयांजलि प्रस्तुत करना "**पूजन**" है।

प्रश्न 16 . अष्ट द्रव्य किस प्रकार समर्पित की जाती है ?

उत्तर . 1. जल–तीन धारा देते हुए समर्पित किया जाता है।

2. चन्दन–अनामिका अंगुली से या जल में चन्दन घोलकर तीन धारा देते हुए समर्पित किया जाता है।

3. **अक्षत्**–अंगूठे को चावल के साथ मुट्ठी में बन्द करके पोले हाथो से समर्पित किया जाता है।

4. **पुष्प**–खुले हाथों से समर्पित किया जाता है।

5. **नैवेद्य**–थाली में या 'रकवी' (प्लेट) में रखकर समार्पित किया जाता है।

6. **दीप**–आरती उतारकर समर्पित किया जाता है।

7. **धूप**–दो अँगूली व अँगूठे से पकड़कर समर्पित की जाती है।

8. **फल**–फल की नोंक भगवान की ओर करके समर्पित की जाती है।

प्रश्न 17 . अष्ट द्रव्य समर्पित करने का क्या महत्व है ?

उत्तर . 1. **जल** समर्पित करने से **जन्म जरा मृत्यु** रोगों से मुक्ति मिलती है।

2. **चंदन** समर्पित करने से **संसार ताप** का विनाश होता है।

3. **अक्षत्** समर्पित करने से **अक्षय पद** (मोक्ष) की प्राप्ति होती है।

4. **पुष्प** समर्पित करने से **काम वासना** समाप्त होती है।

5. **नैवेद्य** समर्पित करने से **क्षुधा वेदना** समाप्त होती है।

6. **दीप** समर्पित करने से मोहरूपी अंधकार का नाश होता है **'केवल ज्ञान'** रूपी दिव्य प्रकाश का आगमन होता है।

7. **धूप** समर्पित करने से **अष्ट कर्म** समाप्त होते हैं।

8. **फल** समर्पित करने से **मोक्ष फल** की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 18 . पूजन के बाद जयमाला क्यों पढ़ते हैं ?

उत्तर . पूज्य पुरूषो के विशेष गुण स्तवन करने के लिए **''जयमाला''** पढते है।

प्रश्न 19 . क्या पूजन के निमित्त द्रव्यादि धोने मे पाप नहीं लगता हैं ?

उत्तर . जैसे जल की एक बूँद समुद्र के जल को विषमय नहीं कर सकती बल्कि समुद्र के जल रूप परिवर्तित हो जाती है उसी प्रकार पूजन के निमित्त किया गया आरभ पाप में कारण नही है धोने से कुछ पाप लग भी जाये तो वह पाप भी पूजन के कारण पुण्यमय हो जाता है।

प्रश्न 20 . शान्तिपाठ किसे कहते है ?

उत्तर . प्राणी मात्र के कल्याण की भावना से, सुख–शन्ति के लिये जो पाठ किया जाता है उसे **''शान्तिपाठ''** कहते है।

प्रश्न 21 . विर्सजन पाठ किसे कहते है ?

उत्तर . पूजन मे हुई गलतियों को दूर करने के लिए क्षमा मॉगते हुए विनय पूर्वक पूजन की समाप्ति करना **''विसर्जन''** कहलाता है।

प्रश्न 22 . गुरू उपासना किसे कहते हैं ?

उत्तर विषय कषाय रहित वीतरागी गुरूओं को नवधा भक्तिपूर्वक आहारादि दान देना एवं उनके पद–चिन्हों पर चलने की भावना रखना **''गुरू उपासना''** है।

प्रश्न 23 . गुरू उपासना करने वाले को क्या करना चाहिये ?

उत्तर . गुरू उपासना करने वाले को गुरू के सन्निध्य में बैठना

चाहिये। गुरू से ज्ञान, श्रद्धा व आचरण की शिक्षा लेनी चाहिये। गुरू की सेवा, वैय्ययवृत्ति आदि करनी चाहिये एवं गुरू की आज्ञा मानकर जीवन सुधारना चाहिये।

प्रश्न 23 . स्वाध्याय किसे कहते हैं ?

उत्तर . राग–द्वेष छोड़ने के लिय तथा आत्म–कल्याण के लिये जिनवाणी का अध्ययन करना "**स्वाध्याय**" है।

प्रश्न 25 . स्वाध्याय करना क्यों आवश्यक है ?

उत्तर . स्वाध्याय करने से ज्ञान की वृद्धि होती है, सत्यमार्ग का एवं सच्चे देव शास्त्र गुरू के साथ–साथ अपनी आत्मा का ज्ञान होता है। इसलिये स्वाध्याय आवश्यक है।

प्रश्न 26 . स्वाध्याय के कितने व कौन-कौन से भेद हैं ?

उत्तर . स्वाध्याय के **पाँच** भेद हैं –

1. वाचना 2. पृच्छेना 3. अनुप्रेक्षा
4. आम्नाय 5. धर्मोपदेश।

प्रश्न 27 . वाचना किसे कहते है ?

उत्तर . उत्साह एवं शुद्ध उच्चारणपूर्वक शास्त्रों का अध्ययन करना "**वाचना**" है।

प्रश्न 28 . पृच्छना किसे कहते है ?

उत्तर . अध्ययन किये गये शास्त्रों में शंका उत्पन्न होने पर ज्ञानी जनों से पूछना "**पृच्छना**" है।

प्रश्न 29 . अनुप्रेक्षा किसे कहते हैं ?

उत्तर . अध्ययन किये गये शास्त्रों का बार–बार चिन्तन करना "**अनुप्रेक्षा**" है।

प्रश्न 30 . आम्नाय किसे कहते हैं ?

उत्तर . पूर्वाचार्यो के अनुसार कथन करना अर्थात् शास्त्र में अपनी ओर से किसी शब्द को नहीं मिलाना "**आम्नाय**" है।

प्रश्न 31 . धर्मोपदेश किसे कहते है ?

उत्तर . अध्ययन किये गये शास्त्रों का कुछ अंश आचरण में उतारकर कथन करना "**धर्मोपदेश**" है।

प्रश्न 32 . संयम किसे कहते हैं ?

उत्तर . अपने प्राणों के समान पर के प्राणों को समझकर पाँच इन्द्रिय तथा मन को वश में करना एवं छः काय के जीवों की रक्षा करना "**संयम**" है।

प्रश्न 33 . तप किसे कहते हैं ?

उत्तर . कर्मों के क्षय के लिये साधना करना एवं अपनी इच्छाओं को रोकना "**तप**" है।

प्रश्न 34 . दान किसे कहते हैं ?

उत्तर अपने व पर के उपकार के लिये चार प्रकार का दान चतुर्विध संघ को देना "**दान**" है।

प्रश्न 35 . चार प्रकार के दान कौन-कौन से हैं ?

उत्तर . 1. आहार दान 2. औषध दान
3. ज्ञान दान 4. अभय दान।

प्रश्न 36 . आहार दान किसे कहते हैं ?

उत्तर . मोक्ष मार्गी मुनिराज, आर्यिका, ऐलक, क्षुल्लक, ब्रह्मचारी एवं सम्यक् दृष्टि श्रावक को भक्ति भाव से भोजन आदि देना "**आहार दान**" है।

प्रश्न 37 . आहार दान में विशेषता किससे आती हैं ?

उत्तर . आहार दान में विशेषता विधि, द्रव्य, दाता एवं पात्र से आती है।

प्रश्न 38 . विधि किसे कहते हैं ?

उत्तर . नवधा भक्तिपूर्वक आहार देना "**विधि**" है।

प्रश्न 39 . नवधा भक्ति कौन सी है ?

उत्तर . 1. पड़गाहन 2. उच्चासन 3. पादप्रक्षालन
4. पूजन 5. नमन 6. मनःशुद्धि
7. वचन शुद्धि 8. कायशुद्धि 9. आहार शुद्धि।

प्रश्न 40 . नवधा भक्ति की संक्षिप्त परिभाषा बतलाइये ?

उत्तर . 1. **पड्गाहन** - शुद्ध धोती दुपट्टा या साड़ी पहनकर हाथों में श्रीफल कलश आदि सामग्री लेकर 'हे ! स्वामी नमोस्तु, नमोस्तु का उच्चारण करते हुए मुनिराज को अपने पास आह्वान करना एवं तीन परिक्रमा लगाकर अपने घर ले जाना "**पड्गाहन**" है।

2. **उच्चासन** - गृह प्रवेश के उपरान्त मुनिराज को पाटे पर बिठाना "**उच्चासन**" है।

3. **पाद प्रक्षालन** - उच्चासन पर विराजित होने के उपरान्त उनके चरणों को धोना "**पाद प्रक्षालन**" है।

4. **पूजन** - पाद प्रक्षालन के बाद अष्ट द्रव्य से अर्चना करना "पूजन" है।

5. **नमन** - पूजन के बाद विनय प्रदर्शित करते हुए झुकना "**नमन**" है।

6. **मन शुद्धि** - मन में बुरे विचार कपट भाव का न होना "**मन शुद्धि**" है।

7. **वचन शुद्धि** - वचन से अपशब्द, अभद्र वचन का उच्चारण न करना वचन शुद्धि है।

8. **काय शुद्धि** - स्वच्छ स्नान युक्त वस्त्र एवं शरीर का होना "**काय शुद्धि**" है।

9. **आहार शुद्धि** - भोजन का शुद्ध होना "**आहार शुद्धि**" है।

प्रश्न 41 . दाता में कितने गुण होते है ?

उत्तर . गुरू उपासना करने वाले दाता के 7 गुण होते हैं –

1. श्रद्धा 2. भक्ति 3. अलुब्धता 4. तुष्टि
5. विज्ञान 6. क्षमा 7. शक्ति

प्रश्न 42 . सात गुणों की संक्षिप्त परिभाषा बतलाइये ?

उत्तर . 1. **श्रद्धा** - पात्र को दिये गये दान के फल में संतोष रखने को "**श्रद्धा**" कहते हैं।

2. **भक्ति** - पात्रगत गुणों के अनुराग को "**भक्ति**" कहते हैं।

3. **तुष्टि** - दान देते हुए हर्ष का होना "**तुष्टि**" है।

4. **अलुब्धता** - सांसारिक फल की इच्छा न होना "**अलुब्धता**" है।

5. **विज्ञान (विवेक)** - देने योग्य वस्तु की जानकारी होना "**विज्ञान**" है।

6. **क्षमा** - क्रोध के कारण मिलने पर भी क्रोध न करना "**क्षमा**" है।

7. **शक्ति** - अपनी सामर्थ्यानुसार दान करना "**शक्ति**" है।

प्रश्न 43 . दाता के पाँच भूषण कौन-कौन हैं ?

उत्तर . 1. आनन्दपूर्वक देना 2. आदरपूर्वक देना
3. प्रियवचन पूर्वक देना 4. निर्मल भावों से देना
5. दान देनकर धन्य भाग्य समझना।

प्रश्न 44 . दाता के पाँच दूषण कौन से हैं ?

उत्तर . 1. विलम्ब से देना 2. दुर्वचन कहकर देना
3. उदास होकर देना 4. निरादर पूर्वक देना
5. दान देकर पछताना।

प्रश्न 45 . द्रव्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . शुद्ध मर्यादित '**समय**' एवं '**स्वास्थ्य**' के अनुकूल आहार जल को "**द्रव्य**" कहते हैं।

प्रश्न 46 . दाता किसे कहते हैं ?

उत्तर . सात गुणों से विभूषित आहार देने वाले श्रावक को "**दाता**" कहते हैं।

प्रश्न 47 . पात्र किसे कहते है ?

उत्तर . मोक्ष मार्ग पर चलने वाले साधक को "**पात्र**" कहते है।

प्रश्न 48 . पात्र कितने प्रकार के होत है ?

उत्तर . पात्र **तीन** प्रकार के होते हैं –
1. उत्तम पात्र – आचार्य, उपाध्याय एवं साधु परमेष्ठी
2. मध्यम पात्र – आर्यिका, ऐलक क्षुल्लक, क्षुल्लिका।
3. जघन्य पात्र – त्यागी, व्रती एवं सम्यक् दृष्टि श्रावक।

प्रश्न 49 . क्या इन तीन पात्रों के अलावा अन्य को भोजन देना आहारदान नहीं है ?

उत्तर . नहीं ! इन तीन के अलावा अन्य को भोजन दान देना **'करुणा दान'** है।

प्रश्न 50 . औषध दान किसे कहते हैं ?

उत्तर . रोग को दूर करने लिये **औषध आदि का दान** करना **"औषध दान"** है।

प्रश्न 51 . ज्ञान दान किसे कहते है ?

उत्तर . ज्ञान को बढ़ाने वाले साधन पुस्तक आदि देना, पाठशाला, स्कूल आदि खुलवाना, पुस्तकें छपवाना, शिविर आदि लगवाना **"ज्ञान दान"** है।

प्रश्न 52 . अभय दान किसे कहते हैं ?

उत्तर . सभी जीवों की रक्षा करना एवं धर्मशाला, सन्त निवास आदि बनवाकर दान करना, मुनियों के साथ विहार करना, सुरक्षा करना **"अभय दान"** है।

प्रश्न 53 . किस दान में कौन प्रसिद्ध हुआ ?

उत्तर . 1. आहार दान में – श्रीषेण राजा
2. औषण दान – वृषभ सेना
3. ज्ञान दान – कोण्डेश ग्वाला
4. अभय दान – शूकर प्रसिद्ध हुआ।

प्रश्न 54 . क्या भावश्रावक को प्रतिदिन षट् कर्त्तव्य करना अनिवार्य है ?

उत्तर . भाव श्रावक को स्वस्थ अवस्था में षट् कर्त्तव्य करना प्रतिदिन अनिवार्य है।

ये जिनेन्द्रं न पश्यन्ति पूजयन्ति स्तुवन्ति न।
निष्फलं जीवितं तेषां तेषां धिक च ग्रहस्थाश्रमम्।।

अर्थ– जो जिनेन्द्र भगवान के न दर्शन करता है न पूजन स्तवन करता है उसका जीवन निष्फल है उसके ग्रहस्थाश्रम को धिक्कार है।

वासना

30

अग्नि में ईंधन को डालो, और खुजली को खुजलाओ।
क्षण प्रतिक्षण बढ़ता जाता वह, चाहे जितना उसे दबाओ।।
मृग मरीचिका विषय-वासना, कदली सम निःसार है।
श्वान भोजन अस्थि सम यह, देता दुक्ख अपार है।।30।।

अर्थ

जिस प्रकार अग्नि मे ईंधन डालने से, खुजली को खुजलाने से वह दबता तो नहीं क्षण–प्रतिक्षण बढता ही जाता है, उसी प्रकार यह वासना है। यह वासना मृग मरीचिका के समान है,। केले के स्तम्भ के समान निःसार है। जैसे – कुत्ता हड्डी खाता है, तो दुःख उठाता है। उसी प्रकार वासना भी दुःख प्रदान करती है।

प्रश्न 1 . **विषय वासना किसे कहते हैं ?**
उत्तर . इन्द्रियो के प्रति आसक्ति के भाव को "**विषय वासना**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . **इन्द्रिय किसे कहते हैं ?**
उत्तर . संसारी जीव के पहचान के चिन्ह को "**इन्द्रिय**" कहते हैं।

प्रश्न 3 . **इन्द्रिय कितनी व कौन-कौन सी हैं ?**
उत्तर . इन्द्रिय **पाँच** होती हैं –
1. स्पर्श 2. रसना 3. घ्राण
4. चक्षु 5. कर्ण

प्रश्न 4 . **स्पर्श इन्द्रिय किसे कहते हैं ?**
उत्तर . जिससे छूकर हल्का–भारी, रूखा–चिकना, कड़ा–नरम, ठंडा–गरम, इन आठ प्रकार के विषयों का ज्ञान होता है। उसे "**स्पर्श इन्द्रिय**" कहते हैं।

प्रश्न 5 . **रसना इन्द्रिय किसे कहते हैं ?**
उत्तर . जिससे चखकर खट्टा–मीठा, कड़वा–कषायला, चरपरा, इन पाँच प्रकार के विषयों का ज्ञान होता है। उसे "**रसना इन्द्रिय**" कहते हैं।

प्रश्न 6 . घ्राण इन्द्रिय किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिससे सूँघकर सुगन्ध एवं दुर्गन्ध इन दो प्रकार के विषयों का ज्ञान होता है। उसे "**घ्राण इन्द्रिय**" कहते हैं।

प्रश्न 7 . चक्षु इन्द्रिय किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिसे देखकर काला, नीला, लाल, सफेद, पीला, (हरा) इन पाँच प्रकार के विषयों का ज्ञान होता है। उसे "**चक्षु इन्द्रिय**" कहते हैं।

प्रश्न 8 . कर्ण इन्द्रिय किसे कहते ?

उत्तर . जिससे सुनकर अक्षरात्मक एवं अनक्षरात्मक इन दो विषयों का ज्ञान होता है। उसे "**कर्ण इन्द्रिय**" कहते हैं।

प्रश्न 9 . इन पाँच इन्द्रियों के विषयों को अग्नि क्यों कहा ?

उत्तर . अग्नि में ईंधन डालने से वह तृप्त नहीं होती, बल्कि और बढ़ जाती है। उसी प्रकार इन्द्रियों को तृप्त करने के लिये जितनी भी सामग्री दी जाये वह उतनी ही बढती जाती है। इसलिये पंचेन्द्रिय के विषयो को "**अग्नि**" कहा है।

प्रश्न 10 . वासना को मृग मरीचिका सम क्यों कहा ?

उत्तर . मृगों को वन में धूप के कारण जल सा दिखायी पड़ता है लेकिन वह जल नहीं होता, अपितु पृथ्वी से निकलती गरम लपटें होती हैं। उसी प्रकार मनुष्य को वासना के कारण वस्तु सुखपूर्ण दिखाई देती है। लेकिन वह जीवन को समाप्त करने वाली होती है। इसलिये धोखे की दृष्टि को "**मृग मरीचिका**" कहते है।

प्रश्न 11 . वासना को कदली सम निस्सार क्यों कहा ?

उत्तर . केले के वृक्ष को जितना भी छीलते जाओं उसमें किसी भी प्रकार का सार तत्व नहीं निकलता। उसी प्रकार वासना के पीछे कितना भी भागे, कोई सार नहीं निकलता। इसलिये वासना को "**कदली सम निस्सार**" कहा है।

प्रश्न 12 . वासना किसके समान दुःख देती है ?

उत्तर . जिस प्रकार कुत्ता हड्डी को खाकर अपना ही खून चूसता है। उसी प्रकार यह जीव पंचेन्द्रिय के विषयों का सेवन कर अपने

ही जीवन को **बर्बाद** करता है। अर्थात् कुत्ता अपनी मूर्खता से कष्ट पाता है। उसी प्रकार वासना में अंधा व्यक्ति भी कष्ट पाता है। वासना हड्डी खाते हुए कुत्ते के समान दुख देती है।

प्रश्न 13 . किस इन्द्रिय की वासना में फँसकर किस जीव ने कष्ट पाया ?

उत्तर . स्पर्श इन्द्रिय की वासना में फॅसकर - **हाथी ने।**
रसना इन्द्रिय की वासना में फॅसकर - **मछली ने।**
घ्राण इन्द्रिय की वासना मे फॅसकर - **भौंरा ने।**
चक्षु इन्द्रिय की वासना में फँसकर - **पतंगा ने।**
कर्ण इन्द्रिय की वासना में फॅसकर - **हिरण ने।**
बन्धन व मरण कष्ट उठाये हैं।

प्रश्न 14 . हमारा क्या कर्त्तब्य है ?

उत्तर . हमारा कर्त्तव्य है, कि हम पंचेन्द्रिय के विषयों से ऊपर उठें। अपने जीवन को वासनामयी बनाकर ससार को न बढ़ाये। अपनी इन्द्रियों के महत्त्व को समझें और बन्धन व मरण के कष्ट से, चतुगति के दुःख से बचने का प्रयास करें।

अंगं गलितं पलितं मुण्डं दशनविहीनं जातं तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं तदपि न मुञ्चत्याशापिण्डम्।।

अर्थ– शरीर गल गया है मस्तक सफेद हो गया है मुख दॉतों से रहित हो गया है और वृद्ध मनुष्य लाठी लेकर चलता है तो भी उसे आशा पिण्ड नहीं छोडती।

सज्जन ऐसा कीजिए ढाल सरीखा होय।
दुःख में तो आगे रहे सुख में पीछे होय।।

नरक गति

31

रूकना चाहे जीव जहाँ ना, पर रूकना पड़ता निश्चित।
शीत उष्ण गन्दापन का तो, दुक्ख नरक में कथनातीत।।
रत्न शर्करा पंक बालुका, धूम तिमिर महातिमिर कहाँ।
नीचे-नीचे सात नरक हैं, क्षण भर को ना सुक्ख वहाँ।।31।।

अर्थ

जीव जिस गति मे रूकना नहीं चाहता पर उसे निश्चित रूप से आयु पर्यन्त रूकना पडता है तथा शीत, ऊष्ण गन्दापन का जहॉ कथनातीत दु.ख सहन करना पडता है। ऐसे रत्न शर्करा, बालुका, पंक धूम तम और महातम नाम के क्रमश नीचे – नीचे सात नरक हैं।

प्रश्न 1 . नरक गति किसे कहते हैं ?

उत्तर . नरक गति नामकर्म के उदय में नरक में जन्म लेने को ''**नरक गति**'' कहते हैं। अथवा जहॉ जीव क्षण भर भी रूकना नहीं चाहता पर उसे निश्चित रूप में आयुपर्यन्त रूकना पडता है तथा शीत ऊष्ण गन्दापन का कल्पनातीत दुःख सहन करना पड़ता है, ऐसे दुःख भरे स्थान को ''**नरक**'' कहते हैं।

प्रश्न 2 . नरक कहाँ पर है ?

उत्तर . नरक चित्रा पृथ्वी के नीचे अधोलोक में है।

प्रश्न 3 . नरक कितने होते हैं ?

उत्तर . नरक **सात** होते हैं –

1. रत्न प्रभा (धम्मा) 2. शर्करा प्रभा (वंशा)
3. बालुका प्रभा (मेघा) 4. पंड्क प्रभा (अंजना)
5. धूम प्रभा (अरिष्ठा) 6. तमः प्रभा (मघवा)
7. महातम प्रभा (माघवी)

प्रश्न 4 . सात नरक कैसे अवस्थित हैं ?

उत्तर . सात नरक क्रम से नीच--नीचे अवस्थित हैं।

प्रश्न 5 . नरक में सुख है या दुःख ?

उत्तर . नरक में 1000 (एक हजार) बिच्छुओं के एक साथ काटने के बराबर प्रतिक्षण दुःख है। सुख रंच मात्र भी नहीं।

प्रश्न 6 . नरक में सर्वाधिक दुःख किस बात का है ?

उत्तर . नरक में सर्वाधिक दुःख शीत, ऊष्ण, गन्दापन और मारकाट का है।

प्रश्न 7 . कौन से नरक में कौन सी वेदना है ?

उत्तर . पहले से लेकर चौथे नरक तक ऊष्ण वेदना है तथा पॉचवें से सातवें नरक तक अत्यन्त शीत वेदना है।

प्रश्न 8 . नरक में शीत ऊष्ण की वेदना कैसी है ?

उत्तर . नरक में इतनी गर्मी पडती है कि हिमालय के बराबर ताँबे का पर्वत क्षण भर में पिघल जाये तथा इतनी भीषण सर्दी है, कि वही पिघला तॉबा क्षण भर में ठोस हो जाता है।

प्रश्न 9 . नरक में गन्दापन क्या है ?

उत्तर . नरक की भूमि अत्यन्त दुर्गन्धमय, खून, पीप, मॉस, मल, मूत्र आदि से भरी हुई है। ऐसा दुर्गन्धमय गन्दापन नरक में है।

प्रश्न 10 . नरक भूमि की गन्ध कैसी होती है ?

उत्तर . नरक भूमि की गन्ध सड़े गधे, कुत्ते, बिल्ली के शरीर से भी अनन्त गुणा अधिक दुर्गन्ध है।

प्रश्न 11 . नारकी जीवों का शरीर कैसा होता है ?

उत्तर . नारकी जीवों का शरीर बेडौल, कुरूप, हुण्डक संस्थान युक्त है।

प्रश्न 12 . नरक में जन्म कैसे होता है ?

उत्तर . नरक में जन्म लेने वाले अपने उपपाद शय्या पर सिर के बल गिरता है, जन्म लेता है।

प्रश्न 13 . नारकी जीवों में शरीर की ऊँचाई कितनी है ?

उत्तर पहले नरक में शरीर की ऊँचाई 7 धनुष 3 हाथ और 6 अंगुल है तथा 7 वें नरक की ऊँचाई 500 धनुष की है।

प्रश्न 14 . एक धनुष कितना बड़ा होता है ?

उत्तर . एक धनुष साढ़े तीन हाथ का होता है।

प्रश्न 15 . क्या नरकों में और भी दु:ख हैं ?

उत्तर . हाँ, अन्य कई दु:ख हैं। तीसरे नरक तक असुर कुमार के देवों द्वारा पूर्व भव का स्मरण कराकर लड़ाना, तपे हुए लोहे को पिलाना, जलते हुए लौह स्तंभ से चिपका देना, तप्त तेल से सींचना, कोल्हू में पेल देना, करोत से काट देना, सुई जैसी नौंकदार कॉंटे में घसीटना, सिंह व्याघ्र, उल्लू, कौआ, गिद्ध द्वारा खाया जाना, वैतरनी नदी में पटकना, तलवार, भाला, छुरी आदि से परस्पर मारना आदि अनेक दु:ख हैं।

प्रश्न 16 . क्या नरक में काटने, जलाने, मारने पर भी नहीं मरते ?

उत्तर . हॉं। जैसे तलवार से पानी नहीं कटता। उसी प्रकार नारकी जीव भी काटने, जलाने, मारने से नहीं मरते। बल्कि पारे के समान बिखरकर पुन: मिल जाते हैं।

प्रश्न 17 . नरकों में वृक्षों के पत्ते कैसे होते हैं ?

उत्तर . नरक के वृक्षो के पत्ते तलवार की धार के समान नुकीले होते हैं।

प्रश्न 18 . नरकों में कितनी भूख और प्यास लगती हैं ?

उत्तर . नरकों में तीन लोक का अनाज खाने पर भी पेट नहीं भरे इतनी भूख तथा समुद्र का पानी पीने पर भी प्यास न बुझे इतनी प्यास लगती है पर अन्न और जल नाममात्र भी उन्हें प्राप्त नहीं होता।

प्रश्न 19 . नरकों में खाने को क्या मिलता है ?

उत्तर . नरकों में खाने को मार व कड़वी मिट्टी मिलती है।

प्रश्न 20 . नरकों की मिट्टी का प्रभाव कैसा है ?

उत्तर . नरकों की पृथ्वी की मिट्टी अगर मनुष्य लोक में आ जाये तो कम से कम एक कोस (4 कि.मी.) अधिक से अधिक 4 कोस (16 कि.मी.) तक के जीव क्षण मात्र में मरण को प्राप्त हो सकते हैं।

प्रश्न 21 . क्या नरकों में कढाई, वृक्ष, तलवार, तेल, भाला आदि वास्तविक होते हैं ?

उत्तर . नहीं । ये सभी नारकियों को कष्ट पहुँचाने के लिये नारकी स्वयं विक्रिया से बनाते हैं।

प्रश्न 22 . नरकों में कितने समय तक ये दुःख सहन करने पड़ते हैं ?

उत्तर . नरकों में ये दु.ख कम से कम 10 हजार वर्ष, अधिक से अधिक 33 सागर तक सहन करने पडते हैं।

प्रश्न 23 . सागर किसे कहते हैं ?

उत्तर . सागर के पानी मे जितने जीव हैं उतने वर्ष का उतने वर्ष से गुणा करने पर जो वर्ष प्राप्त हो उसे सागर कहते है। (एक बूँद पानी में 36450 जीव होते हैं।)

प्रश्न 24 . कौन से जीव किस नरक तक जा सकते हैं ?

उत्तर . मन रहित जीव पहले नरक तक, सरीसृप (पनियॉ सॉप आदि) दूसरे नरक तक, पक्षी तीसरे नरक तक, सर्प चौथे नरक तक, सिह पॉचवे नरक तक, स्त्री छठवें नरक तक महामत्स्य व मनुष्य सॉतवें नरक तक जा सकते हैं।

प्रश्न 25 . पंचम काल के जीव कितने नरक तक जा सकते हैं ?

उत्तर . पंचम काल के जीव छठवें नरक तक जा सकते हैं।

प्रश्न 26 . किस नरक से निकला हुआ जीव क्या बन सकता है ?

उत्तर . प्रथम द्वितीय तृतीय नरक से निकला हुआ जीव तीर्थकर, चतुर्थ नरक से निकला हुआ, जीव मुक्ति, पंचम नरक से निकला जीव महाव्रती, छठवें नरक से निकला जीव अणुव्रती बन सकता है। सातवें नरक से निकला जीव नियम से तिर्यच बनता है और पुन· नरक जाता है।

प्रश्न 27 . किस नरक में कितना जन्म मरण का अन्तर काल है ?

उत्तर . प्रथम नरक में नारकियों की उत्पत्ति व मरण काल का उत्कृष्ट अन्तर चौबीस मर्हूत, द्वितीय में सात दिन, तृतीय में एक पक्ष, चर्तुथ में एक मास, पञ्चम में दो मास, छठे में चार मास सातवें में छः मास प्रमाण अन्तर माना गया है।

नरक गति का पात्र

32

जिन धर्म निन्दक लम्पटी, और कृष्ण लेश्या से युक्त है।
मिथ्यादृष्टि पर धन हर्ता, साधु विनय से मुक्त है।
पर उपकार रहित बैरी, और बहु आरम्भ को करता है।
शास्त्र विरोधी माँस भक्षी, नरक गति जा सड़ता है।।32।।

अर्थ

जो जिन धर्म की निन्दा करता है, लम्पटी है, कृष्ण लेश्या से युक्त है, मिथ्या दृष्टि है, पर धन का हरण करने वाला है, साधु सन्तों की विनय से रहित है, पर उपकार नही करता है, बैरी है, बहुत आरम्भ को करता है। सच्चे शास्त्र का विरोध करता है, माँस का भक्षण करता है। वह नरक गति मे सड़ता है, अर्थात् नरक प्राप्त करता है।

प्रश्न 1 . जिन धर्म निन्दक कौन कहलाते हैं ?

उत्तर . जो जिनेन्द्र देव प्रणीत जिन धर्म की उपासना न करके निन्दा आलोचना करते है। वे "**जिनधर्म निन्दक**" कहलाते हैं।

प्रश्न 2 . जिन धर्म निन्दक को नरक में क्या सजा मिलती है ?

उत्तर . जिन धर्म 'निन्दक' को नरक में जिव्हा छेदे जाने की सजा मिलती है।

प्रश्न 3 . लम्पटी किसे कहते हैं ?

उत्तर . पर स्त्री सेवन करने वाले, भक्ष्याभक्ष्य का ख्याल न करने वाले, अत्यधिक शरीर का श्रृंगार करने वाले को "**लम्पटी**" कहते हैं।

प्रश्न 4 . लम्पटी को नरक में क्या सजा मिलती है ?

उत्तर . लम्पटी को नरक मे लोहें की गर्म पुतलियों से बॉधा जाता है। गन्दी मिट्टी खिलाई जाती है एवं सुई जैसी नुकीली घास पर घसीटे जाने की सजा मिलती है।

प्रश्न 5 . कृष्ण लेश्या से युक्त जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर . अत्यन्त हिंसक क्रूर, मत्सर भाव युक्त काले परिणाम वाले जीव को "**कृष्ण लेश्या से युक्त जीव**" कहते हैं।

प्रश्न 6 . कृष्ण लेश्या से युक्त जीव को नरक में क्या वेदना सहन करनी पड़ती है ?

उत्तर . कृष्ण लेश्या से युक्त जीव को असुरकुमार जाति के देव पूर्व जन्म का स्मरण कराकर लड़वा देते हैं, जिससे उसे अनेक नारकियों के प्रहार की पीडा एक साथ सहन करनी पडती है।

प्रश्न 7 . मिथ्या दृष्टि जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर . सच्चे देव–शास्त्र–गुरू पर श्रद्धा न रखने वाले जीव को "**मिथ्या दृष्टि जीव**" कहते हैं।

प्रश्न 8 . मिथ्या दृष्टि जीव नरक कैसा जीवन व्यतीत करते हैं ?

उत्तर . मिथ्या दृष्टि जीव विपरीत बुद्धि के कारण स्वयं ही संक्लेषित परिणामों से अत्यन्त दुखी जीवन व्यतीत करते हैं।

प्रश्न 9 . परधन हर्ता जीव कौन कहलाते हैं ?

उत्तर . जो अधिकार रहित वस्तु को जबरदस्ती लूटकर दबाव डालकर चोरी करके लेते हैं वे "**परधन हर्ता**" जीव कहलाते हैं।

प्रश्न 10 . परधन हर्ता जीव को नरक में कौन कष्ट देता है ?

उत्तर . परधन हर्ता जीव को अन्य नारकी उल्टा लटकाकर नीचे से अग्नि जलाकर उसे कष्ट देते हैं। अनेक प्रकार के कीटाणु का रूप बनाकर वे परधन हर्ता नारकी के शरीर में प्रवेश कर जाते हैं और काट कर कष्ट देते हैं।

प्रश्न 11 . साधु विनय से मुक्त जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो साधुओं को देखकर विनय प्रदर्शित नहीं करते, नमन, पूजन आदि नहीं करते। वे "**साधु विनय**" से मुक्त जीव हैं।

प्रश्न 12 . साधु विनय से युक्त जीव को नरक में कौन पीड़ा पहुँचाते हैं ?

उत्तर . साधु विनय से मुक्त जीव को नरक में व्याघ्र, उल्लू, गिद्ध, कौवे आदि पशु–पक्षी नोंच–नोंच कर खाते हैं और पीड़ा पहुँचाते हैं।

प्रश्न 13 . पर उपकार रहित किसे कहते हैं ?

उत्तर . सामर्थ्य होने पर भी परोपकार दान–दया न करने वाले जीव को "**परोपकार रहित जीव**" कहते हैं।

प्रश्न 14 . पर उपकार रहित नरक में क्या दु:ख पाता है ?

उत्तर . पर उपकार रहित जीव के समक्ष असुरकुमार नाम के देव बहुत धन और भोजन लाते हैं। यह उसे जैसे ही पकड़ता है कि वह साँप और बिच्छू के रूप में परिणित हो जाते हैं और अत्यन्त दु:ख पहुँचाते हैं।

प्रश्न 15 . बैरी जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर . ईर्ष्या, द्वेष करके प्रतिशोध की भावना से युक्त, क्षमा रहित, आपसी बोल–चाल का व्यवहार न रखने वाले व्यक्ति को "**बैरी जीव**" कहते हैं।

प्रश्न 16 . बैरी जीव को नरक में क्या सजा मिलती है ?

उत्तर . बैरी जीव को असुरकुमार नाम के देव पूर्व जन्म के बैर का स्मरण कराकर आपस में नारकियों को लड़ा देते हैं और करोत द्वारा दो टुकड़े कर दिये जाने की सजा मिलती है।

प्रश्न 17 . बहुआरम्भ किसे कहते हैं ?

उत्तर . बडी–बड़ी हिंसक फैक्ट्रियों का निर्माण करना, हिंसक धंधा करना, जंगल जलाने का, मछली मारने का ठेका लेना, पोल्ट्री फार्म खोलना, चमड़े का व्यापार करना आदि "**बहु आरम्भ**" है।

प्रश्न 18 . बहु आरम्भ करने वाले जीव को नरक में क्या सजा मिलती है ?

उत्तर . बहु आरम्भ करने वाले व्यक्ति को गरम तेल में उबाले जाने की अत्यन्त कष्टप्रद सजा मिलती है।

प्रश्न 19 . शास्त्र-विरोधी जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिनेन्द्र देव द्वारा कथित शास्त्र का विरोध करना, उसमें मिलावट करना अर्थ का अनर्थ प्ररूपित करने वाले जीव को "**शास्त्र-विरोधी**" जीव कहते हैं।

प्रश्न 20 . शास्त्र-विरोधी जीव को नरक में क्या सजा मिलती है ?

उत्तर . शास्त्र–विरोधी की नरक में जिव्हा छेद दी जाती है और कानों मे शीशे का गरम घोल डाले जाने की सजा मिलती है।

प्रश्न 21 . मॉस भक्षी किसे कहते हैं ?

उत्तर . अण्डा खाना, जीवन्त या मरे हुए प्राणियों के शरीर का भक्षण करना "**मॉस खाना**" कहलाता है।

प्रश्न 22 . मॉस भक्षी जीव को नरक में क्या सजा मिलती हैं ?

उत्तर . मॉस भक्षी जीव को नरक में उसी के शरीर का मॉंस काटकर उसे ही खिलाये जाने की सजा मिलती है।

प्रश्न 23 . शराब पीने वाले व्यक्ति को नरक में क्या सजा मिलती है ?

उत्तर . शराब पीने वाले व्यक्ति को नरक में लोहे का गरम घोल जबरदस्ती पिलाये जाने की सजा मिलती है।

प्रश्न 24 . क्या वास्तव में इस प्रकार के कृत्य करने वाले को नरक में सजा मिलती है ?

उत्तर हॉ ! वास्तव में सजा मिलती है। ऐस दुष्कृत्य करने वाले को मनुष्य पर्याय मे भी कुछ नमूने के रूप में सजायें मिलती हैं।

प्रश्न 25 . नरक में सजा देने वाले हथियार, अग्नि, लोहे के घोल, तेल आदि कहाँ से आते हैं ?

उत्तर . नरक में सभी हथियार अन्य नारकी अपनी विक्रिया (एक विशेष शक्ति) से बनाते हैं। यह सामग्री कहीं से आती नहीं है।

वरं मुर्हुर्तमेकं च धर्म युक्तस्य जीवनम्।
तद्दिनस्य वृथा वर्ष कोटी कोटी विशेषतः।।

अर्थ– धर्म सहित मनुष्य का एक मुहुर्त का जीवन अच्छा है और धर्म रहित मनुष्य का कोटि वर्ष का जीवन व्यर्थ है।

तिर्यञ्च गति

33

एक श्वास में बार अठारह, जनता मरता है प्राणी।
भू जल पावक पवन वृक्ष को, कष्ट भरी है जिन्दगानी।।
लट चींटी भौंरा जल खगचर, भू में बसते जीव अनेक।
त्रस थावर मन तन से पीड़ित, कैसे कहूं रसना मम एक।।33।।

अर्थ

तियर्ञ्च गति में यह प्राणी त्रस और स्थावर की पर्याय को प्राप्त किया और अनेक प्रकार के कष्टों को सहन किया। जिसका वर्णन एक जिव्हा से नहीं किया जा सकता है। स्थावर पर्याय में यह प्राणी एक श्वाँस मे अठारह बार जन्मा और मरा पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति इन पाँच पर्याय में कष्टमय जीवन व्यतीत किया। त्रस पर्याय को प्राप्त करने के उपरान्त यह जीव लट चींटी, भौंरा, जलचर, थलचर, नभचर प्राणी बना और तन–मन से अनेक प्रकार के कष्टों को सहन किया।

प्रश्न 1 . तिर्यञ्च गति किसे कहते हैं ?

उत्तर तिर्यंच गति नाम कर्म के उदय से एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय जीव की पर्याय में जन्म लेने को "**तिर्यंञ्च गति**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . तिर्यञ्च किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो मन, वचन और काय से कुटिल हो, जिसकी आहार भय मैथुन परिग्रह ये चार संज्ञायें सुव्यक्त हों, जो निकृष्ट अज्ञानी हो और जिनके पाप की बहुलता पायी जाती है, वे "**तिर्यञ्च**" हैं।

प्रश्न 3 . तिर्यंञ्च गति में यह जीव किस-किस पर्याय को प्राप्त किया?

उत्तर . तिर्यञ्च गति में यह जीव स्थावर और त्रस पर्याय को प्राप्त किया।

प्रश्न 4 . स्थावर किसे कहते हैं ?

उत्तर . एकेन्द्रीय जीव को "**स्थावर**" जीव कहते हैं।

प्रश्न 5 . स्थावर जीव के कितने भेद हैं ?

उत्तर . स्थावर जीव के **पाँच** भेद हैं –

1. पृथ्वी 2. जल 3. अग्नि 4. वायु 5. वनस्पति।

प्रश्न 6 . इन पाँच के अतिरिक्त और कौन-कौन से जीव स्थावर काय में आते है ?

उत्तर . इन पाँच के अतिरिक्त अन्य कोई भी जीव स्थावर काय में नहीं आते हैं। निगोदिया जीव को वनस्पति काय में गर्भित किया गया है।

प्रश्न 7 . निगोद किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो अनन्त जीवों को एक में निवास दे उसे **"निगोद"** कहते हैं।

प्रश्न 8 . निगोदिया जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर . एक श्वास में अठारह बार जन्म मरण करने वाले जीव को **"निगोदिया जीव"** कहते हैं।

प्रश्न 9 . निगोद कहाँ पर है ?

उत्तर . निगोद नरक गति की सातवीं पृथ्वी के नीचे है। एवं सारे लोक में निगोदिया जीव ठसाठस भरे हुए हैं।

प्रश्न 10 . निगोद के कितने भेद हैं ?

उत्तर . निगोद के **दो** भेद हैं –
1. नित्य निगोद 2. इतर निगोद।

प्रश्न 11 . नित्य निगोद किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिन जीवों के निगोद के सिवाय अन्य कोई भी पर्याय को आज तक नहीं पाया है उन्हें **"नित्य निगोद"** कहते हैं।

प्रश्न 12 . इतर निगोद किसे कहते है ?

उत्तर . जिन जीवों ने स्थावर त्रस पर्याय को प्राप्त कर पुन. निगोद में जन्म लिया है, उसे "इतर निगोद" कहते हैं। इसे चतुर्गति निगोद भी कहते हैं।

प्रश्न 13 . नित्य निगोद की क्या विशेषता है ?

उत्तर . नित्य निगोद से 6 मास 8 समय मे 608 जीव निकलकर नियम से मोक्ष जाते हैं। इसे ही अनादि सान्त **"नित्य निगोदिया जीव"** कहते हैं।

प्रश्न 14 . यह जीव निगोद पर्याय से कैसे छुटकारा पाया है ?

उत्तर . जब कोई केवली समुद्घात करते हैं तब उनके शुभ पुण्य परमाणु सम्पूर्ण लोक में फैल जाते हैं किसी निगोदिया जीव का पर्याय क्षय का समय आता है तब पुण्य परमाणु स्पर्श से आत्मा पवित्र होती है और उस जीव को निगोद पर्याय से छुटकारा मिल जाता है।

प्रश्न 15 . दो इन्द्रिय जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिन जीवों के पास स्पर्श एवं रसना इन्द्रिय मात्र होती है। उसे **"दो इन्द्रिय जीव"** कहते हैं।

जैसे - कृमि, सीप, शंख, कौडी, लट, केंचुआ, जौंक आदि।

प्रश्न 16 . तीन इन्द्रिय जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिन जीवों के पास स्पर्श, रसना एवं घ्राण इन्द्रिय मात्र होती है। उसे **"तीन इन्द्रिय जीव"** कहते हैं।

जैसे - चींटी, बिच्छू, खटमल, जूं, इन्द्रगोप, कनखजूरा आदि।

प्रश्न 17 . चार इन्द्रिय जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिन जीवों के पास स्पर्श, रसना, घ्राण एवं चक्षु इन्द्रिय मात्र होती है। उसे **"चार इन्द्रिय जीव"** कहते हैं।

जैसे - मकडी, भौंरा, मधुमक्खी, पतंगा, तितली आदि।

प्रश्न 18 . पाँच इन्द्रिय जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिन जीवों के पास स्पर्श, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण इन्द्रिय मात्र होती है। उसे **"पंचेन्द्रिय जीव"** कहते हैं।

प्रश्न 19 . दो इन्द्रिय से चार इन्द्रिय तक के जीव को क्या कहते है ?

उत्तर . दो इन्द्रिय से चार इन्द्रिय तक के जीवों को **"विकलत्रय"** कहते हैं।

प्रश्न 20 . पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च जीव के कितने भेद हैं ?

उत्तर . पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च जीव के **दो** भेद हैं –

1. संज्ञी (सैनी) पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च
2. असंज्ञी (असैनी) पंचेन्द्रि तिर्यञ्च।

प्रश्न 21 . संज्ञी पंचेन्द्रिय किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिसके मन हो, जो शिक्षा और उपदेश को ग्रहण कर सके। सम्यकत्व व अणुव्रत को उत्पन्न कर सकें। ऐसे तिर्यंच **"संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च"** कहते हैं।

प्रश्न 22 . असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिसके मन न हो, शिक्षा–उपदेश ग्रहण न कर सके। उसे **"असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च"** कहते हैं।

प्रश्न 23 . पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च के और कितने भेद हैं ?

उत्तर . पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च के अन्य **तीन** भेद हैं –

1. जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च
2. थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च
3. नभचर पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च

प्रश्न 24 . जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च किसे कहते हैं ?

उत्तर . जल में रहने वाले पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च को **"जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च"** कहते हैं।
जैसे - मछली, मगर आदि।

प्रश्न 25 . थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च किसे कहते हैं ?

उत्तर . पृथ्वी पर रहने वाले पंचेन्द्रिय तिर्यंच को **"थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च"** कहते हैं।
जैसे - गीदड़, गैंड़ा, गधा, बन्दर आदि।

प्रश्न 26 . नभचर पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च किसे कहते है ?

उत्तर . आकाश में उडने वाले पंचेन्द्रिय तिर्यच को **"नभचर पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च"** कहते हैं।
जैस - मैना, चील, चिड़िया आदि।

प्रश्न 27 . जो पृथ्वी पर चलते हैं, आकाश में भी उड़ते हैं, अथवा जल में भी रहते हैं और आकाश में भी उड़ते हैं। उन जीवों को क्या कहते हैं ?

उत्तर . ऐसे जीवों को **"उभयचर तिर्यञ्च जीव"** कहते है।
जैसे – मुर्गा, मोर, उडने वाली गिलहरी पृथ्वी पर भी चलती है, आकाश में भी उडती है तथा कछुआ, पनियॉ सॉप आदि ये जल व पृथ्वी दोनों में रहते हैं।

प्रश्न 28 . तिर्यंञ्च पर्याय में वह जीव कैसा रहा ?

उत्तर . तिर्यञ्च पर्याय में यह जीव तन और मन से सदैव दुखी रहा।

प्रश्न 29 . तिर्यञ्च में यह जीव दुखी क्यों रहा ?

उत्तर . तिर्यञ्च पर्याय में यह जीव अपनी निर्बलता के कारण तन से तथा सोचने–विचारने की क्षमता न होने के कारण मन से दु:खी रहा।

प्रश्न 30 . तिर्यंञ्च गति में क्या कष्ट हैं ?

उत्तर . तिर्यंञ्च गति में बन्धन, छेदन, पीडन, अति भारारोपण, भार वहन, ठण्डी, गर्मी, बरसात, भूख, प्यास, सन्तान, बिछोह आदि अनेक कष्ट हैं।

प्रश्न 31 . तिर्यंञ्च गति के दु:खों को वर्णन किया जा सकता है, क्या ?

उत्तर . तिर्यंञ्च गति के अनेक प्रकार के कष्ट हैं। जिसका वर्णन एक जिव्हा से नहीं किया जा सकता है।

प्रश्न 32 . तिर्यंञ्च कहाँ-कहाँ पाये जाते हैं ?

उत्तर . तिर्यञ्च सर्वत्र पाये जाते हैं।

तिर्यञ्च गति का पात्र

34

आर्त रौद्र जो ध्यान करे, और पर को ठगता रहता है।
बगुला सा जो कपट भेष धर, ढोंग धर्म का करता है।।
साधर्मी को देख घृणा से, कुत्ता सा गुर्राता है।
सद्गुण का जो लोप करे, वह पशु गति को पा जाता है।।34।।

अर्थ

जो आर्त ध्यान और रौद्र ध्यान में लीन रहता है, मंत्र–तंत्र के माध्यम से दूसरो को ठगता रहता है। बगुला सा कपट भेष धारण कर धर्म करने का ढोग करता है। अपने साधर्मी को देखकर घृणा से कुत्ता सा गुर्राता है तथा सद्गुणो का लोप करता है अर्थात् अच्छे गुणों को जो स्वीकार नहीं करता है, वह तिर्यञ्च गति को प्राप्त करता है।

प्रश्न 1 . ध्यान किसे कहते हैं ?
उत्तर एक वस्तु में चिन्तवन के रूक जाने को "**ध्यान**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . ध्यान कितने प्रकार का होता हैं ?
उत्तर . ध्यान **चार** प्रकार का होता है –
1. आर्त ध्यान 2. रौद्र ध्यान 3. धर्म ध्यान 4. शुक्ल ध्यान

प्रश्न 3 . उक्त चार ध्यानों में कौन सा ध्यान तिर्यञ्च गति में कारण है ?
उत्तर . उक्त चार ध्यानों में आर्त और रौद्र ध्यान तिर्यञ्च गति में कारण है।

प्रश्न 4 . आर्त ध्यान किसे कहते हैं ?
उत्तर . दुःख से होने वाले ध्यान को "**आर्त ध्यान**" कहते हैं।

प्रश्न 5 . आर्त के ध्यान कितने भेद हैं ?
उत्तर . आर्त ध्यान के **दो** भेद हैं –
1. अशुभ आर्त ध्यान 2. शुभ आर्त ध्यान

प्रश्न 6 . अशुभ आर्त ध्यान किसे कहते हैं ?
उत्तर . अशुभ क्रिया सम्बन्धी चिन्तवन करना "**अशुभ आर्त ध्यान**" है।

प्रश्न 7 . अशुभ आर्त ध्यान के कितने भेद हैं ?

उत्तर . अशुभ आर्त ध्यान के **चार** भेद हैं –
1. इष्ट वियोग 2. अनिष्ट संयोग 3. पीडा चिन्तवन 4. निदान बन्ध।

प्रश्न 8 . इष्ट वियोग आर्त ध्यान किसे कहते हैं ?

उत्तर . अपनी वस्तु या इष्ट जनों का वियोग हो जाने पर उसके संयोग के लिये बार–बार चिन्तवन करना "**इष्ट वियोग नामक**" आर्त ध्यान है।

प्रश्न 9 . अनिष्ट संयोग आर्त ध्यान किसे कहते हैं ?

उत्तर . अनिष्ट वस्तु एवं अनिष्ट बन्धु जनों के संयोग होने पर उससे छुटकारा पाने के लिये बार–बार चिन्तवन करना "**अनिष्ट संयोग**" नामक आर्त ध्यान है।

प्रश्न 10 . पीड़ा चिन्तवन आर्त हयान किसे कहते हैं ?

उत्तर . रोग जनित पीड़ा का निरन्तर चिन्तवन करना "**पीड़ा चिन्तवन**" नामक आर्त ध्यान है।

प्रश्न 11 . निदान बन्ध आर्त ध्यान किसे कहते हैं ?

उत्तर . इहलोक परलोक सम्बन्धी वस्तु पद की प्राप्ति हेतु बार–बार चिन्तवन करना "**निदान बन्ध**" नामक आर्त ध्यान है।

प्रश्न 12 . शुभ आर्त किसे कहते हैं ?

उत्तर . शुभ क्रिया सम्बन्धी चिन्तवन करना "**शुभ आर्त ध्यान**" है।

प्रश्न 13 . शुभ आर्त ध्यान के कितने भेद हैं ?

उत्तर . शुभ आर्त ध्यान के 3 भेद हैं –
1. शुभ इष्ट वियोग 2. शुभ अनिष्ट संयोग 3. शुभ पीडा चिन्तवन

प्रश्न 14 . शुभ इष्ट वियोग आर्त ध्यान किसे कहते हैं ?

उत्तर . अपने संयम पद के हितैषी या आचार्यादि के मरण या वियोग हो जाने पर दुखी होना, इसका बार–बार चिन्तवन करना "**शुभ इष्ट वियोग**" आर्त ध्यान है।

प्रश्न 15 . शुभ अनिष्ट संयोग किसे कहते हैं ?

उत्तर . संयम पथ या धर्म कार्य में विघ्न उत्पन्न करने वाले के आ जाने पर उसके प्रतिकार का बार–बार चिन्तवन करना "**शुभ अनिष्ट संयोग**" आर्त ध्यान है।

प्रश्न 16 . शुभ पीड़ा चिन्तवन आर्त ध्यान किसे कहते हैं ?

उत्तर . शरीर में रोगादि के उत्पन्न होने पर यह विचार करना कि यह रोग यदि मुझे नहीं होता तो मैं ज्यादा धर्म–ध्यान सामायिक आदि करता, रोग के कारण शुभ क्रिया नहीं कर सकता। क्या करूँ। इस प्रकार का चिन्तवन करना "**शुभ-पीड़ा चिन्तवन आर्त ध्यान**" है।

प्रश्न 17 . निदान बंध को शुभ आर्त ध्यान में क्यों नहीं लिया गया ?

उत्तर . आगामी भोगों की आकांक्षा सांसारिक होती है। यह भविष्य को दुर्गति में ले जाती है। अतः निदान बन्ध को शुभ आर्त धयान में नहीं लिया गया है।

प्रश्न 18 . रौद्र ध्यान किसे कहते हैं ?

उत्तर . क्रूर परिणामों के साथ हुए ध्यान को "**रौद्र ध्यान**" कहते हैं।

प्रश्न 19 . रौद्र ध्यान के कितने भेद हैं ?

उत्तर . रौद्र ध्यान के **चार** भेद हैं –

1. हिंसानन्द 2. मृषानन्द
3. चौर्यानन्द 4. परिग्रहानन्द

प्रश्न 20 . हिंसानन्द रौद्र ध्यान किसे कहते हैं ?

उत्तर . हिंसा में आनन्द मानकर उसी के साधन जुटाने में तल्लीन रहना "**हिंसानन्द रौद्र ध्यान**" है।

प्रश्न 21 . मृषानन्द रौद्र ध्यान किसे कहते हैं ?

उत्तर . झूठ बोलने, बुलवाने में निन्दा, चुगली आदि करने में आनन्द मानकर उसी में तल्लीन रहना "**मृषानन्द आर्त ध्यान**" है।

प्रश्न 22 . चौर्यानन्द आर्त ध्यान किसे कहते हैं ?

उत्तर . चोरी के कार्य में आनन्द मानना, चोरी का माल लेना–देना तथा उसी का चिन्तवन करना "**चौर्यानन्द आर्त ध्यान**" है।

प्रश्न 23 . परिग्रहानन्द आर्त ध्यान किसे कहते हैं ?

उत्तर . परिग्रहानन्द को एकत्र करने में व रक्षण करने में आनन्द मानना "**परिग्रहानन्द आर्त ध्यान**" है।

प्रश्न 24 . क्या सभी ध्यान नियम से तिर्यंच गति में कारण हैं ?

उत्तर . रौद्र ध्यान नियम से नरक व तिर्यंच गति में कारण है तथा अशुभ आर्त ध्यान भी तिर्यञ्च गति के कारण है।

प्रश्न 25 . एकेन्द्रिय से असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक के जीवों में सोच-विचार करने की शक्ति नहीं है, तो उन्हें आर्त ध्यान नहीं होता है ?

उत्तर . एकेन्द्रिय से असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक के जीव मन में विचारादि नहीं करते पर काय व वचन की दुष्चेष्टाओं के कारण उनके भी आर्त ध्यान होता है।

प्रश्न 26 . 'पर' को ठगने से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर धर्म के नाम पर चन्दा एकत्रित करना एवं उसका स्वयं उपयोग करना। साधु का भेष बनाकर मंत्र–तत्र के माध्यम से दूसरों को ठगना। अपना उल्लू सीधा करने का प्रयास करना "**पर को ठगना**" है। यह तिर्यंच गति में कारण है।

प्रश्न 27 "बगुला सा कपट भेष-धारी" से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर . जिस प्रकार बगुला नदी के किनारे एक टॉग से ध्यानस्थ खडा हो जाता है, पर उसका मूल उद्देश्य मछली को पकडना ही होता है। उसी प्रकार "**बगुला सा कपट भेष-धारी**" बाहर से धर्मात्मा से क्रूर और हिंसक होता है। अत ऐसी प्रवृत्ति भी तिर्यच गति में कारण है।

प्रश्न 28 . "कुत्ता सा गुर्राने" से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर . जिस प्रकार कुत्ता अन्य कुत्ते को देखकर अकारण ही गुर्राता है। उसी प्रकार जो व्यक्ति धर्मी या साधु को देखकर अकारण ही गुर्राता है। अतः ऐसी प्रवृत्ति भी तिर्यञ्च गति का कारण है।

प्रश्न 29 . "सद्गुण का लोप" से क्या तात्पर्य है?

उत्तर . सद्गुण अर्थात् अच्छा आचरण, अच्छे गुण का जो लोप करता है। दूसरे धर्मात्मा को देखकर उसको बदनाम करना ये सब प्रवृत्ति सद्गुणों के लोप की प्रवृत्ति भी तिर्यञ्च गति का कारण है।

प्रश्न 30 . तिर्यञ्च गति की विशेषता क्या है ?

उत्तर . तिर्यञ्च गति में यह जीव संज्ञी पंचेन्द्रिय की पर्याय में रहकर सम्यकत्व को प्राप्त कर सकता है और अणुव्रतों को ग्रहण कर अपनी आत्मा का कल्याण कर सकता है। ऐसे जीव महापुण्यशाली होते हैं।

मनुष्य गति

35

छोटे गृह में वृहद काय का, तन नौ माह पड़ा तन में।
वचनातीत सहा पीड़ा को, गर्भ द्वार से निकसन में।।
त्रिपन बीता खेल भोग अरूँ, जर्जर काया पा करके।
धरम-धरम सब भूल गया और फिर पछताया सरधर के।।35।।

अर्थ

छोटे से घर मे (गर्भ में) बडी काय को धारण कर यह मनुष्य नौ माह तक माता के उदर मे पडा रहा। गर्भ से बाहर आते समय वचनातीत कष्टो को सहन किया, यह जीव मनुष्य जन्म लेने के उपरान्त धर्म--कर्म सब भूल गया और बचपन खेलकूद मे, यौवन भोग मे वृद्धापन जर्जर काय को पाकर के व्यतीत किया तथा अन्त समय सिर पकड कर पछताता रहा।

प्रश्न 1 . मनुष्य गति किसे कहते हैं ?

उत्तर . मनुष्य गति नाम कर्म के उदय में मनुष्य पर्याय में जन्म लेने को "**मनुष्य गति**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . मनुष्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो मन के द्वारा नित्य ही हेय उपादेय, धर्म--अधर्म, कर्त्तव्य अकर्तव्य के बारे में विचार करते हैं। कार्य में निपुण होते हैं और उत्कृष्ट मन के धारक होते हैं। उसे "**मनुष्य**" कहते है।

प्रश्न 3 . मनुष्य गर्भ में कैसे रहा ?

उत्तर . मनुष्य गति में यह जीव माँ के उदर में अपने वृहद् काय को लेकर अंगों को सिकोड़े हुए रहा।

प्रश्न 4 . माँ के गर्भ में यह जीव कितने माह रहा ?

उत्तर . मॉ के गर्भ में यह जीव नौ माह रहा।

प्रश्न 5 . जन्म के समय इस जीव ने कैसा अनुभव किया ?

उत्तर . जन्म के समय यह जीव वचनातीत कष्टों को सहन करते हुए अनन्त दु:खों का अनुभव किया।

प्रश्न 6 . मनुष्य की आयु कब से मानी जाती है ?

उत्तर . मनुष्य की आयु गर्भ में आने के उपरान्त ही प्रारम्भ हो जाती है। पर लौकिक दृष्टि से जन्म लेने के उपरान्त आयु का प्रारम्भ माना जाता है।

प्रश्न 7 . जन्म के बाद मनुष्य का जीवन कैसे व्यतीत हुआ ?

उत्तर . जन्म के उपरान्त मनुष्य का जीवन सद्धर्म–सद्कर्म रहित अर्थात् बाल्यावस्था–खेलकूद में, यौवनावस्था–स्त्रियों के संग भोग भोगने में एवं वृद्धावस्था जर्जर काया के साथ व्यतीत हुआ।

प्रश्न 8 . वृद्धावस्था में जर्जर काया कैसी होती है ?

उत्तर . वृद्धावस्था में दाँतों से रहित, सफेद बाल युक्त, कमर कमान के समान झुकी हुई, शरीर झुर्रियों से युक्त, नजरों से कम दिखना, कानों से कम सुनना, हाथ–पाँव का ठीक तरीके से कार्य न करना। डंडे के सहारे चलना आदि अनेक प्रकार की व्याधियों से सहित जर्जर काया होती है।

प्रश्न 9 . मनुष्य अन्त समय में क्यों पछताता है ?

उत्तर . मनुष्य अन्त समय में सद्धर्म औद सद्कर्म की विस्मृति के कारण एवं धर्म न कर सकने के कारण स्वयमेव पछताता है।

प्रश्न 10 . क्या मनुष्य पर्याय में कल्याण किया जा सकता है ?

उत्तर . हाँ ! मनुष्य पर्याय में आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त के पश्चात् आत्मा का कल्याण किया जा सकता है।

प्रश्न 11 . क्या वृद्धावस्था में आत्म कल्याण नहीं कर सकते ?

उत्तर . वृद्धावस्था में इन्द्रियों की शिथिलता के कारण एवं जर्जर काया के कारण साधना की उत्कृष्टता नहीं हो पाती। जिसने यौवन अवस्था में राग–द्वेष, मोह कम नहीं किया हो, व्रतों का अभ्यास नहीं किया हो, वे वृद्धावस्था में आत्म–कल्याण नहीं कर सकते।

मनुष्य गति का पात्र

36

मंद कषायी मृदु स्वभावी, विनीत प्रकृति का धारी है।
अल्प संग्रही अल्पारंभी, ना ही व्रतों का धारी है।।
ना देखे जो दोष किसी का, अपनी धुन में रहता है।
मिथ्यादृष्टि अल्प क्लेशी, मनुष्य गति को वरता है।।36।।

अर्थ

जो जीव मद कषाय करने वाला हो, मृदु स्वभाव से युक्त हो, विनीत प्रकृति का धारक हो, अल्प आरम्भ करने वाला हो, व्रतो को धारण न किया हो, दूसरे के दोष न देखता हो व अल्प क्लेश करने वाला हो वह मनुष्य गति को प्राप्त करता है।

प्रश्न 1 . **''मंद कषायी'' किसे कहते हैं ?**

उत्तर जिस जीव मे क्रोध, मान, माया, लोभ अत्यल्प हो, बात–बात मे उत्तेजित न होता हो। उस जीव को **''मंद कषायी जीव''** कहते है।

प्रश्न 2 . **''मृदु स्वभावी जीव'' किसे कहते हैं ?**

उत्तर . दूसरे जीव के दुःख–दर्द कष्ट देखकर जो विचलित हो जाता है और सेवा में तत्पर हो जाता है। ऐसे कोमल स्वभाव वाले जीव को ''**मृदु स्वभावी जीव**'' कहते हैं।

प्रश्न 3 . **''विनीत प्रकृति का धारी'' जीव किसे कहते ?**

उत्तर . जो संसार में समस्त धर्म एवं धर्मस्थान को समान (एक सा) मानकर उसकी वन्दना आदि करता है। ऐसी जीव ''**विनीत प्रकृति का धारी**'' जीव है।

प्रश्न 4 . **''अल्प संग्रही'' जीव किसे कहते हैं ?**

उत्तर . अपनी आवश्यकता के अनुसार परिग्रह का संचय करने वाले जीव को ''**अल्प संग्रही जीव**'' कहते हैं।

प्रश्न 5 . **''अल्पारंभी जीव'' किसे कहते हैं ?**

उत्तर . पाप के भय से अधिक आरम्भ होने वाले फैक्टरी आदि खोलना जंगल आदि जलाने, काटने का ठेका लेना आदि कार्य नहीं करता है। यह **''अल्पारम्भी जीव''** कहलाता है।

प्रश्न 6 . "मिथ्यादृष्टि जीव" किसे कहते हैं ?

उत्तर . देव–शास्त्र–गुरू, पर सच्ची श्रद्धा न रखने वाले जीव को "**मिथ्यादृष्टि**" जीव कहते हैं।

प्रश्न 7 . "अल्प क्लेशी जीव" किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो विवाद के अवसरों पर शान्त रहता है, अपनी सुरक्षा हेतु अल्प क्रोध करता हो। ऐसे जीव को "**अल्प-क्लेशी जीव**" कहते है।

प्रश्न 8 . अन्य कौन से जीव मनुष्य गति को प्राप्त कर सकते हैं ?

उत्तर . जो व्रतों से रहित हो, पर के दोष न देखता हो तथा अपनी मस्ती में ही रहता हो न किसी के तीन तेरह में फॅसता हो। ऐसा जीव मनुष्य गति को प्राप्त कर सकता है।

प्रश्न 9 . क्या व्रत से रहित सम्यक् दृष्टि जीव भी मनुष्य बन सकता है ?

उत्तर . नरक, तिर्यंच एवं देव गति का जीव मनुष्य बन सकता है पर अवृती सम्यक् दृष्टि जीव मनुष्य से मनुष्य नहीं बन सकता। अगर पहले आयु का बन्ध कर लिया हो तो भोग भूमि का मनुष्य बन सकता है।

प्रश्न 10 . मनुष्य गति की क्या विशेष्ता हैं ?

उत्तर . मनुष्य गति एक चौराह है। यहॉ से अपने पुरूषार्थ के बल पर यह जीव चारों गति में जा सकता है। इस पर्याय में संयम को धारण कर मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। मनुष्य गति के जीव को संसार के सारे उत्कृष्ट तीर्थकर चक्रवर्ती, नारायण–प्रतिनारायण के पद प्राप्त होते हैं जिन्हें देव भी नमस्कार करते हैं। यह गति सप्तम नरक के दुःख देने में भी सक्षम है, और मोक्ष सुख देने में भी सक्षम है यही मनुष्य गति की विशेषता है।

जिस प्रकार मंत्रों में णमोकार, राजाओं में चक्रवर्ती मृगों में सिंह, पक्षियों में गरूड़, पर्वतों में सुमेरू, जलाशयों में समुद्र, वृक्षों में चन्दन, पाषाणों में रत्न, रत्नों में हीरा प्रधान है उसी प्रकार भवों में मनुष्य भव प्रधान है।

देव गति

37

भवनों में रहते कई देवा, भूत प्रेत व्यन्तर वासी।
सूर्य चन्द्र जो देव कहे, वे विषयों के अति अभिलाषी।।
स्वर्गों में रहते वैमानिक, छोटे-मोटे देव यहाँ।
कुछ सम्यकत्वी कुछ मिथ्याती, सुख-दुख पाते यहाँ-वहाँ।।37।।

अर्थ

भवनो में कई प्रकार के असुर कुमार आदि देव रहते हैं भूत–प्रेत आदि व्यन्तर देव है। सूर्य ओर चन्द्रमा आदि जो देव कहे गये हैं। वे विषयो के अति अभिलाषी है। स्वर्गों मे छोटे–बडे कई प्रकार के देव रहते हैं जो कुछ सम्यक दृष्टि और कुछ मिथ्या दृष्टि होते हैं। ये सभी देव यहॉ–वहाँ भ्रमण करके सुख–दु:ख उठाते रहते है।

प्रश्न 1 . देव गति किसे कहते हैं ?

उत्तर . देव गति नाम कर्म के उदय से देव पर्याय में जन्म लेने को "**देवगति**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . देव किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो प्रकाशमान सप्त धातु रहित दिव्य शरीर के धारी होते हैं, तथा द्वीप समुद्र आदि अनेक स्थानों में इच्छानुसार क्रीड़ा एवं भ्रमण करते हैं। उन्हें "**देव**" कहते हैं।

प्रश्न 3 . देव कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर . देव **चार** प्रकार के होते हैं –

1. भवनवासी देव 2. व्यन्तर देव 3. ज्योतिष्क देव 4. वैमानिक देव

प्रश्न 4 . भवन वासी देव किसे कहते हैं ?

उत्तर . भवनों में रहने वाले देव को "भवन वासी" देव कहते हैं।

प्रश्न 5 . भवनवासी देवों के कितने भेद हैं ?

उत्तर . भवनवासी देवों के **दस** भेद हैं –

1. असुर कुमार 2. नाग कुमार 3. विद्युत कुमार
4. सुपर्ण कुमार 5. अग्नि कुमार 6. वात कुमार

7. उद्धि कुमार 8. स्तनित कुमार
9. द्वीप कुमार 10. दिक् कुमार। ये दस भेद हैं।

प्रश्न 6 . भवनवासी देवों के साथ "कुमार" शब्द का प्रयोग क्यों किया गया है ?

उत्तर . भवनवासी देवो की उम्र और स्वभाव अवस्थित है तथा उनकी वेश–भूषा, शस्त्र, यान, वाहन और क्रीडा आदि कुमारों के समान होता है। इसलिए इन देवों के साथ "कुमार" शब्द का प्रयोग किया गया है।

प्रश्न 7 . भवनवासी देवों की कितनी आयु होती हैं ?

उत्तर . भवनवासी देवों की जघन्य आयु **"दस हजार"** वर्ष एव उत्कृष्ट आयु **"एक सागर"** की होती है।

प्रश्न 8 . भवनवासी देवों की कितनी शक्ति होती है ?

उत्तर . जघन्य आयु वाले देव 100 मनुष्यो को मारने व पालने मे समर्थ होते है और 150 धनुष (525 हाथ) लम्बे–चौडे क्षेत्र को हाथो से उखाड़कर फैंकने में समर्थ होते हैं तथा एक सागर ही आयु वाले देव जम्बू द्वीप को समुद्र में फैकने व उसमे स्थित मनुष्य व तिर्यंच को पालने–पोसने में समर्थ होते हैं।

प्रश्न 9 . भवनवासी देव एक बार में कितने रूप बना सकते हैं ?

उत्तर . जघन्य वायु वाले देव अधिकतम 100 और न्यूनतम 32 या 7 रूपों को बना सकते हैं तथा अधिक आयु वाले देव अनेक प्रकार के रूप बना सकते हैं।

प्रश्न 10 . व्यन्तर देव किसे कहते हैं ?

उत्तर . मनुष्य व तिर्यच के शरीर मे प्रवेश कर उन्हें लाभ व हानि पहुँचा सकने वाले अथवा यहाँ वहाँ विचरण करने वाले भूत–पिशाच जाति के देवों को "व्यन्तर देव" कहते हैं।

प्रश्न 11 . व्यन्तर देव के कितने भेद हैं ?

उत्तर . व्यन्तर देव के **आठ** भेद है –

1. किन्नर 2. किम्पुरूष 3. महोरग 4. गन्धर्व
5. यक्ष 6. राक्षस 7. भूत 8. पिशाच।

प्रश्न 12 . क्या व्यन्तर देव अन्य जीवों को सताते भी हैं ?

उत्तर . हॉ ! ये देव पूर्व जन्म का बैर स्मरण कर या इनके निवास स्थान को अपवित्र कर देने पर ये रूष्ट होकर सताने का कार्य भी करते हैं।

प्रश्न 13 . व्यन्तर देवों की आयु एवं विक्रिया शक्ति कितनी है ?

उत्तर . व्यन्तर देवों की आयु उत्कृष्ट एक पल्य से कुछ अधिक होती है एवं विक्रिया शक्ति भवनवासी देवों के समान होती है।

प्रश्न 14 . ज्योतिष देव किसे कहते हैं ?

उत्तर . सुमेरू पर्वत की निरन्तर प्रदक्षिणा करने वाले अन्य द्वीप में स्थित रहकर प्रकाशित करने वाले ज्योतिर्मय देवों को "**ज्योतिष देव**" कहते हैं।

प्रश्न 15 . ज्योतिष देव के कितने भेद हैं ?

उत्तर . ज्योतिष देव के **पाँच** भेद हैं –

1. सूर्य
2. चन्द्रमा
3. ग्रह
4. नक्षत्र
5. तारे।

प्रश्न 16 . ज्योतिष देवों की आयु एवं विक्रिया कितनी है ?

उत्तर . ज्योतिष देवों की आयु एक पल्य के कुछ अधिक एवं जघन्य एक पल्य के आठवें भाग के प्रमाण होती है। विक्रिया शक्ति भवनवासी देवों के समान होती है।

प्रश्न 17 . क्या सूर्य और चन्द्रमा में मनुष्य प्रवेश कर सकता है ?

उत्तर . नहीं ! सूर्य और चन्द्रमा देवों के विमान हैं। उसमें मनुष्य प्रवेश नहीं कर सकता है।

प्रश्न 18 . सूर्य एवं चन्द्रमा से कितनी व कैसी किरणें निकलती हैं ?

उत्तर . सूर्य और चन्द्रमा से 12 हजार किरणें निकलती हैं। सूर्य की किरणें ऊष्ण व चन्द्रमा की किरणें शीतल होती हैं।

प्रश्न 19 . समस्त ज्योतिष देव कितने क्षेत्र में रहते हैं ?

उत्तर . समस्त ज्योतिष देव 790 योजन ऊपर 900 योजन के मध्य 110 योजन (13032924014 मील) में रहतें हैं।

प्रश्न 20 . एक योजन कितनी दूरी का होता हैं ?

उत्तर . दो हजार कोस का एक योजन होता है।

प्रश्न 21 . वैमानिक देव किसे कहते हैं ?

उत्तर प्रथम स्वर्ग से लेकर सर्वार्थ–सिद्धि पर्यन्त–विमानों में रहने वाले देवों को "**वैमानिक देव**" कहते हैं।

प्रश्न 22 . वैमानिक देव के कितने भेद हैं ?

उत्तर . वैमानिक देव के **दो** भेद हैं –

1. कल्पोपन्न 2. कल्पातीत।

प्रश्न 23 . कल्पोपन्न किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिन स्वर्गों में इन्द्र आदि की कल्पना की आती है, उसे "**कल्पोपन्न**" कहते हैं।

प्रश्न 24 . कल्पोपन्न स्वर्ग के कितने होते हैं ?

उत्तर . कल्पोपन्न स्वर्ग **सोलह** होते हैं –

1. सोधर्म स्वर्ग 2. ऐशान स्वर्ग 3. सनत्कुमार स्वर्ग
4. माहेन्द्र स्वर्ग 5. ब्रह्मा स्वर्ग 6. ब्रह्मोत्तर स्वर्ग
7. लान्तव स्वर्ग 8. कापिष्ट स्वर्ग 9. शुक्र स्वर्ग
10. महाशुक्र स्वर्ग 11. शतार स्वर्ग 12. सहस्त्रार स्वर्ग
13. आनत स्वर्ग 14. प्राणत स्वर्ग 15. आरण स्वर्ग
16. अच्युत स्वर्ग

प्रश्न 25 . कल्पातीत किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस स्वर्ग में इन्द्र आदि की कल्पना नहीं की जाती उसे "**कल्पातीत स्वर्ग**" कहते हैं।

प्रश्न 26 . कल्पातीत स्वर्ग के कितने भेद होते हैं ?

उत्तर . कल्पातीत स्वर्ग **तीन** होते हैं –

1. नव ग्रेवेयक 2. नव अनुदिश
2. पॉच अनुत्तर

प्रश्न 27 . स्वर्ग के देवों की जघन्य व उत्कृष्ट आयु कितनी होती है ?

उत्तर . स्वर्ग देवों की जघन्य आयु कुछ अधिक "**एक पल्य**" की एवं उत्कृष्ट आयु "**33 सागर**" की होती है।

प्रश्न 28 . देवों का कौन सा शरीर होता है ?

उत्तर . देवों के सप्त धातु रहित "**वैक्रियक शरीर**" होता है।

प्रश्न 29 . वैक्रियक शरीर किसे कहते है ?

उत्तर . देव और नारकियों के चक्षु अगोचर विशेष शरीर को "**वैक्रियक शरीर**" कहते हैं। यह शरीर अनेक रूपों को बनाने में समक्ष होता है।

प्रश्न 30 . क्या देव आहार करते हैं ?

उत्तर . हाँ, देव मानसिक आहार करते हैं। उनके गले में स्वतः अमृत झड जाता हैं। उसी से वे अपनी क्षुधा का शमन करते हैं।

प्रश्न 31 . देव किस कारण से सुख एवं दुःख उठाते हैं ?

उत्तर . देव सम्यकत्व के कारण सुख एव मिथ्यात्व के कारण से दुःख उठाते हैं।

प्रश्न 32 . मिथ्या दृष्टि देव दुःख क्यों उठाते हैं ?

उत्तर . मिथ्या दृष्टि देव अपने से बड़े देवों की विभूति को देखकर ईर्ष्या से जलते हैं। इसलिये दुःख उठाते हैं।

प्रश्न 33 . सम्यक् दृष्टि देव सुखी क्यों हैं ?

उत्तर . सम्यक् दृष्टि देव अन्य देवों की विभूति को न देखकर मात्र भगवान जिनेन्द्र देव के समवशरण एवं नंदीश्वर द्वीप आदि में जाकर पूजा भक्ति, पाठ में अपना समय व्यतीत करते हैं। इसलिये सम्यक् दृष्टि देव सुखी हैं।

प्रश्न 34 . क्या देव गति में भी जिन मंदिर हैं ?

उत्तर हाँ। देव गति में भी जिन मन्दिर (चेत्य ग्रह) हैं। भवनवासी व्यन्तर ज्योतिषी देवों में असंख्यात जिन मन्दिर हैं एवं स्वर्गों में सोधर्म स्वर्ग में 32 लाख ईशान स्वर्ग में 28 लाख सानत्कुमार में 12 लाख माहेन्द्र स्वर्ग में 8 लाख ब्रह्म–ब्रह्मोत्तर स्वर्ग में 40 लाख लान्तवकापिष्ठ स्वर्ग में 50 हजार शुक्र महाशुक्र स्वर्ग मे 40 हजार शतार और सहस्त्रार स्वर्ग में 6 हजार आनत प्राणत आरण और अच्युत स्वर्ग में 700 (सात सौ) ऊर्ध्व ग्रेवेयक में 91 नौ अनुदिशों में 9 पाँच अनुत्तरों में मात्र पाँच जिन मन्दिर हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण स्वर्ग में चौरासी लाख सतानवें हजार तेईस जिन मन्दिर (चेत्य ग्रह) हैं।

प्रश्न 35 . देव क्या करते हैं ?

उत्तर . देव जन्मोपरान्त कुल देवता मानकर जिनेन्द्र देव की पूजा करते हैं, पूजन कार्य से निवृत्त हो इच्छानुसार क्रिया करते हैं।

प्रश्न 36 . क्या सम्यक् दृष्टि मिथ्या दृष्टि दोनों कुल देवता मानते हैं?

उत्तर . नहीं ! सम्यक् दृष्टि आराध्य इष्ट सम्यक् दर्शन का कारण मोक्ष प्रदाता मानकर इनकी पूजा करते हैं मिथ्या दृष्टि कुल देवता पूजा की परम्परा मानकर आराधना करते हैं।

प्रश्न 37 . क्या देव पर्याय में मनुष्यों के समान जन्म होता है ?

उत्तर . नही, देव पर्याय में उपपाद शय्या होती है। उसमें यह जीव जन्म होता है और अर्न्तमुंहूर्त (48 मिनट के अन्दर का समय) के अन्दर 16 वर्ष के युवक के समान हो जाता है।

प्रश्न 38 . क्या देवगति में स्त्रियां होती हैं ?

उत्तर . हॉ, देवगति में एक देव की कम से कम 32 (6 या 7) देवियॉ और अधिक से अधिक असंख्यात देवियॉ होती है।

प्रश्न 39 . देवियों का जन्म कहॉ-कहॉं होता है ?

उत्तर . देवियों का जन्म भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी देवो मे एवं दूसरे स्वर्ग तक होता है। दूसरे स्वर्ग के ऊपर के देव अपनी–अपनी नियोगिनी देवियों को उठाकर ले जाते हैं।

प्रश्न 40 . देवगति में कैसे मरण होता है ?

उत्तर . देवगति में देवो के गले में एक माला होती है। सम्यक् दृष्टि देव के गले की माला नहीं मुरझाती एव वह मरण समय मे जोर–जोर से महामन्त्र णमोकार का उच्चारण करने लगता है तथा मिथ्या दृष्टि देव की माला मुरझाने लगती है, तब वह चीखता–चील्लाता है और अशुभ भावों से मर कर दुर्गति का पात्र होता है।

प्रश्न 41 . देव मरकर कहॉं-कहॉं जन्म लेते हैं ?

उत्तर . देव मरकर नरक गति में 2, 3, 4 इन्द्रिय तथा ऐकेन्द्रिय में वायुकायिक व अग्निकायिक को छोड़कर अन्य सभी स्थानों पर जन्म ले सकते हैं।

देवगति का पात्र

38

त्रय गारव, त्रय शल्यो बिन, जो शम दम यम नियम पाले।
त्रय रत्नों से युक्त साधुगण, उत्तम देव गति पाते।।
सराग संयमी बाल तपस्वी, अकाम निर्जरा जो करते।
मिथ्या देव गुरू की संगत, करते देव गति वरते।।38।।

अर्थ

तीन गारव तीन शल्यो के बिना जो कषायों का शमन करते हैं, धर्म करते हैं, इन्द्रियो का दमन करते है। जीवन पर्यन्त चरित्र का पालन करते है तथा रत्नत्रय से युक्त है ऐसे साधुगण देव गति को प्राप्त करते है तथा सयमी बाल तपस्वी मिथ्या दृष्टि देव एवं गुरू की संगति करते हैं, वे भी देवगति को प्राप्त करते हैं।

प्रश्न 1 . गारव किसे कहते हैं ?

उत्तर साधना, ज्ञान आदि के अहंकार को ''**गारव**'' कहते हैं।

प्रश्न 2 . गारव के कितने भेद होते हैं ?

उत्तर . गारव के **तीन** भेद होते हैं –

1 शब्द गारव   2. ऋद्धि गारव   3. सात गारव

प्रश्न 3 . शब्द गारव किसे कहते हैं ?

उत्तर . संस्कृत प्राकृत आदि ग्रन्थों के शुद्ध–उच्चारण का अहंकार करना ''**शब्द गारव**'' है।

प्रश्न 4 . ऋद्धि गारव किसे कहते हैं ?

उत्तर . शिष्य, पुस्तक, कमण्डल, पिच्छी आदि से एवं तंत्र–मंत्र की शक्ति से अपने आपको बडा सिद्ध करना ''**ऋद्धि गारव**'' है।

प्रश्न 5 . सात गारव किसे कहते हैं ?

उत्तर . भोजन–पान आदि से उत्पन्न सुख में आनन्दित होकर अहंकार करना ''**सात गारव**'' है।

प्रश्न 6 . शल्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . भावों में पीड़ा देने वाले विचार को ''**शल्य**'' कहते हैं।

प्रश्न 7 . शल्य के कितने भेद हैं ?

उत्तर . शल्य के **तीन** भेद हैं –

1. मिथ्यादर्शन शल्य 2. माया शल्य
3. निदान शल्य

प्रश्न 8 . मिथ्यादर्शन शल्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . आत्मस्वरूप की प्राप्ति की भावना से रहित, विपरीत परिणाम को "**मिथ्यादर्शन शल्य**" कहते हैं।

प्रश्न 9 . माया शल्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . कपट भेष को धारण कर लोगों को ठगकर प्रसन्न करने का भाव "**माया शल्य**" है।

प्रश्न 10 . निदान किसे कहते हैं ?

उत्तर देखी, सुनी, भोगी हुई वस्तु की भविष्य में चाह करना "**निदान शल्य**" है।

प्रश्न 11 . शम किसे कहते हैं ?

उत्तर . संसार के दुःखों का नाश करने वाली क्रिया को "**शम**" कहते हैं।

प्रश्न 12 . दम किसे कहते हैं ?

उत्तर . इन्द्रियो की चंचलता को शान्त करना "**दम**" कहलाता है।

प्रश्न 13 . यम किसे कहते हैं ?

उत्तर . भोगोपभोग की साम्रगी का जीवनपर्यन्त के लिये त्याग करना "**यम**" कहलाता है।

प्रश्न 14 . नियम किसे कहते हैं ?

उत्तर . कुछ समय के लिये भोगोपभोग की वस्तु का त्याग करना "**नियम**" है।

प्रश्न 15 . त्रय रत्न किसे कहते हैं ?

उत्तर . सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्र को "**त्रय रत्न**" कहते हैं।

प्रश्न 16 . इन सबका पालन करने वाले कौन होते हैं ?

उत्तर . तीन गारव तीन शल्य से रहित शम, दम, यम, नियम का पालन करने वाले रत्नत्रय से युक्त "**साधु**" होते हैं।

प्रश्न 17 . इनका निरतिचार पालन करने वाले कहाँ उत्पन्न होते हैं ?

उत्तर . इनका निरतिचार पालन करने वाले नव अनुदिश पाँच अनुत्तरवासी उत्तम देव गति में उत्पन्न होते हैं।

प्रश्न 18 . सराग संयम किसे कहते हैं ?

उत्तर . श्रावक के व्रतों को अर्थात् राग सहित त्याग को "**सराग संयम**" कहते हैं।

प्रश्न 19 . बाल तप किसे कहते हैं ?

उत्तर . मिथ्या दर्शन सहित, पंचग्नि आदि खोटे तपों को तपना परम हंस आदि भेष धारण कर तपस्या करना "**बाल तप**" हैं।

प्रश्न 20 . अकाम-निर्जरा किसे कहते हैं ?

उत्तर लक्ष्यविहीन साधना करना या सक्लेशता रहित भोगोपभोग की बस्तु का त्याग करना "**अकाम निर्जरा**" है।

प्रश्न 21 . उपर्युक्त जीव कौन से स्वर्ग तक जा सकते हैं ?

उत्तर सराग सयमी जीव 16 स्वर्ग तक, बाल तपस्वी 12 वें स्वर्ग तक अकाम–निर्जरा करने वाले 16 स्वर्ग से नीचे किसी भी देव पर्याय में एव मिथ्या देव–गुरू की संगति करने वाले 12 स्वर्ग तक उत्पन्न हो सकते हैं।

प्रश्न 22 . देवगति में कहाँ-कहाँ इस जीव ने आज तक जन्म नहीं लिया ?

उत्तर यह जीव अभी तक देवगति में सौधर्म इन्द्र, शची देवी, सौधर्म स्वर्ग के सोम आदि चार लोकपाल सनत्कुमार आदि दक्षिणेन्द्र, लोकान्तिक देव, सवार्थसिद्धि के पद को आज तक ग्रहण नहीं किया।

एक सौधर्म इन्द्र के काल में 40 नील शचि इन्द्राणियाँ मोक्ष को प्राप्त हो जाती हैं।

पुरूषार्थ

39

जैसा कर्म यहाँ पर करता, वैसा फल को पाता है।
बन्ध मोक्ष या सुख दुःख का, तो जीव स्वयं निर्माता है।।
आतम शक्ति जागृत हेतु, पुरूषार्थ को अपनाओ।
भव बन्धन का बन्धन खोलो, स्व परमातम प्रगटाओ।।39।।

अर्थ

जीव जैसा कर्म करता है वैसा ही फल को प्राप्त करता है। यह जीव स्वय ही बन्ध मोक्ष और सुख--दुख का निर्माता है। आत्म--शक्ति को जागृत करने के लिए पुरूषार्थ को अपनाना परमावश्यक है। पुरूषार्थ ही भव बन्धन के बन्धन को खोलने वाला है और स्वय के परमात्मा को प्रगटाने वाला है।

प्रश्न 1 . पुरूषार्थ किसे कहते हैं ?
उत्तर . ससार और मोक्ष प्राप्ति के लिये जो परिश्रम किया जाता है, उसे ''**पुरूषार्थ**'' कहते हैं।

प्रश्न 2 . पुरूषार्थ कितने प्रकार का होता है ?
उत्तर पुरूषार्थ **चार** प्रकार का होता है –
1. धर्म 2. अर्थ
3. काम 4. मोक्ष

प्रश्न 3 . धर्म पुरूषार्थ किसे कहते हैं ?
उत्तर . संसारातीत होने तथा रत्नत्रय प्राप्ति की भावना षट् कर्त्तव्य रूप, क्रिया, दया, दान, भक्ति आदि करने को ''**धर्म पुरूषार्थ**'' कहते हैं।

प्रश्न 4 . अर्थ पुरूषार्थ किसे कहते हैं ?
उत्तर . अनर्थो के मूल धन प्राप्ति हेतु व्यापारादि रूप में परिश्रम करना ''**अर्थ पुरूषार्थ**'' है।

प्रश्न 5 . काम पुरूषार्थ किसे कहते हैं ?
उत्तर . संसार संतति वृद्धि हेतु भोगों का सेवन करना ''**काम पुरूषार्थ**'' है।

प्रश्न 6 . मोक्ष पुरूषार्थ किसे कहते हैं ?

उत्तर . संसार समाप्ति हेतु वीतरागता को स्वीकार कर आत्म साधना में तल्लीन हो कर्मों के क्षय करने का पुरूषार्थ करना "**मोक्ष पुरूषार्थ**" है।

प्रश्न 7 . धर्म पुरूषार्थ को सर्वप्रथम क्यों रखा ?

उत्तर . धर्म संसार के इच्छुक व्यक्ति को अर्थ और काम प्रदान करता है तथा मोक्ष के इच्छुक व्यक्ति को मोक्ष प्रदान करने में सहायक होता है। इसलिये सर्वप्रथम धर्म पुरूषार्थ को रखा।

प्रश्न 8 . कौन सा पुरूषार्थ हेय है और कौन सा उपादेय हैं ?

उत्तर . अर्थ एवं काम पुरूषार्थ हेय हैं धर्म और मोक्ष पुरूषार्थ उपादेय हैं।

प्रश्न 9 . जीव किसका निर्माता है ?

उत्तर . जीव स्वय बन्ध मोक्ष और सुख–दु ख का निर्माता है।

प्रश्न 10 . यह जीव किस कर्म के फल को प्राप्त करता है ?

उत्तर यह जीव जैसा कर्म करता है वैसा ही फल प्राप्त करता है।

प्रश्न 11 . पुरूषार्थ करने से क्या होता है ?

उत्तर पुरूषार्थ करने से आत्म–शक्ति जागृत होती है। भव बन्धन का बन्धन खुलता है और स्वयं परमात्मा प्रकट होता है।

प्रश्न 12 . कौन सा पुरूषार्थ करने से परमात्मा प्रकट होता है ?

उत्तर . धर्म और मोक्ष का पुरूषार्थ करने से परमात्मा प्रकट होता है।

सुनता ज्यादा कहना कम
यह है परम विवेक
प्रकृति ने भी कर दिये
कान दोय मुख एक

अनेकान्त

40

जगति के सारे वस्तु में, गुण अनन्त पाये जाते।
अपनी-अपनी दृष्टि से लख, उसको सब हैं बतलाते।।
पर पर की दृष्टि गलत नहीं, यह धर्म कहे प्यारा अनेकान्त।
पक्षपात से रहित समन्वय का, सुन्दर है यह सिद्धान्त।।41।।

अर्थ

ससार की समस्त वस्तुओ मे गुण अनन्त पाये जाते हैं। उन सबको कहने की सबकी अलग–अलग (पद्धति) दृष्टि है। अनेकान्त सिद्धान्त कहता है कि पर की दृष्टि गलत नहीं है। यह अनेकान्त पक्षपात से रहित समन्वय का सर्वश्रेष्ठ सिद्धान्त है

प्रश्न 1 . अनेकान्त किसे कहते हैं ?

उत्तर वस्तु मे परस्पर विरोधी अनेक धर्मो के समावेश को "**अनेकान्त**" कहते है।

अथवा

एक वस्तु मे वस्तुत्व को उपजाने वाली परस्पर विरूद्ध दो शक्तियों का प्रकाशित होना अनेकान्त है।

प्रश्न 2 . अनेकान्त को किसी उदाहरण के माध्यम से समझाइये ?

उत्तर कृष्ण नारायण थे। वे वासुदेव की अपेक्षा पुत्र थे। प्रद्युन्न की अपेक्षा पिता थे, बलराम की अपेक्षा भाई थे। सत्यभामा की अपेक्षा पति थे। कंस की अपेक्षा शत्रु थे। अर्थात् कृष्ण अनेक धर्म से युक्त थे। कृष्ण एक होते हुए भी पिता, पुत्र, पति आदि परस्पर विरोधी गुणों से युक्त थे फिर भी अपेक्षा की दृष्टि से कोई विरोध नही है। बरा, इसे ही अनेकान्त सिद्धान्त कहते है।

प्रश्न 3 . अनेकान्त को कहने के लिये किसका सहारा लेना पड़ता हैं?

उत्तर अनेकान्त को कहने के लिये स्याद्वाद का सहारा लेना पड़ता है।

प्रश्न 4 . स्याद्वाद किसे कहते हैं ?

उत्तर . सापेक्ष कथन को "स्याद्वाद" कहते है। समझने की शैली को "**स्याद्वाद**" कहते हैं। विवाद मिटाने वाले सिद्धान्त को "**स्यादवाद**" कहते हैं।

नोट : वस्तु में अनेक धर्म होते हैं। वक्ता एक समय में एक ही धर्म का कथन करता है कथित धर्म को छोडकर अन्य धर्म को स्वीकार करने के लिए "**स्यात**" या "**कथचित**" शब्द का वक्ता प्रयोग करता है। अत: शब्दों में सीमित शक्ति होने के कारण एक समय में एक ही धर्म का कथन कर पाता है, अन्य का नहीं। पर अन्य गुण भी विद्यमान है पर वह तात्कालिक परिस्थिति में गौण रहते हैं।

प्रश्न 5 . अनेकान्त और स्याद्वाद में क्या अन्तर है ?

उत्तर . अनेकान्त से अनेक धर्मात्मक वस्तु को कहा जाता है तथा स्याद्वाद से वस्तु के स्वरूप को समझा जाता हैं।

प्रश्न 6 . स्याद्वाद के कितने प्रकार होते हैं ?

उत्तर . स्याद्वाद के **सात** प्रकार हैं। इसे "सप्तभंगी" कहते हैं।

1 स्याद् अस्ति 2. स्याद नास्ति
3. स्याद् अवक्तव्य 4. स्याद् आस्ति–नास्ति
5. स्याद् आस्ति अवक्तव्य 6. स्याद् नास्ति अवक्तव्य
7. स्याद् आस्ति नास्ति अवक्तष्य।

प्रश्न 7 . स्याद् आस्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर . वस्तु है इसे "**स्याद् आस्ति**" कहते है।
जैसे : कृष्ण पिता हैं प्रद्युम्न की अपेक्षा से।

प्रश्न 8 . स्याद् नास्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर . वस्तु नहीं है। इसे "**स्याद् नास्ति**" कहते हैं।
जैसे : कृष्ण पिता नही है वासुदेव की अपेक्षा से।

प्रश्न 9 . स्याद अवक्तव्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . वस्तु को नहीं कह सकते अर्थात् एक साथ दो गुणों का वर्णन एक शब्द मे नहीं कर सकते, इसे "**स्याद् अवक्तव्य**" कहते हैं।
जैसे : कृष्ण वासुदेव की अपेक्षा पुत्र हैं। प्रद्युम्न की अपेक्षा पिता हैं। पिता और पुत्र दोनों शब्दों को एक साथ नहीं कहा जा सकता, इसलिये ये "**स्याद् अवक्तव्य**" है।

प्रश्न 10 . स्याद् आस्ति-नास्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर . वस्तु है भी नहीं भी अर्थात् स्वगुण पर गुण की अपेक्षा जो क्रम से वर्णन किया जाता है। उसे **"स्याद् अस्ति - नास्ति"** कहते हैं।

जैसे : कृष्ण पिता हैं भी और नहीं भी प्रद्युम्न की अपेक्षा हैं वासुदेव की अपेक्षा नहीं हैं।

प्रश्न 11 . स्याद् अस्ति अवक्तव्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . वस्तु है पर कहने योग्य नही। अर्थात् स्वगुण की अपेक्षा है पर स्वपर की अपेक्षा एक साथ वस्तु कहने योग्य नहीं, उसे **"स्याद् अस्ति अवक्तव्य"** कहते है।

जैसे : कृष्ण प्रद्युम्न के पिता है पर वासुदेव और प्रद्युम्न की अपेक्षा एक साथ क्या हैं, नहीं कह सकते।

प्रश्न 12 . "स्याद्-नास्ति अवक्तव्य" किसे कहते हैं ?

उत्तर . वस्तु कहने योग्य नही है अर्थात् पर गुण की अपेक्षा वस्तु नही है पर स्वपर गुण की अपेक्षा वस्तु कहने योग्य नहीं है उसे **"स्याद् नास्ति अवक्तव्य"** कहते है।

जैसे : कृष्ण वासुदेव की अपेक्षा पिता नही हैं। वासुदेव और प्रद्युम्न की अपेक्षा क्या है। युगपत नहीं कह सकते।

प्रश्न 13 . स्याद् अस्ति-नास्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर . वस्तु, स्वधर्म की अपेक्षा है पर धर्म की अपेक्षा नहीं है पर एक साथ कह नहीं सकते हैं उसे **"स्याद् अस्ति-नास्ति अवक्तव्य"** कहते है।

जैसे : कृष्ण प्रद्युम्न की अपेक्षा पिता है। वासुदेव की अपेक्षा पुत्र हैं। दोनो की अपेक्षा क्या है, ये कह नहीं सकते।

प्रश्न 14 . अनेकान्त सिद्धान्त कैसा है ?

उत्तर . अनेकान्त सिद्धान्त पक्षपात से रहित समन्वय का सिद्धान्त है।

प्रश्न 15 . अनेकान्त क्या कहता है ?

उत्तर . अनेकान्त कहता है अपनी-अपनी अपेक्षा से ससार मे किसी की दृष्टि गलत नहीं है।

प्रश्न 16 . अनेकान्त एवं स्याद्वाद का सहारा लेने से क्या होता है ?

उत्तर . अनेकान्त एवं स्याद्वाद का सहारा लेने से विवेक जागृत होता है और पथ का धर्म सम्प्रदाय का मेरे-तेरे का विवाद समाप्त हो जाता है।

भावना

41

बार-बार चिन्तवन करना ही, अनुप्रेक्षा कहलाती है।
भव्य जनों को शाश्वत सुख का, अमृतपान कराती है।।
जग से छुटकारा गर चाहो, तो प्यारे पहनो गहना।
द्वादश विध है भेद भावना, आचार्यों का है कहना।।41।।

अर्थ

बार–बार चिन्तवन करना अनुप्रेक्षा कहलाती है। जो भव्य जीव ससार से छुटकारा पाना चाहते हैं, उन्हे भावनाओ के गहने को अगीकार करना चाहिये, क्योंकि यह बारह भावना भव्य जीवो को शाश्वत सुख का अमृतपान कराती है, ऐसा आचार्यों का कहना है।

प्रश्न 1 . अनुप्रेक्षा किसे कहते हैं ?
उत्तर . बार–बार चिन्तवन करने को "**अनुप्रेक्षा**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . आचार्यों ने अनुप्रेक्षा को क्या कहा है ?
उत्तर . आचार्यो ने अनुप्रेक्षा को आत्मश्रृंगार का गहना कहा है।

प्रश्न 3 . अनुप्रेक्षा का दूसरा नाम क्या है ?
उत्तर . अनुप्रेक्षा का दूसरा नाम "**भावना**" है।

प्रश्न 4 . भावना क्यों भानी चाहिए ?
उत्तर संसार शरीर भोगों से उदासीन होने के लिये, संसार से छुटने के लिए भावना भानी चाहिये।

प्रश्न 5 . भावना कितनी होती हैं ?
उत्तर . भावना **बारह** होती हैं –

1. अनित्य भावना 2. अशरण भावना 3. संसार भावना
4. एकत्व भावना 5. अन्यत्व भावना 6 अशुचिभावना
7. आश्रव भावना 8. संवर भावना 9. निर्जरा भावना
10. लोक भावना 11. बोधि दुर्लभ भावना 12. धर्म भावना

प्रश्न 6 . भावना क्या कराती हैं ?

उत्तर . भावना भव्य जीवों को शाश्वत सुख का अमृतपान कराती हैं।

प्रश्न 7 . बारह भावनाओं का चिन्तवन कौन कर सकता हैं ?

उत्तर . बारह भावनाओं का चिन्तवन गृहस्थ एवं मुनि दोनों कर सकते हैं।

प्रश्न 8 . बारह भावनाओं का चिन्तवन क्यों करते हैं ?

उत्तर . बारह भावनाओं का चिन्तवन गृहस्थ वैराग्य को जन्म देने के लिये एवं मुनिराज वैराग्य को स्थिर रखने के लिये करते हैं।

विकासयन्ति भव्यस्य मनोमुकुल मंशवः।
खेरिवारविंदस्य कठोराश्च गुरूक्तयः।।

अर्थ– गुरू के कठोर वचन भव्यों के मन को इस प्रकार प्रफुल्लित करते हैं जिस प्रकार सूर्य की कठोर किरणें कमल को खिला देती हैं।

सहजुप्पण्णं रूवं दट्ठुं जो मण्णए ण मच्छरियो।
सो संजमपडिवण्णे मिच्छाइट्टी हवइ एसो।।

अर्थ– जो स्वाभाविक नग्न रूप को देखकर उसे नहीं मानता है उल्टा ईर्ष्या भाव रखता है वह सयम को प्राप्त होकर भी मिथ्यादृष्टि है।

आचारणां विघातेन कुदृष्टीनां च सम्पदाम्।
धर्म ग्लानि परिप्राप्तं मुच्छ्यन्ते जिनोत्तमा।।

अर्थ– जब आचार नष्ट होने लगता है तब मिथ्यादृष्टियों के द्वारा ग्लानि को प्राप्त हुए धर्म की उन्नति करने के लिए तीर्थंकर जन्म लेकर धर्म को ऊँचा उठाते हैं।

अनित्य भावना

पल-पल गलता बर्फ सा जीवन, या जीवन नभ इन्द्रधनुष।
संध्या की लालिमा सम या, कमल पत्र पर ओस पियूष।।
ऐसे लक्ष्मी यौवन परिजन, क्षण भर के ही साथी हैं।
देह दीप में नेह श्वास है, तब तक जलती बाती है।।42।।

अर्थ

इस संसार की समस्त लक्ष्मी, यौवन, परिजन जीवन पल–पल गलते हुए बर्फ के समान विघटित होने वाले सुन्दर इन्द्रधनुष के समान, संध्या की लालिमा के समान कमल के पत्र पर पडी ओस की बूँद के समान क्षण स्थायी है। जब तक देह रूपी दीपक में श्वाँस रूपी घी है, तब तक ही जीवन बाती जलती है।

प्रश्न 1 . अनित्य भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो वस्तु उत्पन्न हुई है, वह नियम से विनाश को प्राप्त होगी, संसार की कोई भी वस्तु पर्याय रूप में नित्य नहीं है। इस प्रकार का चिन्तवन करना "**अनित्य भावना**" है।

प्रश्न 2 . जीवन किसके समान है ?

उत्तर . जीवन गलती हुई बर्फ के समान, इन्द्रधनुष के समान, संध्या की लालिमा के समान, कमल पत्र पर पड़ी ओस बूँद के समान अस्थायी है।

प्रश्न 3 . लक्ष्मी कैसी है ?

उत्तर . लक्ष्मी पानी में उठती हुई लहरों के समान चंचल स्वभाव वाली है। यह एक स्थान पर स्थिर होकर नहीं रहती, लक्ष्मी राजा को रंक, रंक को राजा बनाने में कारण है।

प्रश्न 4 . यौवन कैसा है ?

उत्तर . यौवन चार दिनों की चॉदनी है। अपने साथ बुढ़ापे का, मौत का पैगाम लिये बैठा है।

प्रश्न 5 . परिजन किसे कहते हैं ?

उत्तर . परिवार, मित्र, पुत्र, स्त्री आदि मेघ पटल इन्द्रधनुष के समान अस्थिर हैं। थोडे समय में इधर–उधर नष्ट होने वाले हैं। परिजन मात्र जीते जी की माया है।

प्रश्न 6 . कौन कितने समय तक साथ देता हैं ?

उत्तर . संसार मे परिवार के सदस्य जब तक धन है, मतलब सिद्ध हो रहा है तब तक, लक्ष्मी जब तक पुण्य का उदय है तब तक, यौवन जब तक स्वास्थ्य ठीक है, तब तक ही साथ देता है।

प्रश्न 7 . जीवन कब तक रहता हैं ?

उत्तर . जब तक देह रूपी दीपक में नेह (घी) रूपी श्वॉस है तब तक ही जीवन रहता है।

प्रश्न 8 . अनित्य भावना भाने से क्या लाभ होता है ?

उत्तर . अनित्य भावना भाने से संसार की अस्थिरता का ज्ञान होता है। मिटने वाली वस्तु के संग्रह के प्रति उदासीनता का भाव उत्पन्न होता है।

कैसे केरि केतकी कनेर एक कहे जाये।
आक दूध गाय दूध अन्तर घनेरे हैं।।
पीरी होत रीरी1 पे न रीस2 करे कंचन की।
कहाँ काग वाणी कहाँ कोयल की टेर है।।
कहाँ भानु भारो3 कहाँ आँगियाँ4 विचारो कहाँ।
पूनो को उजारो कहाँ मावस अंधेर है।।
पच्छ छोरी पारखी निहार नेकू नीचे नैन।
जैन बैन और बैन एतो ही तो फेर है।।

1. पीतल 2. तुलना 3. उजाला 4. अंगार।

अशरण भावना

43

काल चक्र जब चलता तन पर, साँसों का पंछी उड़ता।
मरण समय में माता-पिता की, शरण नहीं कुछ कर सकता।।
अरहंत सिद्ध साधु ही जग में, सच्चे शरण कहाते हैं।
और शरण तो मरण काल पर, छोड़ दूर हो जाते हैं।।43।।

अर्थ

इस शरीर पर जब काल का चक्र चलता है, तब सॉसो का पछी उड जाता है। मरण के समय मे माता–पिता, परिवार के सदस्य जीव को नहीं बचा सकते हैं। इस ससार में मात्र अरहत सिद्ध, साधु ही सच्चे शरण हैं और ससार के जितने भी शरण है वे सब मरण के समय मे उसका साथ छोडकर दूर हो जाते है।

प्रश्न 1 . अशरण भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर माता–पिता, मित्र–पुत्र, मंत्र–तंत्र, आर्शीवाद–औषध आदि मरण के समय वेदना के समय कुछ भी नहीं कर सकते इस प्रकार चिन्तवन करना "**अशरण भावना**" है।

प्रश्न 2 . जीव कब मरता है ?

उत्तर जब काल का चक्र जीव के ऊपर चलता है, तब यह जीव मरण को प्राप्त होता है।

प्रश्न 3 . मरण समय में कौन साथ नहीं देता ?

उत्तर . मरण समय में परिवार के, नगर के सदस्य, मंत्र–तत्र, डॉक्टर, वैद्य औषध आदि कोई भी साथ नहीं देते।

प्रश्न 4 . संसार में सच्चे शरण कितने हैं ?

उत्तर . संसार में सच्चे शरण अरहन्त, सिद्ध, साधु परमेष्ठी हैं।

प्रश्न 5 . शरण किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो मरण से बचाये उसे "**शरण**" कहते हैं।

प्रश्न 6 . अशरण भावना भाने से क्या लाभ है ?

उत्तर . अशरण भावना भाने से जीव का मोह पुत्र, स्त्री, मंत्र, तन्त्र के प्रति कम होता है और आत्मा परमात्मा की ओर उन्मुख होती है।

संसार भावना

44

दु:ख का दावानल यह जग है, सुख का ना है नाम निशान।
जन्म-जरा-मृत्यु रोगों से, घिरा हुआ हर प्राणी का प्राण।
मार-काट का दु:ख नरकों में, पशुगति में छेदन बन्धन।
मानुष देव विपतिमय जीवन, होता पंच परार्वतन।।44।।

अर्थ

यह ससार दुख का दावानल है। ससार में नाम मात्र को भी सुख नहीं है। क्योंकि यहॉ के हर प्राणी का प्राण जन्म–जरा–मृत्यु रोगो से घिरा हुआ है। इस ससार में जीव पंच परावर्तन करता है और नरक गति मे मार काट का दु ख, पशु गति मे छेदन बन्धन का दु:ख तथा मनुष्य और देव गति मे विपत्तिमय जीवन व्यतीत करता है।

प्रश्न 1 . संसार भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर . इस संसार मे जीव पंच परावर्तन करके चारों गति में दु:ख उठाता है। यह संसार दु:ख का घर है। यहॉ सुख का नामोनिशान नहीं है। इस प्रकार का चिन्तवन करना "**संसार भावना**" है।

प्रश्न 2 . संसार क्या है ?

उत्तर . संसार दु:ख का दावानल है।

प्रश्न 3 . संसारी प्राणी किससे घिरा है ?

उत्तर . संसारी प्राणी का प्राण जन्म, जरा, मृत्यु के रोगों से घिरा है।

प्रश्न 4 . इस शरीर में कितने रोग हैं ?

उत्तर . इस शरीर में 5 करोड 68 लाख 99 हजार 584 रोग हैं।

प्रश्न 5 . जीव ने संसार में कैसा जीवन व्यतीत किया ?

उत्तर . जीव ने चर्तुगति रूप संसार में नरक गति में मारकाट, तिर्यंच गति में छेदन–भेदन–बन्धन और देव तथा मनुष्य गति में विपत्तिमय जीवन व्यतीत किया।

प्रश्न 6 . परावर्तन किसे कहते हैं ?

उत्तर . संसार परिभ्रमण की क्रिया को "**परावर्तन**" कहते हैं।

प्रश्न 7 . परावर्तन कितने व कौन से होते हैं ?

उत्तर . परावर्तन **पाँच** होते हैं –

1. द्रव्य 2. क्षेत्र 3. काल
4. भाव 5. भव

प्रश्न 8 . द्रव्य परावर्तन किसे कहते हैं ?

उत्तर . विश्व के समस्त पुद्गल परमाणुओं को शरीर रूप में ग्रहण करना "**द्रव्य परावर्तन**" है।

प्रश्न 9 . क्षेत्र परावर्तन किसे कहते हैं ?

उत्तर . सुमेरू पर्वत के नीचे आठ प्रदेशों को छोडकर समस्त आकाश प्रदेशो में जन्म–मरण करके भ्रमण करना "**क्षेत्र परावर्तन**" है।

प्रश्न 10 . काल किसे कहते हैं ?

उत्तर . उत्सर्पिणी–अवसर्पिणी काल के सभी समयों में जन्म मरण करना "**काल परावर्तन**" है।

प्रश्न 11 . भाव परावर्तन किसे कहते हैं ?

उत्तर . संसार में सम्यक्त्व के बिना समस्त पुण्य–पाप रूप भावों को अनेक बार ग्रहण करना, छोड़ना "**भाव परावर्तन**" है।

प्रश्न 12 . भव परावर्तन किसे कहते हैं ?

उत्तर . सर्वार्थ–सिद्धि, लोकान्तिक देव, त्रेषठ शलाका पुरूष तीर्थंकर के माता पिता, इन्द्र–इन्द्राणी आदि के स्थान को छोड़कर अन्य योनियों में भ्रमण करना "**भव परावर्तन**" है।

प्रश्न 13 . क्या पंच परावर्तन का काल एक सा है ?

उत्तर . नहीं ! द्रव्य परावर्तन से क्षेत्र परावर्तन, क्षेत्र से काल, काल से भाव, भाव से भव परावर्तन का काल क्रमशः अनन्त–अनन्त गुणा है।

प्रश्न 14 . इस जीव ने पंच परावर्तन कितने बार किया ?

उत्तर . इस जीव ने पंच परावर्तन अनन्तों बार किया।

प्रश्न 15 . पंच परावर्तन कब समाप्त होता है ?

उत्तर . सम्यक्त्व की भावना से जुड़कर संसार छोड़ने के भाव से ओत–प्रोत होने पर "**पंच परावर्तन**" समाप्त होता है।

प्रश्न 16 . संसार भावना भाने से क्या लाभ है ?

उत्तर . संसार भावना भाने से अतीत के दु:खों का, भटकन का ज्ञान होता है और संसार से भय उत्पन्न होता है, अतः संसार का सदैव चिन्तवन करना चाहिये।

गृहवास बुरा क्यों है।

माया रूपी बुढ़िया औ शोक रूपी भेड़िया।
राग रूपी नाग उसे सदा ही सताते हैं।।
काल रूपी अंधकार अपयश तिरस्कार।
क्रोध रूपी अग्नि सदा ही जलाते हैं।।
चिन्ता का दावानल दुराशा का दल-दल।
जलन के काजल से विरूप हो जाते हैं।।
मोह के गज द्वारा श्रम का काक मारा।
इसलिए गृहवास बुरे कहे जाते हैं।।

यस्यं देशं समाश्रित्य साधव कुर्वते तपः।
षष्ठ मंश नृपस्तस्य लभते परिपालनात्।

अर्थ– जिस देश का आश्रय लेकर साधु जन तपस्या करते है उस देश के शासक को साधुओं की तपस्या का छठा भाग पुण्य स्वयमेव मिल जाता है।

एकत्व भावना

45

आया हूँ एकाकी जग में, एकाकी ही जाऊँगा।
जितना पुण्य कमाया मैनें, उसे साथ ले जाऊँगा।।
दृष्टि गोचर धन वैभव, जो पड़े यहीं रह जायेंगे।
परिजन-पुरजन मरघट तक, जा आग लगा आ जायेंगे।।45।।

अर्थ

इस ससार मे यह जीव अकेला आया है और अकेला ही जाता है और इस ससार मे रहकर जितना पुण्य कमाता है, उसे ही साथ ले जाता है। धन–वैभव आदि जो कुछ भी है, सब सही पडे रह जायेगे और जो परिवार वाले गॉव वाले है वे श्मशान तक ले जाकर आग लगाकर वापस आ जायेंगे। इस प्रकार का चिन्तवन करना एकत्व भावना है।

प्रश्न 1 . एकत्व भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर . इस संसार में मैं अकेला आया हूँ, अकेला ही जाऊँगा, धन परिवार आदि कुछ भी साथ जाने वाला नहीं है इस प्रकार का चिन्तवन करना "**एकत्व भावना**" है।

प्रश्न 2 . इस संसार में जीव कैसे आया व कैसे जायेगा ?

उत्तर . इस संसार में जीव कर्म के उदय से अकेला आया और अकेला ही जायेगा।

प्रश्न 3 . संसारी जीव अपने साथ क्या ले जाता है ?

उत्तर . संसारी जीव अपने साथ पुण्य व धर्म ले जाता है।

प्रश्न 4 . कौन कहाँ तक साथ देता है ?

उत्तर . धन वैभव तो जब तक पुण्य है, जीवन है तब तक साथ देते हैं एवं परिवार के सदस्य और नगरवासी मरघट तक ही साथ देते है।

प्रश्न 5 . एकत्व भावना भाने से क्या लाभ है ?

उत्तर . एकत्व भावना भाने से सुख–दुःख के प्रति समत्व का भाव उत्पन्न होता है और अकेलापन महसूस नहीं होता है।

अन्यत्व भावना

46

पृथक्-पृथक् है नीर क्षीर पर, दृष्टि गोचर होता एक।
आत्म देह का नाता ऐसा, आत्म एक तन रूप अनेक।।
हंस समा साधक बन करके, नीर क्षीर को पृथक् करो।
भेद-ज्ञान का आश्रय लेकर शुद्ध तत्व आतम को वरो।।46।।

अर्थ

दूध और पानी भिन्न–भिन्न दो तत्व हैं, पर देखने मे एक ही लगते हैं। उसी प्रकार आत्मा और शरीर का नाता है। यह आत्मा तो एक है पर अनेक प्रकार के शरीरों को धारण करता है। इसलिये हे आत्मन् ! हंस के समान साधक बन करके नीर–क्षीर को, शरीर आत्मा को पृथक्–पृथक् करो और भेद ज्ञान का आश्रय लेकर शुद्ध तत्व आत्मा का वरण करो।

प्रश्न 1 . अन्यत्व भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर . आत्मा से शरीर, स्त्री, पुत्र, मकान आदि भिन्न हैं, इस प्रकार का चिन्तवन करना "**अन्यत्व भावना**" है।

प्रश्न 2 . शरीर और आत्मा का सम्बन्ध कैसा है ?

उत्तर . शरीर और आत्मा का सम्बन्ध दूध और पानी जैसा है।

प्रश्न 3 . शरीर किसे कहते है ?

उत्तर . स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण आदि रूपी पदार्थ के जोड रूप पिण्ड को "**शरीर**" कहते हैं।

प्रश्न 4 . आत्मा किसे कहते हैं ?

उत्तर . ज्ञान दर्शन गुणों से युक्त चैतन्य पिण्ड तत्व को "**आत्मा**" कहते हैं।

प्रश्न 5 . आत्मा शरीर को क्या विशेषता प्रदान करती ?

उत्तर . संसार अवस्था में आत्मा शाश्वत चैतन्य रहता है तब शरीर में अनेक प्रकार का परिवर्तन कराता है अर्थात् हाथी, घोड़ा, नारकी आदि विविध रूपों में शरीर को विशेषता प्रदान करता है।

प्रश्न 6 . अन्यत्व भावना भाने वाले को क्या करना चाहिए ?

उत्तर . अन्यत्व भावना भाने वाले को हंस के समान साधक बनना चाहिये।

जैसे : हंस दूध और पानी को अलग–अलग कर देता है, उसी प्रकार साधक को भी ध्यान के माध्यम से शरीर और आत्मा को पृथक्–पृथक् करना चाहिए।

प्रश्न 7 . शरीर एंव आत्मा को भिन्न-भिन्न कैसे करना चाहिये ?

उत्तर . शरीर एवं आत्मा को भेद ज्ञान का सहारा लेकर अलग–अलग करना चाहिए।

प्रश्न 8 . भेद ज्ञान किसे कहते हैं ?

उत्तर . शरीर एवं आत्मा को पृथक–पृथक् करने वाले सम्यक आचरणात्मक ज्ञान को "**भेद ज्ञान**" कहते हैं।

प्रश्न 9 . अन्यत्व भावना भाने से क्या लाभ है ?

उत्तर . सभी पदार्थों को अन्य रूप में देखने से आत्म स्वरूप में स्थिरता आती है। कर्मों का कचरा शीघ्र पृथक् होता है और आत्मिक शुद्धता शीघ्रता से पास आती है।

पुण्यं जिनेन्द्र परिपूजन साद्य माद्यं।
पुण्यं सुपात्रा गत दान समुत्थमन्यत्।।
पुण्यं व्रतानुचरणा दुपवास योगात्।
पुण्यार्थिनामिति चतुष्ट्य भजनीयम्।।

अर्थ– जिनेन्द्र भगवान की पूजा से उत्पन्न पुण्य प्रथम है सुपात्र को दान देने से उत्पन्न पुण्य दूसरा पुण्य है व्रतों के पालन द्वारा पुण्य तीसरा पुण्य है उपवास करने से चौथा पुण्य है इस प्रकार पुण्यार्थी को पूजा दान व्रत तथा उपवास के द्वारा पुण्य का उपार्जन करना चाहिए।

अशुचि भावना

47

अशुचिमय यह तन सारा है, नौ द्वारों से मल बहता।
शुद्ध वस्तु संसर्ग मात्र से, अशुचिमय होकर ही रहता।।
नश्वर काया अधम अपावन, इसका न शृंगार करो।
आलिङ्गन कर इस तन का, तुम न नर भव बेकार करो।।47।।

अर्थ

यह तन अत्यन्त अपवित्र है। इस शरीर के नौ द्वारो से सदैव मल बहता है। इस शरीर के संसर्ग मात्र से ही शुद्ध वस्तु अशुद्धता को प्राप्त हो जाती है। यह काया नश्वर है, अधम है, अपावन है। इसका शृंगार नही करना चाहिये।

प्रश्न 1 . अशुचि भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर . शरीर की अपवित्रता के बारे मे बार–बार चिन्तन करना "**अशुचि भावना**" है।

प्रश्न 2 . यह शरीर कैसा है ?

उत्तर . यह शरीर अत्यन्त अपवित्र है, अधम है, अपावन है। इस शरीर के नौ द्वारों से सदैव मल बहा करता है। इस शरीर के संसर्ग मात्र से पवित्र वस्तु अपवित्र हो जाती है।

प्रश्न 3 . नौ द्वार कौन-कौन से हैं ?

उत्तर . दो ऑख, दो कान, नाक के दो छिद्र, मुख, मलद्वार एवं मूत्र द्वार ये नौ द्वार हैं।

प्रश्न 4 . इस शरीर का निर्माण किस पदार्थ के मिलान से हुआ ?

उत्तर . इस शरीर का निर्माण स्त्री के रज एवं पुरूष के वीर्य के सम्मिश्रण से हुआ।

प्रश्न 5 . इस शरीर के जन्म में कितना समय लगात है ?

उत्तर . इस शरीर के जन्म में 7 माह से 9 या 10 माह तक का समय लगता है।

प्रश्न 6 . इस शरीर की वृद्धि का क्या क्रम है ?

उत्तर . इस शरीर की वृद्धि का क्रम निम्न प्रकार है –

- स्त्री के गर्भ में यह जीव दस दिन तक कलल (तपाये हुये तॉबे एवं चॉदी का मिश्रण) के समान होता है।

- तत्पश्चात् दस दिन तक काला एवं दस दिन तक स्थिर रहता है।
- दूसरे माह बुलबुले के समान रहता है।
- तीसरे माह में कड़क रहता है।
- चौथे माह में मॉस का पिण्ड हो जाता है।
- पॉचवें माह में सिर, पैर, हाथ के स्थान में 5 अंकूर फूटते है।
- छठवें माह में अंग एवं उपांग बन जाते हैं।
- सातवे माह में रोम और नाखून बन जाते है।
- आठवें माह मे बच्चा पेट में घूमने लगता है।
- नवमे या दसवें माह में जीव बाहर आ जाता है।

प्रश्न 7 . इस शरीर में क्या-क्या है ?

उत्तर . इस शरीर में 300 हड्डियॉ हैं, 300 सन्धियाँ, 900 (नौ सौ) स्नायु हैं, 600 (छः सौ) शिरायें हैं, 500 (पाँच सौ) मॉस पेशियॉ हैं, शिराओं के चार समूह है। रक्त से भरी 16 (सोलह) महा शिराएँ है। शिराओं के छ. मूल हैं। पीठ और पेट के दो माँस रज्जू हैं, चर्म के सात परत हैं। सात मॉस खण्ड है, अस्सी लाख करोड़ रोम हैं, आमाशय की 16 ऑतें हैं, सात दुर्गन्ध के आश्रय है, वात, पित्त, कफ, नाम की तीन स्थूणा हैं, 106 मर्म स्थान है, 9 मल द्वार हैं, क्रमशः एक अजुलि प्रमाण वीर्य ओज एव मेद हैं। 3 अंजुली प्रमाण वसा, 3 अंजुली प्रमाण वित्त हैं। 8 सेर रक्त, 16 सेर मूत्र, 24 सेर विष्टा है। 24 नख एवं 32 दॉत हैं। यह शरीर निगोदिया जीवों से भरा है।

प्रश्न 8 . सात धातुएँ कौन सी हैं ?

उत्तर . रस, रूधिर, माँस, भेद, हड्डी, मज्जा, वीर्य ये सात धातुएँ हैं।

प्रश्न 9 . इस शरीर का क्या नहीं करना चाहिये ?

उत्तर . इस शरीर का शृंगार नहीं करना चाहिए एवं इस तन का आलिंगन कर नर भव को बेकार नहीं करना चाहिए।

प्रश्न 10 . अशुचि भावना भाने से क्या लाभ है ?

उत्तर . देह की अशुचिता का ज्ञान होने से वैराग्य उत्पन्न होता है और यह जीव आत्मा को प्राप्त करने का पुरूषार्थ प्रारम्भ करने लगता है।

आश्रव भावना

48

मन वच तन की चंचलता ही, कर्म बुलाते क्षण प्रति क्षण।
मिथ्या अविरति और प्रमाद से, होता कर्मों का बन्धन।।
भाव शुभाशुभ के कारण ही, पुण्य-पाप आ जाता है।
त्रय योगों से आश्रव रोके, जो भव में भटकाता है।।48।।

अर्थ

मन–वचन काय की चंचलता ही क्षण–प्रतिक्षण कर्म को बुलाते हैं और मिथ्या अविरति प्रमाद आदि से ही कर्मों का बन्ध होता है ? यह जीव जैसे शुभ–अशुभ भाव करता है उसी प्रकार पुण्य और पाप का आगमन होता है। अत. जो भव मे भटकाने वाला आश्रव है, उसे मन–वचन–काय से रोकना चाहिये।

प्रश्न 1 . आश्रव किसे कहते हैं ?

उत्तर . मन–वचन–काय की चंचलता के कारण राग–द्वेष आदि वर्गणाओं के आगमन को "**आश्रव**" कहते है।

प्रश्न 2 . आश्रव भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर . कर्मों के आगमन को संसार का कारण मानकर उससे बचने के उपाय के बारे में चिन्तवन करना "**आश्रव भावना**" हैं।

प्रश्न 3 . आश्रव के कितने भेद हैं ?

उत्तर आश्रव के **दो** भेद है –

1. शुभ आश्रव   2. अशुभ आश्रव

प्रश्न 4 . शुभ आश्रव किसे कहते हैं ?

उत्तर मन्द कषाय से युक्त धार्मिक क्रियाओं के माध्यम से सम्यकत्व सहित होने वाले पुण्याश्रव को "**शुभाश्रव**" कहते है।

प्रश्न 5 . अशुभ आश्रव किसे कहते हैं ?

उत्तर . पापाश्रव को "**अशुभ आश्रव**" कहते है।

प्रश्न 6 . क्या ये शुभ एवं अशुभ ये दोनों आश्रव संसार के कारण हैं?

उत्तर . नहीं । शुभ आश्रव परम्परा से मुक्ति का कारण है तथा अशुभ आश्रव नियम से संसार का कारण है।

प्रश्न 7 . हमें कौन सा आश्रव छोड़ना चाहिए ?

उत्तर . हमें मिथ्या अविरति प्रमाद के माध्यम से होने वाले एवं संसार में भटकाने वाले समस्त आश्रव को छोड़ना चाहिये।

प्रश्न 8 . मिथ्यात्व सम्बन्धी आश्रव किसे कहते हैं ?

उत्तर . देव, शास्त्र गुरू व तत्व के विपरीत मान्यता से जो कर्मों का आगमन होता है, उसे "**मिथ्यात्व सम्बन्धी आश्रव**" कहते हैं।

प्रश्न 9 . अविरति सम्बन्धी आश्रव किसे कहते हैं ?

उत्तर . षट् काय के जीवों की रक्षा न करने से तथा पाँच इन्द्रिय एवं मन वश में न करने से जो कर्मों का आगमन होता है, उसे "**अविरति सम्बन्धी आश्रव**" कहते हैं।

प्रश्न 10 . प्रमाद सम्बन्धी आश्रव किसे कहते हैं ?

उत्तर . श्रेष्ठ कार्य करने से आलस्य होने के कारण जो कर्मो का आगमन होता है, उसे "**प्रमाद सम्बन्धी आश्रव**" कहते हैं।

प्रश्न 11 . प्रमाद के कितने भेद हैं ?

उत्तर . प्रमाद के **पंद्रह** भेद हैं –

4 विकथा – स्त्री कथा, भोजन कथा, चोर कथा, राज कथा।

4 कषाय – क्रोध, मान, माया, लोभ।

5 इन्द्रिय वशता – स्पर्श, रसना, घ्राण, चक्षु, कर्ण, निद्रा व स्नेह।

प्रश्न 12 . स्त्री कथा किसे कहते हैं ?

उत्तर . स्त्री के रूप कला, चतुरता, हाव–भाव की राग भरी कथा करने को "स्त्री कथा" कहते हैं।

प्रश्न 13 . भोजन कथा किसे कहते हैं ?

उत्तर . स्वादिष्ट भोजन, भोजन बनाने की विधि, भोजन की सामग्री आदि विषय की चर्चा करना "**भोजन कथा**" है।

प्रश्न 14 . चोर कथा किसे कहते हैं ?

उत्तर . चोर के साहस, पराक्रम, चोरी की चतुरता के बारे में चर्चा करना "**चोर कथा**" है।

प्रश्न 15 . राज कथा किसे कहते हैं ?

उत्तर . राजाओं की विभूति व्यवहार, शासन पद्वति के बारे में चर्चा करना "**राज कथा**" है।

प्रश्न 16 . क्रोध प्रमाद किसे कहते हैं ?

उत्तर . क्रोध कषाय के वशीभूत होकर श्रेष्ठ कार्य में आलस्य करने को "**क्रोध प्रमाद**" कहते हैं।

प्रश्न 17 . मान प्रमाद किसे कहते हैं ?

उत्तर . मान कषाय के वशीभूत होकर शुभ कार्य में अनुत्साह होने को "**मान प्रमाद**" कहते हैं।

प्रश्न 18 . माया प्रमाद किसे कहते हैं ?

उत्तर . माया कषाय के वशीभूत होकर धर्म कार्य में आलस्य करने को "**माया प्रमाद**" कहते हैं।

प्रश्न 19 . लोभ प्रमाद किसे कहते हैं ?

उत्तर . लोभ कषाय के वशीभूत होकर धर्म कार्य में अनुत्साह होने को "**लोभ प्रमाद**" कहते हैं।

प्रश्न 20 . स्पर्श इन्द्रिय जनित प्रमाद किसे कहते हैं ?

उत्तर . स्पर्श इन्द्रिय के विषय में चिन्तवन प्रवृत्ति सुरक्षा आदि के अधीन होकर शुभ कार्य मे आलस्य करना "**स्पर्श इन्द्रिय जनित प्रमाद**" है।

प्रश्न 21 . रसना इन्द्रिय जनित प्रमाद किसे कहते हैं ?

उत्तर . स्वादिष्ट भोजन आदि में आसक्त होकर धर्म कार्यो में आलस्य करना "**रसना इन्द्रिय जनित प्रमाद**" है।

प्रश्न 22 . घ्राण इन्द्रिय जनित प्रमाद किसे कहते हैं ?

उत्तर . इत्र फुलेल आदि सुगन्धित पदार्थो की वाछा के वशीभूत होकर शुभ कार्य में प्रमाद करना "**घ्राण इन्द्रिय जनित प्रमाद**" है।

प्रश्न 23 . चक्षु इन्द्रिय जनित प्रमाद किसे कहते हैं ?

उत्तर सुन्दर रूप नाटक चित्र वर्ण आदि के अवलोकन में आसक्त होकर धर्म कार्य में आलस्य करना "**चक्षु इन्द्रिय जनित प्रमाद**" है।

प्रश्न 24 . कर्ण इन्द्रिय जनित प्रमाद किसे कहते हैं ?

उत्तर कर्ण इन्द्रिय रागोत्पादक सगीत गायन वार्ता आदि के श्रवण में अनुरक्त होकर धर्म के कार्य में आलस्य करना "**कर्ण इन्द्रिय जनित प्रमाद**" है।

प्रश्न 25 . निद्रा प्रमाद किसे कहते हैं ?

उत्तर निद्रा के वशीभूत होकर शुभ कार्यों में अनुत्साहित होना "**निद्रा जनित प्रमाद**" है।

प्रश्न 26 . स्नेह प्रमाद किसे कहते हैं ?

उत्तर . किसी प्राणी व पदार्थ से आकर्षित हो, उसके वशीभूत होकर शुभ कार्य मे आलस्य करना "**स्नेह प्रमाद**" है।

प्रश्न 27 . आश्रव को कैसे रोकना चाहिये ?

उत्तर . मन–वचन–काय की चंचलता को रोककर आश्रव को रोकना चाहिये।

प्रश्न 28 . मन-वचन-काय की चंचलता को कैसे रोकना चाहिये ?

उत्तर **मन** – मन की चंचलता को रोकने के लिये, मन से पंच परमेष्ठी का ध्यान, गुण स्मरण, समवशरण, चिन्तन, तीर्थ वन्दना या उल्टा णमोकार मत्र का जाप करना चाहिये।

वचन – वचन की चंचलता को रोकने के लिए हित–मित–प्रिय वचन बोलना चाहिये।

काय – काय की चंचलता को रोकने के लिये एकासन से बैठकर या खडे होकर ध्यान, जाप्यादिक करना चाहिये।

प्रश्न 29 . कर्मो का आश्रव किसके माध्यम से सर्वप्रथम होता है ?

उत्तर . कर्मो का आश्रव सर्वप्रथम मन के माध्यम से, फिर वचन से, फिर काय से होता है।

प्रश्न 30 . कर्मो का आश्रव किसके माध्यम से सर्वप्रथम रूकता है ?

उत्तर . कर्मो का आश्रव सर्वप्रथम काय के माध्यम से, फिर वचन से, फिर मन से रूकता है।

प्रश्न 31 . कर्मों का आश्रव रोकने से क्या होता है ?

उत्तर . कर्मों का आश्रव रोकने से जीव का संसार में भटकना रूक जाता है।

प्रश्न 32 . आश्रव भावना भाने से क्या होता है ?

उत्तर . आश्रव भावना भाने से मन में कर्मो के प्रति भय उत्पन्न होता है तथा मन–वचन–काय की दुष्प्रवृत्ति रूकती है और आत्मा कर्मों से बचकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में उद्यत होती है।

संवर भावना

49

आते जो हैं कर्म लुटेरे, उसे आने मत दो प्राणी।
व्रत समिति गुप्ति आदि से, आश्रव रोकते हैं ज्ञानी।।
संवर होता जब कर्मों का, होता है आतम पावन।
भव अरण्य से वह प्राणी तो, सदा-सदा को करता गमन।।49।।

अर्थ

जो कर्मरूपी लुटेरे अपनी सेना के साथ आत्मा की ओर आ रहे हैं, उसे ज्ञानी जीव व्रत समिति गुप्ति के माध्यम से रोकते है। जब कर्मों का आना रूक जाता है, तब वह आत्मा पावन हो जाती है और भव–भव मे भ्रमण करता हुआ प्राणी इस ससार से सदा–सदा के लिये मोक्ष हेतु विदा हो जाता है।

प्रश्न 1 . संवर भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर . आते हुए कर्म लुटेरे को रोकने के लिए बार–बार चिन्तन करना एवं प्रयन्त करना "**संवर भावना**" है।

प्रश्न 2 . संवर किसके माध्यम से होता है ?

उत्तर व्रत समिति, गुप्ति के माध्यम से संवर होता है।

प्रश्न 3 . संवर किस जीव के होता है ?

उत्तर . सवर निश्चय से मुनियों के होता है।

प्रश्न 4 . जब कर्मों का संवर होता है तब क्या होता है ?

उत्तर . जब कर्मो का संवर होता है तब आत्मा पावन हो जाती है, उस समय से जीव को आत्मानुभव होने लगता है।

प्रश्न 5 . आत्मानुभव होने के उपरान्त जीव की क्या स्थिति होती है ?

उत्तर . आत्मानुभव होने के उपरान्त जीव का संसार में भटकना समाप्त हो जाता है और वह जीव अनन्त दर्शन, ज्ञान, सुख वीर्य को उपलब्ध हो जाता है।

प्रश्न 6 . क्या मोक्ष प्राप्ति हेतु कर्मों का संवर आवश्यक है ?

उत्तर . हॉं ! पुण्य – पाप, रूप, शुभ–अशुभ आश्रव को रोके बिना जीव कर्मों की निर्जरा नहीं कर पाता और कर्मों का तारतम्य बना रहता है। अतः मोक्ष के इच्छुक जीवों को सर्वप्रथम कर्मों का संवर करना परमावश्यक है।

प्रश्न 7 . संवर भावना भाने से क्या लाभ है ?

उत्तर . संवर भावना भाने से आश्रव से निवृत्ति होती है और जीव कर्मों से शीघ्र मुक्त होता है।

बहन्ति चेतसा द्वेषं वाचा ग्रहन्ति दूषणं।
अनभ्रकायाः साधुनामधमा दर्शन द्विषः।।

अर्थ– जो मन से साधुओं से द्वेष करते हैं वचन से अनेक दोष का प्रतिपादन करते हैं और साधुओं को देखकर काय से विनय प्रगट नहीं करते हैं वे नीच सम्यक् दर्शन के द्वेषी हैं।

साधुश्चारित्र हीनोऽपि समानो नान्य साधुभिः।
भग्नोपि शातुकुम्भस्य कुम्भो मृत्स्नाघटे रपि।।

अर्थ– जिस प्रकार सोने का घडा फूटने के बाद भी मिट्टी के अनेक अच्छे घडे के समान नहीं होता उसी प्रकार जैन मुनि भी चारित्र से हीन होने पर भी अन्य अजैन साधुओं के समान कदापि नहीं होता।

संञिचतं यद् गृहस्थेन पापमामरणान्तिकम्।
तत् सर्व निर्दहत्येव होकरत्रयुविषतो यतिः।।

अर्थ– गृहस्थ के द्वारा मरण पर्यन्त जो पाप संञ्चित किया जाता है उस सब पाप को एक रात्रि का दीक्षित साधु नियम से भस्म कर दिया है।

निर्जरा भावना

50

अनशन ऊनोदर कर प्राणी, पूर्वोपार्जित कर्म भगा।
सोया जो परमात्म तत्व है, कर्म भगा के उसे जगा।।
कर्मों के निर्जरण होत ही, केवल ज्ञान उदित होता।
मुक्ति रमा से परिणय करके, जीवन यह प्रमुदित होता।।50।।

अर्थ

हे भव्य आत्मन ! अनशन ऊनोदर आदि तपस्या करके पूर्वोपार्जित कर्मों को भगा दे, दूर कर दे और जो तुम्हारे अन्दर का परमात्म तत्व सोया है, उसे कर्म भगा के शीघ्र जगा ले, जैसे ही कर्मों का जाना होगा उसी क्षण से निर्जरा प्रारम्भ हो जायेगी और केवल ज्ञान का सूर्य उदित होगा, मुक्ति रमा से परिणय होगा, यह जीव अनन्त सुख मे लीन होकर प्रमुदित प्रसन्नचित होगा।

प्रश्न 1 . निर्जरा किसे कहते हैं ?

उत्तर आत्मा से कर्मों के एक देश वियोग होने को "**निर्जरा**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . निर्जरा भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर . निदान रहित वैराग्य भावना से परिपूर्ण तपस्या के माध्यम से संवर पूर्वक कर्मों को अलग करने का बार–बार चिन्तन करना "**निर्जरा भावना**" है।

प्रश्न 3 . निर्जरा कितने प्रकार की होती है ?

उत्तर . निर्जरा के **दो** भेद हैं –

1. सविपाक निर्जरा 2. अविपाक निर्जरा

प्रश्न 4 . सविपाक निर्जरा किसे कहते हैं ?

उत्तर . पूर्व सचित कर्मों का उदय में आकर झड़ते रहना "**सविपाक निर्जरा**" है।

जैसे : वृक्ष पर आम पका और गिर गया।

प्रश्न 5 . अविपाक निर्जरा किसे कहते हैं ?

उत्तर . तपस्या के माध्यम से समय के पूर्व ही कर्मों को बुलाकर झड़ा देना **"अविपाक निर्जरा"** है।
जैसे : कच्चे आम को तोड़कर पयाल में पका देना।

प्रश्न 6 . सविपाक निर्जरा किन जीवों के होती है ?

उत्तर . सविपाक निर्जरा सभी संसारी जीवों के होती है

प्रश्न 7 . अविपाक निर्जरा किन जीवों के होती है ?

उत्तर . अविपाक निर्जरा व्रतधारियों के होती है क्योंकि वे तपस्या के माध्यम से बलपूर्वक समय से पूर्व कर्मों को उदय में ला सकते हैं।

प्रश्न 8 . कौन सी निर्जरा मोक्ष का कारण है ?

उत्तर . अविपाक निर्जरा मोक्ष का कारण है।

प्रश्न 9 . कर्मों की निर्जरा किसकी किससे ज्यादा होती है ?

उत्तर . कर्मों की निर्जरा सम्यक् दृष्टि से अणुव्रती की अणुव्रती से, महाव्रती की, महाव्रती से श्रेणी के सम्मुख मुनि की, श्रेणी के सम्मुख मुनि से केवली भगवान की ज्यादा निर्जरा होती है अर्थात् सम्यकत्व के बढते हुए प्रत्येक गुणस्थानों की वृद्धि के साथ–साथ निर्जरा की भी वृद्धि होती जाती है।

प्रश्न 10 . कर्मों की निर्जरा से क्या होता है ?

उत्तर . कर्मो की निर्जरा करने से सोया हुआ परमात्म तत्व जागृत होता है और केवल ज्ञान प्रकट होता है।

प्रश्न 11 . केवल ज्ञान होने के उपरान्त क्या होता है ?

उत्तर . केवल ज्ञान होने के उपरान्त इस जीव का मुक्ति रमा से परिणय होता है जिस कारण यह जीव अनन्त काल तक सुखी एवं प्रमुदित होता है।

प्रश्न 12 . निर्जरा भावना भाने से क्या लाभ होता है ?

उत्तर . निर्जरा भावना भाने से कर्मों से मुक्त होने की प्रेरणा मिलती है अतः जीव की एक देश निर्जरा करके पूर्ण देश निर्जरा करने की निर्जरा भावना सदैव भानी चाहिए।

लोक भावना

षट् द्रव्यों से बना हुआ यह, लोक अनादि से पुरूषाकार।
राग द्वेष कर पुण्य पाप कर, जीव घूम रहा संसार।।
लोक बना चौदह राजू का, सबसे ऊपर सिद्ध शिला।
रागद्वेष तज सिद्धालय पा, केवल ज्ञान का पुष्प खिला।।51।।

अर्थ

यह जीव अनादि काल से पुरूषाकार रूप में छ. द्रव्यों से बना हुआ है। यह जीव राग द्वेष करके पाप–पुण्य करने लोक में घूम रहा है। यह लोक चौदह राजू का बना हुआ है। हे भव्य जीव ! अगर तुम सिद्धालय प्राप्त करना चाहते हो तो राग–द्वेष को छोडकर केवल ज्ञान का पुष्प खिलाओ ताकि शीघ्र सिद्ध पद की प्राप्ति हो सके।

प्रश्न 1 . लोक किसे कहते हैं ?
उत्तर . जहाँ जीवादि छः द्रव्य पाये जाये, उसे "**लोक**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . लोक भावना किसे कहते हैं ?
उत्तर . छः द्रव्यों के बारे में लोक के बारे में बार–बार चिन्तन करना "**लोक भावना**" है।

प्रश्न 3 . लोक कितने होते हैं ?
उत्तर . लोक **तीन** होते है –
1. ऊर्ध्व लोक 2. मध्यलोक 3. अधोलोक

प्रश्न 4 . क्या लोक के अलावा भी कुछ है ?
उत्तर . हाँ ! लोक के अलावा अलोक है, जहाँ मात्र शुद्ध आकाश द्रव्य पाया जाता है।

प्रश्न 5 . लोक कैसा है ?
उत्तर . लोक अनादिकाल से पुरूषाकार रूप में है अर्थात् कोई पुरूष दोनों पैर फैलाकर और दोनों हाथों को कमर में रखकर खड़ा हो जाये तो जैसा आकार बनता है वैसा ही आकार लोक का है।

प्रश्न 6 . यह लोक कितना बड़ा है ?
उत्तर . यह लोक चौदह राजू का है अर्थात् सात राजू नीचे व सात राजू ऊपर हैं।

प्रश्न 7 . सर्वलोक किससे घिरा हुआ है एवं इसका आधार क्या है ?
उत्तर . सर्वलोक घनोदधि धन वात और तनुवात नाम की तीन वायु के घेरे से घिरा हुआ है। यही इसका आधार है।

प्रश्न 8 . लोक का मध्य स्थान कहाँ है ?
उत्तर . सुमेरू पर्वत के नीचे गाय के स्तन के आकार के आठ–आठ प्रदेश हैं। जिस भाग में प्रदेश स्थित है, वही लोक का मध्य स्थान है।

प्रश्न 9 . अधोलोक ऊर्ध्वलोक का क्षेत्र सात-सात बतलाया है तो मध्य लोक कहाँ है ?
उत्तर . अधोलोक ऊर्ध्वलोक के मध्य में ही सुमेरू पर्वत के बराबर का मध्य लोक है।

प्रश्न 10 . सुमेरू पर्वत कितना बड़ा है ?
उत्तर . सुमेरू पर्वत 1 लाख योजन (1 योजन = 2000 कोस) ऊँचा है। वह 1 हजार योजन पृथ्वी के नीचे है और 99 हजार योजन बाहर है। इसके ऊपर 40 योजन की चूलिका (चोटी) है।

प्रश्न 11 . सुमेरू पर्वत के नीचे क्या है ?
उत्तर . सुमेरू पर्वत के नीचे अधोलोक है अर्थात् सात नरक छः राजू क्षेत्र में व निगोद एक राजू क्षेत्र में स्थित है।

प्रश्न 12 . सुमेरू पर्वत के ऊपर क्या है ?
उत्तर . सुमेरू पर्वत के ऊपर 16 स्वर्ग नौ ग्रेवेयक, पाँच अनुत्तर पाँच अनुदिश तथा सिद्ध शिला हैं। ये सब सात राजू में 1 लाख 40 योजन कम क्षेत्र में है।

प्रश्न 13 . स्वर्ग के प्रथम पटल व सुमेरू पर्वत की चोटी में कितना अन्तर है ?
उत्तर . स्वर्ग के प्रथम पटल व सुमेरू पर्वत की चोटी मे मात्र एक बाल का अन्तर है।

प्रश्न 14 . तीन लोकों के मध्य में क्या है ?
उत्तर . तीनों लोकों के मध्य में त्रस नाली हैं, जिससे त्रस जीव कहते हैं।

प्रश्न 15 . त्रस नाली के बाहर कौन से जीव रहते हैं ?

उत्तर . त्रसनाली के बाहर मात्र एकेन्द्रिय जीव रहते है।

प्रश्न 16 . त्रस जीव कितने राजू प्रमाण क्षेत्र में रहते हैं ?

उत्तर . त्रस जीव 13 राजू से 20 योजन 7575 धनुष कम क्षेत्र में त्रस जीव रहते हैं, क्योंकि नीचे 1 राजू-क्षेत्र में निगोद है, तथा सर्वार्थ सिद्धि के ऊपर त्रस जीवों का अभाव है।

प्रश्न 17 . जीव तीनों लोकों में क्यों भ्रमण कर रहा है ?

उत्तर . जीव राग द्वेष व पुण्य-पाप के कारण तीनों लोकों में भ्रमण कर रहा है।

प्रश्न 18 . सिद्धालय प्राप्त करने के लिये क्या करना चाहिये ?

उत्तर . सिद्धालय प्राप्त करने लिये राग-द्वेष का त्याग करके केवल ज्ञान का पुष्प खिलाना चाहिये।

प्रश्न 19 . सिद्ध शिला कहाँ पर व कैसे है ?

उत्तर . सर्वार्थ सिद्धि विमान से 12 योजन ऊपर 8 योजन मोटी 45 लाख योजन विस्तार वाली लोक के अग्रभाग में अर्द्ध चन्द्राकार सिद्धशिला है।

अथवा

सर्वार्थसिद्धि इन्द्रक के ध्वज दण्ड से 12 योजन मात्र ऊपर जाकर आठ योजन मोटाई की सिद्धशिला है। उस आठवीं पृथ्वी मे ईषत्प्राग्भार नाम का क्षेत्र है। यह क्षेत्र उत्तान धवल छत्र के सदृश्य या गहरे कटोरे के सदृश है। उस आठवीं पृथ्वी के ऊपर 7050 धनुष जाकर सिद्धों का आवास है। वहीं सिद्धजीव निष्कप विराजते हैं।

प्रश्न 20 . लोक भावना भाने से क्या लाभ है ?

उत्तर . लोक की रचना एवं लोक में भ्रमण का ज्ञान होने से वैराग्य में दृढता आती है और सस्थान विचय नामक उत्कृष्ट धर्म ध्यान होता है, जो मुक्ति का कारण है।

तप करते जीवन गया द्रव्य गया मुनि दान
प्राण गये सन्यास में तीनों गया न जान

बोधि दुर्लभ भावना

52

मावस की कली रातों में, खो जाये गर काला बाल।
मिलता ना वह बाल है जैसे, त्यों दुर्लभ नरभव का लाल।।
धर्म श्रवण श्रद्धा संयम को, क्रम से दुर्लभ जानो।
परिणामों की शुद्धि दुर्लभ, शिव सिद्धि अति दुर्लभ मानो।।52।।

अर्थ

हे भव्य आत्मन ! अमावस्या की काली रात में अगर काले रंग का बाल खो जाये तो वह बाल नहीं मिल सकता, उसी प्रकार नर भव का लाल भी प्राप्त करना अत्यन्त दुर्लभ है। नर–भव का लाल मिल जाये तो धर्म श्रवण श्रद्धा एव सयम में प्रवृत्ति अत्यन्त दुर्लभ है और कहीं सयम मे प्रवृत्ति हो जाये तो परिणामों की शुद्धि एवं मोक्ष की प्राप्ति अत्यन्त दुर्लभ है।

प्रश्न 1 . बोधि दुर्लभ किसे कहते हैं ?

उत्तर सांसारिक वस्तु की प्राप्ति अत्यन्त सुलभ है। सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्र बोधि समाधि की प्राप्ति दुर्लभ है। इस प्रकार का बार–बार चिन्तवन करना "**बोधि दुर्लभ भावना**" है।

प्रश्न 2 . संसार में दुर्लभ क्या है ?

उत्तर . इस संसार में एकेन्द्रिय, दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चार इन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, तिर्यच फिर मनुष्य भव को प्राप्त करना अत्यन्त दुर्लभ है।

प्रश्न 3 . मनुष्य भव की दुर्लभता का उदाहरण दीजिये ?

उत्तर . जैसे अमावस्या की काली रात मे अगर सिर का एक बाल तूफान में उड़ जाये तो उस बाल का दुबारा मिलना दुर्लभ है। उसी प्रकार मनुष्य पर्याय का मिलना भी अन्यन्त दुर्लभ है।

प्रश्न 4 . मनुष्य पर्याय प्राप्त हो जाये तो किस वस्तु की प्राप्ति दुर्लभ है ?

उत्तर . मनुष्य पर्याय प्राप्त हो जाये तो उत्तम देश, कुल, जाति की

शुद्धता इन्द्रियों की सामर्थ्य, दीर्घायु, धर्म श्रवण, धर्म ग्रहण, धर्म श्रद्धान प्रतिमा, संयम महाव्रत, आत्मानुभूति, श्रेणी आरोहण कैवल्य की प्राप्ति क्रमशः दुर्लभ है।

प्रश्न 5 . बोधि दुर्लभ भावना भाने से क्या लाभ है ?

उत्तर . बोधि दुर्लभ भावना भाने से श्रेष्ठ वस्तु की दुर्लभता का ज्ञान होता है और मोक्षमार्ग की ओर अग्रसर होने की भावना उत्पन्न होती है।

दृश्यन्ते मुनि भूरि निम्बतरवः कुत्राप्यते चन्दनः।
पाषाणैः परिपूरिताः वसुमति चिन्तामणिः दुर्लभः।।
श्रूयन्ते करटारवाश्च सततं चैत्रो कुहूकूजितं।
तन्मन्ये खलसङ्कुलं जगदिदं द्वित्राः क्षित्तौ सज्जनाः।।

अर्थ– पृथ्वी में नीम के वृक्ष बहुत दिखाई देते हैं। पत्थरों से पृथ्वी भरी पड़ी है परन्तु चिन्तामणि दुर्लभ है कौओं की काँव–काँव सदा सुनायी पड़ती है परन्तु कोयल की कूक चैत्र में सुनाई पडती है इससे ऐसा प्रतीत होता है कि यह जगत् दुर्जनों से व्याप्त है सज्जन तो पृथ्वी पर दो चार ही है।

घृष्टं घृष्टं पुनरपि पुनश्चन्दनं चारुगन्धं।
तप्तं तप्तं पुनरपि पुनः काञ्चनं कान्तवर्णम्।।
छिन्नश्चिन्नः पुनरपि पुनः स्वादुमानिक्षुदण्डः।
प्राणान्तेऽपि प्रकृति विकृति र्जायते नोत्तमानाम्।।

अर्थ– चन्दन बार–बार घिसे जाने पर भी उत्तम गन्ध से युक्त रहता है सुवर्ण बार–बार तपाये जाने पर भी सुन्दर रहता है इक्षुदण्ड बार–बार छिन्न–भिन्न किये जाने पर भी मधुर रहता है सचमुच ही प्राणान्त हो जाने पर भी महात्माओं की प्रकृति में विकार नहीं होता है।

धर्म भावना

53

भव सिन्धु में पतित जनों को, पार लगाने नौका सम।
आतम ज्योति प्रकाशित करता, उत्तम सुख को देता धरम।।
धर्म बिना जगति में प्राणी, भटक-भटक कर मरता है।
वीतराग का धर्म प्रकट कर पाता जीव अमरता है ।53।।

अर्थ

संसार समुद्र में गिरते हुए मनुष्यों को पार लगाने के लिए जिन धर्म नौका के समान है। यह उत्तम सुख को प्रदान करता है और आत्म ज्योति को प्रकट करता है। धर्म को धारण किये बिना यह जीव ससार में भटक–भटक का मरता है। जब यह जीव वीतराग धर्म को अपनी आत्मा मे प्रकट कर लेता है तब अमरता को उपलब्ध हो जाता है।

प्रश्न 1 . धर्म किसे कहते हैं ?
उत्तर . जो संसार समुद्र में गिरते हुए जीवों को पार लगाकर उत्तम सुख को प्रदान करता है, उसे "**धर्म**" कहते है।

प्रश्न 2 . धर्म भावना किसे कहते हैं ?
उत्तर धर्म धारण करने के बारे में बार–बार सोचना एवं आचरण करना "**धर्म भावना**" है।

प्रश्न 3 . धर्म क्या है ?
उत्तर . धर्म आध्यात्मिक निधियों का भण्डार है, धर्म कल्पवृक्ष है, धर्म कामधेनू है, धर्म चिन्तामणि रत्न है।

प्रश्न 4 . धर्म कितने प्रकार का होता है ?
उत्तर . धर्म **दो** प्रकार का होता है –
1. गृहस्थ धर्म 2. मुनि धर्म

प्रश्न 5 . गृहस्थ धर्म किसे कहते है ?
उत्तर . दान, पूजा, 12 व्रत, स्वाध्याय उपवास आदि क्रिया को "**गृहस्थ धर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 6 . मुनि धर्म किसे हैं ?

उत्तर . ज्ञान, ध्यान में लवलीन होना, मोह आदि से रहित होना "**मुनि धर्म**" है।

प्रश्न 7 . धर्म क्या करता है ?

उत्तर . धर्म आत्म ज्योति को प्रकाशित करता है और उत्तम सुख अर्थात् मोक्ष को प्रदान करता है।

प्रश्न 8 . कौन सा धर्म मोक्ष में कारण है ?

उत्तर . गृहस्थों का धर्म परम्परा से एवं मुनियों का धर्म साक्षात् मोक्ष में कारण है।

प्रश्न 9 . धर्म के बिना इस प्राणी की क्या स्थिति होती है ?

उत्तर . धर्म के बिना यह प्राणी चतुर्गति रूप संसार में भ्रमण करता है और भटक–भटक कर जन्म–मरण के दुःखों को सहन करता है।

प्रश्न 10 . अमरता को कौन सा जीव प्राप्त करता है ?

उत्तर . जो जीव वीतराग धर्म को स्वीकार करता है वह जीव अमरता को प्राप्त करता है।

प्रश्न 11 . धर्म भावना भाने से क्या लाभ है ?

उत्तर धर्म भावना भाने से धर्म की महिमा का ज्ञान होता है। धर्म को स्वीकार करने का भाव उत्पन्न होता है, जो मोक्ष के संस्कारभूत है।

सिद्धाः सिद्धयन्ति सेत्स्यन्ति काले दन्तपरिवर्जिते।
जिनदृष्टेन धर्मेण नैवान्येन कथञ्चन्।।

अर्थ– आज तक जो सिद्ध हुए हैं वर्तमान में जो हो रहे हैं और अनन्त भविष्य में जो होंगे, वे जिनेन्द्र प्रतिपादितधर्म से ही हुए हैं हो रहे हैं और आगे होंगे अन्य किसी धर्म से नहीं।

प्रतिमा

54

संयम सिद्धि वृद्धि हेतु, श्रावक प्रतिमा धरे सदा।
दर्शन व्रत सामायिक प्रोषध, ना सेवे सचित्त कदा।।
रैन भुक्ति तज ब्रह्मचर्य से, वाह्यारंभ परिग्रह त्याग।
ना दे अनुमति छोड़े उद्दिष्ट बढ़ता भाव सदा वैराग।।54।।

अर्थ

संयम की सिद्धि व वृद्धि हेतु श्रावक ग्यारह प्रतिमाओं को धारण करता है वह प्रतिमा दर्शन, व्रत, सामायिक, प्रोषधोपवास, सचित्त त्याग, रात्रि भुक्ति, त्याग, ब्रह्मचर्य, आरंभ त्याग, परिग्रह त्याग, अनुमति त्याग, उद्दिष्ट त्याग नाम की है इसके धारण करने से वैराग्य भाव की निरन्तर वृद्धि होती है।

प्रश्न 1 . प्रतिमा किसे कहते हैं ?

उत्तर . संयम की सिद्धि व वृद्धि हेतु लिए गये संकल्प को "**प्रतिमा**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . प्रतिमा के कितने भेद हैं ?

उत्तर . प्रतिमा के **ग्यारह** भेद हैं –

1. दर्शन प्रतिमा
2. व्रत प्रतिमा
3. सामायिक प्रतिमा
4. प्रोषध प्रतिमा
5. सचित्त त्याग प्रतिमा
6. रात्रि भुक्ति त्याग प्रतिमा
7. ब्रह्मचर्य प्रतिमा प्रतिमा
8. आरम्भ त्याग प्रतिमा
9. अनुमति त्याग प्रतिमा
10. परिग्रह त्याग प्रतिमा
11. उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा

प्रश्न 3 . दर्शन प्रतिमा किसे कहते हैं ?

उत्तर . सम्यक् दर्शन से शुद्ध वैराग्य भाव से युक्त भोगाकांक्षा से रहित पंच परमेष्ठी के प्रति दृढ़ श्रद्धा होना "**दर्शन प्रतिमा**" है।

प्रश्न 4 . दर्शन प्रतिमाधारी का बाह्य आचरण कैसा होता है ?

उत्तर . दर्शन प्रतिमाधारी सप्त व्यसन का सेवन नहीं करता शुद्ध मर्यादित भोजन ग्रहण करता है, बारह व्रतों के पालन का अभ्यास करता है। प्रतिदिन देव पूजन करता है, भूत, भविष्य, वर्तमान के सभी दिगम्बर मुनियो की वन्दना करता है यही उसका बाह्य आचरण है इस क्रिया से रहित जीव दर्शन प्रतिमा का धारी नही हो सकता है।

प्रश्न 5 . व्रत प्रतिमा किसे कहते हैं ?

उत्तर . माया मिथ्या निदान शल्य रहित 5 अणुव्रत 3 गुणव्रत 4 शिक्षाव्रत का पालन करना "व्रत प्रतिमा" है।

प्रश्न 6 . सामायिक प्रतिमा किसे कहते हैं ?

उत्तर . मन वचन काय की चंचलता को रोकने के नियम काल में नियत समय के लिए समता परिणाम को धारण करना पच परमेष्ठी का चिन्तन करना "**सामायिक प्रतिमा**" है।

प्रश्न 7 . सामायिक प्रतिमा व सामायिक व्रत में क्या अन्तर है ?

उत्तर सामायिक प्रतिमाधारी के तीन बार सामायिक का संकल्प होता है पर सामायिक व्रतधारी का कोई नियम नहीं होता है यही दोनों में अन्तर है।

प्रश्न 8 . सामायिक का प्रारम्भ एवं अन्त कैसे करना चाहिये ?

उत्तर सामायिक प्रतिमाधारी को प्रत्येक दिशा में 9 बार णमोकार मंत्र तीन आवर्त व एक शिरोनति (प्रणाम) करना चाहिए फिर खड़गासन या पद्मासन में सामायिक सीमा का संकल्प परिग्रह की निवृत्ति कर पंच परमेष्ठी का जाप या चिन्तन करना चाहिए अन्त मे सामायिक पाठ पढकर पुनः चारों दिशा में 9 बार णमोकार मत्र तीन आवर्त एक शिरोनती करके सामायिक का विसर्जन करना चाहिए।

नोट : श्रावक नीयत समय के लिए सम्पूर्ण वस्त्रादि परिग्रह का त्याग करके सामायिक कर सकता है यह अधिक विशुद्धि व पुण्याश्रव का कारण है।

प्रश्न 9 . प्रोषधोपवास प्रतिमा किसे कहते हैं ?

उत्तर . अपनी शक्ति के अनुसार प्रत्येक अष्टमी चतुर्दशी को उपवास तथा सप्तमी नवमी व त्रयोदशी पूनम या अमावस को एकासन व रसों का त्याग "**प्रोषधोपवास प्रतिमा**" है।

प्रश्न 10 . सचित त्याग प्रतिमा किसे कहते हैं ?

उत्तर . कच्चे फल फूल बीज पत्ते आदि को प्राशुक या छिन्न–भिन्न किये बिना न खाना तथा कच्चा पानी नहीं पीना "**सचित त्याग प्रतिमा**" है।

प्रश्न 11 . रात्रि भुक्ति त्याग प्रतिमा किसे कहते हैं ?

उत्तर . नव कोटि से खाद्य स्वाद्य लेय पेय इन चार प्रकार के आहार का त्याग करना "**रात्रि भुक्ति त्याग प्रतिमा**" है।

प्रश्न 12 . ब्रह्मचर्य प्रतिमा किसे कहते हैं ?

उत्तर . नव कोटि से स्त्री मात्र का त्याग करना "**ब्रह्मचर्य प्रतिमा**" है।

प्रश्न 13 . आरम्भ त्याग प्रतिमा किसे कहते हैं ?

उत्तर . हिंसा के कारण भूत समस्त गृह कार्य सम्बन्धी आरम्भ कार्यों का त्याग करना "**आरम्भ त्याग प्रतिमा**" है।

प्रश्न 14 . अनुमति त्याग प्रतिमा किसे कहते हैं ?

उत्तर . आरंभ परिग्रह से युक्त लौकिक कार्य करने की अनुमति न देने का संकल्प करना "**अनुमति त्याग प्रतिमा**" है।

प्रश्न 15 . परिग्रह त्याग प्रतिमा किसे कहते हैं ?

उत्तर . परिग्रह को पाप का कारण समझकर यथायोग्य दस प्रकार के परिग्रह का त्याग करना "**परिग्रह त्याग प्रतिमा**" है।

प्रश्न 16 . उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा किसे कहते हैं ?

उत्तर . नव कोटि से विशुद्ध भिक्षावृत्ति से भोजन करना, ग्रह जजाल से मुक्त मुनिसंघ बन चेत्यालय धर्मशाला आदि में निवास करना "**उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा**" है।

प्रश्न 17 . उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा के कितने भेद हैं ?

उत्तर . उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा के **दो** भेद हैं –

1. क्षुल्लक 2. एलक

प्रश्न 18 . क्षुल्लक व एलक में क्या अन्तर है ?

उत्तर . 1. क्षुल्लक लंगोट व दुपट्टा रखते हैं एलक मात्र लंगोट रखते हैं।

2. क्षुल्लक कैंची से बाल बनवा सकते हैं एलक को केश लोंच करना आवश्यक है।

3. क्षुल्लक कटोरे में भोजन करते हैं एलक कर पात्र में भोजन ग्रहण करते है।

प्रश्न 19 . प्रतिमा धारण करने का क्या महत्त्व है ?

उत्तर . प्रतिमा धारण करने से श्रावक पंचम गुणस्थान वर्ती हो जाता है तथा वैराग्य की भावना निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होती है।

प्रश्न 20 . प्रतिमा किनसे ग्रहण करनी चाहिए ?

उत्तर . प्रतिमा दिगम्बर मुनिराज के समक्ष श्रीफल अथवा वन्दना प्रस्तुत कर ग्रहण करना चाहिए, अव्रती, विद्वान, ब्रह्मचारी, क्षुल्लक एलक आदि से प्रतिमा ग्रहण नहीं करनी चाहिए कदाचित् मुनिराज न मिले तो जिन प्रतिमा के समक्ष प्रतिमा ग्रहण करनी चाहिए जब मुनिराज मिल जायें तो उनसे निवेदन कर आशीर्वाद प्राप्त कर लेना चाहिए।

प्रश्न 21 . प्रतिमा पालन का क्या फल है ?

उत्तर . निरतिचार प्रतिमा का पालन करने वाला श्रावक जघन्य से तीन या चार भव में व उत्कृष्ट से 7 या 8 भव से मुक्ति का पात्र होता है।

संयम अंश जग्यो जहाँ,
भोग अरुचि परिणाम्।
उदय प्रतिज्ञा को भयो,
प्रतिमा ताको नाम।।
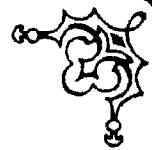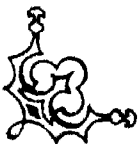
प्रतिमा को धारण करे,
करे शुद्ध परिणाम।
अन्त समाधि धार कर,
पावे पद निर्वाण।।

त्रि-पन

बाल्यकाल खेलों में बीता यौवन, गया भोग के संग।
जरा-जरा सा घेर लिया तो, हाथ में आ गये तेरे दण्ड।।
अब तो शुद्ध हृदय से ध्याओ, मंगलकारी प्रभु का नाम।
वीतरागता को अपनाकर कर लो आतम का कल्याण।।55।।

अर्थ

इस जीवन का बाल्यकाल खेलो मे व्यतीत हुआ। यौवन भोग के साथ व्यतीत हुआ। जरा (बुढापा) जरा–सा घेर लिया तो हाथ में डंडा आ गया। लेकिन आज तक इस जीव ने धर्म कार्य नहीं किया इसलिये आचार्य कह रहे है, कि हे भव्य जीव! अब तो शुद्ध हृदय से प्रभु का नाम ध्यान करो और वीतरागता को अपनाकर अपने जीवन का कल्याण करो।

प्रश्न 1 . जीवन की कितनी अवस्थाएँ होती हैं ?

उत्तर . जीवन की **तीन** अवस्थाएँ होती है –

1. बचपन 2. यौवन 3. बुढ़ापा

प्रश्न 2 . मनुष्य का बचपन, यौवन किसमें व्यतीत हुआ ?

उत्तर . मनुष्य का बचपन खेलों में और यौवन भोगों में व्यतीत हुआ।

प्रश्न 3 . वृद्धावस्था में मनुष्य की क्या स्थिति हुई ?

उत्तर . वृद्धावस्था में जरा ने (बुढापा) जरा–सा घेर लिया तो दाँत गिर गये, चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गयीं। ऑखो से दिखायी नही पडता और कानों से सुनाई नही पड़ता, शरीर शिथिल पड़ गया। हाथ में डंडा आ गया अर्थात् बुढ़ापे में दयनीय स्थिति हो गई

प्रश्न 4 . वृद्धावस्था में मनुष्य को क्या करना चाहिये ?

उत्तर . वृद्धावस्था में मनुष्य को शुद्ध हृदय से मंगलकारी प्रभु का नाम लेना चाहिये और वीतरागता को अपनाकर आत्म–कल्याण करना चाहिये।

प्रश्न 5 . कल्याण किसे कहते हैं ?

उत्तर . शुद्ध आत्म–तत्व की प्राप्ति के पुरूषार्थ करने को **"कल्याण"** कहते हैं।

प्रश्न 6 . क्या वृद्धावस्था में भी कल्याण कर सकते हैं ?

उत्तर . नहीं ! आत्म कल्याण की सर्व–श्रेष्ठ अवस्था यौवन अवस्था है। यौवन में ही कल्याण का तीव्र पुरूषार्थ कर सकते हैं। वृद्धावस्था मे शारीरिक कमजोरी के कारण नाममात्र स्मरण कर सकते है।

प्रश्न 7 . जब यौवन में कल्याण का तीव्र पुरूषार्थ कर सकते हैं तब इस श्लोक में वृद्धावस्था में वीतरागता को अपनाने का उपदेश क्यों दिया ?

उत्तर . इस श्लोक में उन लोगों के लिए कथन किया गया है जिन्होंने दो अवस्थाएँ व्यर्थ में गँवा दीं और वृद्धावस्था मे प्रवेश कर गये हैं। कम से कम वृद्धावस्था में तृष्णा को कम करे, साधना करें, धर्म स्मरण करे ताकि अन्तिम समय कल्याण हो सके, क्योंकि **"अन्त भला तो सब भला"** ।

तपः श्रुत धृति ध्यान विवेक संयमैः।
ये वृद्धास्तेऽत्र शस्यन्ते न पुनः पलिताङ्कुरैः।।

अर्थ– जो तप शास्त्र, ज्ञान, धैर्य, ध्यान, विवेक, यम और संयम के द्वारा वृद्ध है वें प्रशंसनीय है न कि सफेद बालों से वृद्ध प्रशंसनीय है।

बुर्जगों के चेहरे पर पड़ी एक-एक झुर्रियों में सैकड़ो अनुभव लिखे हैं उनकी सेवा कर उनके अनुभव को सुनकर समझकर अपने भविष्य को सुखमय बनाने का सदैव प्रयास करना चाहिए।

उत्तम क्षमा

हृदयांगन में क्रोध की अग्नि, कभी नहीं जलने देना।
नीर-क्षीर सम घुल-मिल करके, सदा जगत में प्रेम से रहना।।
क्रोध किया कमठासुर ने जब, नरकों का दुख सहन किया।
क्षमा को धरकर पार्श्व प्रभु ने, भव दुःखदा का हनन किया।।56।।

अर्थ

संसार मे प्राणी को दूध और पानी के समान घुल–मिलकर सदैव प्रेम से रहना चाहिये। कभी भी हृदय के आंगन मे क्रोध की अग्नि नही जलने देनी चाहिये क्योकि क्रोध महा दुःखदायी है। कमट का जीव पार्श्वनाथ पर क्रोध करने के कारण नरको का दुःख सहन करता था और क्षमा को धारण कर पार्श्वनाथ अपने भव दुःख को समाप्त करते थे। अतः क्रोध को छोड़कर क्षमा को धारण करना चाहिये।

प्रश्न 1 . उत्तम क्षमा किसे कहते हैं ?

उत्तर . प्रतिशोध, बैर, क्रोध के कारण उपस्थित होने पर भी मन मे कलुषता का न होना **"उत्तम क्षमा"** है।

प्रश्न 2 . क्रोध कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर . क्रोध **चार** प्रकार का होता है –

1. अनन्तानुबंधी
2. अप्रत्याख्यान क्रोध
3. प्रत्याख्यान क्रोध
4. संज्जवलन क्रोध

प्रश्न 3 . अनन्तानुबंधी क्रोध किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो क्रोध पत्थर की रेखा के समान स्थायी होता है, उसे **"अनन्तानुबंधी क्रोध"** कहते हैं।

प्रश्न 4 . अप्रत्याख्यान क्रोध किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो क्रोध हल से खींची गई रेखा के समान अधिकतम छः माह तक रहती है, उसे **"अप्रत्याख्यान क्रोध"** कहते हैं।

प्रश्न 5 . प्रत्याख्यान क्रोध किसे कहते हैं ?

उत्तर जो क्रोध धूल पर खींची गई रेखा के समान अधिकतम 15 दिन तक रहती है, उसे "**प्रत्याख्यान क्रोध**" कहते हैं।

प्रश्न 6 . संज्जवलन क्रोध किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो क्रोध जल मे खींची गई रेखा के समान अधिकतम अन्तर्मुहूत (48 मिनट) तक रहती है, उसे "**संज्जवलन क्रोध**" कहते है।

प्रश्न 7 . क्रोध के कारण किसे दुःख सहन करना पड़ा ?

उत्तर . क्रोध के कारण कमठ को दु.ख सहन करना पडा।

प्रश्न 8 . क्षमा को धारण कर किस जीव ने मोक्ष को प्राप्त किया ?

उत्तर . प्रतिशोध क्रोध बैर की भावना से रहित क्षमा को धारण कर भगवान पार्श्वनाथ ने भव दुःख का अन्त कर मोक्ष को प्राप्त किया।

प्रश्न 9 . हमें संसार में कैसे रहना चाहिये ?

उत्तर . हमे संसार में दूध और पानी के समान घुल–मिलकर रहना चाहिये। अर्थात् हृदय के आँगन मे कभी भी क्रोध की अग्नि को नहीं जलने देना चाहिये।

सूपकारं कवि वेद्यं बन्दिनं शस्त्र पाणिकम्।
स्वामिनं धनिनं मूर्खं मर्मज्ञं न प्रकोपयेत।।

अर्थ– रसोई बनाने वाले को , कवि को, वैद्य को, बन्दी को, हाथ में शस्त्र लिए हुए को, स्वामी को, धनी को, मूर्ख को और मर्म को जानने वाले को कभी भी कुपित नही करना चाहिए।

क्रोध महाविष रूप है क्रोध विच्छु का डंक।
क्रोध छोड़कर क्षमा धरो धोओ पास के पङ्क्।।

उत्तम-मार्दव

मद में फूल नहीं जाना तुम, मान नहीं सुख का दाता।
मार्दव धर्म का पालन कर लो, पाने को अक्षय सुख साता।।
बलशाली रावण को देखो, मान वश स्व पतन किया।
अपने ही हाथों से उसने अपना, जीवन खतम किया।।57।।

अर्थ

वस्तु शाश्वत नहीं है और न ही सुख प्रदान करने वाली है। अतः वस्तु का अहकार करके गर्व से फूलना नही चाहिये। उस बलशाली रावण को याद करो कि तीन खण्ड का अधिपति था, वह भी अहंकार के कारण अपने ही हाथो से अपना पतन किया और अपने जीवन को समाप्त किया।

प्रश्न 1 . उत्तम मार्दव किसे कहते हैं ?

उत्तर . ज्ञान, पूजा, कुल, जाति, बल, ऋद्धि, तप, शरीर से युक्त होने पर भी इसका अहंकार नहीं करना "**उत्तम मार्दव**" है।

प्रश्न 2 . मान कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर . मान **चार** प्रकार का होता है –

1. अनंतानुबंधी मान
2. अप्रत्याख्यान मान
3. प्रत्याख्यान मान
4. संज्जवलन मान

प्रश्न 3 . अनन्तानुबंधी मान किसे कहते हैं ?

उत्तर पर्वत के समान अत्यन्त कठोर एवं कभी न नमने वाले अहंकार को "**अनंतानुबन्धी मान**" कहते हैं।

प्रश्न 4 . अप्रत्याख्यान मान किसे कहते हैं ?

उत्तर . हड्डी के समान कुछ कठोर एवं छः माह के भीतर समाप्त होने वाले अहंकार को "**अप्रत्याख्यान मान**" कहते हैं।

प्रश्न 5 . प्रत्याख्यान मान किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो मान लकड़ी के समान सहज टूट जाता है, 15 दिन से अधिक नहीं टिकता उस अहंकार को "**प्रत्याख्यान मान**" कहते है।

प्रश्न 6 . संज्जवलन मान किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो मान बेत के समान सहज झुकता हो, अन्तर्मुहूर्त से अधिक न रहता हो उस अहंकार को "**संज्जवलन मान**" कहते है।

प्रश्न 7 . हमें क्या नहीं करना चाहिये ?

उत्तर . हमे अशाश्वत, दु:ख प्रदान करने वाली वस्तु का अहंकार करके गर्व से फूलना नहीं चाहिये।

प्रश्न 8 . अहंकार के कारण किसका पतन हुआ ?

उत्तर . अहंकार के कारण त्रिखण्डाधिपति रावण का पतन हुआ।

वीणेव श्रोत्रहीनस्य लीलाक्षीव विचक्षुचः।
व्यसोः कुसुममालेव विद्या स्तब्धस्य निष्फला।।

अर्थ— जिस प्रकार वधिर मनुष्य के समक्ष वीणा, अन्धे मनुष्य के सामने चपललोचना स्त्री, मृत मनुष्य के ऊपर डाली पुष्पमाला व्यर्थ है उसी प्रकार अभिमानी मनुष्य की विद्या निष्फल है।

मान बढ़ाई कारणे क्यों मर रहा मूढ़।
मरकर हाथी होयगा धरती लटके सूढ़।।

बकरा जो मैं-मैं करे अपनी खाल खिचाय।
मैना जो मै-ना कहे दूध भात नित खाय।।

उत्तम-आर्जव

58

कपटाचार करो तुम ना अरूँ, मन-वच-तन को एक रखो।
अपने चंचल चित को तुम तो, आर्जव धर्म से रोक सको।।
मायाचारी कर मृदुमति ने, तिर्यञ्च गति के दुःख सहे।
मायाचारी तुम ना करना, ऐसे अरहन्त देव कहे।।58।।

अर्थ

हे भव्य जीव ! कपट रूप व्यवहार तुम कभी मत करो। सदैव अपने मन–वचन–काय को एक रखो, अपने चचल चित्त रोकने के लिये आर्जव (ऋजुता) का सहारा लो। अरहन्त देव कहते हैं देखो एक बार मायाचारी करने से मृदुमति नाम के मुनिराज को तिर्यच गति के दु:ख सहन करने पडे जो जीव बार–बार माया व्यवहार कर रहा है उसकी क्या दशा होगी? अत: कभी मायाचारी मत करो।

प्रश्न 1 . उत्तम आर्जव किसे कहते हैं ?

उत्तर . मन–वचन–काय की कुटिलता का न होना "**उत्तम आर्जव**" है।

प्रश्न 2 . माया कितने प्रकार की होती है ?

उत्तर . माया **चार** प्रकार की होती है –

1. अनंतानुबधी माया
2. अप्रत्याख्यान माया
3. प्रत्याख्यान माया
4. संज्जवलन माया

प्रश्न 3 . अनन्तानुबंधी माया किसे कहते हैं ?

उत्तर . बाँस की जड़ के समान अत्यन्त वक्र मन–वचन–काय की क्रिया को "**अनंतानुबन्धी माया**" कहते हैं।

प्रश्न 4 . अप्रत्याख्यान माया किसे कहते हैं ?

उत्तर . मेढ़े के सिंग के समान वक्र मन–वचन–काय की क्रिया को "**अप्रत्याख्यान माया**" कहते हैं।

प्रश्न 5 . प्रत्याख्यान माया किसे कहते हैं ?

उत्तर . खुरपे के समान अल्प वक्र मन–वचन–काय की प्रवृत्ति को "**प्रत्याख्यान माया**" कहते हैं।

प्रश्न 6 . संज्जवलन माया किसे कहते हैं ?

उत्तर . गौमूत्र के समान अत्यल्प वक्र मन–वचन–काय की क्रिया को "**संज्जवलन माया**" कहते है।

प्रश्न 7 . कौन सी माया कितने समय तक रहती है ?

उत्तर . अनंतानुबंधी माया छः माह से अधिक, अप्रत्याख्यान माया छः माह तक प्रत्याख्यान माया 15 दिन तक, संज्जवलन माया 48 मिनट (अन्तर्मुहूर्त) तक अधिकतम रहती है।

प्रश्न 8 . अरहंत देव ने क्या कहा ?

उत्तर . एक बार मायाचारी करने से मृदुमति मुनिराज तिर्यञ्च गति के दुःखों को सहन किये तो जो जीव बार–बार मायाचारी करते है, उसकी क्या दशा होगी, अतः मायाचारी कभी नहीं करना चाहिये, ऐसा भगवान अरहंत देव ने कहा है।

कुशलजननबन्ध्यां सत्य सूर्यास्त सन्ध्यां।
कुगतियुवतिमात्मां मोहमातङ्ग शालाम्।।
शमकमलहिमानीं दुर्यशो राजधानी।
व्यसन शत सहायां दूरतो मुञ्चमायां।।

अर्थ– जो कुशल क्षेम उत्पन्न करने के लिए वन्ध्या है। सत्य रूपी सूर्य को अस्त करने संध्या है। कुगति रूप स्त्री का स्वागत करने के लिए माला है मोह रूपी हाथी की शाला है प्रशम भाव रूपी कमल को नष्ट करने के लिए तुषारा पात है अपयश की राजधानी है और सैकड़ों कष्टों की सहायक है उस माया को दूर से ही छोड़ देना चाहिए।

उत्तम-शौच

59

शौच धर्म है कितना प्यारा, जो आतम को शुचि करता।
निर्लोभी जो बनता जग में, शीघ्र मुक्ति रमा बरता।।
विपुल वैभव पा करके, जो लोभी बनकर रहता है।
"फणहस्त" सम तो वह जगत् में, दुःख ही दुःख को सहता है।।59।।

अर्थ

आत्मा को पवित्र करने वाला सबसे प्यारा धर्म शौच धर्म है। कषायादि सर्व परिग्रह का त्याग करके जो व्यक्ति निर्लोभी बनता है, वही मुक्ति रमा का वरण करता है, फणहस्त नाम का व्यक्ति अपूर्व धन का स्वामी होकर भी लोभी था अन्त मे उसने लोभ के कारण अनन्त दुर्गतियों के दुःखों को सहन किया।

प्रश्न 1 . उत्तम शौच किसे कहते हैं ?

उत्तर . अन्तरग व बहिरंग समस्त परिग्रह के त्याग को "**उत्तम शौच धर्म**" है।

प्रश्न 2 . अंतरंग परिग्रह कौन-कौन से हैं ?

उत्तर . मिथ्यात्व क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरूषवेद, नपुंसक वेद को अंतरंग परिग्रह कहते हैं, तथा सोना, चॉदी आदि बहिरंग परिग्रह हैं।

प्रश्न 3 . शौच धर्म क्या है ?

उत्तर . आत्मा को पवित्र करने वाला सबसे प्यारा धर्म है।

प्रश्न 4 . आत्मा को पवित्र कैसे किया जाता है ?

उत्तर . लोभ वृत्ति का त्याग करके आत्मा को पवित्र किया जाता है।

प्रश्न 5 . लोभ किसे कहते हैं ?

उत्तर . वस्तु की संग्रह वृत्ति को "**लोभ**" कहते हैं।

प्रश्न 6 . लोभ कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर . लोभ **चार** प्रकार का होता है –

1. अनंतानुबधी लोभ 2. अप्रत्याख्यान लोभ
3. प्रत्याख्यान लोभ 4. संज्जवलन लोभ

प्रश्न 7 . अनन्तानुबंधी लोभ किसे कहते हैं ?

उत्तर . कृमि मरण को स्वीकार कर लेती है, पर वस्तु को छोड़ती नहीं ऐसे "**कृमि राग**" के समान वस्तु के प्रति अत्यन्त मूर्च्छा के भाव को "**अनंतानुबन्धी लोभ**" कहते हैं।

प्रश्न 8 . अप्रत्याख्यान लोभ किसे कहते हैं ?

उत्तर . गाड़ी के पहिये में लगाये गये "**ओंगन के समान**" हल्के वर्ण को लिये हुए अर्थात् वस्तु के प्रति कुछ कम आसक्ति के परिणाम को "**अप्रत्याख्यान लोभ**" कहते हैं।

प्रश्न 9 . प्रत्याख्यान लोभ किसे कहते हैं ?

उत्तर . शरीर के रक्त के समान लाल वर्ण को ग्रहण किये वस्तु के प्रति मध्यम राग के परिणाम को "**प्रत्याख्यान लोभ**" कहते हैं।

प्रश्न 10 . संज्जवलन लोभ किसे कहते हैं ?

उत्तर . हल्दी के समान अत्यन्त हीन शक्ति को धारण करने वाली कषाय को "**संज्जवलन लोभ**" कहते है।

प्रश्न 11 . कौन सा लोभ कितने समय तक रहता है ?

उत्तर . अनतानुबंधी लोभ अनन्तकाल तक, अप्रत्याख्यान लोभ छ. माह तक, प्रत्याख्यान लोभ पन्द्रह दिन तक व संज्जवलन लोभ अन्तर्मुहूर्त तक रहता है।

प्रश्न 12 . लोभके कारण किसने कष्ट सहन किया ?

उत्तर . करोडो रत्नों के स्वामी फणहस्त ने लोभ के कारण अनेक कष्टों को सहन किया।

जो वस्तु मरने के बाद छूटे उसे मरने से पूर्व छोड़ना ही दान है, त्याग है।

उत्तम-सत्य

सत्य धर्म प्रधान धर्म का, सत्य जगत् में ऊँचा है।
लोक सिन्धु के पार करन को, सत्य ही नौका दूजा है।।
झूठ का वसु पक्ष लिया तो, स्वयं नरक का वासी बना।
सत्य घोष भी झूठ के कारण, स्वयं गले की फाँसी बना।।60।।

अर्थ

सत्य सर्व धर्म का प्रधान धर्म है, सत्य का जगत् मे सबसे ऊँचा स्थान है, संसार समुद्र को पार करने के लिए सत्य ही दूसरे नम्बर की नौका है। वसु राजा ने झूठ का पक्ष लिया तो उसे नरक में जाना पडा तथा सत्य घोष भी झूठ के कारण स्वयं अपने ही गले की फाँसी बना।

प्रश्न 1 . सत्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . राग–द्वेष के वशीभूत होकर असत्य वचन नहीं बोलना "सत्य" है।

प्रश्न 2 . असत्य कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर . असत्य **चार** प्रकार का होता हैं –

1. भूत निहन्नव
2. अभूतोद्भावन
3. विपरीत
4. निन्द्य

प्रश्न 3 . भूत निहन्नव किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो है उसे नहीं है ऐसा कहना "**भूत निहन्नव वचन**" है। जैसे : अकाल मृत्यु होती है फिर भी कहना अकाल मृत्यु नहीं होती, पंचम काल में मुनि होते हैं फिर कहना पंचम काल में मुनि नहीं होते। जेब में पैसा है फिर भी कहना कि मेरे पास पैसा नहीं, इत्यादि।

प्रश्न 4 . अभूतोद्भावन वचन किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो नहीं है, उसे है, ऐसा कहना "**अभूतोद्भावन वचन**" है। जैसे : देवता बलि नहीं लेते, फिर भी कहना देवता बलि लेते हैं। ईश्वर जगत् का कर्ता नहीं है फिर भी ईश्वर को जगत् का कर्ता कहना।

प्रश्न 5 . **विपरीत वचन किसे कहते हैं ?**

उत्तर . जो वस्तु जिस रूप में है उसे उस रूप में नहीं कहना ''**विपरीत वचन**'' है।

जैसे : गधे को घोड़ा कहना, पीतल को सोना कहना, अनपढ़ को विद्वान कहना।

प्रश्न 6 . **गर्हित वचन किसे कहते हैं ?**

उत्तर . पैशून्य, हास्य, असमंजस, प्रलापित, विरूद्ध सावद्य, अप्रिय वचन को ''**निन्द्य वचन**'' कहते है।

प्रश्न 7 . **पैशून्य वचन किसे कहते हैं ?**

उत्तर . दूसरे के दोषों को प्रकट करना, चुगली करना ''**पैशून्य वचन**'' है।

प्रश्न 8 . **हास्य वचन किसे कहते हैं ?**

उत्तर . हॅसी–मजाक, गप्प, अश्लील गीत आदि रूप वचन ''**हास्य वचन**'' हैं।

प्रश्न 9 . **असमंजस वचन किसे कहते हैं ?**

उत्तर . देशकाल के अयोग्य वचन ''**असमंजस वचन**'' हैं। विवाह के अवसर पर शोक रूप वचन, धर्म स्थान पाप वार्ता करना.......।

प्रश्न 10 . **प्रलापित वचन किसे कहते हैं ?**

उत्तर . सुनने वाले की इच्छा न होने पर भी व्यर्थ बिना प्रसग के बकवास करना ''**प्रलापित वचन**'' हैं।

प्रश्न 11 . **विरूद्ध वचन किसे कहते हैं ?**

उत्तर . आगम के विपरीत वचन बोलना ''**विरूद्ध वचन**'' है।

प्रश्न 12 . **सावद्य वचन किसे कहते हैं ?**

उत्तर . काटने, मारने, छेदने, खेती करने, व्यापार, चोरी आदि का उपदेश देने वाले वचन को ''**सावद्य वचन**'' कहते हैं।

प्रश्न 13 . **अप्रिय वचन किसे कहते हैं ?**

उत्तर . घबराहट या चित्त में अस्थिरता उत्पन्न करने वाले भय, खेद, बैर, कलह उत्पन्न करने वाले वचन ''**अप्रिय वचन**'' कहते हैं।

प्रश्न 14 . इन सभी वचनों को असत्य वचन क्यों कहा हैं ?

उत्तर . ये सभी वचन पर पीड़ाकारी हिंसक व महा अनर्थकारी होते हैं। जिससे स्वयं का एव पर का नुकसान होता है, इसलिये इन सभी वचनों को असत्य वचन कहा।

प्रश्न 15 . सत्य क्या है ?

उत्तर . सत्य सभी धर्मों में प्रधान धर्म है, सत्य सबसे ऊँचा है तथा संसार रूपी समुद्र से पार उतारने वाली सत्य ही दूसरी नौका है।

प्रश्न 16 . सत्य को दूसरी नौका क्यों कहा ?

उत्तर . क्योंकि भगवान् महावीर स्वामी ने अहिंसा को पहला धर्म कहा तथा सत्य को दूसरे नम्बर पर रखा इसलिये सत्य को दूसरी नौका कहा।

प्रश्न 17 . झूठ के कारण कौन नरक गया ?

उत्तर . झूठ के कारण राजा वसु नरक गया।

पुत्रं दार फलं शर्मं श्रुतिफलं दानं फलं सम्पदां।
लक्ष्म्या: कीर्तिफलं धनं श्रम फलं ज्ञानं मुनीनां फलम्।।
शौर्य भीतजनार्ति भञ्जनफलं दीक्षाफलं यौवनं।
जन्म श्री जिनपदा पद्म युगलाजस्त्रौक सेवाफलम्।।

अर्थ– स्त्री का फल पुत्र है, शास्त्र का फल शान्ति है, सम्पत्ति का फल दान है, मुनियों का फल ज्ञान है, शूरता का फल भयभीत मनुष्यों की पीड़ा नष्ट करना है, यौवन का फल दीक्षा है और जन्म धारण करने का फल श्री जिनेन्द्र देव के चरण कमल युगल की निरन्तर सेवा करना है।

उत्तम-संयम

61

उत्तम संयम जग का यम है, उत्तम संयम को पालो।
पंचेन्द्रिय को वश में करके, वीतराग मुद्रा अपना लो।।
जन्म-मरण दुःख अर्णव से यह संयम पार लगाता है।
संयम को जो धारण करता, चिर विश्राम को पाता है।।61।।

अर्थ

उत्तम संयम संसार को समाप्त करने के लिये यम के समान है। हमें पंचेन्द्रिय को वश में करके वीतराग मुद्रा अपनानी चाहिये। यह संयम जन्म–मरण के दुःख सागर से पार लगाता है, जो संयम को धारण करता है, वह मोक्ष सुख को प्राप्त करता है।

प्रश्न 1 . संयम किसे कहते हैं ?

उत्तर . विषय कषाय में दौडते हुए आत्मा को रोककर सुमार्ग में प्रवर्तन हेतु जो आचरण किया जाता है, उसे "**संयम**" कहते है।

प्रश्न 2 . संयम कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर . संयम **पाँच** प्रकार का होता हैं –

1. सामायिक संयम
2. छेदोपरस्थापना सयम
3. परिहार विशुद्धि संयम
4. सूक्ष्म साम्पराय संयम
5. यथाख्यात संयम

प्रश्न 3 . सामायिक संयम किसे कहते हैं ?

उत्तर . समस्त हिंसादि पापों को एक साथ त्याग–कर त्रियोग क्रिया की निवृत्ति तथा व्रत समिति आदि में प्रवृत्ति करना "**सामायिक संयम**" है।

प्रश्न 4 . छेदोस्थापना संयम किसे कहते हैं ?

उत्तर . संयम से स्खलित होने पर पुनः संयम धारण कर या प्रायश्चित आदि स्वीकार कर पुनः संयम में स्थापित होना, "**छेदोस्थापना संयम**" है।

प्रश्न 5 . परिहार विशुद्ध संयम किसे कहते हैं ?

उत्तर . प्राणी वध के परिहार के साथ–ही–साथ आत्मा की विशेष शुद्धि को "**परिहार विशुद्धि संयम**" कहते हैं।

प्रश्न 6 . परिहार विशुद्धि संयम किसको होता है ?

उत्तर . जिसने तीस वर्ष की आयु पर्यन्त समस्त सुखों का भोग किया हो, 3 वर्ष से 9 वर्ष पर्यन्त तीर्थकर या केवली के पादमूल में रहकर प्रत्याख्यान नाम का नौवाँ अग पढा हो तथा तीनों संध्या काल के सिवाय प्रतिदिन 2 कोश गमन करते हों, ऐसे मुनियों को "**परिहार विशुद्धि संयम**" होता है।

प्रश्न 7 . सूक्ष्म साम्पराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . अत्यन्त सूक्ष्म लोभ कषाय का उदय होने पर जो संयम होता है उसे "**सूक्ष्म साम्पराय संयम**" कहते हैं।

प्रश्न 8 . यथाख्यात संयम किसे कहते हैं ?

उत्तर . सम्पूर्ण मोहनीय कर्म के उपशम या क्षय होने से आत्मा के शुद्ध स्वरूप में स्थित होने पर जो संयम होता है उसे '**यथाख्यात संयम**" कहते हैं।

प्रश्न 9 . संयम किसको होता है ?

उत्तर . संयम दिगम्बर मुनिराज को ही होता है।

प्रश्न 10 . संयम को यम क्यों कहा ?

उत्तर . संयम यमराज के समान संसार को मारने में समर्थ है, इसलिये सयम को यम कहा है।

प्रश्न 11 . कौन सा संयम मोक्ष को प्रदान करता है ?

उत्तर . यथाख्यात संयम तद्‌भव मोक्ष प्रदान करता है तथा अन्य संयम, अन्य भव या उसी भव में मोक्ष प्रदान करते हैं।

तीर्थंकर के वैराग्योपरान्त साधना वन तक पालकी को उठाकर ले जाने का सर्वप्रथम अधिकार मनुष्य को प्राप्त होता है, क्योंकि मनुष्य पर्याय में ही सकल संयम को धारण किया जा सकता है देव, तिर्यञ्च व नारक पर्याय में नहीं। अतः संयम को धारो जीवन सुधारो।

उत्तम-तप

62

तप कर्मो का नाशन हारा, तप ही सबको जग से उबारा।
अहं छोड़ तप जो करता है, वह ही है सिद्धि का प्यारा।।
तप की ऐसी महिमा है, कि विष निर्विष है हो जावे।
द्वादश तप को जो तपे, वह शीघ्र शिव पदवी पावे।।62।।

अर्थ

तप कर्मो का नाश करता है, तप जग से सभी जीवो को उबारता है। जो जीव अहंकार छोडकर तपस्या करता है, वह मुक्ति रमा को प्यारा होता है। तपस्या करने से ही विष निर्विषता को प्राप्त होता है। जो बारह प्रकार के तपो को तपता है वह शीघ्र ही शिव पदवी को प्राप्त करता है।

प्रश्न 1 . तप किसे कहते हैं ?
उत्तर . आत्मा की शुद्धि के लिये सांसारिक इच्छाओं को रोकना "**उत्तम तप**" है।

प्रश्न 2 . तपस्या करने से क्या होता हैं ?
उत्तर . तपस्या करने से आत्म–स्वरूप की प्राप्ति होती है एव कर्मो का नाश होता है।

प्रश्न 3 . तपस्या कैसे करनी चाहिए ?
उत्तर . अहंकार छोडकर तपस्या करनी चाहिए।

प्रश्न 4 . तप कितने प्रकार का होता है ?
उत्तर तप **दो** प्रकार का होता है –
1. बहिरग तप 2. अन्तरग तप

प्रश्न 5 . बहिरंग तप किसे कहते हैं ?
उत्तर . जो दूसरे को देखने मे आये उसे "बहिरंग तप" कहते हैं।

प्रश्न 6 . बहिरंग तप के कितने भेद हैं ?
उत्तर . बहिरंग तप के **छः** भेद हैं –
1. अनशन 2. अवमौदर्य 3. रस परित्याग
4. व्रत परिसंख्यान 5. काय क्लेश 6. विविक्त शय्यास

प्रश्न 7 . अनशन तप किसे कहते हैं ?

उत्तर . संयम की वृद्धि के लिए चार प्रकार के आहार का त्याग करना "**अनशन तप**" है।

प्रश्न 8 . अवमौदर्य तप किसे कहते हैं ?

उत्तर . भोजन के प्रति राग भाव को कम करने के लिये भूख से कम भोजन करना "**अवमौदर्य तप**" है।

प्रश्न 9 . व्रत परिसंख्यान तप किसे कहते हैं ?

उत्तर . आहार को जाते समय किसी घर गली दिशा या किसी वस्तु का नियम लेना "**व्रत परिसंख्यान तप**" है।

प्रश्न 10 . रस परित्याग तप किसे कहते हैं ?

उत्तर . इन्द्रिय विजय प्राप्त करने लिये घी, दूध, दही, मीठा, नमक तेल आदि रसो का त्याग करना "**रस परित्याग तप**" है।

प्रश्न 11 . विविक्त शय्यासन तप किसे कहते हैं ?

उत्तर . ज्ञान ध्यान की सिद्धि के लिये एव भय जीतने के लिये एकान्त स्थान मे बैठना, लेटना "**विविक्त शय्यासन तप**" है।

प्रश्न 12 . काय क्लेश तप किसे कहते हैं ?

उत्तर . शरीर से ममत्व न रखकर कठिन तपस्या करना "काय क्लेश" तप है।

प्रश्न 13 . अन्तरंग तप किसे कहते हैं ?

उत्तर . मन को नियत्रित व शुद्ध करने वाले तप को "**अन्तरंग तप**" कहते है।

प्रश्न 14 . क्या बहिरंग तप मन को नियंत्रित नहीं करता है ?

उत्तर . बहिरंग तप अन्तरंग तप की वृद्धि का साधन है वह तप तन के साथ मन को भी नियंत्रित करता है।

प्रश्न 15 . अन्तरंग तप के कितने भेद हैं ?

उत्तर . अन्तरंग तप के **छः** भेद है –

1. प्रायश्चित 2. विनय 3. वैय्यावृत्य
4. स्वाध्याय 5. व्युत्सर्ग 6. ध्यान

प्रश्न 16 . प्रायश्चित्त तप किसे कहते हैं ?

उत्तर . प्रमाद अथवा अज्ञान से लगे दोषों की शुद्धि करना "**प्रायश्चित्त तप**" है।

प्रश्न 17 . विनय तप किसे कहते हैं ?

उत्तर . पूज्य पुरूषों एवं धर्मात्माओं का आदर सत्कार करना "**विनय तप**" है।

प्रश्न 18 . वैय्यावृत्य तप किसे कहते हैं ?

उत्तर शरीर तथा अन्य वस्तुओं से मुनि रोगी दुखी धर्मात्मा आदि की सेवा करना "**वैय्यावृत्य तप**" है।

प्रश्न 19 . स्वाध्याय तप किसे कहते हैं ?

उत्तर . राग–द्वेष की निवृत्ति के लिये आत्म–निरीक्षण करना व शास्त्रों का अध्ययन करना "**स्वाध्याय तप**" है।

प्रश्न 20 . व्युत्सर्ग तप किसे कहते हैं ?

उत्तर अतंरग और बहिरंग परिग्रह तथा शरीर से ममत्व का त्याग करना "**व्युत्सर्ग तप**" है।

प्रश्न 21 . ध्यान तप किसे कहते हैं ?

उत्तर चित्त की चचलता को रोककर किसी एक पदार्थ के चिन्तवन में स्थिर होना "**ध्यान तप**" है।

प्रश्न 22 . तप की क्या महिमा है ?

उत्तर तप करने से विष निर्विषता को प्राप्त होता है अर्थात् कर्म–रूपी विष निर्विष (समाप्त) होते हैं और मोक्ष सुख की प्राप्ति होती है।

पूजा कोटि समंस्त्रोतं स्तोत्रकोटिसमो जपः।
जप कोटि समं ध्यानं ध्यान कोटि समं तपः।।

उत्तम-त्याग

63

त्याग करो सब जड़ वस्तु का, साथ नहीं यह जायेगा।
त्याग करेगा इन सबका जो, मुक्ति रमा को पायेगा।।
एक त्याग के कारण देखो, सिंह स्वर्ग का देव हुआ।
कालान्तर में यह प्राणी ही, वीर श्री महावीर हुआ।।63।।

अर्थ

संसार की कोई भी वस्तु साथ जाने वाली नहीं है। अतः इनका त्याग करना चाहिये, जड़ वस्तु के त्याग से मुक्ति की प्राप्ति होती है। एक त्याग के कारण ही सिह स्वर्ग का देव हुआ और यह प्राणी ही कालान्तर मे भगवान महावीर हुआ।

प्रश्न 1 . उत्तम त्याग किसे कहते हैं ?

उत्तर निस्वार्थ भाव से कीर्ति और प्रत्युपकार की भावना से रहित होकर वस्तु को छोड़ना ''**उत्तम त्याग**'' है।

प्रश्न 2 . त्याग किसका करना चाहिये ?

उत्तर . त्याग समस्त जड वस्तुओं का करना चाहिये।

प्रश्न 3 . त्याग करने से क्या होता है ?

उत्तर . त्याग करने से जीव सद्‌गति को पाता है और कर्म रहित होकर मुक्ति रमा को प्राप्त करता है।

प्रश्न 4 . त्याग के प्रभाव से कौन क्या हुआ ?

उत्तर . त्याग के प्रभाव से सिंह स्वर्ग का देव होकर अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी हुआ।

प्रश्न 5 . क्या बिना त्याग को अपनाये भगवान नहीं बन सकते ?

उत्तर . नहीं बन सकते। जैसे बिना प्रकाश के अन्धकार नहीं जाता वैसे ही बिना त्याग के कर्म नहीं जाता अर्थात् कर्म के सद्‌भाव में भगवान नहीं बन सकते।

उत्तम-आकिंञ्चन्य

64

परिग्रह पिशाच ने कितनों को, इस जग में कितना त्रास दिया।
छोड़ चला है इन सबको, जो सिद्ध शिला में वास किया।।
चिन्तन कर अणुमात्र भी, इस भू का वस्तु नहीं मेरा।
आकिञ्चन्य हूँ बस केवल, यह आतम ही तो है मेरा।।64।।

अर्थ

इस ससार मे परिग्रह रूपी पिशाच ने ससार प्राणी को सर्वाधिक त्रास (दु ख) दिया है। जा परिग्रह को तजता है वही सिद्ध–शिला मे वास करता है। हमे ससार मे रहकर यह चिन्तन करना चाहिये कि इस पृथ्वी का अणुमात्र भी मेरा नही है। मै आकिञ्चन्य हूँ, चैतन्य आत्मा ही मेरा है।

प्रश्न 1 . उत्तम आकिंञ्चन्य किसे कहते हैं ?

उत्तर अपनी आत्मा को छोड़कर संसार की समस्त वस्तुओ के प्रति ममत्व का भाव न रखना, "**उत्तम आकिञ्चन्य**" है।

प्रश्न 2 . प्राणियों को कष्ट देने वाला कौन है ?

उत्तर प्राणियो को कष्ट देने वाला परिग्रह रूपी पिशाच है।

प्रश्न 3 . परिग्रह छोड़ने वाला कहाँ वास करता है ?

उत्तर परिग्रह छोडने वाला सिद्ध–शिला (मोक्ष) में वास करता है।

प्रश्न 4 . हमें क्या चिन्तवन करना चाहिये ?

उत्तर इस संसार में आकिञ्चन्य हूँ, मैं भिन्न हूँ, आत्मा मात्र मेरी है बाकी सभी पर पदार्थ है। इनसे मेरा कोई नाता नहीं है इस प्रकार चिन्तवन करना चाहिए।

एगो में सस्सदो अप्पा णाण दंसण लक्खणो।
सेसा में बाहिरा भावा सव्वे संजोग लक्खणा।।

उत्तम-ब्रह्मचर्य

65

पर नारी में माता बहन सा, जो आदर को है लाता।
ब्रह्म आत्मा में रमता, वह ब्रह्मचर्य है कहलाता।।
ब्रह्म आत्मा में रमूँ, मैं ब्रह्मचर्य का पालन करके।
उत्तम ब्रह्मचर्य जो पाले, "सौरभ" नत होता सर धर के।।65।।

अर्थ

पर नारी मे माता–बहन का आदर लाना व्यवहार ब्रह्मचर्य हैं तथा अपने ब्रह्म स्वरूप आत्मा मे रमण करना, निश्चय ब्रह्मचर्य है। हमे उत्तम ब्रह्मचर्य का पालन करके अपनी आत्मा मे रमण करना चाहिए। मै **"सौरभ सागर"** उन्हें नमस्कार करता हूँ जो उत्तम ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं।

प्रश्न 1 . ब्रह्मचर्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . स्त्री मात्र का त्याग करके अपनी ब्रह्ममय आत्मा में रमण करना **"उत्तम ब्रह्मचर्य"** है।

प्रश्न 2 . ब्रह्मचर्य कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर ब्रह्मचर्य **दो** प्रकार का होता है –

1. व्यवहार ब्रह्मचर्य 2. निश्चय ब्रह्मचर्य

प्रश्न 3 . व्यवहार ब्रह्मचर्य किसे कहते ?

उत्तर . स्त्री मात्र का त्याग करना **"व्यवहार ब्रह्मचर्य"** है।

प्रश्न 4 . निश्चय ब्रह्मचर्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . अपनी चैतन्य ब्रह्ममय आत्मा में रमण करना **"निश्चय ब्रह्मचर्य"** है।

प्रश्न 5 . किस ब्रह्मचर्य के स्वामी कौन होते हैं ?

उत्तर . गृहस्थ अवस्था से लेकर क्षुल्लक, ऐलक तक व्यवहार ब्रह्मचर्य एंव दिगम्बर मुनिराज निश्चय ब्रह्मचर्य के स्वामी होते हैं।

प्रश्न 6 . आत्मा में रमण करने वाले उत्कृष्ट कितने शील के दोषों से रहित होते हैं ?

उत्तर . आत्म का रमण करने वाले उत्कृष्ट से 18000 शील के दोषों से रहित होते हैं।

प्रश्न 7 . 18000 शील के दोष कौन से हैं ?

उत्तर . देवी, मानुषी, तिर्यंची इन तीन स्त्री को, 3 योग, मन, वचन काय कृत कारित अनुमोदना, 3 आहारभय मैथुन परिग्रह से 4 संज्ञा तथा 5 द्रव्येन्द्रिय, 5 भावेन्द्रिय एवं अनंतानुबंधी, 4 अप्रत्याख्यान, 4 प्रत्याख्यान, (3x3x3x4x10x16+17290) तथा अचेतन स्त्री के तीन भेद काष्ट 10 से गुणा करने पर 720 भेद हुये। (3x2x3x4x10+720) अर्थात् (17290+720+ 18000) शील के भेद है।

प्रश्न 8 . लेखक ने किसे नमस्कार किया ?

उत्तर . लेखक ने निश्चय ब्रह्मचर्यधारी दिव्य आत्माओं को नमस्कार कि या है।

प्रश्न 9 . हमें क्या करना चाहिए ?

उत्तर ब्रह्मचर्य का पालन करके, अपनी आत्मा में रमण करना चाहिए।

शुचिर्भूमिगतं तोयं शुचिर्नारी पतिव्रता।
शुचिर्धर्म परो राजा ब्रह्मचारी सदाशुचि।।

अर्थ– भूमि गत जल पवित्र होता है, पतिव्रता स्त्री पवित्र होती है, धर्म पर तत्पर राजा पवित्र होता है एवं ब्रह्मचारी सदा पवित्र होता है।

राग-द्वेष

66

राग-द्वेष दो जीवन शत्रु, पथ में बिछाते काँटे हैं।
अपने पराये मान-मानकर, सारे जग को बाँटे हैं।।
भव बन्धन का बीज यही है, कर्माश्रव का कारण है।
माध्यस्थ भाव ही राग-द्वेष का करता मात्र निवारण है।।66।।

अर्थ

राग और द्वेष जीवन के हो शत्रु हैं, ये पथ में काँटे बिछाते हैं। राग–द्वेष के कारण ही व्यक्ति ने अपने पराये का भेद करके सारे जगत् को बॉट दिया, यह भव को बढाने वाले बीज के समान है। कर्माश्रव का कारण है वस्तु के प्रति माध्यस्थ भाव ही राग–द्वेष को समाप्त करने में कारण है।

प्रश्न 1 . राग किसे कहते हैं ?

उत्तर . वस्तु के प्रति आसक्ति के भाव को "**राग**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . द्वेष किसे कहते हैं ?

उत्तर . वस्तु के प्रति घृणा के भाव को "**द्वेष**" कहते हैं।

प्रश्न 3 . इन्हें शत्रु क्यों कहा ?

उत्तर . जैसे शत्रु प्रतिक्षण कष्ट पहुँचाता है, शान्ति से जीने नहीं देता, उसी प्रकार राग और द्वेष भी प्रतिक्षण कष्ट पहुँचाते हैं, शान्ति से जीने नहीं देते इसीलिए इसे शत्रु कहते हैं।

प्रश्न 4 . राग और द्वेष किस पथ में काँटे बिछाते हैं ?

उत्तर . राग और द्वेष सन्यास के पथ में काँटे बिछाते हैं, ताकि यह जीव परमात्मा से न मिल सके।

प्रश्न 5 . राग और द्वेष के कारण संसार की क्या स्थिति हुई है ?

उत्तर . राग और द्वेष के कारण संसार में अपने पराये का भेद हुआ है। इस कारण व्यक्ति व्यक्ति से अलग है। अनेक भागों में विभक्त है। राग–द्वेष संसार को बढ़ाने में कारण है।

प्रश्न 6 . राग द्वेष किसके समान होता है ?

उत्तर . राग–द्वेष बीज के समान है जैसे एक बीज को बो देने पर वह अनेक बीजों को जन्म देता है उसी प्रकार राग–द्वेष करने से अनेक कर्मों का बन्ध होता है और संसार की बढोत्तरी होती है।

प्रश्न 7 . राग-द्वेष को समाप्त करने में क्या कारण हैं ?

उत्तर . राग–द्वेष को समाप्त करने मे "**माध्यस्थ भाव**" कारण है।

प्रश्न 8 . राग-द्वेष करने से क्या होता है ?

उत्तर . राग–द्वेष करने से कर्म का आश्रव होता है।

प्रश्न 9 . माध्यस्थ भाव किसे कहते हैं ?

उत्तर . समस्त सांसारिक वस्तुओं के प्रति समता के भाव को "**माध्यस्थ भाव**" कहते है।

न रणे विजयाच्छूरो नाध्ययनाच्च पण्डितः।
न वक्ता वाक्पटुत्वेन न दाता चार्थदानतः।।
इन्द्रियाणां जयाच्छुरो धर्माचाराच्च पण्डितः।
हितप्रियोक्तिभिर्वक्ता दाता सम्मान–दानतः।।

अर्थ– रण मे विजय प्राप्त करने से व्यक्ति शूर–वीर नही होता, अध्ययन करने से पण्डित नहीं होता, वाणी की चतुराई से वक्ता नही होता और धन के देने से दाता नही होता किन्तु इन्द्रियों के विजय से शूरवीर, धर्माचरण से पण्डित, हितकारी प्रिय वचन बोलने से वक्ता और दूसरों को सम्मान देने से दाता होता है।

समता

67

चित्त की वृत्ति जो चंचल है, अचल सदा को हो जाती।
समता का उद्भव होता, तब आत्म शक्ति है जग जाती।।
आत्मरमण करते श्रमण, जब समता जागृत होती है।
राग-द्वेष का कल्मष धुलता, आत्मा उपकृत होती है।।67।।

अर्थ

जब चित्त की चंचल वृत्ति अचल हो जाती है तब शान्ति का जागरण होता है और समता का जन्म होता है अर्थात् जब साधक आत्मा मे रमण करते है तब समता जागृत होती है समता के जागृत होते ही राग–द्वेषका कल्मष धुल जाता है और आत्मा उपकृत हो जाती है।

प्रश्न 1 . समता किसे कहते हैं ?

उत्तर वस्तु के प्रति मूर्च्छा के अभाव को एवं राग–द्वेष के अभाव को "**समता**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . समता कब जागृत होती है ?

उत्तर जब साधक आत्मा में रमण करते हैं, चित्त की चंचल वृत्ति अचल हो जाती है तब जागृत होती है।

प्रश्न 3 . समता के जागृत होने के उपरान्त क्या होता है ?

उत्तर . समता के जागृत होने के उपरान्त राग–द्वेष का कल्मष धुलता है और आत्मा उपकृत होती है।

प्रश्न 4 . आत्मा उपकृत होती है तब कैसा अनुभव होता है ?

उत्तर . जब आत्मा उपकृत होती है तब परम शान्ति का अनुभव होता है।

स्तुति

68

नहीं प्रयोजन वीतरागी को, स्तवन हो या पूजन से।
निज जिनत्व का बोध होत है, स्तव अरूँ प्रभु सुमिरन से।।
मेरू जैसे कर्म गिरी भी स्तुति से क्षण में ढ़हते।
सुख शान्ति आदर्श गुणों के, फल आतम से फलते रहते ।।68।।

अर्थ

वीतरागी को स्तवन या पूजन से कोई प्रयोजन नहीं होता लेकिन जो जीव उसकी स्तुति या नामोच्चारण करते है, उसे स्वयं के जिनत्व का बोध होता है। मेरू जैसे विशाल कर्मों के पर्वत भी स्तुति से क्षण मात्र मे ढह जाते हैं। स्तवन करने वाले जीव की आत्मा मे सुख–शान्ति आदर्श गुण प्रतिक्षण फूलते–फलते रहते है।

प्रश्न 1 . स्तुति किसे कहते हैं ?

उत्तर . अपनी शक्ति से चौबीस तीर्थकरों के विशेष गुण–कीर्तन को "**स्तुति**" (स्तवन) कहते हैं।

प्रश्न 2 . वीतरागी को किससे प्रयोजन नहीं है ?

उत्तर . वीतरागी को स्तवन और पूजन से कोई प्रयोजन नहीं है अर्थात् वीतरागी परमात्मा, पूजन, स्तवन से प्रसन्न नहीं होते और न करने से नाराज नहीं होते हैं।

प्रश्न 3 . स्तवन क्यों किया जाता है ?

उत्तर . स्वयं के परमात्मा को प्रगट करने के लिये "**स्तवन**" किया जाता है।

प्रश्न 4 . स्तवन करने से होता है ?

उत्तर . स्तवन करने से कर्मों के विशाल पर्वत क्षणमात्र में ढह जाते हैं, गिर जाते हैं और आत्मा में सुख–शान्ति और आदर्श गुण प्रतिक्षण फूलतो–फलते रहते हैं।

वन्दना

वन्दन से क्रन्दन मिटता, और होता जग में अभिनन्दन।
बुद्धि ख्याति विनय आदि की, गन्ध फैलती ज्यों चन्दन।।
वन्दन को जो अपनाते हैं, वे कहलाते हैं सज्जन।
लघुता में प्रभुता बसती है, ऐसा कहते हैं गुरूजन।।69।।

अर्थ

वन्दन करने से क्रन्दन (रोना) मिटता है और संसार में जीव का अभिनन्दन होता है। वन्दन करने वाले जीवों की बुद्धि, ख्याति, विनय गुण की प्रशंसा चन्दन की गन्ध के समान स्वतः फैलती है। जो जीव वन्दन के भावों को अपनाते हैं, वे सज्जन कहलाते हैं, क्योंकि लघुता में ही प्रभुता बसती है, ऐसा गुरूजन कहते हैं।

प्रश्न 1 . वन्दना किसे कहते हैं ?
उत्तर . पंच परमेष्ठी को सविनय–सविधि नमस्कार करना **"वन्दना"** है।

प्रश्न 2 . वन्दना कैसे की जाती है ?
उत्तर . मन वचन काय की शुद्धि पूर्वक पचांग या साष्टांग तीन आवर्त्त पूर्वक वन्दना की जाती है।

प्रश्न 3 . वन्दना कितने प्रकार की होती है ?
उत्तर . वन्दना **तीन** प्रकार की होती हैं –
1. मनोवन्दना 2. वचन वन्दना 3. कायवन्दना

प्रश्न 4 . मनोवन्दना किसे कहते हैं ?
उत्तर . वन्दना करने योग्य देव शास्त्र गुरू के गुणों का स्मरण करते हुए नमन करना **"मनो वन्दना"** है।

प्रश्न 5 . वचन वन्दना किसे कहते हैं ?
उत्तर . क्षल रहित वचनों के द्वारा उनके गुणों का महत्व प्रकट करते हुए नमन करना **"वचन वन्दना"** है।

प्रश्न 6 . काय वन्दना किसे कहते हैं ?

उत्तर . तीन प्रदक्षिणा देकर या दोनो हाथ तथा दोनों घुटने व मस्तक लगाकर प्रणाम करना ''**काय वन्दना**'' है।

प्रश्न 7 . वन्दना करने से क्या होता है ?

उत्तर . वन्दना करने से संसार का रोना समाप्त होता है और जगह–जगह जीव आदर का पात्र होता है।

प्रश्न 8 . वन्दना कितने दोषों से रहित होनी चाहिए ?

उत्तर . वन्दना **32** दोषों से रहित होनी चाहिए –

1. अनादृत 2 स्तब्ध 3 प्रविष्ट 4. परिपीडित 5. दोलायित 6. अंकुशित 7. कच्छ परिगित 8. मात्स्योद्वर्त 9. मनोदुष्ट 10 वेदिकावद्ध 11. भय 12. विभयत्व 13. ऋद्धिगौरव 14. गौरव 15. स्तेनित 16. प्रतिनीत 17 प्रदुष्ट 18. तर्जित 19. शब्द 20. हीलित 21 त्रिवलित 22. कुंचित 23 दृष्ट 24 अदृष्ट 25 सघकर मोचन 26 आलब्ध 27 अनालब्ध 28 हीन 29 उत्तर चूलिका 30. मूक 31 दर्दूर 32. चुलुलित

प्रश्न 9 . अनादृत दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . आदर व उत्साह रहित वन्दना करना "अनादृत दोष" है।

प्रश्न 10 . स्तब्ध दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . अहकार युक्त उद्दण्ड होकर वन्दना करना "स्तब्ध दोष" है।

प्रश्न 11 . प्रविष्ट दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर पच परमेष्ठी के अत्यन्त निकट होकर वन्दना करना "प्रविष्ट दोष" है।

प्रश्न 12 . परिपीड़ित दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . वन्दना के समय जघा घुटना आदि को स्पर्श करना "परिपीडित दोष" है।

प्रश्न 13 . दोलायित दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . झूला के समान अपने को चलायमान करते हुए (उन्नींदे से) वन्दना करना "दोलायित दोष" है।

प्रश्न 14 . अंकुशित दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . अंकुश के समान हाथ के अँगूठे को ललाट पर रखकर वन्दना करना "उंकुशित दोष" है।

प्रश्न 15 . कच्छ परिगित दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . कछुए के समान चेष्टा करके कटिभाग से सरककर वन्दना करना "कच्छ परिगित दोष" है।

प्रश्न 16 . मत्स्योद्वर्त दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . मछली के समान कटिभाग को ऊपर उठाकर वन्दना करना "मत्स्योद्वर्त दोष" है।

प्रश्न 17 . मनोदुष्ट दोष कसे कहते हैं ?

उत्तर संक्लेश परिणाम, उपेक्षा या खिन्नता से युक्त होकर वन्दना करना "मनोदुष्ट दोष" है।

प्रश्न 18 . वेदिकाबद्ध दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर दोनो भुजाओं से दोनों घुटनो को बॉधकर वन्दना करना "वेदिकाबद्ध दोष" है।

प्रश्न 19 . भय दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . भय युक्त होकर वन्दना करना "भय दोष" है।

प्रश्न 20 . विभ्यत्व दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर परमाथ्र से शून्य अज्ञानी बालकवत् वन्दना करना "विभ्यत्व दोष" है।

प्रश्न 21 . ऋद्धि गौरव दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर चतुर्विध संघ को अपना भक्त बनाने के अभिप्राय से वन्दना करना "ऋद्धि गौरव दोष" है।

प्रश्न 22 . गौरव दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . भोजन उपकरण आदि की चाह से वन्दना करना "गौरव दोष" है।

प्रश्न 23 . स्तेनित दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . चोर बुद्धि से या अन्य जनों को ज्ञात न हो इस प्रकार छिपकर वन्दना करना "स्तेनित दोष" है।

प्रश्न 24 . प्रतिनीत दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . गुरू आदि के प्रतिकूल होकर वन्दना करना "**प्रतिनीति दोष**" है।

प्रश्न 25 . प्रदुष्ट दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . बैर, कलह आदि करके क्षमा भाव धारण किये बिना वन्दना न करना "**प्रदुष्ट दोष**" है।

प्रश्न 26 . तर्जित दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . अंगुली के द्वारा अन्य साधुओं को भय उत्पन्न करते हुए या यदि तुम संघ के नियम का पालन नहीं करोगे तो तुम्हें संघ से निकाल देगे इस प्रकार की फटकार सुनाकर जो वन्दना करता है उसे "**तर्जित दोष**" कहते हैं।

प्रश्न 27 . शब्द दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . मौन रहित व्यर्थ शब्द उच्चारण करते हुए वन्दना करना "**शब्द दोष**" है।

प्रश्न 28 . हीलित दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . वचन से आचार्यादि का निरस्कार करते हुए वन्दना करना "**हीलित दोष**" है।

प्रश्न 29 . त्रिवलित दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . शरीर के अंगों कमर, हृदय और गर्दन को मोडकर या मस्तक में सिकुडन (रेखा बनाकर) वन्दना करना "**त्रिवलित दोष**" है।

प्रश्न 30 . कुंचित दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . संकुचित किये हाथो से सिर का स्पर्श करते हुए या घुटनों के मध्य सिर को रखकर वन्दना करना "**कुंचित दोष**" है।

प्रश्न 31 . दृष्ट दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . यदि कोई देख रहा हो तो अच्छे तरीके से वन्दना करना और

यदि कोई न देखे तो इधर–उधर देखकर वन्दना करना **''दृष्ट दोष''** है।

प्रश्न 32 . अदृष्ट दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . गुरू की आँखों के सामने से ओझल होकर या प्रतिलेखन (भूमि को देखे शोधे बिना) वन्दना करना **''अदृष्ट दोष''** है।

प्रश्न 33 . संघकर मोचन दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . संघ या समाज मुझसे जबरदस्ती वन्दना कराता है इस प्रकार विचार करके वन्दना करना **''संघकर मोचन दोष''** है।

प्रश्न 34 . आलब्ध दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . उपकरण (वस्तु) आदि को प्राप्त कर वन्दना करना **''आलब्ध दोष''** है।

प्रश्न 35 . अनालब्ध दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . उपकरण आदि की आकांक्षा से वन्दना करना **''अनालब्ध दोष''** है।

प्रश्न 36 . हीन दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . वन्दना सम्बन्धी पाठ को उतने ही काल में पढना चाहिए, जल्दी–जल्दी पढ़ना **''हीन दोष''** है।

प्रश्न 37 . मूक दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . गूँगे के समान अन्दर ही अन्दर पाठ बोलना अथवा अंगुली आदि का इशारा करते हुए वन्दना करना **''मूक दोष''** है।

प्रश्न 38 . दर्दुर दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . अपने शब्दों से दूसरे के शब्दों को दबाकर ऊँचे स्वर से वन्दना करना **''दर्दूर दोष''** है।

प्रश्न 39 . उत्तर चूलिका दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . वन्दना पाठ को थोड़ी देर में पढ़कर उसकी चूलिका को लम्बे समय तक पढ़ना **''उत्तर चूलिका दोष''** है।

प्रश्न 40 . चुलुलित दोष किसे कहते हैं हैं ?

उत्तर . एक स्थान पर खड़े होकर या बैठकर सभी की वन्दना करना **''चुलुलित दोष''** है।

प्रश्न 41 . निर्दोष वन्दना करने से किस गुण की वृद्धि होती है ?

उत्तर . निर्दोष वन्दना करने से बोधि, समाधि, यश, विनय, सदाचार एवं संयम की वृद्धि होती है।

प्रश्न 42 . वन्दना करने वाले क्या कहलाते हैं ?

उत्तर . वन्दना करने वाले "**सज्जन**" कहलाते हैं।

प्रश्न 43 . सज्जन किसे कहते हैं ?

उत्तर सन्त जनों को, उनके निकट रहने वालों को सदाचारी व परोपकारी इन्सान को "**सज्जन**" कहते है।

प्रश्न 44 . गुरू जनों ने क्या कहा हैं ?

उत्तर . लघुता मे प्रभुता का वास है अर्थात् छोटे होने में ही बडप्पन समाया है इसलिए सदैव छोटे बनो, नम्र बनो, विनयशील बनो ऐसा गुरूजनो ने कहा है।

प्रश्न 41 . स्तुति और वन्दना में क्या अन्तर है ?

उत्तर स्तुति मे मात्र चौबीस तीर्थकरों के गुणों का स्मरण होता है तथा वन्दना में गुण स्मरण के साथ भक्तिपूर्वक नमन समर्पण की भावना भी व्यक्त की जाती है।

न्यायेन नेता विनयेन शिष्या:।
शीलेन लिग्ङी प्रशमेन साधु:।।
जीवेन देह: सुक्तेन देही।
वित्तेन गेही रहितो न किञ्चित।।

अर्थ– न्याय से रहित नेता, विनय से रहित शिष्य, शील से रहित वेशधारी, प्रशम गुण से रहित साधु, जीव से रहित शरीर, पुण्य से रहित प्राणी और धन से रहित गृहस्थ कुछ भी नहीं है।

अज्ञान शास्त्र पढने से नहीं संत समागम से टूटता है।

मक्खी का विष उसके मष्तिष्क में है, सर्प का विष उसके दन्त में है, बिच्छू का विष उसके डंक में है परन्तु दुर्जन का विष उसके रोम–रोम में है।

प्रतिक्रमण

स्वयं पाप पर करें आक्रमण, प्रतिक्रमण कहलाता है।
प्रतिक्रमण ही पाप कर्म के, बन्धन ढीले कराता है।।
प्रतिक्रमण कर क्षमा माँग, और लौट आत्म स्वभाव में।
सुख का सागर लहरायेगा, क्षमा के ही भाव में।।70।।

अर्थ

स्वयं के पाप पर आक्रमण करना प्रतिक्रमण कहलाता है। प्रतिक्रमण ही पाप कर्म के बन्धन को ढीले कराता है। जो जीव प्रतिक्रमण करके सब जीवो से क्षमा माँगता है वह आत्म स्वभाव मे लौटता है तथा अनन्त सुख का सागर भी क्षमा के ही भाव मे लहराता है।

प्रश्न 1 . **प्रतिक्रमण किसे कहते हैं ?**
उत्तर . स्वयं के पापों पर आक्रमण करना अर्थात अपराध होने पर मन–वचन–काय की शुद्धता पूर्वक निन्दा, गर्हा करना **"प्रतिक्रमण"** है।

प्रश्न 2 . **आत्म निन्दा किसे कहते हैं ?**
उत्तर . स्वयं मे स्वयं के द्वारा स्वयं के दोषों की आलोचना करना **"आत्म निन्दा"** है।

प्रश्न 3 . **गर्हा किसे कहते हैं ?**
उत्तर . गुरू के समीप अपने दोषो की आलोचना करना **"गर्हा"** कहलाता है।

प्रश्न 4 . **प्रतिक्रमण किसे कहते हैं ?**
उत्तर . प्रतिक्रमण के **छः** भेद है –

1. दैवसिक प्रतिक्रमण
2. रात्रिक प्रतिक्रमण
3. ईर्यापथिक प्रतिक्रमण
4. पाक्षिक प्रतिक्रमण
5. चातुर्मासिक प्रतिक्रमण
6. वार्षिक प्रतिक्रमण
7. उत्तमार्थ प्रतिक्रमण

प्रश्न 5 . **दैवसिक प्रतिक्रमण किसे कहते हैं ?**
उत्तर दिवस सम्बन्धी दोषो के निवारण हेतु जो प्रतिक्रमण किया जाता है वह **"दैवसिक प्रतिक्रमण"** है।

प्रश्न 6 . **रात्रिक प्रतिक्रमण किसे कहते हैं ?**
उत्तर . रात्रि के समय सोने में स्वप्न में जो दोष लगे हों उनकी शुद्धि हेतु जो प्रतिक्रमण किया जाता है वह **"रात्रिक प्रतिक्रमण"** है।

प्रश्न 7 . इर्यापथ प्रतिक्रमण किसे कहते हैं ?

उत्तर . आहारचर्या, गुरू एवं देव वन्दना, शौचादि के लिये विहार में चलने से जो जीवो की विराधना होती है, उन दोषों को दूर करने के लिये जो प्रतिक्रमण किया जाता है। वह **"इर्यापथ प्रतिक्रमण"** है।

प्रश्न 8 . पाक्षिक प्रतिक्रमण किसे कहते हैं ?

उत्तर पन्द्रह दिन मे एक बार व्रतों मे लगे दोषों को दूर करने के लिए जो प्रतिक्रमण किया जाता है वह **"पाक्षिक प्रतिक्रमण"** है।

प्रश्न 9 . चातुर्मासिक प्रतिक्रमण किसे कहते हैं ?

उत्तर चार माह में लगे पाप प्रक्षालन हेतु जो प्रतिक्रमण किया जाता है। उसे **"चातुर्मासिक प्रतिक्रमण"** कहते हैं।

प्रश्न 10 . वार्षिक प्रतिक्रमण किसे कहते हैं ?

उत्तर चातुर्मास के प्रारम्भ मे जो पाप निवृत्ति हेतु बृहद् प्रतिक्रमण किया जाता है, उसे **"वार्षिक प्रतिक्रमण"** कहते हैं।

प्रश्न 11 . उत्तमार्थ प्रतिक्रमण किसे कहते हैं ?

उत्तर मरण काल के पूर्व सम्पूर्ण दोषों की आलोचना करके जीवन–पर्यन्त आहार का त्याग कर दिया जाता है उसे **"उत्तमार्थ प्रतिक्रमण"** कहते है।

प्रश्न 12 . प्रतिक्रमण करने से क्या होता हैं ?

उतर प्रतिक्रमण करने से पापों के बन्धन ढीले होते हैं।

प्रश्न 13 . आत्म स्वभाव को कौन प्राप्त करता है ?

उत्तर जो जीव प्रतिक्रमण करके सभी जीवो से क्षमा मांगता है। वह जीव आत्म स्वभाव में लौटता है।

प्रश्न 14 . क्षमा किसे कहते हैं ?

उत्तर 'क्ष' अर्थात् "क्षय" "मा" अर्थात् "मान" स्वयं के मान का क्षय करना ही **"क्षमा"** है।

प्रश्न 15 . क्षमा करने से क्या होता है ?

उत्तर . क्षमा धारण करने से बैर समाप्त होता है और आत्मा में अनन्त सुख का सागर लहराने लगता है।

प्रत्याख्यान

71

चार प्रकार के आहारों का, त्याग हैं करते साधुजन।
त्याग रूप जो परिणाम है, प्रत्याख्यान व्यवहार कथन।।
सारे जल्पों को छोडे अरूँ, भाव शुभाशुभ दूर करे।
निश्चय प्रत्याख्यानी रमते, हिय में समता को धारे।।71।।

अर्थ

चार प्रकार के आहार का त्याग साधु मुनिराज करते हैं। वह त्याग रूप जो परिणाम है, वह व्यवहार प्रत्याख्यान है तथा सकल जल्पों को छोडना अपने शुभ–अशुभ भावों को दूर करना तथा हृदय मे समता को धारण करके अपनी शुद्ध आत्मा मे रमण करना, निश्चय प्रत्याख्यान है।

प्रश्न 1 . प्रत्याख्यान किसे कहते हैं ?

उत्तर . मन–वचन–काय के शुद्धिपूर्वक भविष्य व वर्तमान के दोषो का निराकरण करना "**प्रत्याख्यान**" है।

प्रश्न 2 . प्रत्याख्यान के कितने भेद हैं ?

उत्तर . प्रत्याख्यान के दो भेद हैं –

1. व्यवहार प्रत्याख्यान 2. निश्चय प्रत्याख्यान

प्रश्न 3 . व्यवहार किसे कहते हैं ?

उत्तर . चार प्रकार के आहार का त्याग रूप जो परिणाम है वह "**व्यवहार प्रत्याख्यान**" है।

प्रश्न 4 . चार प्रकार के आहार कौन-कौन से हैं ?

उत्तर . 1. खाद्य (अन्न) 2. स्वाद्य (लौंग इलायची आदि) 3. लेय (रबडी, चटनी आदि) 4. पेय (दूध, रस, पानी आदि) ये **चार** प्रकार के आहार हैं।

प्रश्न 5 . व्यवहार प्रत्याख्यान के कितने भेद हैं ?

उत्तर . व्यवहार प्रत्याख्यान के **चार** भेद हैं –

1. विनय शुद्धि प्रत्याख्यान 2. अनुभाषण शुद्ध प्रत्याख्यान 3. अनुपालन शुद्ध प्रत्याख्यान 4. भाव शुद्ध प्रत्याख्यान

प्रश्न 6 . विनय शुद्ध प्रत्याख्यान किसे कहते हैं ?

उत्तर . ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, आचार, विनय, युक्त सिद्ध भक्ति, कायोत्सर्ग आदि करके प्रत्याख्यान करना "**विनय शुद्ध प्रत्याख्यान**" है।

प्रश्न 7 . अनुभाषण शुद्ध प्रत्याख्यान किसे कहते हैं ?

उत्तर . गुरू जैसा कहे उसी प्रकार प्रत्याख्यान के अक्षर पद व्यञ्जनादि को शुद्ध उच्चारण करना "**अनुभाषण प्रत्याख्यान**" है।

प्रश्न 8 . अनुपालन शुद्ध प्रत्याख्यान किसे कहते हैं ?

उत्तर . रोग, उपसर्ग, भिक्षा की प्राप्ति का अभाव आदि कारणों के उपस्थित हो जाने पर भी प्रत्याख्यान पालन क्रियाओं को भंग नहीं करना उसमे दृढ़ रहना "**अनुपालन शुद्ध प्रत्याख्यान**" है।

प्रश्न 9 . भाव विशुद्ध प्रत्याख्यान किसे कहते हैं ?

उत्तर राग–द्वेष परिणामों से होने वाले मानसिक विकारों से प्रत्याख्यान को दूषित नहीं करना "भाव विशुद्ध प्रत्यारख्यान" है।

प्रश्न 10 . निश्चय प्रत्याख्यान किसे कहते हैं ?

उत्तर . समस्त विकल्पो के शुभ–अशुभ भावों को छोडकर समता को धारण करके शुद्ध आत्मा मे रमण करना "**निश्चय प्रत्याख्यान**" है।

प्रश्न 11 . प्रत्याख्यान क्यों किया जाता है ?

उत्तर व्यर्थ के पापाश्रव को रोकने के लिए प्रत्याख्यान किया जाता है।

प्रश्न 12 . प्रत्याख्यान के अधिकारी कौन होते हैं ?

उत्तर व्यवहार प्रत्याख्यान केअधिकारी गृहस्थ और मुनि दोनों होते हैं। पर निश्चय प्रत्याख्यान के अधिकारी मात्र दिगम्बर मुनि होते हैं।

व्यक्ति को अपना तन, मन और धन दूसरों की तड़फड़ाहट मिटाने में लगाना चाहिए, बढ़ाने में नहीं।

कायोत्सर्ग

मन-वच-तन का एकाकीपन, कायोत्सर्ग कहाता है।
देह सहित हो देहातीत का, अनुभव यही कराता है।।
जड़ चेतन को पृथक्-पृथक् कर लेते ध्यान का आलम्बन।
देह विनश्वर ध्रुव है आतम, ज्योतिर्मय होगा अन्तर्मन।।72।।

अर्थ

मन–वचन–काय का एक होना कायोत्सर्ग है। कायोत्सर्ग देह सहित होकर भी देहातीत का अनुभव कराता है। जो देह का विनश्वर तथा आत्मा को ध्रुव मानते है। ये जड और चेतन को अलग–अलग करके ध्यान का अवलम्बन लेते हैं। उन्ही का अन्तर्मन ज्योतिर्मय होता है।

प्रश्न 1 . कायोत्सर्ग किसे कहते हैं ?

उत्तर . काय से ममत्व हटाकर आत्मा में लीन होना "**कायोत्सर्ग**" है।

प्रश्न 2 . कायोत्सर्ग किसका अनुभव करता है ?

उत्तर . कायोत्सर्ग देह सहित जीव को देहातीत् अर्थात् आत्मा का अनुभव कराता है।

प्रश्न 3 . एक जीव अधिकतम कितने समय तक कायोत्सर्ग कर सकता है ?

उत्तर . एक जीव अधिकतम एक वर्ष तक कायोत्सर्ग कर सकता है।

प्रश्न 4 . कायोत्सर्ग करने वाले जीव क्या करते हैं ?

उत्तर . कायोत्सर्ग करने वाले जीव जड़ (शरीर) चेतन (आत्मा) को पृथक्–पृथक् करके ध्यान का अवलम्बन लेते हैं अर्थात् ध्यान करते हैं।

प्रश्न 5 . ध्यान करने से क्या होता है ?

उत्तर . ध्यान करने से देह की नश्वरता का तथा आत्मा की ध्रुवता का ज्ञान होता है। जिससे अन्तर्मन प्रकाशित होता है।

प्रश्न 6 . आत्म ध्यान के अधिकारी कौन होते हैं ?

उत्तर . आत्म ध्यान के अधिकारी मात्र दिगम्बर मुनिराज होते हैं।

ईर्या-समिति

73

चार हाथ भूमि को शोधे, और करें जो गमन श्रमण।
देव गुरू अरूँ तीर्थ दर्श या, करने को वे शास्त्र श्रवण।।
त्रस थावर की रक्षा हेतु, प्राशुक मग पर साधु चले।
बिना प्रयोजन जो ना चलते, उन साधु की ईर्या पले।।73।।

अर्थ

दिगम्बर मुनिराज त्रस एवं स्थावर जीवों की रक्षा हेतु चार हाथ प्रमाण भूमि को देखकर प्राशुक मार्ग मे चलते है। साधु देव–दर्शन, तीर्थ दर्शन या जिनवाणी के श्रवण हेतु गमन करते हैं, अन्य समय बिना प्रयोजन के नहीं चलते है। ऐसे साधु की ईर्या समिति पलती है।

प्रश्न 1 . समिति किसे कहते हैं ?
उत्तर . सम्यक् प्रवृत्ति को "**समिति**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . समिति कितनी होती हैं ?
उत्तर समिति **पाँच** होती हैं –
1. ईर्या समिति
2. भाषा समिति
3. एषणा समिति
4. आदान निक्षेपण समिति
5. प्रतिष्ठापन समिति।

प्रश्न 3 . ईर्या समिति किसे कहते हैं ?
उत्तर स्वकार्य वशात् चार हाथ आगे की भूमि को देखकर प्राशुक मार्ग मे ही दिवस मे गमन करना "**ईर्या-समिति**" है।

प्रश्न 4 . प्राशुक मार्ग किसे कहते हैं ?
उत्तर . जिस मार्ग में मनुष्य पशु या वाहन आदि निकल चुके हों उस मार्ग को "**प्राशुक मार्ग**" कहते हैं।

प्रश्न 5 . साधुगण कितने कारणों से प्राशुक मार्ग में गमन करते हैं ?
उत्तर . साधुगण प्राशुक मार्ग मे सत्कार्य हेतु अर्थात् देव दर्शन, गुरू दर्शन, शास्त्र श्रवण, तीर्थ दर्शन अथवा आहार चर्या आदि धार्मिक कार्य हेतु गमन करते हैं।

प्रश्न 6 . मुनिराज चार हाथ भूमि को देखकर क्यों चलते हैं ?

उत्तर . मुनिराज त्रस अथवा स्थावर जीवों की रक्षा हेतु चार हाथ भूमि को देखकर चलते हैं।

अथवा

अन्य सूक्ष्म जीवों में भी मेरे जैसे चैतन्य प्राण हैं उसमें भी परमात्मा बनने की शक्ति है। अतः धोखे से किसी भावी परमात्मा का घात न हो जायें, इस भावना से मुनिराज चार हाथ भूमि को देखकर चलते हैं।

प्रश्न 7 . कौन से साधु ईर्या समिति का पालन करते हैं ?

उत्तर . धर्म कार्य के सिवाय अन्य कार्यों में बिना प्रयोजन न चलने वाले साधु ही ''**ईर्या समिति**'' का पालन करते है।

भगवान महावीर जिस दिन मोक्ष गये उस दिन गौतम स्वामी को केवल प्राप्त हुआ। जिस दिन गौतम स्वामी मोक्ष गये उस दिन सुधर्म स्वामी को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ, जिस दिन सुधर्म स्वामी को मोक्ष हुआ उस दिन जम्बूस्वामी को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ इसलिए इन्हें अनुवद्ध केवली कहते है। जम्बू स्वामी मथुरा से, सुदर्शन मुनिराज पटना से व अन्तिम केवली श्रीधर मुनिराज कुण्डलगिरी से मोक्ष गये। चतुर्थ काल मे जन्म लेने वाले जीव पंचम काल मे मोक्ष जा सकते हैं। प्रथम भद्रबाहु अन्तिम श्रुत केवली हुए सम्राट चन्द्रगुप्त अन्तिम मुकुट बद्ध राजा हुए श्री पुष्पदंत, भुतबली अन्तिम अंगधारी मुनिराज हुए।

सबसे बड़ी बुद्धिमानी इसी में है कि दुनियॉ की ओर से ऑख फेरकर परमात्मा के चरणों में ध्यान लगाया जाए।

भाषा-समिति

परपीड़ाकारी वचन ना, निष्ठुर पर कोपिनी बोले।
वचन उचारने के पहले ही, अपने वचन को जो तोले।।
पर निन्दा हो जाये, ऐसा बोले ना कठोर वचन।
हित-मित-प्रिय वाणी का कहना, भाषा समिति कहे अर्हन्।।74।।

अर्थ

दूसरे को पीड़ा पहुँचाने वाले वचन, निष्ठुर वचन दूसरे को उत्तेजित क्रोधित करने वाले वचन, परनिन्दाकारी वचन न कहना एवं वचन उचारने के पहले अपने वचन को तोलकर कहना तथा हित–मित–प्रिय वाणी का कहना भाषा–समिति है। ऐसा अरहत देव ने कहा है।

प्रश्न 1 . भाषा-समिति किसे कहते हैं ?

उत्तर . आगम के अनुकूल एवं हित–मित–प्रिय वाणी का कहना **''भाषा समिति''** है।

प्रश्न 2 . भाषा-समिति का पालन करने वाले मुनिराज को कैसे वचन का उच्चारण नहीं करना चाहिए ?

उत्तर . भाषा–समिति का पालन करने वाले मुनिराज को निष्ठुर वचन, परकोपिनी वचन, निन्दाकारी वचन, चुगली वचन एवं विकथा वचन का उच्चारण नही करना चाहिए।

प्रश्न 3 . निष्ठुर वचन किसे कहते हैं ?

उत्तर . हृदय दूषित करने वाले निर्दयता से परिपूर्ण वचन को **''निष्ठुर वचन''** कहते हैं।
जैसे : तेरे टुकड़े–टुकड़े कर डालूँगा।

प्रश्न 4 . परकोपिनी वचन किसे कहते हैं ?

उत्तर . दूसरे को उत्तेजित व क्रोधित करने वाले वचन को **''परकोपिनी वचन''** कहते है।

प्रश्न 5 . परनिन्दाकारी वचन किसे कहते हैं ?

उत्तर देव, शास्त्र, गुरू के प्रति श्रद्धा डिगाने वाले वचन को **''परनिन्दाकारी वचन''** कहते हैं।

प्रश्न 6 . चुगली वचन किसे कहते हैं ?

उत्तर . देखे–अनदेखे किसी की क्रिया को किसी के समक्ष प्रगट पतले अक्षर करना "**चुगली वचन**" है।

प्रश्न 7 . विकथा वचन किसे कहते हैं ?

उत्तर . भोजन भय भोग, धन सम्बन्धी व्यर्थ वचन उचारना "**विकथा वचन**" है।

प्रश्न 8 . मुनिराज कब वचन का उच्चारण करते हैं ?

उत्तर . मुनिराज किसी धर्म कार्य के निमित्त, शका समाधान के निमित्त, आगमानुकूल वचन तोलने के उपरान्त ही उच्चारण करते हैं।

प्रश्न 9 . मुनिराज की वाणी कैसी होती हैं ?

उत्तर मुनिराज की वाणी हित, मित और प्रिय होती है।

प्रश्न 10 . हित, मित और प्रिय वचन किसे कहते हैं ?

उत्तर भव्य जीवो का कल्याण हो ऐसे वचन को "**हित वचन**", संक्षिप्त सशय रहित वचन को "**मित वचन**" एवं सभी को मधुर लगने वाले वचन को "**प्रिय वचन**" कहते हैं।

मौनमाभिमान शरणं चित्करणं पुण्यकरणमघहरणम्।
देवादिवश्य करणं क्रुद्धरणं चित्त शुद्धि सुखकरणम्।।

अर्थ– मौन अभिमान का रक्षक है, ज्ञान का साधन है, पाप को हरने वाला है, देवादि को वश में करने वाला है क्रोध को हरने वाला है, चित्त की शुद्धि और सुख प्रदान करने वाला है।

उतावलेपन में किया गया कार्य तात्कालिक आनन्द प्रदान करता है और अपने पीछे अनन्त पश्चाताप को छोड़कर चला जाता है।

एषणा समिति

चौदह मल अरूँ दोष छियालिस, रहित साधु आहार करे।
प्राशुक प्रशस्त परहस्त द्वारा, दिया साधु आहार करें।।
क्षुधा शमन वैय्यावृत हेतु, सम भावों से ग्रहण करें।।
मोक्षपुरी की यात्रा हेतु, साधु एषणा समिति धरें।।75।।

अर्थ

चौदह मल और छियालीस दोषो से रहित प्राशुक एव दूसरों के द्वारा दिया गया शुद्ध आहार ग्रहण करना एषणा समिति है, दिगम्बर मुनिराज क्षुधा शमन हेतु, वैय्यावृत्त हेतु एव मोक्षपुरी की यात्रा हेतु समता परिणाम को धारण कर एषणा समिति का पालन करते हुए आहार ग्रहण करते है।

प्रश्न 1 . एषणा समिति किसे कहते हैं ?

उत्तर . चौदह मल एवं छियालीस दोष रहित एवं नौ कोटि से विशुद्ध भोजन को समत्व भाव से ग्रहण करना "**एषणा समिति**" है।

प्रश्न 2 . चौदह मल कौन-कौन से हैं ?

उत्तर . 1. नख 2. बाल 3. हड्डी 4. रक्त 5. पीप 6. मृत विकलत्रय—दो इंद्रिय, तीन इंद्रिय, चार इद्रिय जीव का मृत शरीर 7. कण—गेहूँ आदि के बाहर का छिलका 8. कुण्ड भीतर कच्चा, बाहर पका ऐसा चावल गेहूँ आदि, 9. चमडा, 10. मॉस 11. बीज उगने योग्य बीज 12. फल—साबुत फल 13. कन्द—जमीकंद आदि 14. मूल—जड आदि।

प्रश्न 3 . चौदह मल में किस मल में कितना दोष है ?

उत्तर . चौदह मल में नख, बाल, विकलत्रय, पीप रूधिर, मॉस, हड्डी, चर्म कन्द ये महादोष रूप हैं। इनके आ जाने पर नियम से अन्तराय करना चाहिए तथा कण, बीज, फल और मूल आ जाये तो शक्ति हो तो अन्तराय करें अन्यथा उसे निकालकर आहार ग्रहण कर सकते हैं।

प्रश्न 4 . आहार सम्बन्धी 46 दोष कौन-कौन से हैं ?

उत्तर . 16 उद्गम दोष, 16 उत्पादन दोष, 10 अशन दोष, 4 भुक्ति दोष इस प्रकार ये "**छियालीस दोष**" आहार सम्बन्धी है।

प्रश्न 5 . उद्गम दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . दाता में होने वाले जिस अभिप्राय से आहारादि उत्पन्न होता है, वह दोष ''**उद्गम दोष**'' है।

प्रश्न 6 . 16 उद्गम दोष कौन-कौन से हैं ?

उत्तर . 1. औद्देशिक 2. अध्यदि 3. पूति 4. मिश्र
5. स्थापित 6. बलि 7. प्रावर्तिक 8. प्रादुस्करण
9. क्रीत 10. प्रामृष्य 11. परिवर्तक 12. अभिघट
13. उद्भिन्न 14. मालारोहण 15. अछेद्ध 16. अनिसृष्ट।
ये 16 उद्गम दोष है।

प्रश्न 7 . औद्देशिक दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . साधु के उद्देश्य से बने भोजन को ''**औद्देशिक दोष**'' कहते हैं।

प्रश्न 8 . अध्यदि दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . मुनियो को देखकर भोजन पकाना या पकाते हुए दाल, चावल आदि मे मुनि को देखकर और अधिक मिला देना ''**अध्यदि दोष**'' है।

प्रश्न 9 . मिश्र दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . असंयमी पाखण्डियो को देने के उद्देश्य से बना भोजन मुनियों को देना ''**मिश्र दोष**'' है।

प्रश्न 10 . पूति दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . प्राशुक व अप्राशुक वस्तु का मिश्रण कर देना ''**पूति दोष**'' है।

प्रश्न 11 . स्थापित दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . भोजन पकाने वाले पात्र से निकालकर अपने घर में या अन्य के घर में रख देना ''**स्थापित दोष**'' है।

प्रश्न 12 . बलिदोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . यक्षादि अन्य देवी–देवताओं के लिये बने भोजन को यतियों को देना ''**बलि दोष**'' है।

प्रश्न 13 . प्रावर्तित दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . काल की हानि वृद्धि अर्थात् आहार के समय आहार नहीं देना **''प्रावर्तित दोष''** है।

प्रश्न 14 . प्रादुस्करण दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . साधु के चौके में आ जाने पर सफाई, बर्तन इधर–उधर रखना, द्वार आदि बन्द करना, खोलना, दीप जलाना आदि **''प्रादुस्करण दोष''** है।

प्रश्न 15 . क्रीत दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . साधु के घर में आ जाने पर तुरन्त सामग्री खरीद कर आहार देना **''क्रीत दोष''** है।

प्रश्न 16 . प्रामृष्य दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . उधार धन लेकर आहार देना **''प्रामृष्य दोष''** है।

प्रश्न 17 . परिवर्तक दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . आहारार्थ साधु के आने पर किसी को कुछ वस्तु देकर भोज्य पदार्थ लेना **''परिवर्तक दोष''** है।

प्रश्न 18 . अभिघट दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . क्रम से सात घरों को छोड़कर दूर से लाये गये अन्न, जल मिश्रित वस्तु का देना **''अभिघट दोष''** है।

प्रश्न 19 . उद्भिन्न दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . घी, शक्कर, काजू, किसमिस, बर्फी, पेड़ा आदि कोई वस्तु डिब्बे में बन्द हो उसे तुरन्त खोलकर देना **''उद्भिन्न दोष''** है।

प्रश्न 20 . मालारोहण दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . सीढी आदि के प्रयोग द्वारा ऊपर से वस्तु लाकर देना **''माला रोहण दोष''** है।

प्रश्न 21 . अछेद्य दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . समाज के पंच के भय से साधु को आहार देना **''अछेद्य दोष''** है।

प्रश्न 22 . अनिसृष्ट दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . अयोग्य अप्रदान दाता के द्वारा दिया हुआ भोजन लेना **''अनिसृष्ट दोष''** है।

प्रश्न 23 . उपर्युक्त सोलह उद्गम दोष किससे आश्रित हैं ?

उत्तर . उपर्युक्त सोलह दोष श्रावक के आश्रित हैं। श्रावक का कर्त्तव्य है वह सोलह उद्गम दोष रहित शुद्ध आहार मुनिराज को देवें।

प्रश्न 24 . साधु को उद्गम दोष कब होता है ?

उत्तर . साधु को उपर्युक्त निमित्त ज्ञात हो जाये फिर भी साधु उस पदार्थ को ग्रहण करे तो मुनिराज को "**एषणा समिति**" में दोष लगता है।

नोट : वर्तमान पंचम काल में उदगम दोष रहित शुद्ध आहार का मिलना अत्यन्त दुर्लभ है क्योंकि व्रती गृहस्थ को छोडकर कोई भी शुद्ध भोजन नहीं करता है। वर्तमान मे जो भी चौके लगाये जाते है वे सन्तों को लक्ष्य रखकर स्वास्थ्य, शरीर, मौसम को ध्यान रखकर लगाये जाते हैं। मुनि राज उसे ही शुद्ध मर्यादित मानकर शान्त भावना से साधना का लक्ष्य पूर्ण करने ज्ञान ध्यान की वृद्धि करने हेतु आहार ग्रहण करते है जो मुनियो के साधना विस्तार में एवं गृहस्थों के पुण्य विस्तार मे कारण है। कुछ क्रियाऐं दोष युक्त होकर भी दोष मुक्त है।

प्रश्न 25 . उत्पादन दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिन धर्म के विरूद्ध क्रियाओं द्वारा आहारादि उत्पन्न कराना "**उत्पादन दोष**" है।

प्रश्न 26 . उत्पादन के 16 दोष कौन-कौन से हैं ?

उत्तर . 1. धात्री दोष 2. दूत दोष 3. निमित्त दोष
4. अजीव दोष 5. वनिपक दोष 6. चिकित्सा दोष
7. क्रोध दोष 8. मान दोष 9. माया दोष
10. लोभ दोष 11. पूर्व स्तुति दोष 12. पश्चात् स्तुति दोष
13. विद्या दोष 14. मत्र दोष 15. चूर्ण योग दोष
16. मूल कर्म दोष। ये 16 उत्पादन दोष हैं।

प्रश्न 27 . धात्री दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . माता के समान बालक का लालन–पालन करके आहर ग्रहण करना "**धात्री दोष**" है।

प्रश्न 28 . धात्री दोष कितने प्रकार का होता है। ?

उत्तर . धात्री दोष 5 प्रकार का होता है –

मार्जन धात्री - बालक को स्नान कराना या स्नान की विधि बतलाना।

मण्डन धारी - बालक को श्रृंगार करना या श्रृंगार की विधि बतलाना।

क्रीड़न धात्री - बालक को क्रीड़ा कराना या क्रीड़ा की विधि बतलाना।

क्षीर धात्री - बालक को दूध पिलाना या दूध पिलाने की विधि बतलाना।

अम्ब धात्री - बालक को सुलाना या सुलाने की विधि बतलाना।

प्रश्न 29 . क्या मुनिराज उपर्युक्त क्रियायें करते हैं ?

उत्तर . मुनिराज उपर्युक्त एक भी क्रियाये नहीं करते, कदाचित् "मुझे सेठ साहूकारो से, राजा, नेता आदि से आहार मिल जाये" इस प्रकार की भावना से पॉच प्रकार की क्रियायें कर लेवें या बालक के बारे मे जानकारी देकर उसके घर में अगर मुनिराज आहार करते हैं तो अपने स्वाध्याय का नाश करते हैं और मुनि मार्ग में दूषण लगाकर महापाप का उपार्जन करते है।

प्रश्न 30 . दूत दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . स्व सम्बन्धी अथवा भक्त पुरूषों का सन्देश ले जाकर समाचार आदि दे संतुष्ट किये गये दाता के द्वारा दिये गये भोजन को ग्रहण करना "**दूत दोष**" है।

प्रश्न 31 . निमित्त दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . ज्योतिष आदि के माध्यम से श्रावक के भविष्य को बताकर संतुष्ट कर उसके द्वारा दिये गये आहार को ग्रहण करना "**निमित्त दोष**" है। उससे भोजन के प्रति गिद्धता, दीनता आदि दोष आते हैं।

प्रश्न 32 . आजीव दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . अपनी जाति कुल शील, तप और प्रभुता का बखान कर अपनी विशेषता बताकर दाता के द्वारा दिये गये आहार का ग्रहण करना "**आजीव दोष**" है। इससे कल्याण मार्ग में प्रमाद लिप्सा आदि दोष उत्पन्न होते हैं।

प्रश्न 33 . वनीपक दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . दाता के अनुकूल वचन बोलकर उसके द्वारा दिये गये आहार को ग्रहण करना ''**वनीपक दोष**'' है।

जैसे : किसी ने पूछा–कुत्ता, बिल्ली पालने से, मछली को आटा आदि खिलाने से पुण्य है या पाप पद्मावती क्षेत्रपाल को पूजने से पुण्य लगता है या पाप तब दाता के अनुकूल ही उत्तर देना। इससे दीनता, पराधीनता आती है।

प्रश्न 34 . चिकित्सा दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . दाता को औषधि आदि बताकर रोग दूर करके अथवा भूत–प्रेत आदि झाडकर उसके द्वारा दिये गये आहार को ग्रहण करना ''**चिकित्या दोष**'' है। इससे कई प्रकार के आरम्भजनित दोष लगते हैं।

प्रश्न 35 . क्रोध दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . क्रुद्ध होकर भोजन का प्रबन्ध कराना या ग्रहण करना ''**क्रोध दोष**'' है। इससे संयम की हानि एवं उन्मार्ग का प्रचार आदि दोष उत्पन्न होते है।

प्रश्न 36 . मान दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . अहंकार के वशीभूत होकर भोजन का प्रबन्ध कराना एवं आहार ग्रहण कराना ''**मान दोष**'' है। इससे रस गारव और ऋषि गारव आदि दोष उत्पन्न होते हैं।

प्रश्न 37 . माया दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . छल कपट करके भोजन का प्रबन्ध कराकर आहार ग्रहण करना ''**माया दोष**'' है। इससे सम्यकत्व एवं चारित्र हानि के दोष उत्पन्न होते हैं।

प्रश्न 38 . लोभ दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . दाता को लोभ देकर भोजन आदि का प्रबन्ध कर आहार ग्रहण करना ''**लोभ दोष**'' है। इससे मूल गुणों की हानि आत्म–दृष्टि का अभाव आदि दोष उत्पन्न होते हैं।

प्रश्न 39 . पूर्व स्तुति दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . दाता की प्रशंसा करके, उसे अपनी ओर आकर्षित करके, उसके द्वारा दिये गये आहार को ग्रहण करना ''**पूर्व स्तुति दोष**'' है। उससे आत्म–सम्मान का नाश होता है।

प्रश्न 40 . पश्चात् स्तुति दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . आहार ग्रहण करने के पश्चात् दाता की प्रशंसा करना ''**पश्चात् स्तुति दोष**'' है। इससे आगे भी भोजन देता रहे ऐसी भावना उत्पन्न होती है।

प्रश्न 41 . विद्या दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . मत्र, सिद्ध-विद्या का प्रलोभन देकर आहारादि ग्रहण करना या दाता को ''इस प्रकार की विद्या सिखाऊँगा'' इस प्रकार की आशा बाँधकर उससे आहार लेना ''**विद्या दोष**'' है। इससे आत्मविश्वास घटता है और दीनता प्रकट होती है।

प्रश्न 42 . मंत्र दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो पढने मात्र से सिद्ध हो जाये ऐसे मंत्र बताकर या मत्र दूँगा इस प्रकार दाता को प्रलोभन देकर उससे आहार लेना ''**मंत्र दोष**'' है। इससे लोक निन्दा, तिरस्कार आदि दोष उत्पन्न होते है।

नोट : मत्र दोष एव विद्या दोष में ज्यादा अन्तर नहीं है। दोनों को मिलाकर विद्या-मत्र दोष कह सकते है अर्थात् आहारदि के दायक देवता को विद्या मंत्र आदि से बुलाकर सिद्ध करना एव आहार ग्रहण करना विद्या-मंत्र दोष है।

प्रश्न 43 . चूर्ण दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . दाता के लिए अजन, सुरमा आदि का चूर्ण देना व उससे आहार ग्रहण करना ''**चूर्ण दोष**'' है। इससे आजीविका का दोष लगता है।

प्रश्न 44 . मूल दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो वश मे नही है उसका वशीकरण करना, बिछड़े स्त्री, पुरूष, मित्र आदि का मिलन करा देना इस प्रकार की दाता की मदद करके उससे आहार ग्रहण करना ''मूल कर्म दोष'' है। इससे लज्जा, निर्दयता, राग, वृद्धि ब्रह्मचर्य, हानि आदि दोष उत्पन्न होते है।

प्रश्न 45 . उत्पादन दोष किससे आश्रित है ?

उत्तर . उत्पादन दोष मुनिराज के आश्रित होते हैं शिथिल आचरण वाले साधु ही ऐसी क्रिया कर दोषयुक्त आहार ग्रहण करते हैं।

प्रश्न 46 . अशन दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . आरम्भ को उत्पन्न करने वाले आहार सम्बन्धी उत्पन्न दोष को "**अशन दोष**" कहते हैं।

प्रश्न 47 . आशन दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . आशन दोष के **दस** भेद हैं –

1. शंकित 2. मृक्षित 3. निक्षिप्त 4. पिहित
5. सव्यवहरण 6. दायक 7. उन्मिश्र 8. अपरिणत
9. लिप्त 10. व्यक्त।

प्रश्न 48 . शंकित दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . चार प्रकार के आहार को देख मन मे किसी भी प्रकार की शंका उत्पन्न हो जाये कि यह आहार लेने योग्य है या नहीं। ऐसी शका सहित भोजन करने को "**शंकित दोष**" कहते है।

प्रश्न 49 . मृक्षित दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर चिकनाई युक्त हाथ, चम्मच या अन्य पात्र से दिये गये भोजन को ग्रहण करना "**मृक्षित दोष**" हैं

प्रश्न 50 . निक्षिप्त दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर सचित्त पृथ्वी, जल, अग्नि, वनस्पति तथा बीज और त्रस जीव के ऊपर रखे गये भोजन को ग्रहण करना "**निक्षिप्त दोष**" है।

प्रश्न 51 . पिहित दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर अप्राशुक अथवा प्राशुक वजनदार वस्तु से ढंके भोजन को तुरन्त उघाडकर दिये गये भोजन को ग्रहण करना "**पिहित दोष**" है।

प्रश्न 52 . संव्यवहरण दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर वस्त्र, बर्तन, पाटा आदि को विवेक रहित होकर खींचकर लाये गये और उससे दिये गये भोजन को ग्रहण करना "**संव्यवहरण दोष**" है।

प्रश्न 53 . दायक दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिनको आहार देना निषिद्ध हो, उनसे आहार ग्रहण करना "**दायक दोष**" है।

जैसे : नौकरानी, शराबी, रोगी, सूतक पातक सहित नपुंसक, भूतप्रेत जिसे लगे हों, नग्न, मलमूत्र करके आये हों, मूर्च्छित हों, वमन करके आया हो, रूधिर सहित (चार अंगुल से ज्यादा), वेश्या, साध्वी (आर्यिका या अन्य धर्मी साध्वी), तेल मालिश करने वाला, अति बाल (आठ वर्ष से कम), अति वृद्ध खाती हुई स्त्री। गर्भिणी (पांच माह से अधिक), अंधा कोढ़ी किसी की आड़ में हो, रजस्वाला, ऊँचे स्थान पर या नीचे स्थान पर खड़ा हो, ऐसी स्त्री पुरूषों से आहार ग्रहण नहीं करना चाहिये।

प्रश्न 54 . उन्मिश्र दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . मिट्टी, कच्चा जल, पत्ता फूल आदि हरितकाय जौ, गेहूँ, मटर आदि बीज एवं सजीव त्रस जीव आदि मिले भोजन को ग्रहण करना "**उन्मिश्र दोष**" है।

प्रश्न 54 . उन्मिश्र दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . मिट्टी, कच्चा जल, पत्ता फूल आदि हरितकाय जौ, गेहूँ, मटर आदि बीज एवं सजीव त्रस जीव आदि मिले भोजन को ग्रहण करना "**उन्मिश्र दोष**" है।

प्रश्न 55 . अपरिणत दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिसका वर्ण रस गन्ध न पलटा हो ऐसे जल को चना, चावल आदि के धोवन को ग्रहण करना "**अपरिणत दोष**" है।

प्रश्न 56 . लिप्त दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . चूना, आटा, हरी सब्जी, कच्चे जल से लिप्त हुए हाथ या बर्तन आदि से दिये भोजन को ग्रहण करना "**लिप्त दोष**" है।

प्रश्न 57 . व्यक्त दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . बहुत सा गिराकर या गिरते हुए दिया गया भोजन अथवा अनिष्ट वस्तु को गिराकर इष्ट वस्तु को ग्रहण करना "**व्यक्त दोष**" है।

प्रश्न 58 . भुक्ति के चार दोष कौन-कौन से हैं ?

उत्तर . 1. संयोजना 2. अंगार 3. धूम 4. प्रमाण।
ये चार भुक्ति दोष हैं।

प्रश्न 59 . संयोजन दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . आयुर्वेद में बताये गये परस्पर विरूद्ध पदार्थों का मिश्रण करके अथवा ठण्डे में गरम, गरम में ठण्डे का मिश्रण करना "**संयोजना दोष**" है।

प्रश्न 60 . अंगार दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . अत्यन्त गिद्धतापूर्वक स्वाद लेते हुए भोजन ग्रहण करना "**अंगार दोष**" है।

प्रश्न 61 . धूम दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . ग्लानि एवं भोजन की निन्दा करते हुए आहार ग्रहण करना "**धूम दोष**" है।

प्रश्न 62 . प्रमाण दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . प्रमाण से अधिक भोजन करना "**प्रमाण दोष**" है।

प्रश्न 63 . आहार का प्रमाण क्या है ?

उत्तर . पेट के चार भागों में दो भाग अन्न, फल व एक भाग पानी तथा एक भाग खाली रखना आहार का प्रमाण है।

प्रश्न 64 . परिणाम से अधिक भोजन ग्रहण करने से क्या हानि है ?

उत्तर परिणाम से अधिक भोजन ग्रहण करने से स्वाध्याय नहीं होता, षट् आवश्यक क्रियायें नही पलतीं, नींद और आलस्य आता है और शरीर में रोगादि की सम्भावना बनी रहती है। अतः परिमाण अनुसार ही भोजन ग्रहण करना चाहिये।

प्रश्न 65 . मुनिराज कितने कारणों से आहार ग्रहण करते है ?

उत्तर . मुनिराज **छः** कारणों से आहार ग्रहण करते हैं –

1. क्षुधा वेदना शमन हेतु 2. वैय्यावृत्ति हेतु
3. षट आवश्यक के पालन हेतु 4. संयम की रक्षा हेतू
5. प्राणों की चिन्ता 6. धर्म की चिन्ता से।

प्रश्न 66 . मुनिराज कितने कारणों से आहार त्याग करते है ?

उत्तर . मुनिराज **छः** कारणों से आहार त्याग करते हैं –

1. मरणान्तिक पीड़ा आ जाने पर 2. उपसर्ग आ जाने पर

3. ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए 4. प्राणी दया के लिये
5. तपस्या के लिये 6. समाधि मरण के लिये।

प्रश्न 67 . मुनिराज आहार के लिये किस समय निकल सकते हैं ?

उत्तर मुनिराज आहार के लिये सूर्योदय के तीन घड़ी (डेढ़ घन्टे) बाद में सूर्यास्त के तीन घड़ी पूर्व तक आहार के लिये निकल सकते हैं।

प्रश्न 68 . मुनिराज आहार हेतु कितनी बार निकल सकते हैं ?

उत्तर . मुनिराज आहार हेतु एक ही बार निकल सकते हैं। उस समय अगर विधि न मिले तो उपवास करना चाहिये। दोबारा चर्या हेतु नहीं निकलना चाहिये, गुरू आज्ञा के अनुसार कार्य करना चाहिए।

प्रश्न 69 . मुनिराज कितने विघ्न (अन्तराय) टालकर आहार ग्रहण करते हैं ?

उत्तर . मुनिराज 32 अन्तराय को टाल कर आहार ग्रहण करते है।

प्रश्न 70 . 32 अन्तराय कौन से हैं ?

उत्तर 1. काक 2. अमेध्य 3. वमन 4. रोधन 5. रूधिर 6. अश्रुपात 7. जान्वधः परामर्श 8. जानूपरिव्यतिक्रम 9. नाभ्यधोर्निगमन 10. प्रत्याख्यात सेवन 11.जन्तु वध 12.काकादिपिण्डहरण 13. पाणिपात्र से पिण्ड पतन 14. पाणिपुट में जन्तु वध 15. मांसादि दर्शन 16. उपसर्ग 17. पादान्तर में जीव संपात 18. भाजन संपात 19. उच्चार 20. प्रस्त्रवण 21. अभोज्य गृह प्रवेश 22. पतन 23. उपवेसन 24. सदंश 25. भूमि स्पर्श 26. निष्ठीवन 27. उदर कृमि निर्गमन 28. अदत्त ग्रहण 29. प्रहार 30. ग्राम दाह 31. पाद ग्रहण 32. कर ग्रहण। ये 32 अन्तराय हैं।

प्रश्न 71 . काक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . आहारार्थ गमन में या आहार के समय साधु के शरीर पर कोई कौआ, बगुला आदि पक्षी बीट कर देवे तो **"काक नामक अन्तराय"** है।

प्रश्न 72 . अमेध्य नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . आहारार्थ जाते समय या आहार करते समय अशुचि पदार्थ मल आदि का शरीर से स्पर्श हो जाये तो "**अमेध्य नामक**" अन्तराय होता है।

नोट : आहारार्थ गमन में यदि पक्षी बीट कर देवें अथवा अशुची पदार्थ से शरीर का स्पर्श हो जाए तो पुनः शुद्धि करके उसी समय चर्या के लिये जा सकते हैं।

प्रश्न 73 . वमन नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . यदि स्वयं को वमन हो जाये तो "**वमन नामक**" अन्तराय होता है।

प्रश्न 74 . रोधन नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . आहार करने से कोई रोक देवे तक "**रोधन नामक**" अन्तराय होता है।

प्रश्न 75 . रूधिर नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . अपने या पर के शरीर से चार अंगुल से अधिक रक्त की धार निकलती हुई दिख जावे तो "**रूधिर नामक**" अन्तराय है।

प्रश्न 76 . अश्रुपात नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . दुःख से, शोक से अपने या पर के अश्रु आ जावें तो "**अश्रुपात नामक**" अन्तराय है।

प्रश्न 77 . जान्वधः परामर्श नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . सिद्ध भक्ति पढने के उपरान्त घुटने से नीचे के भाग का स्पर्श हो जाये तो "**जान्वधः परामर्श नामक**" अन्तराय होता है।

प्रश्न 78 . जानुपरिव्यतिक्रम नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . घुटने पर्यन्त लगे सीढ़ी पाषाण लाँघकर जाने में "**जानपरिव्यतिक्रम नामक**" अन्तराय होता है।

प्रश्न 79 . नाभ्यधोनिर्गमन नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . नाभि के नीचे मस्तक करके किसी द्वार आदि से निकलना पड़ जाये तो "**नाभ्योनिगर्मन नामक**" अन्तराय होता है।

प्रश्न 80 . प्रत्याख्यात सेवन नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस वस्तु का त्याग है यदि वह वस्तु खाने में आ जायें तो "**प्रत्याख्यात सेवन**" नामक अन्तराय होता है।

प्रश्न 81 . जन्तु वध नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . यदि अपने से या पर के माध्यम से किसी जीव का वध हो जाये तो "**जन्तुवध नामक**" अन्तराय होता है।

प्रश्न 82 . काकादिपिण्डहरण नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . यदि कौवे आदि पक्षी हाथ से ग्रास ग्रहण कर लेवे तो "**काकादिपिण्डहरण नामक**" अन्तराय होता है।

प्रश्न 83 . पिण्ड पतन नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . आहार करते समय अपने हाथ से ग्रास बराबर वस्तु के गिर जाने पर "**पिण्ड पतन नामक**" अन्तराय होता है।

प्रश्न 84 . पाणिजन्तु वध नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . आहार करते समय हाथ में कोई जीव स्वयं आकर मर जावे तो "**पाणिजन्तुवध**" नामक अन्तराय होता है।

प्रश्न 85 . माँसादि दर्शन नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . यदि पंचेन्द्रिय जीव के मृत शरीर का मॉस आदि का दर्शन हो जावे तो "**मॉसादि दर्शन**" नामक अन्तराय होता है।

प्रश्न 86 . उपसर्ग नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . देव कृत कोई उपसर्ग हो जाये तब "**उपसर्ग नामक**" अन्तराय होता है।

प्रश्न 87 . पादान्तरे जीव संपात नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . यदि पंचेन्द्रिय जीव आहार के समय पाँवों के मध्य से निकल जावे तब "**पादान्तरे जीव संपात**" नाम अन्तराय होता है।

प्रश्न 88 . भाजन संपात नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . यदि आहार दाता के हाथ से बर्तन गिर जावें वो "**भाजन संपात**" नामक अंतराय होता है।

प्रश्न 89 . उच्चार नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . यदि साधु के उदर से मलच्युत हो जावे तो "**उच्चार नामक**" अन्तराय होता है।

प्रश्न 90 . प्रस्रवण नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . यदि मूत्रादि च्युत हो जावे तो "**प्रस्रवण नामक**" अन्तराय होता है।

प्रश्न 91 . अभोज्य गृह प्रवेश नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर यदि आहारार्थ भ्रमण करते समय चाण्डाल आदि अभोज्य गृह में प्रवेश हो जाये तो "**अभोज्य गृह प्रवेश**" नामक अन्तराय होता है।

प्रश्न 92 . पतन नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . यदि मूर्च्छा आदि से गिर पड़े तो "**पतन नामक**" अन्तराय होता है।

प्रश्न 93 . उपवेशन नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . आसक्ति के कारण अथवा कारणवशात् बैठ जावे तो "**उपवेशन नामक**" अन्तराय होता है।

प्रश्न 94 . सदंश नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . आहारार्थ गमन करते समय कुत्ता आदि जानवर काट खाये तब "**सदंश नामक**" अन्तराय होता है।

प्रश्न 95 . भूमि स्पर्श नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . सिद्ध भक्ति कर लेने के उपरान्त यदि हाथ से भूमि का स्पर्श हो जाये तो "**भूमि स्पर्श**" नामक अन्तराय होता है।

प्रश्न 96 . निष्ठीवन नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . यदि अपने से थूक, लार आदि निकल आये तो "**निष्ठीवन**" नामक अन्तराय होता है।

प्रश्न 97 . उदर कृमि निर्गमन नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . यदि उदर से कृमि निकल पड़े तो "**उदर कृमि निर्गमन**" नामक अन्तराय होता है।

प्रश्न 98 . अदत्त नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . यदि बिना दी हुई वस्तु ग्रहण कर लेवें तो "**अदत्त**" नामक अन्तराय होता है।

प्रश्न 99 . प्रहार नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . यदि अपने ऊपर या पर के ऊपर तलवार आदि से प्रहार हो जावे तब "**प्रहार नामक**" अन्तराय होता है।

प्रश्न 100 . ग्राम दाह नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . यदि ग्राम में अग्नि लग जावे तब "**ग्राम दाह**" नामक अन्तराय होता है।

प्रश्न 101 . पाद ग्रहण नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . यदि पैर से कुछ ग्रहण कर ली जाये तब "**पाद ग्रहण**" नामक अन्तराय है।

प्रश्न 102 . कर ग्रहण नामक अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . हाथ से कोई वस्तु उठाकर ग्रहण कर ली जावे तब "**कर ग्रहण**" नामक अन्तराय होता है।

प्रश्न 103 . मुनिराज अन्य कौन से विशेष कारणों से आहार का त्याग करते हैं ?

उत्तर . मुनिराज कलह, इष्ट मरण, सन्यास पतन, प्रधान का मरण आदि अन्य कारणों से भी अन्तराय या आहार का त्याग करते हैं।

प्रश्न 104 . मुनिराज आहार का त्याग (अन्तराय) क्यों करते हैं ?

उत्तर . मुनिराज भय, लोक, निन्दा, संयम की रक्षा एवं प्राणी दया हेतु अन्तराय करते हैं।

प्रश्न 105 . एषणा समिति क्यों आवश्यक हैं ?

उत्तर . आहार से विचार, विचार से आचार उत्पन्न होते हैं। अतः महल की मजबूती के लिये नींव की मजबूती परम आवश्यक है। अतः आहार की शुद्धि से ही जीव का सम्यक् निर्वाण और मन की पवित्रता होती है। अतः मोक्षपुरी की यात्रा हेतु एषणा समिति परम आवश्यक है।

आदान निक्षेपण समिति

76

जो भी वस्तु हाथ में लेवें, पिच्छी से मार्जन करें।
संयम की रक्षा करें, और पुण्य का उपार्जन करें।।
अप्रत्यवेक्षित अनाभोग, और सहसा आदि दोष तजें।
दुर्दष्ट आदि चतुर्दोष तज, आदान निक्षेपण समिति भजें।।76।।

अर्थ

दिगम्बर मुनिराज जो भी वस्तु हाथ में लेते हैं या रखते हैं उसे पहले पिच्छी से परिमार्जित कर लेते हैं और अप्रत्यवेक्षित अनाभोग सहसा और दुर्दष्ट ये चार दोषों का त्याग कर देते हैं और संयम की रक्षा करके पुण्य का उपार्जन करते हैं।

प्रश्न 1 . आदान निक्षेपण किसे कहते हैं ?

उत्तर . ज्ञान, संयम, शौच के उपकरण को एवं अन्य किसी भी वस्तु को प्रयत्नपूर्वक देखकर पिच्छी से परिमार्जित कर ग्रहण करना व रखना "**आदान निक्षेपण**" समिति है।

प्रश्न 2 . मुनिराज पिच्छी के अलावा अन्य वस्त्रादि से परिमार्जित कर वस्तु को ग्रहण नहीं कर सकते हैं ?

उत्तर . नहीं ! मुनिराज के समस्त वस्त्रादि परिग्रह का त्याग होता है। अतः परिमार्जन हेतु अन्य वस्त्रादि से परिमार्जित कर वस्तु नहीं कर सकते।

प्रश्न 3 . पिच्छी किसका प्रतीक है ?

उत्तर . पिच्छी संयम का प्रतीक है।

प्रश्न 4 . मयूर पंख की पिच्छी के अलावा क्या अन्य पक्षी के पंख की पिच्छी को ग्रहण नहीं कर सकते ?

उत्तर . कदाचित् मयूर पंख की पिच्छी के अलावा अन्य गिद्धि आदि के पंखों की पिच्छी को ग्रहण कर सकते हैं। (कुन्दकुन्दाचार्य, उमास्वामी आचार्य ने गिद्ध पंख की पिच्छी ग्रहण की थी।)

प्रश्न 5 . आदान निक्षेपण समिति का पालन करने वाले कितने दोषों का त्याग करते हैं ?

उत्तर . आदान निक्षेपण समिति का पालन करने वाले **चार** दोषों का त्यग करते हैं।

1. अप्रत्यवेक्षित दोष
2. अनाभोग दोष
3. सहसा दोष
4. दुर्दष्ट दोष।

प्रश्न 6 . अप्रत्यवेक्षित दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . बिना देखे किसी वस्तु को उठाना अथवा रखकर भूल जाना एवं कई दिनों बाद उसका अवलोकन करना "**अप्रत्यवेक्षित दोष**" है।

प्रश्न 7 . अनाभोग दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . किसी भी वस्तु को योग्य स्थान में न रखकर यहॉ–वहाँ रख देना "**अनाभोग दोष**" है।

प्रश्न 8 . सहसा दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . इधर–उधर मन लगाकर किसी भी वस्तु को सहसा उठा लेना या रख देना "**सहसा दोष**" है।

प्रश्न 9 . दुर्दष्ट (दुष्प्रमार्जित) दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . पिच्छिका से ठीक–ठीक वस्तु को परिमार्जित न करके आलस्य से कार्य करना "**दुर्दष्ट दोष**" है।

प्रश्न 10 . इन चार दोषों को छोड़ने से क्या होता है ?

उत्तर . इन चारों को छोडने से संयम की रक्षा होती है और पुण्य का आश्रव होता है और आदान निक्षेपण समिति का निर्दोष पालन होता है।

गंगा पापं शशी तापं दैन्यं कल्प तरूस्तथा।
पापं तापं च दैन्यं च हन्ति साधु समागमः।।

अर्थ– गंगा पाप को, चन्द्रमा संताप को, और कल्प वृक्ष दीनता को नष्ट करता है परन्तु साधु समागम पाप, ताप, संताप और दीनता सभी को नष्ट करता है।

प्रतिष्ठापन समिति

जीव जन्तु से रहित स्थान, पर साधु मल मुत्रादि करें।
पाप-पुण्य से मुक्ति हेतु, समिति प्रतिष्ठापन धरें।।
प्रयत्नपूर्वक समिति पाले, ऋषि-सिद्धि प्राप्त करें।
परिणामों की शुद्धि कर वे, जगत्पूज्य श्री आप्त बनें।।77।।

अर्थ

दिगम्बर मुनिराज पाप और पुण्य से मुक्ति प्राप्त करने हेतु प्रतिष्ठापन समिति का पालन करते हैं अर्थात् जीव–जन्तु से रहित स्थान पर मल–मूत्र, थूक आदि का विसर्जन करते हैं। जो साधु प्रयत्नपूर्वक समिति का पालन करते हैं। वे ऋद्धि–सिद्धि प्राप्त करते हैं और अपने परिणामों की शुद्धि करके जगत्पूज्य परमात्म पद को प्राप्त करते हैं।

प्रश्न 1 . प्रतिष्ठापन समिति किसे कहते हैं ?

उत्तर . जीव जन्तु से रहित स्थान में मल–मूत्र आदि का विसर्जन करना "**प्रतिष्ठापन समिति**" है।

प्रश्न 2 . जीव-जन्तु से रहित प्रदेश कौन से हैं ?

उत्तर . हल से जोता प्रदेश, अग्नि से दग्ध प्रदेश, बंजर स्थान, विरोध रहित स्थान, मैदान आदि प्रवेश जीव–जन्तु से रहित प्रदेश हैं।

प्रश्न 3 . समिति का पालन क्यों करना चाहिये ?

उत्तर . पुण्य–पाप से निवृत्त हेतु समिति का पालन करना चाहिए।

प्रश्न 4 . इच्छापूर्वक समिति पालन का क्या फल है ?

उत्तर . इच्छापूर्वक समिति पालन करने से साधक ऋद्धि–सिद्धि प्राप्त करता है और कालान्तर में परमात्म पद को प्राप्त करता है।

जीवन के हरेक मोड़ पर शत्रु खड़े हजार।
इनसे बचना सीख ले मिले प्रभु का प्यार।।

काल

78

वस्तु में अरूँ क्षेत्रों में जो, परिवर्तन ही कराता है।
उसी समय का काल नाम, यह जिन आगम बतलाता है।।
आयु बल तन ऊँचाई तो, उत्सर्पिणी में बढ़ती है।
अवसर्पिणी में धीरे-धीरे, क्रम से सबकी घटती है।।78।।

79

अवसर्पिणी अरू उत्सर्पिणी के, षट् सुखमादिक भेद कहो।
छः चऊ दो ऊँचाई तन की, धनुष सहस से नापो अहो।।
दुखमा सुखमा नाम है प्यारा, मुक्ति का मारग खुलता।
पंचम छट्टम में क्रम से तो, दुक्ख सदा बढ़ता रहता।।79।।

अर्थ

वस्तु मे और क्षेत्रों में जो परिवर्तन कराता है उस समय को जिन आगम में काल कहा गया है। यह काल मूल मे दो प्रकार का होता है – उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी। उत्सर्पिणी काल मे आयु, बल व शरीर की ऊँचाई बढ़ती है तथा अवसर्पिणी में सभी चीजे क्रम से हास को प्राप्त होती हैं। इन कालो के छः उत्तर भेद हैं। प्रथम, द्वितीय, तृतीय काल में छः, चार और दो हजार धनुष शरीर की ऊँचाई होती है। दुखमा सुखमा नाम के चतुर्थ काल में मुक्ति का मार्ग खुलता है तथा पाँचवें और छठवें काल में निरन्तर दुःख की वृद्धि होती रहती है।

प्रश्न 1 . काल किसे कहते हैं ?

उत्तर . वस्तु एवं क्षेत्रो में परिवर्तन बताने वाले समय को "**काल**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . काल के कितने भेद हैं ?

उत्तर . काल के **दो** भेद हैं –

1. अवसर्पिणी 2. उत्सर्पिणी

प्रश्न 3 . अवसर्पिणी काल किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस काल में मनुष्य एवं तिर्यञ्चों की आयु, शरीर की ऊँचाई, वैभव सुख आदि घटते हैं उसे "**अवसर्पिणी काल**" कहते हैं।

प्रश्न 4 . उत्सर्पिणी काल किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस काल में मनुष्य एवं तिर्यञ्चों की आयु, शरीर की ऊँचाई, वैभव सुख आदि बढते रहते हैं उसे "**उत्सर्पिणी काल**" कहते हैं।

प्रश्न 5 . अवसर्पिणी काल के कितने भेद हैं ?

उत्तर . अवसर्पिणी के **छः** भेद हैं –

1. सुखमा–सुखमा 2. सुखमा 3. सुखमा–दुखमा
4. दुखमा–सुखमा 5. दुखमा 6. दुखमा–दुखमा।

प्रश्न 6 . सुखमा-सुखमा काल किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस काल में इन्द्रिय सुखों की बहुलता हो तथा शरीर की उत्कृष्ट ऊँचाई 6000 धनुष की हो उसे "**सुखमा-सुखमा**" कहते हैं।

प्रश्न 7 . एक धनुष कितना बड़ा होता हैं ?

उत्तर . एक धनुष "**साढ़े तीन हाथ**" का होता है।

प्रश्न 8 . सुखमा काल किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस काल में इन्द्रिय सुख हो तथा शरीर की ऊँचाई 4000 धनुष ही हो उसे "**सुखमा काल**" कहते हैं।

प्रश्न 9 . सुखमा-दुखमा काल किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस काल में सुख अधिक, दुख आंशिक प्राप्त हो एवं शरीर की उत्कृष्ट ऊँचाई 2000 धनुष की हो तो "**सुखमा-दुखमा**" 0काल कहते हैं।

प्रश्न 10 . प्रथम, द्वितीय, तृतीय काल की भूमि का क्या नाम है ?

उत्तर . प्रथम, द्वितीय, तृतीय काल की भूमि का नाम "**भोग भूमि**" है।

प्रश्न 11 . भोग भूमि की क्या विशेषता है ?

उत्तर . भोग भूमि में भोग की ही प्रधानता होती है, संयमात्मक धर्म का अभाव रहता है। स्त्री और पुरूष एक साथ जन्म लेते हैं और एक साथ मरण को प्राप्त हो जाते हैं, इन्हें युगलिया कहते हैं। ये 49 दिन में युवास्था को प्राप्त हो जाते हैं। भोग भूमि में कल्पवृक्ष के माध्यम से भोजन, वस्त्र, बर्तन, आभूषण आदि

सभी इच्छित वस्तुएँ प्राप्त होती हैं भोग भूमियाँ जीव नियम से देवगति के पात्र होते हैं।

प्रश्न 12 . सुखमा-दुखमा नामक तीसरे काल की क्या विशेषता है ?

उत्तर . सुखमा–दुखमा नामक तीसरे काल में कुलकरों की उत्पत्ति होती है एवं कल्पवृक्ष (मनवांछित फल देने वाला वृक्ष) का लोप होने लगता है एवं सूर्य, चन्द्रमा आदि के दर्शन होने लगते हैं।

प्रश्न 13 . तृतीय काल में उत्पन्न होने वाले कुलकर क्या करते हैं ?

उत्तर . तृतीय काल मे उत्पन्न होने वाले कुलकर भय दूर करते हैं एवं जीवन जीने की कला सिखाते हैं।

प्रश्न 14 . कुलकर कितने होते हैं एवं अन्तिम कुलकर कौन थे ?

उत्तर . कुलकर 14 होते हैं, अन्तिम कुल प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ के पिता "**नाभिराय**" थे।

प्रश्न 15 . दुखमा-सुखमा (चतुर्थ काल) किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस काल में दुख अधिक सुख कम प्राप्त होता है उसे दुखमा–सुखमा कहते हैं।

प्रश्न 16 . दुखमा-सुखमा काल की क्या विशेषता है ?

उत्तर . दुखमा–सुखमा काल में 63 शलाका के पुरूषों का जन्म होता है एवं धर्म का, मुनि मार्ग का एवं मोक्ष जाने का क्रम प्रारम्भ होता है।

प्रश्न 17 . तिरेसठ शलाका के पुरूष कौन हैं ?

उत्तर . 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती (भरत आदि), 9 नारायण (लक्ष्मण आदि), 9 प्रतिनारायण (रावण आदि), 9 बलभ्रद्र (राम आदि) ये तिरेसठ शलाका महापुरूष हैं।

प्रश्न 18 . चतुर्थ काल में कब-कब धर्म का अभाव रहा ?

उत्तर . चतुर्थ काल में सुविधि नाथ और धर्मनाथ के बीच के तीर्थंकरों के मोक्ष जाने के बाद धर्म का अभाव रहा।

प्रश्न 19 . इन सात तीर्थंकरों के समय में धर्म का अभाव क्यों हुआ ?

उत्तर . इन सात तीर्थंकरों के समय में मुनि एवं धर्मात्माओं के अभाव में धर्म का अभाव हुआ।

प्रश्न 20 . चतुर्थ काल में मनुष्य की आयु एवं ऊँचाई कितनी होती है ?

उत्तर . चतुर्थ काल में मनुष्य की आयु उत्कृष्टतः 1 पूर्व कोटि एवं ऊँचाई 525 धनुष की होती है।

प्रश्न 21 . दुखमा काल किसे कहते हैं एवं यह कितने वर्ष का होता है ?

उत्तर . जिस काल में दुख अधिक एवं सुख आंशिक हो उसे **"दुखमा"** काल कहते हैं। यह काल 21000 वर्ष का होता है।

प्रश्न 22 . दुखमा नामक पंचम काल का प्रारम्भ कब हुआ ?

उत्तर . दुखमा नामक पंचम काल का प्रारम्भ महावीर के मोक्ष जाने के बाद 3 वर्ष 7 माह 15 दिन बाद हुआ।

प्रश्न 23 . दुखमा नामक पंचम काल की क्या विशेषता है ?

उत्तर . दुखमा नामक पंचम काल से जीव का मोक्ष गमन रूक जाता है। धर्म की हानि होने लगती है। अंग एवं पूर्व का ज्ञान क्रमशः क्षीण होने लगता है, शासक धर्म व नीति से शून्य होते हैं। उच्च कुल वाले पर नीच कुली शासन करने लगते हैं। सच्चे धर्म के नाम पर विवाद होता है।

प्रश्न 24 . पंचम काल के मनुष्यों की आयु व ऊँचाई कितनी होती है ?

उत्तर . पंचम काल के मनुष्य की उत्कृष्ट आयु 150 या 200 वर्ष एवं ऊँचाई सात हाथ की होती है।

प्रश्न 25 . दुखमा-दुखमा किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस काल में दुःख ही दुःख होता है उसे **"दुखमा-दुखमा"** नामक छटवाँ काल कहते हैं।

प्रश्न 26 . दुखमा-दुखमा नामक छठवाँ काल प्रारम्भ होने के पूर्व क्या घटना घटती है ?

उत्तर . छठवाँ काल प्रारम्भ होने के पूर्व जलमन्थन नाम का कल्की (राजा) होता है। वह राजा अपने मंत्री से पूछता है कि हमारे नगर में सभी लोग **"कर"** (टैक्स) चुकाते हैं या नहीं ? तब मंत्री कहता है – हे स्वामिन ! एक अहिंसा व्रत के धारी नग्न दिगम्बर मुनिराज जो हाथों में खडे होकर भोजन करते हैं, वे आपके वश में नहीं हैं वे **"कर"** (टैक्स) नहीं चुकाते। तब कल्की (राजा) क्रोधित होकर कहता है कि उस अहिंसा व्रतधारी पापी मुनि से भी **"कर"** के रूप में भोजन के समय

वे जो कुछ भी ले उसका प्रथम ग्रास ग्रहण करो। जब मुनिराज से आहार के समय प्रथम ग्रास कर (टैक्स) के रूप में माँगा जाता है तब वे अन्तराय समझकर वापस मन्दिर में आ जाते हैं और उसी क्षण उन्हें **''अवधि ज्ञान''** हो जाता है। मुनिराज अपने समस्त संघ को बुलाकर कहते हैं, हे भव्यो ! अब पंचम काल का अंत आ चुका है, अब हमारी तुम्हारी आयु सिर्फ **'तीन दिन'** की शेष है और वे उसी क्षण समाधि को ग्रहण कर मरण को प्राप्त कर स्वर्ग में उत्पन्न होत हैं। उसी समय दोपहर को **''असुर कुमार''** जाति का उत्तम देव क्रुद्ध होकर उस कल्की को मार डालता है इस प्रकार मुनियों के अभाव में सूर्यास्त हो जाता है एवं अग्नि नष्ट हो जाती है। इसके पश्चात् '3 वर्ष 8 माह 15 दिन' बाद दुखमा–दुखमा नामक छठवाँ काल प्रारम्भ होता है।

प्रश्न 27 . पंचम काल के अंत में होने वाले मुनि आदि का क्या नाम होगा ?

उत्तर . पंचम काल के अन्त में होने वाले मुनि का नाम **''वीरागंज''**, आर्यिका का नाम **''सर्वश्री''** श्रावक का नाम **'अग्निल'** एव श्राविका का नाम **'पंगुश्री'** होगा।

प्रश्न 28 . क्या पंचम काल के अंत तक सच्चे मुनि होंगे ?

उत्तर . हाँ, पंचम काल के अंत तक सच्चे **''वीतरागी सम्यक् दृष्टि मुनिराज''** होंगे।

प्रश्न 29 . पंचम काल में कितने सयम में कितने कल्की (राजा) होते हैं ?

उत्तर . पंचम काल में 500 वर्ष में एक उपकल्की एवं 1000 वर्ष में एक कल्की राजा होता है।

प्रश्न 30 . पहला कल्की कब हुआ ?

उत्तर . पहला कल्की भगवान महावीर के मोक्ष जाने के 461 वर्ष बाद **''शक''** नामक कल्की हुआ।

प्रश्न 31 . छठे काल के मनुष्य की आयु एवं ऊँचाई कितनी होती है ?

उत्तर . छठे काल के मनुष्यों की आयु 20 वर्ष एवं ऊँचाई उत्कृष्ट साढ़े तीन हाथ एवं कम से कम एक हाथ होती है।

प्रश्न 32 . छठे काल के मनुष्यों की क्या विशेषतायें हैं ?

उत्तर . छठे काल के लोग अविनीत, दुर्बुद्धि, ईर्ष्यालु, कलह प्रिय क्रोधी एवं क्रूर होते हैं। ये नग्न होते हैं, मकान आदि से रहित होते हैं तथा कंदमूल, मछली एवं दूसरे जीवों को मारकर उन्हें खाकर अपना पेट भरते हैं।

प्रश्न 33 . छठवाँ काल प्रारम्भ होने के कितने दिन पूर्व सभी सामग्री का लोप हो जाता है ?

उत्तर . छठवॉ काल प्रारम्भ होने के 49 दिन पूर्व सभी सामग्री का लोप होना प्रारम्भ हो जाता है अर्थात् प्रथम सात दिन तक भीषण तूफान चलता है, जिस कारण वृक्षों एवं पर्वतों के टूटने से मनुष्य एवं तिर्यञ्चों को अनेक कष्ट होता है और वे अपनी सुरक्षा के लिए भागते हैं।

प्रश्न 34 . क्या सात दिन में ही सारे मनुष्य एवं तिर्यञ्च समाप्त हो जाते हैं ?

उत्तर . नही ! देव व विद्याधर करूणा के वशीभूत होकर सम्पूर्ण जीवों के 72 जोडों को विजयार्ध पर्वत की गुफा में सुरक्षित स्थान में रख देते हैं।

प्रश्न 35 . पुनः सात दिन पश्चात् क्या होता है ?

उत्तर . पुनः सात दिन शीतल वायु, सात दिन खारे जल की, सात दिन विष की, सात दिन धुएँ की, सात दिन धूल की एवं वज्र पत्थरों की एवं सरत दिन अग्नि की बरसात होती है और सारी पृथ्वी समाप्त हो जाती है। इसके बाद दुखमा–दुखमा नामक छठवॉ काल प्रवेश करता है।

प्रश्न 36 . एक षट्काल कितने वर्ष का होता है ?

उत्तर . एक षट् काल 10 कोडा कोड़ी सागर का होता है अर्थात् प्रथम काल 4 कोड़ा कोड़ी सागर, द्वितीय काल तीन कोड़ा कोड़ी सागर, तृतीय काल दो कोड़ा कोड़ी सागर, चतुर्थ काल 42 हजार वर्ष कम एक कोड़ा कोड़ी सागर, पंचम काल 21 हजार वर्ष और छठवां काल भी 21 हजार वर्ष का होता है।

प्रश्न 37 . वर्तमान षट्काल कौन सा काल है ?

उत्तर . वर्तमान षट्काल "**हुण्डावसर्पिणी**" काल है।

प्रश्न 38 . हुण्डावसर्पिणी काल किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस काल में सैद्धान्तिक विकृतियाँ एवं अनहोनी घटनाएँ घटित हो जाती हैं उसे "**हुण्डावसर्पिणी काल**" कहते हैं।

प्रश्न 39 . हुण्डाविसर्पिणी काल में कौन-कौन सी अनहोनी घटनाएँ घटित हुई ?

उत्तर . हुण्डाविसर्पिणी काल में निम्नलिखित अनहोनी घटनाएँ घटित हुई –

1. तृतीय काल में तीर्थंकर का जन्म होना एवं मोक्ष जाना।
2. तीर्थंकर आदिनाथ को ब्रह्मी एवं सुन्दरी नाम की पुत्री का जन्म होना।
3. तीर्थंकर द्वारा गृहस्थ अवस्था में उपदेश देना।
4. चक्रवर्ती (भरत) का मान भंग होना।
5. तीर्थंकर द्वारा णमोकार मंत्र का उच्चारण करना।
6. चतुर्थ काल में धर्म का अभाव होना।
7. तीर्थंकरों का अयोध्या के अलावा अन्य स्थानों पर जन्म लेना एवं शिखर जी के अलावा अन्य स्थानों से मोक्ष जाना।
8. तीर्थंकरों पर उपसर्ग होना।
9. ग्यारह रूद्र और कलह प्रिय नौ नारद का होना।
10. पंचम काल में जम्बू स्वामी श्रीधर आदि का मोक्ष जाना।

प्रश्न 40 . चतुर्थ पंचम एवं षष्टम काल की भूमि का क्या नाम है ?

उत्तर . चतुर्थ पंचम एंव षष्टम काल की भूमि का नाम "**कर्म भूमि**" है।

प्रश्न 41 . कर्म भूमि की क्या विशेषता है ?

उत्तर . कर्म भूमि में कल्पवृक्ष आदि नहीं होते, जीव को जीविका चलाने असि, मसि कृषि वाणिज्य शिल्प कला इन षट् कर्मों का सहारा लेना पड़ता है, स्त्री पुरूष युगालिया नहीं होते ? होते भी है तो वे भाई बहन के रूप में ही रहते हैं। कर्म भूमि

में संयम धारण करने की पूर्ण स्वतन्त्रता है। इस भूमि से मरणोपरान्त चारों गति में जन्म लिया जा सकता है और मोक्ष भी जाया जा सकता है। कर्म भूमि में अनेक प्रकार के अधर्मों की उत्पत्ति हो जाती है।

प्रश्न 42 . छठवाँ काल समाप्ति के पश्चात् कौन सा काल आता है ?

उत्तर . छठवाँ काल समाप्ति के पश्चात् पुनः **"उत्सर्पिणी काल का छठवाँ काल"** प्रारम्भ होता है।

प्रश्न 43 . पुनः छठवाँ काल प्रवेश के उपरान्त क्या होता है ?

उत्तर . पुनः छठवॉ काल प्रवेश के उपरान्त सात दिन तक जल की वर्षा होती है जिससे सम्पूर्ण पृथ्वी शीतल हो जाती है। सात दिन तक क्षीर जल की वर्षा होती है जिससे पृथ्वी कान्ति युक्त हो जाती है। सात दिन अमृत की वर्षा होती है जिससे पृथ्वी में लता गुल्म उगने लगते हैं। सात दिन तक दिव्य रस की वर्षा होती है जिससे लता एवं गुल्म रस वाले स्वादिष्ट हो जाते हैं और पृथ्वी सुगन्धमयी हो जाती है उसी समय मनुष्य एवं तिर्यञ्च गुफा से बाहर निकल कर आ जाते हैं।

प्रश्न 44 . इन मनुष्य एवं तिर्यञ्चों के रहन-सहन तथा आयु आदि का संक्षिप्त विवरण दीजिए ?

उत्तर . वे मनुष्य एवं तिर्यञ्च नग्न रहते हैं। फल, पत्ते आदि खाकर उदर पूर्ति करते हैं। इनकी आयु 15.16 वर्ष की होती है एवं ऊँचाई एक हाथ की होती है। जैसे–जैसे समय बीतता जाता है वैसे–वैसे उनकी आयु, बुद्धि, शक्ति, ऊँचाई बढ़ती जाती है इस प्रकार 21 हजार वर्ष तक यह क्रम चलता रहता है। पुनः पंचम काल प्रारम्भ होता है।

प्रश्न 45 . काल ज्ञान करने से किस बात का ज्ञान होता है ?

उत्तर . काल ज्ञान करने से सृष्टि के क्रम का ज्ञान होता है। सृष्टि को किसी परमात्मा ने नहीं बनाया। इस सृष्टि का न प्रारम्भ है न अन्त। यह अनादि काल से चला आ रहा है, जीव स्वयं अपना कर्ता–धर्ता है इस बात का ज्ञान होता है।

मूल द्रव्य

80

सकल लोक की सकल, वस्तुएँ पर्यायें बदलती हैं।
मूल द्रव्य तो दो ही जग में, माँ जिनवाणी कहती है।।
सिद्ध सम यह जीव जगत में, पर कर्मों से ढका हुआ।
नैक रूप में जो दिखता, व पुद्गल जड़ है छिपा हुआ।।80।।

अर्थ

माँ जिनवाणी कहती हैं कि सारे संसार की समस्त वस्तुएँ पर्याये बदलती हैं। इस संसार में दो ही मूल द्रव्य हैं एक जीव द्रव्य दूसरा अजीव द्रव्य। सिद्ध के समान यह जीव है, पर वर्तमान में कर्मों से आच्छादित है और जो अनेक रूपों में दिखाई देता है और नही भी दिखाई देता है, वह पुद्गल है, जड है, अजीव है।

प्रश्न 1 . संसार की समस्त वस्तुएँ कैसी हैं ?

उत्तर . ससार की समस्त वस्तुएँ पर्यायें बदलने वाली हैं।

प्रश्न 2 . पर्याय किसे कहते हैं ?

उत्तर . गुणों के विकार को "**पर्याय**" कहते हैं।

प्रश्न 3 . गुण किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो द्रव्य के पूरे हिस्से व उनकी सब अवस्थाओं में रहता है, उसे "**गुण**" कहते हैं।

प्रश्न 4 . गुण के कितने भेद हैं ?

उत्तर . गुण के **दो** भेद हैं –

1. विशेष गुण 2. सामान्य गुण

प्रश्न 5 . विशेष गुण किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो गुण सब द्रव्यों में नहीं पाया जाता है, उसे "**विशेष गुण**" कहते हैं।

प्रश्न 6 . सामान्य गुण किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो गुण सब द्रव्यों में पाया जाता है, उसे "**सामान्य गुण**" कहते हैं।

प्रश्न 7 . सामान्य गुण के कितने भेद हैं ?

उत्तर . सामान्य गुण के अनेक भेद हैं। पर **छः** भेद मुख्य हैं –

1. आस्तित्व 2. वस्तुत्व 3. दव्यत्व
4. प्रमेयत्व 5. अगुरूलघुत्व 6. प्रदेशत्व

प्रश्न 8 . आस्तित्व गुण किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस शक्ति के निमित्त से द्रव्य का कभी नाश नहीं होता उसे "**अस्तित्व गुण**" कहते हैं।

प्रश्न 9 . वस्तुत्व गुण किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस शक्ति के निमित्त से द्रव्य में अर्थ क्रिया होती है उसे "**वस्तुत्व गुण**" कहते हैं।
जैसे - भोजन की अर्थ क्रिया भूख मिटाना।

प्रश्न 10 . द्रव्यत्व गुण किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस शक्ति के निमित्त से द्रव्य सदा एक सा नहीं रहता, उसकी पर्याये हमेशा बदलती रहती हैं उसे "**द्रव्यत्व गुण**" कहते हैं।
जैसे - दूध–दही, दही–छाछ आदि।

प्रश्न 11 . प्रमेयत्व गुण किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस शक्ति के निमित्त से द्रव्य किसी न किसी के ज्ञान का विषय होता है, उसे "**प्रमेयत्व गुण**" कहते हैं।

प्रश्न 12 . अगुरूलघुत्व गुण किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस शक्ति के निमित्त से एक द्रव्य दूसरे द्रव्य रूप नहीं परिणमता, एक गुण दूसरे गुण रूप नहीं परिणमता तथा एक द्रव्य के अनन्त गुण बिखरकर जुदा–जुदा नहीं होते, उसे "**अगुरूलघुत्व गुण**" कहते हैं।

प्रश्न 13 . प्रदेशत्व गुण किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस शक्ति के निमित्त से द्रव्य का कुछ न कुछ आकार होता है, उसे "**प्रदेशत्व गुण**" कहते हैं।

प्रश्न 14 . पर्याय के कितने भेद हैं ?

उत्तर . पर्याय के **दो** भेद हैं –

1. व्यञ्जन पर्याय 2. अर्थ पर्याय।

प्रश्न 15 . व्यञ्जन पर्याय किसे कहते हैं ?

उत्तर . प्रदेशत्व गुण के परिणमन को "**व्यञ्जन पर्याय**" कहते हैं।

प्रश्न 16 . व्यञ्जन पर्याय के कितने भेद हैं ?

उत्तर . व्यञ्जन पर्याय के **दो** भेद हैं –

1. स्वभाव व्यञ्जन पर्याय   2. विभाव व्यञ्जन पर्याय।

प्रश्न 9 . वस्तुत्व गुण किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस शक्ति के निमित्त से द्रव्य में अर्थ क्रिया होती है उसे "**वस्तुत्व गुण**" कहते हैं।

जैसे - भोजन की अर्थ क्रिया भूख मिटाना।

प्रश्न 10 . द्रव्यत्व गुण किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस शक्ति के निमित्त से द्रव्य सदा एक सा नहीं रहता, उसकी पर्यायें हमेशा बदलती रहती हैं उसे "द्रव्यत्व गुण" कहते हैं।

जैसे - दूध–दही, दही–छाछ आदि।

प्रश्न 11 . प्रमेयत्व गुण किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस शक्ति के निमित्त से द्रव्य किसी न किसी के ज्ञान का विषय होता है, उसे "**प्रमेयत्व गुण**" कहते हैं।

प्रश्न 12 . अगुरूलघुत्व गुण किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस शक्ति के निमित्त से एक द्रव्य रूप नहीं परिणमता, एक गुण दूसरे गुण रूप नहीं परिणमता तथा एक द्रव्य के अनन्त गुण बिखरकर जुदा–जुदा नहीं होते, उसे "**अगुरूलघुतव गुण**" कहते हैं।

प्रश्न 13 . प्रदेशत्व गुण किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस शक्ति के निमित्त से द्रव्य का कुछ न कुछ आकार होता है, उसे "**प्रदेशत्व गुण**" कहते हैं।

प्रश्न 14 . पर्याय के कितने भेद हैं ?

उत्तर . पर्याय के **दो** भेद हैं –

1. व्यञ्जन पर्याय   2. अर्थ पर्याय।

प्रश्न 15 . व्यञ्जन पर्याय किसे कहते हैं ?

उत्तर . प्रदेशत्व गुण के परिणमन को "**व्यञ्जन पर्याय**" कहते हैं।

प्रश्न 16 . व्यञ्जन पर्याय के कितने भेद हैं ?

उत्तर . व्यञ्जन पर्याय के **दो** भेद हैं –
1. स्वभाव व्यञ्जन पर्याय 2. विभाव व्यञ्जन पर्याय।

प्रश्न 17 . स्वभाव व्यञ्जन पर्याय किसे कहते हैं ?

उत्तर . पर द्रव्य के सम्बन्ध से रहित जो व्जञ्जन पर्याय होती है, उसे "**स्वभाव व्यञ्जन पर्याय**" कहते हैं।
जैसे : मुक्त जीव अन्तिम शरीर से कुछ कम शरीरकार (जीव की सिद्ध पर्याय)

प्रश्न 18 . विभाव व्यञ्जन पर्याय किसे कहते हैं ?

उत्तर . पर के सम्बन्ध से रहित जो व्जञ्जन पर्याय होती है उसे "**विभाव व्यञ्जन**" कहते हैं।
जैसे : जीव की नर नरकादि पर्याय।

प्रश्न 19 . अर्थ पर्याय किसे कहते हैं ?

उत्तर . प्रदेशत्व गुण के अलावा अन्य समस्त गुणों के परिणमन को "**अर्थ पर्याय**" कहते हैं।

प्रश्न 20 . अर्थ पर्याय के कितने भेद हैं ?

उत्तर . अर्थ पर्याय के **दो** भेद हैं –
1. स्वभाव अर्थ पर्याय 2. विभाव अर्थ पर्याय।

प्रश्न 21 . स्वभाव अर्थ पर्याय किसे कहते हैं ?

उत्तर . पर निमित्त के बिना होने वाले अर्थ पर्याय को "**स्वभाव अर्थ पर्याय**" कहते हैं।
जैसे : जीव का अनन्त ज्ञान, दर्शन, सुख आदि।

प्रश्न 22 . विभाव अर्थ पर्याय किसे कहते हैं ?

उत्तर . पर निमित्त की अपेक्षा से होने वाली पर्याय को "**विभाव अर्थ पर्याय**" कहते हैं।
जैसे : जीव के राग–द्वेष, मतिज्ञानादि।

प्रश्न 23 . संसार में मूल द्रव्य कितने हैं ?

उत्तर . संसार में जीव और अजीव ये ही दो मूल द्रव्य हैं।

प्रश्न 24 . जीव द्रव्य कैसा है ?

उत्तर . जीव द्रव्य सिद्ध के समान है पर वर्तमान में कर्मों से आच्छादित है।

प्रश्न 25 . जीव कर्मों से आच्छादित क्यों हुआ ?
उत्तर . जीव राग–द्वेष के कारण कर्मों से आच्छादित हुआ।

प्रश्न 26 . एक जीव कितना बड़ा है ?
उत्तर . एक जीव प्रदेशों की अपेक्षा आकाश के बराबर है। परन्तु संकोच विस्तार के कारण अपने शरीर के बराबर है।

प्रश्न 27 . एक जीव लोकाकाश के बराबर कब होता है ?
उत्तर . एक जीव समुद्धात के समय लोकाकाश के बराबर होता है।

प्रश्न 28 . समुद्धात किसे कहते हैं ?
उत्तर . मूल शरीर को छोड़े बिना आत्मा के प्रदेशों का शरीर से बाहर निकलने को "**समुद्धात**" कहते हैं।

प्रश्न 29 . समुद्धात के कितने भेद हैं ?
उत्तर . समुद्धात के सात भेद हैं –
1. वेदना समुद्धात
2. कषाय समुद्धात
3. विक्रिया समुद्धात
4. मरणान्तिक समुद्धात
5. तेजस समुद्धात
6. आहारक समुद्धात
7. केवली समुद्धात

प्रश्न 30 . वेदना समुद्धात किसे कहते हैं ?
उत्तर . तीव्र वेदना के कारण मूल शरीर के छोड़े बिना आत्मा के प्रदेशों का शरीर के बाहर फैल जाना "**वेदना समुद्धात**" है।

प्रश्न 31 . वेदना समुद्धात की क्या विशेषता है ?
उत्तर . वेदना समुद्धात से निकले आत्मा के प्रदेश यदि किसी औषधि का स्पर्श कर लेते हैं तब शरीर की वेदना शान्त हो जाती है।

प्रश्न 32 . कषाय समुद्धात किसे कहते हैं ?
उत्तर . तीव्र कषाय के वशीभूत होकर मूल शरीर को छोड़े बिना पर घात के लिये आत्मा के प्रदेशों का शरीर से बाहर निकल जाना "**कषाय समुद्धात**" है।

प्रश्न 33 . विक्रिया समुद्धात किसे कहते हैं ?
उत्तर . अन्य शरीर निर्माण हेतु या अंग विस्तार हेतु मूल शरीर को छोड़े बिना आत्मा के प्रदेशों का शरीर से बाहर निकल जाना "**विक्रिया समुद्धात**" है।

प्रश्न 34 . विक्रिया समुद्घात किसके होता है ?

उत्तर . विक्रिया समुद्घात देव, नारकी, विक्रिया, ऋद्धिधारी मुनि, चक्रवर्ती आदि के होता है।

प्रश्न 35 . मारणान्तिक समुद्घात किसे कहते हैं ?

उत्तर . मूल शरीर को छोड़े बिना जीव ने जिस आयु का बन्ध कर लिया है, उस क्षेत्र का स्पर्श करने हेतु आत्मा के प्रदेशों का बाहर निकलना "**मारणान्तिक समुद्घात**" है।

प्रश्न 36 . तेजस समुद्घात किसे कहते हैं ?

उत्तर . दिगम्बर मुनिराज के तीव्र क्रोध या तीव्र दया के वशीभूत होकर बायें और दायें कन्धे से मूल शरीर से सम्बन्ध छोड़े बिना एक हाथ के पुतले के रूप में आत्मा के प्रदेशों का शरीर से बाहर निकलना "**तेजस समुद्घात**" है।

प्रश्न 37 . तेजस समुद्घात के कितपे श्रसेउ हैं ?

उत्तर . तेजस समुद्घात के **दो** भेद हैं –

1. शुभ तेजस समुद्घात 2. अशुभ तेजस समुद्घात

प्रश्न 38 . शुभ तेजस समुद्घात किसे कहते हैं ?

उत्तर . व्याधि, दुर्भिक्ष आदि से पीड़ित जीवों को देखकर दयावशात तेजस ऋद्दिधारी मुनिराज के दाहिने कन्धे से जो एक हाथ का पुतला निकलता है, उसे "**शुभ तेजस समुद्घात**" कहते हैं।

प्रश्न 39 . शुभ तेजस शरीर का वर्ण आकार, गमन शक्ति एवं विशेषता क्या है ?

उत्तर . शुभ तेजस शरीर का वर्ण श्वेत, सौम्य, पुरूषाकार, 12 योजन गमन शक्ति वाला तथा व्याधि, दुर्भिक्ष दूर कर पुनः मूल शरीर में प्रवेश करता है।

प्रश्न 40 . अशुभ तेजस समुद्घात किसे कहते हैं ?

उत्तर . क्रोध के वशीभूत होकर तेजस ऋद्धिधारी मुनिराज के बायें कन्धे से जो पुतला निकलता है उसे "**अशुभ तेजस समुद्घात**" कहते हैं।

प्रश्न 41 . अशुभ तेजस शरीर का वर्ण आकार गमन शक्ति एवं विशेषता क्या है ?

उत्तर . अशुभ तेजस शरीर का वर्ण सिन्दूर की तरह लाल, बिलाव की तरह आकार, 9 योजन चौड़ा व 12 योजन लम्बे स्थान के जीवों को जलाने की गमन शक्ति वाला और आसपास के क्षेत्र को भस्म करके मुनि के शरीर को भस्म करने वाला होता है।

प्रश्न 42 . आहारक समुद्घात किसे कहते हैं ?

उत्तर . छठवें गुणस्थानवर्ती दिगम्बर मुनिराज के किसी तत्व में सन्देह हो जाने पर सन्देह निवृत्ति हेतु या तीर्थ वन्दना हेतु मस्तक से एक हाथ का पुतला निकलता है। उसे **''आहारक समुद्घात''** कहते हैं।

प्रश्न 43 . आहारक शरीर का वर्ण आकार गमन शक्ति व विशेषता क्या है ?

उत्तर . आहारक शरीर का वर्ण अत्यन्त श्वेत, पुरूषाकार केवली भगवान के समवशरण या समस्त तीर्थ क्षेत्र की गमन शक्ति वाला व सर्वज्ञ देव के दर्शन कर या तीर्थ जिनालय की वन्दना कर मूल शरीर में प्रवेश कर जाता है। इससे शंका समाधान व तीर्थ की वन्दना की भावना पूर्ण हो जाती है।

प्रश्न 44 . केवली समुद्घात किसे कहते हैं ?

उत्तर . आयु कर्म की स्थिति छः माह या अन्तर्मुहूर्त शेष रहने पर तथा वेदनीय, नाम, गोत्र कर्म की स्थिति छः माह या अन्तर्मुहूर्त से अधिक शेष रहने पर जो संयोग केवली के आत्मा के प्रदेश सर्व लोक में फैलते हैं उसे **''केवली समुद्घात''** कहते हैं।

प्रश्न 45 . आत्मा के प्रदेश सर्वलोक में कैसे फैलते हैं ?

उत्तर . आत्मा के प्रदेश सर्वलोक में दण्ड, कपाट, प्रत्तर, लोकपूरण के रूप में फैलते हैं।

प्रश्न 46 . दण्ड, कपाट, प्रतर, लोकपूरण समुद्घात किस तरह होता है ?

उत्तर . मस्त्क से डण्डे के समान आत्मा के प्रदेशों का निकलला

"दण्ड समुद्धात" है। दण्ड समुद्घात के बाद आत्मा के प्रदेशों का अगल–बगल फैलना **"कपाट समुद्धात"** है। मथानी के समान चारों ओर आत्मा के प्रदेशों का फैलना **"प्रतर समुद्धात"** फिर समस्त लोक में फैल जाना **"लोकपूरण समुद्धात"** है।

प्रश्न 47 . किस समुद्धात में कितना समय लगतो है ?

उत्तर . केवली समुद्धात में आठ समय लगता है। शेष समुद्धात में अन्तर्मुहूर्त का समय लगता है।

प्रश्न 48 . केवली समुद्धात में आठ समय कैसे लगता है ?

उत्तर . केवली समुद्धात में दण्ड में एक समय, कपाट में एक समय, प्रतर में एक व लोक पूरण में एक समय, फिर प्रतर में एक समय, कपाट में एक दण्ड में एक व प्रवेश में एक समय, इस प्रकार आठ समय लगता है।

प्रश्न 49 . केवली समुद्धात करने से क्या होता है ?

उत्तर . केवली समुद्धात करने से अघातिया कर्मों की स्थिति आयु कर्म के बराबर हो जाती है।

प्रश्न 50 . जीव का आकार कितना होता है ?

उत्तर . जीव का सूक्ष्म आकार **"ज्ञान गोचर"** व स्थूल आकार **"लोकाकाश"** के बराबर है।

प्रश्न 51 . जीव का आकार शरीर रूप में कितना है ?

उत्तर . जीव का आकार शरीर रूप में जन्म के तीसरे समय का आकार सूक्ष्म निगोदिया जीव के रूप में व उत्कृष्ट 1000 योजन प्रमाण महामत्स्य के रूप में है।

प्रश्न 52 . जन्म के तीसरे समय का आकार अत्यन्त सूक्ष्म क्यों कहा ?

उत्तर . क्योंकि निगोदिया जीव प्रथम समय में आयताकार (चोकोर) होते हैं द्वितीय समय संकुचित होते हैं, तृतीय समय में अत्यन्त सूक्ष्म वर्तुलाकार (गोल) हो जाते हैं वही उनकी सूक्ष्म आकृति है।

प्रश्न 53 . जीव द्रव्य का अन्तिम आकार कितना होता है ?

उत्तर . मोक्ष जाने के पहले शरीर का जो आकार होता है उससे कुछ कम जीव द्रव्य का अन्तिम आकार है।

प्रश्न 54 . अजीव किसे कहते है ?

उत्तर . जो अनेक रूपों में दिखाई पड़ रहा है तथा अव्यक्त है वह सब अजीव द्रव्य है।

प्रश्न 55 . अव्यक्त अजीव द्रव्य कौन-कौन से हैं ?

उत्तर . धर्म, अधर्म, आकाश, काल द्रव्य "**अव्यक्त अजीव**" द्रव्य हैं।

प्रश्न 56 . व्यक्त अजीव किसे कहते हैं ?

उत्तर . दिखने वाले व पकड़ में आने वाले स्पर्श, रस, गन्ध वर्ण युक्त द्रव्य को "**व्यक्त अजीव**" कहते हैं।

प्रश्न 57 . व्यक्त अजीव कितने रूपों में प्रकट होता है ?

उत्तर . व्यक्त अजीव शब्द बन्ध, सूक्ष्म, स्थूल संस्थान, भेद, तम, छाया आदि रूपों में (पर्यायों में) प्रकट होता है।

प्रश्न 58 . शब्द किसे कहते हैं ?

उत्तर . भाषा वर्गणा के परमाणु का ध्वनि रूप में परिणमन होना "**शब्द**" है।

प्रश्न 59 . शब्द कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर . 1. भाषात्मक 2. अभाषात्मक

प्रश्न 60 . भाषात्मक शब्द किसे कहते हैं ?

उत्तर . त्रस जीवों के वचन को भाषात्मक शब्द कहते हैं।

प्रश्न 61 . भाषात्मक शब्द के कितने भेद हैं ?

उत्तर . भाषात्मक शब्द के **दो** भेद हैं –

1. अक्षरात्मक 2. अनक्षरात्मक

प्रश्न 62 . अक्षरात्मक शब्द किसे कहते हैं ?

उत्तर . हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी, गुजराती, तमिल, मराठी आदि भाषा "**अक्षरात्मक शब्द**" हैं।

प्रश्न 63 . अनक्षरात्मक शब्द किसे कहते हैं ?

उत्तर . दो पुद्गलों के संयोग से या स्वतः जो ध्वनि उत्पन्न होती है उसे "**अनक्षरात्मक शब्द**" कहते हैं।

प्रश्न 64 . बन्ध किसे कहते हैं ?

उत्तर . अनेक पदार्थों से स्वतः या संयोगिक सम्बन्ध को "**बन्ध**" कहते हैं।

प्रश्न 65 . सूक्ष्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . परमाणु या अपेक्षाकृत वस्तु का छोटा होना "**सूक्ष्म**" है।

प्रश्न 66 . स्थूल किसे कहते हैं ?

उत्तर . महास्कन्ध या वस्तु का अपेक्षाकृत बड़ा होना "**स्थूल**" है। जैसे : कंकड़ से मिट्टी, गिट्टी से पत्थर, पत्थर से चट्टान बड़ी है।

प्रश्न 67 . संस्थान किसे कहते हैं ?

उत्तर . गोल, तिकोन, और तुलनात्मक आकृति को "**संस्थान**" कहते हैं।

जैसे : लड्डू गोल, कापी चोकोर या ये बादल रूई के ढेर के समान दिख रहा है इत्यादि।

प्रश्न 68 . भेद किसे कहते हैं ?

उत्तर . चीरने, चूरने, तोड़ने, फोडने से जो वस्तु में पृथकता उत्पन्न होती है उसे "**भेद**" कहते हैं।

जैसे : लकड़ी का बुरादाँ, गेहूँ का आटा, घड़े के टुकड़े आदि।

प्रश्न 69 . तम किसे कहते हैं ?

उत्तर . देखने में बाधा डालने वाले अन्धकार को "**तम**" कहते हैं।

प्रश्न 70 . छाया किसे कहते हैं ?

उत्तर . प्रकाश के आवरण व प्रतिबिम्ब को छाया "**छाया**" कहते हैं।

प्रश्न 71 . आतप किसे कहते हैं ?

उत्तर . सूर्य के उष्ण प्रकाश को "**आतप**" कहते हैं।

प्रश्न 72 . उद्योत किसे कहते हैं ?

उत्तर . चन्द्रमा, मणि आदि के प्रकाश को "**उद्योत**" कहते हैं।

प्रश्न 73 . यह जीव कैसा है ?

उत्तर . यह जीव सिद्ध के समान शुद्ध है पर कर्मों से ढ़का हुआ होने से संसारी है।

प्रश्न 74 . क्या जीव के अलावा और भी कुछ संसार में है ?

उत्तर . हाँ ! अनेक रूप में प्रगट व अप्रगट पुद्‌गल व अजीव द्रव्य संसार में हैं जो संसारी जीव के जीवन चलाने में सहायक हैं।
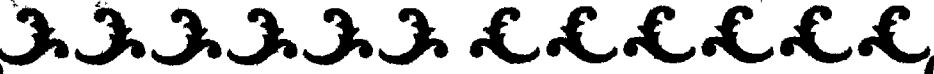
विपदकाल में धैर्य, ऐश्वर्य में विनम्रता, सभा में वचन चातुर्य, संग्राम में पराक्रम बल में क्षमा, उपेक्षा में समता ये गुण महान पुरूषों में स्वभाव से होते हैं।

धार्मिणां देहिनां देवा जायन्ते किङ्करा सदा।
पराङ्‌मुखानृणां नूनं स्वजना अपि पापिनाम्॥

अर्थ– धर्मात्मा जीव के देव भी सदा किंकर रहते हैं और पापी जीव के आत्मीय जन भी पराङ्‌मुख हो जाते हैं।

पाप करना सरल है पाप का फल भोगना कठिन है।
पुण्य करना कठिन है पुण्य का फल भोगना सरल है॥

ध्यान मूलं गुरोमूर्तिः पूजा मूलं गुरोः पदम्।
मंत्रमूलं गुरौर्वाक्य मोक्षमूलं गुरोः कृपा॥

अर्थ– गुरू की मूर्ति ध्यान का मूल है। गुरू के चरण पूजा का मूल है। गुरू के वाक्य मंत्र का मूल है। गुरू की कृपा मोक्ष का मूल है।

द्रव्य

81

षट द्रव्यों से लोक व्यवस्थित, जिन आगम बतलाता है।
जीव सचेतन पाँच अचेतन, द्रव्य यहाँ कहलाता है।।
पुद्गल मूर्तिक पाँच अमूर्तिक, धर्म द्रव्य गति को देता।
अधर्म अगति आकाश जगह दे, काल परिणमन कर देता।।81।।

अर्थ

यह लोक छः द्रव्यों से सुव्यवस्थित है, उन छ. द्रव्यो में जीव द्रव्य चेतन तथा पाँच द्रव्य अचेतन हैं और पुद्गल द्रव्य मूर्तिक तथा पाँच द्रव्य अमूर्तिक हैं। उन पाँच द्रव्यों में धर्म द्रव्य गति में, अधर्म द्रव्य स्थिति में, आकाश द्रव्य अवगाहन में, काल द्रव्य परिणमन मे सहायक होता है।

प्रश्न 1 . लोक किससे व्यवस्थित है ?
उत्तर . लोक छः द्रव्यों से व्यवस्थित है।

प्रश्न 2 . द्रव्य किसे कहते हैं ?
उत्तर . उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य से युक्त वस्तु को "**द्रव्य**" कहते हैं।

प्रश्न 3 . उत्पाद किसे कहते हैं ?
उत्तर . द्रव्य में नवीन पर्याय की उत्पत्ति को "**उत्पाद**" कहते हैं।

प्रश्न 4 . ध्रोव्य किसे कहते हैं ?
उत्तर . द्रव्य की किसी अवस्था की नित्यता को "**ध्रोव्य**" कहते हैं।

प्रश्न 5 . व्यय किसे कहते हैं ?
उत्तर . पूर्व पर्याय के विनाश को "**व्यय**" कहते हैं।

प्रश्न 6 . द्रव्य के कितने भेद हैं ?
उत्तर . द्रव्य के **छः** भेद हैं –
1. जीव 2. पुद्गल 3. धर्म
4. अधर्म 5. आकाश 6. काल।

प्रश्न 7 : जीव किसे कहते हैं ?
उत्तर . जिसमें चेतना गुण पाया जाता है, उसे "**जीव द्रव्य**" कहते हैं।

प्रश्न 8 . चेतना कितने प्रकार की होती है ?
उत्तर . चेतना **तीन** प्रकार की होती है –
1. कर्म चेतना 2. कर्म फल चेतना 3. ज्ञान चेतना

प्रश्न 9 . कर्म चेतना किसे कहते हैं ?

उत्तर . कर्म का निमित्त पाकर आत्मा जिन परिणाम रूप परिणत होती है, उसे **''कर्म चेतना''** कहते हैं।

प्रश्न 10 . कर्म चेतना किसके होती है ?

उत्तर . त्रस जीवों के कर्म चेतना होती है, क्योंकि सुख–दुःख रूप कर्मफल को भोगते हुए भी इष्ट–अनिष्ट रूप कर्म को करने में समर्थ होता है।

प्रश्न 11 . कर्म फल चेतना किसे कहते हैं ?

उत्तर . कर्म फल का निमित्त पाकर सुख–दुःख का संवेदन होना **''कर्म फल चेतना''** है।

प्रश्न 12 . कर्म फल चेतना किसके होती है ?

उत्तर . कर्म फल चेतना स्थावर जीवों के होती है, क्योंकि स्थावर जीव इष्ट–अनिष्ट कार्यों को करने में असमर्थ होते हैं।

प्रश्न 13 . ज्ञान चेतना किसे कहते हैं ?

उत्तर . ज्ञान रूप आत्मा के परिणमन को **''ज्ञान चेतना''** कहते है।

प्रश्न 14 . ज्ञान चेतना किसके होती है ?

उत्तर . ज्ञान चेतना अरहन्त एवं सिद्ध जीवों के होती है, क्योंकि ये कर्म और कर्मफल के भोगने के विकल्प से रहित हैं।

प्रश्न 15 . जीव के कितने भेद हैं ?

उत्तर . जीवे के **दो** भेद हैं –

1. संसारी जीव 2. मुक्त जीव।

प्रश्न 16 . संसारी जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर . कर्म सहित जीव को **''संसारी जीव''** कहते हैं।

प्रश्न 17 . मुक्त जीव किसे कहते हैं ?

उत्तर . कर्म रहित जीव को **''मुक्त जीव''** कहते हैं।

प्रश्न 18 . पुद्गल किसे कहते हैं ?

उत्तर . पुरन (बनना), गलन (मिटना) जिसका स्वभाव है, उसे **''पुद्गल''** कहते हैं।

प्रश्न 19 . पुद्गल के कितने भेद हैं ?

उत्तर . पुद्गल के **दो** भेद हैं –

1. अणु 2. स्कन्ध।

प्रश्न 20 . अणु किसे कहते हैं ?

उत्तर . इन्द्रिय के अगोचर सबसे छोटे पुद्गल को "**अणु**" कहते हैं।

प्रश्न 21 . स्कन्ध किसे कहते हैं ?

उत्तर . अनेक परमाणुओं के समूह को "**स्कन्ध**" कहते हैं।

प्रश्न 22 . स्कन्ध के कितने भेद हैं ?

उत्तर . स्कन्ध के **छः** भेद हैं –

1. बादर–बादर 2. बादर 3. बादर–सूक्ष्म
4. सूक्ष्म बादर 5. सूक्ष्म 6. सूक्ष्म–सूक्ष्म

प्रश्न 23 . बादर-बादर किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो पुद्गल के पिण्ड पृथक् हो जाने पर नहीं जुड़ते, उसे "**बादर-बादर**" कहते हैं।

जैसे : लकड़ी, पत्थर आदि।

प्रश्न 24 . बादर किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो पुद्गल अलग हो जाने के बाद स्वतः फिर जुड़ जाते हैं, उसे "**बादर**" कहते हैं।

जैसे : घी, तेल, पानी आदि।

प्रश्न 25 . बादर-सूक्ष्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो पुद्गल के पिण्ड देखने में आये पर हाथों से पकड़ में न आये, उसे "**बादर सूक्ष्म**" कहते हैं।

जैसे : छाया।

प्रश्न 26 . सूक्ष्म बादर किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो पुद्गल के पिण्ड देखने में न आये, पर पकड़ में आ जाये उसे "**सूक्ष्म बादर**" कहते हैं।

जैसे : शब्द।

प्रश्न 27 . सूक्ष्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो पुद्गल के पिण्ड इन्द्रियों से ग्रहण न किया जाये उसे "**सूक्ष्म**" कहते हैं।

जैसे : कार्मण वर्गणा।

प्रश्न 28 . सूक्ष्म-सूक्ष्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो पुद्गल पिण्ड कर्म वर्गणा से भी सूक्ष्म हो उसे **"सूक्ष्म-सूक्ष्म"** कहते हैं।

जैसे : द्वयणुक (दो परमाणु)

प्रश्न 29 . वर्गणा किसे कहते हैं ?

उत्तर . समान शक्ति के धारक प्रत्येक परमाणुओं के समूह को वर्ग एवं वर्गों के समूह को **"वर्गणा"** कहते हैं।

प्रश्न 30 . वर्गणा के कितने भेद हैं ?

उत्तर . वर्गणा के बतीस भेद है। पर **पाँच** भेद मुख्य हैं –

1. आहार वर्गणा 2. तेजस वर्गणा
3. भाषा वर्गणा 4. मनो वर्गणा 5. कार्मण वर्गणा।

प्रश्न 31 . आहार वर्गणा किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो पुद्गल वर्गणा औदारिक, वैक्रियक, आहारक शरीर रूप परिणमित होती है, उसे **"आहार वर्गणा"** कहते हैं।

प्रश्न 32 . तैजस वर्गणा किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो पुद्गल वर्गणा औदारिक, वैक्रियक, आहारक शरीर को कान्ति प्रदान करते हैं, उसे **"तैजस वर्गणा"** कहते हैं ?

प्रश्न 33 . भाषा वर्गणा किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो पुद्गल वर्गणा शब्द रूप परिणमित होती है, उसे **"भाषा वर्गणा"** कहते हैं।

प्रश्न 34 . मनो वर्गणा किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो पुद्गल वर्गणा मन रूप परिणमित होती है, उसे **"मनो वर्गणा"** कहते हैं।

प्रश्न 35 . कार्मण-वर्गणा किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो पुद्गल वर्गणा अष्ट कर्म रूप परिणमित होती है, उसे **"कार्मण वर्गणा"** कहते हैं।

प्रश्न 36 . धर्म द्रव्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो द्रव्य चलते हुए जीव और पुद्गल को चलाने में सहायक होता है, उसे **"धर्म द्रव्य"** कहते हैं।

जैसे : रेल के लिए पटरी।

प्रश्न 37 . अधर्म द्रव्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो द्रव्य रूकते हुए जीव और पुद्गल को रूकने में सहायक होता है, उसे "**अधर्म द्रव्य**" कहते हैं।
जैसे : पथिक को छाया।

प्रश्न 38 . आकाश द्रव्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो पाँच द्रव्यों को रहने के लिए अपने में स्थान देता है, उसे "**आकाश द्रव्य**" कहते हैं।

प्रश्न 39 . आकाश द्रव्य के कितने भेद हैं ?

उत्तर . आकाश द्रव्य के **दो** भेद हैं –
1. लोकाकाश 2. आलोकाकाश

प्रश्न 40 . लोकाकाश किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिसमें पाँच द्रव्य पाये जाते हैं, उसे "**लोकाकाश**" कहते हैं।

प्रश्न 41 . अलोकाकाश किसे कहते हैं ?

उत्तर . लोक के बाहर आकाश को "**अलोकाकाश**" कहते हैं।

प्रश्न 42 . आकाश द्रव्य में पाँच द्रव्य कैसे स्थान पाते हैं ?

उत्तर . जिस प्रकार एक दीपक के प्रकाश में अनेक दीपकों का प्रकाश स्थान पाता है, उसी प्रकार बिना बाधा के अन्य द्रव्य भी आकाश में स्थान पाते हैं।

प्रश्न 43 . काल द्रव्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो जीवादि द्रव्यों के परिणमन में सहायक होता है उसे, "**काल द्रव्य**" कहते हैं।

प्रश्न 44 . काल द्रव्य के कितने भेद हैं ?

उत्तर . काल द्रव्य के **दो** भेद हैं –
1. निश्चय काल 2. व्यवहार काल।

प्रश्न 45 . निश्चय काल किसे कहते हैं ?

उत्तर . काल द्रव्य को "**निश्चय काल**" कहते हैं।

प्रश्न 46 . व्यवहार किसे कहते हैं ?

उत्तर . समय, आवली, सैकेण्ड, मिनिट, मुहुर्त, घण्टा, दिन, सप्ताह, पक्ष, माह, ऋतु, अयन, वर्षयुग आदि को "**व्यवहार काल**" कहते हैं।

भाग चार

जिनत्व की प्राप्ति
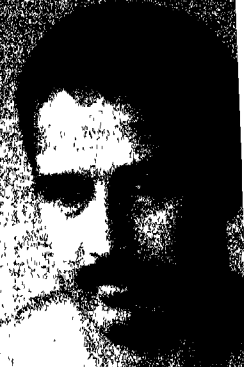
कर्मों की लीला संसार में बड़ी निराली है। कर्मों की निर्जरा हेतु मुनि पद की अत्यन्त आवश्यकता है। जब तक जीव मुनि पद धारण कर स्व द्रव्य में प्रवेश नही करता तब तक कर्मों की निर्जरा नहीं करता है। यह "कर्म" बड़ा बलवान है। यह जीव को साईकिल की चैन की भाँति संसार में घुमाता है। संसार से छुटने के लिए "ज्ञानावरणादि" अष्ट कर्म एवं कर्म बन्ध के कारणो के बारे में जानकारी आवश्यक है। क्योंकि प्रायः व्यक्ति कारण को जानकर ही उसके निवारण का उपाय करता है। जब जीव को समस्त प्रकृतियों की जानकारी हो जाती है तब समस्त संसार का कल्याण चाहने वाले तीर्थंकर के पाद मूल में रहकर "सोलह कारण भावना" भाकर भविष्य में तीर्थंकर पद तक पहुंचे हैं उस पथ का भव्यो को ज्ञान कराते हैं और देवाधिदेव बनने की प्रक्रिया बताते हैं इस प्रकार चतुर्थ भाग में [illegible] [illegible] "जिनत्व की प्राप्ति" का उपाय बताया गया है।

भाग चार

जिनत्व की प्राप्ति

कर्म

82

जीव करे जब राग द्वेष, तब पुद्‌गल परमाणु आते।
वे ही चिपके आत्म तत्व से, अपना रूप को दिखलाते।
आठ भेद हैं इसके प्यारे, द्रव्य भाव दो मुख्य अहो।
डेढ़ शतक में दो कम करके, इसके अन्दर भेद कहो।।82।

अर्थ

जीव जब राग–द्वेष करता है तब पुद्‌गल परमाणु आते है। वे ही कर्म कहलाते है। वे कर्म आत्म तत्व से चिपककर अपना अलग–अलग रूप दिखाते है। इस कर्म के मुख्य रूप से दो भेद है। द्रव्य कर्म और भाव कर्म तथा इसके आठ भेद हैं और उत्तर भेद 148 भी कहे गये हैं।

प्रश्न 1 . कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जीव के राग–द्वेष आदि परिणामों के निमित्त से जो पुद्‌गल के सूक्ष्म परमाणु आत्मा से सम्बन्ध को प्राप्त होते हैं। उसे **''कर्म''** कहते है।

प्रश्न 2 . कर्म क्या करते हैं ?

उत्तर . कर्म आत्मा के साथ चिपककर अपना अलग–अलग रूप दिखाता है।

प्रश्न 3 . कर्म परमाणु कहाँ विद्यमान हैं ?

उत्तर . लोक के एक–एक प्रदेश पर अनन्त कर्म परमाणु विद्यमान हैं।

प्रश्न 4 . कर्म का आत्मा के साथ कैसा सम्बन्ध है ?

उत्तर . कर्म का आत्मा के साथ दूध और पानी के समान एक क्षेत्रावगाह सम्बन्ध है।

प्रश्न 5 . कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर . कर्म के 2, 8 और 148 भेद है।

प्रश्न 6 . कर्म के दो भेद कौन से हैं ?

उत्तर . 1. द्रव्य कर्म 2. भाव कर्म

प्रश्न 7 . द्रव्य कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . सब शरीरों की उत्पत्ति के कारण–भूत ज्ञानावरणादि पुद्गल द्रव्य के पिण्ड को **"द्रव्य कर्म"** कहते हैं।

प्रश्न 8 . भाव कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . पुद्गल द्रव्य के पिण्ड के क्रोधादि रूप फल देने की शक्ति रूप तथा आत्मा के चैतन्य परिणाम को भाव कर्म कहते हैं।

प्रश्न 9 . कर्म के आठ भेद कौन से हैं ?

उत्तर . 1. ज्ञानावरण 2. दर्शनावरण 3. वेदनीय 4. मोहनीय 5. आयु 6. नाम 7. गोत्र 8. अन्तराय।

प्रश्न 10 . कर्म के 148 भेद कौन से हैं ?

उत्तर .

1. ज्ञानावरण . 5
2. दर्शनावरण . 9
3. वेदनीय . 2
4. मोहनीय 28
5. आयु . 4
6. नाम . 93
7. गोत्र . 2
8. अन्तराय . 5

इस प्रकार कुल मिलाकर 148 भेद हैं।

जं अण्णाणी कम्मं खवेदि भवसयसहस्स कोडीहिं।
तं णाणी तिहि गुत्तो खवेदि अंतोमुहुतेण।।

अर्थ– सम्यक् ज्ञान से रहित अज्ञानी जीव जिस कर्म को लाख करोड़ भवों में नष्ट करता है उस कर्म को सम्यक ज्ञानी तीन गुप्तियों से युक्त हुआ अर्न्तमुर्हुत मात्र में क्षय करता है।

ज्ञानावरण कर्म

83

ज्ञान गुणों को जो ढाके, वह ज्ञानावरण कहाता है।
पाँच भेद हम इसके जाने, मति श्रुत जग विख्याता है।।
अवधि ज्ञान मनःपर्यय, अरूँ केवल ज्ञान ये भेद कहे।
पड़ा आवरण ऐसे समझो, प्रतिमा पर ज्यों वस्त्र रहे।।83।।

अर्थ

जो आत्मा के ज्ञान गुणो को ढक देता है उसे ज्ञानावरण कर्म कहते हैं। इसके पॉच भेद हैं। मतिज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण मन.पर्ययज्ञानावरण और केवलज्ञानावरण। जैसे प्रतिमा पर वस्त्र का आवरण पड़ा होता है वैसे ही जीव के ज्ञान में आवरण पडा है।

प्रश्न 1 . ज्ञानावरण कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो आत्मा के ज्ञान गुण को प्रकट न होने दे, उसे "**ज्ञानावरण कर्म**" कहते है।

प्रश्न 2 . ज्ञानावरण कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर . ज्ञानावरण कर्म के **पाँच** भेद हैं –
1. मतिज्ञानावरण 2. श्रुतज्ञानावरण 3. अवधिज्ञानावरण
4. मनःपर्ययज्ञानावरण 5. केवलज्ञानावरण।

प्रश्न 3 . मतिज्ञानावरण कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . इन्द्रिय ज्ञान द्वारा ज्ञात पदार्थ को विशेष रूप से जानने में जो कर्म आवरण डालता है उसे "**श्रुतज्ञानावरण कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 4 . श्रुतज्ञानावरण कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . मति ज्ञान द्वारा ज्ञात पदार्थ को विशेष रूप में जो कर्म आवरण डालता है उसे "**श्रुतज्ञानावरण कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 5 . अवधिज्ञानावरण कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की मर्यादा को लिये जो ज्ञान "रूपी" पदार्थों को स्पष्ट जानने में आवरण डालता है, उसे "**अवधिज्ञानवरण कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 6 . मनः पर्ययज्ञानावरण कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . द्रव्य क्षेत्र, काल, भाव की मर्यादा को लिये हुए जो ज्ञान दूसरे के मन में स्थित विचार को स्पष्ट जानने में आवरण डालता है, उसे **''मन:पर्ययज्ञानावरण''** कहते हैं।

प्रश्न 7 . केवलज्ञानावरण कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो ज्ञान त्रिकालवर्ती समस्त पदार्थ को एक साथ एक समय में जानने में आवरण डालता है, उसे **''केवल ज्ञानावरण कर्म''** कहते हैं।

प्रश्न 8 . जीव के ज्ञान पर आवरण कैसे पड़ा है ?

उत्तर . जैसे प्रतिमा पर पतला वस्त्र पड़ा हो तो प्रतिमा कुछ दिखाई पडती है और कुछ नहीं दिखाई पड़ती। उसी प्रकार आत्मा पर ज्ञानावरण कर्म का आवरण पड़ा है।

प्रश्न 9 . ज्ञानावरण कर्म का बन्ध कैसे होता है ?

उत्तर . ज्ञानियों की निन्दा करने से, जिनवाणी की अविनय करने से, किसी के पठन–पाठन में विघ्न डालने से, दिव्य ध्वनि, आचार्य, उपाध्याय, साधु के उपदेश के समय स्वयं उपदेश करने से, अकाल के अध्ययन करने से, शास्त्र बेचने से और झूठे उपदेश देने से ज्ञानावरणी कर्म का बन्ध होता है।

प्रश्न 10 . ज्ञानावरण कर्म का बन्ध कितने समय तक होता है ?

उत्तर . ज्ञानावरण कर्म का बन्ध कम से कम अन्तर्मुहुर्त (48 मिनिट से कम) एवं अधिक से अधिक 30 कोडा–कोड़ी सागर तक का बन्ध होता है।

प्रश्न 11 . कोड़ा-कोड़ी किसे कहते हैं ?

उत्तर . एक करोड को एक करोड़ से गुणा करने पर जो गुणनफल आता है, उसे **''कोड़ा-कोड़ी''** कहते हैं।

प्रश्न 12 . ज्ञानावरण कर्म के अभाव से आत्मा में कौन सा गुण प्रकट होता है ?

उत्तर . ज्ञानावरण कर्म के अभाव में आत्मा में **"अनन्त ज्ञान गुण प्रगट"** होता है।

लायक बनना कठिन है नालायक तत्काल।
ये दुनिया के हाल लख ''पुष्पदंत'' बेहाल।।

दर्शनावरण कर्म

84

दर्शन को जो आवृत कर दें, दर्शनावरणी कर्म कहा।
द्वारपाल सा रोका करता, देता जग में कष्ट महा।।
निद्रा, निद्रा-निद्रा, प्रचला प्रचला-प्रचला दर्शनावरण।
चक्षु अचक्षु, अवधि केवल, स्त्यानगृद्धि है भेद नवम्।।84।।

अर्थ

जो आत्मा के दर्शन गुण का घात करता है उसे "दर्शनावरण कर्म" कहते हैं। यह दर्शनावरणी कर्म द्वारपाल के समान सभी को दर्शन से रोका करता है और महाकष्ट देता है। इसके निद्रा, निद्रा–निद्रा, प्रचला, प्रचला–प्रचला, स्त्या गृद्धि, चक्षु, अचक्षु, अवधि, केवल, दर्शनावरण के ये नौ भेद है।

प्रश्न 1 . दर्शनावरण कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो आत्मा के दर्शन का घात करता है, उसे **"दर्शनावरण कर्म"** कहते हैं।

प्रश्न 2 . दर्शनावरण कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर दर्शनावरण कर्म के **नौ** भेद हैं –

1. चक्षु दर्शनावरण 2. अचक्षु दर्शनावरण
3. अवधि दर्शनावरण 4. केवल दर्शनावरण
5. निद्रा दर्शनावरण 6. निद्रा–निद्रा दर्शनावरण
7. प्रचला दर्शनावरण 8. प्रचला–प्रचला दर्शनावरण
9. स्त्यानगृद्धि दर्शनावरण।

प्रश्न 3 . चक्षु दर्शनावरण कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से चक्षु इन्द्रिय से होने वाले सामान्य अवलोकन में आवरण पडे, उसे **"चक्षु दर्शनावरण कर्म"** कहते हैं।

प्रश्न 4 . अचक्षु दर्शनावरण कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से चक्षु इन्द्रिय से सिवाय शेष इन्द्रियॉ व मन से पदार्थ के सामान्य–अवलोकन में आवरण पड़े उसे **"अचक्षु दर्शनावरण कर्म"** कहते हैं।

प्रश्न 5 . अवधि दर्शनावरण कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से अवधि ज्ञान से पहले होने वाले सामान्य अवलोकन में आवरण पड़े उसे "**अवधि दर्शनावरण कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 6 . केवल दर्शनावरण कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से केवल ज्ञान के साथ होने वाला सामान्य अवलोकन नहीं होता, उसे "**केवल दर्शनावरण कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 7 . निद्रा दर्शनावरण कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . आलस्य, खेद, श्रम आदि को दूर करने के लिए जो शयन किया जाता है, उसे "**निद्रा दर्शनावरण कर्म**" कहत हैं।

प्रश्न 8 . निद्रा-निद्रा दर्शनावरण कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . नीद से ऊपर ऑखे न खोल सकें, ऐसी बार–बार आने वाली नींद को "**निद्रा-निद्रा दर्शनावरण कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 9 . प्रचला दर्शनावरण कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से बैठे–बैठे नींद आये, आधी ऑखें खुली रहें या सोता हुआ भी जागता रहे, उसे "**प्रचला दर्शनावरण कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 10 . प्रचला-प्रचला दर्शनावरण कर्म किसे कहते है ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय में मुख से लार बहने लगे, हाथ पाँव चलने लगे, बडबडाने लगें, उसे "**प्रचला-प्रचला दर्शनावरण कर्म**" कहते है।

प्रश्न 11 . स्त्यानगृद्धि दर्शनावरण कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से सोते हुए भी बड़े–बड़े भयंकर कार्य कर देवें और जगने के उपरान्त उसे किसी क्रिया का ज्ञान न हो, उसे "**स्त्यानगृद्धि दर्शनवारण कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 12 . दर्शनावरण कर्म किसके समान है ?

उत्तर . दर्शनावरण कर्म द्वारपाल के समान है। जिस प्रकार द्वारपाल राजा के दरबार मे खडा रहता है, दर्शन करने को मना करता है उसी प्रकार दर्शनावरण का द्वारपाल आत्मा के द्वार पर खड़ा है। सत्य के, आत्मा के दर्शन करने को मना करता है।

प्रश्न 13 . दर्शनावरण कर्म का बन्ध कैसे होता है ?

उत्तर . देव–शास्त्र–गुरू के दर्शन में विघ्न डालने से, आँखें फोड़ने से, सोते हुए जीव को मजाक में इधर–उधर ले जाने से, साधु की निन्दा से "**दर्शनावरण कर्म का बन्ध**" होता है।

प्रश्न 14 . दर्शनावरण कर्म का बन्ध कितने समय तक होता है ?

उत्तर . दर्शनावरण कर्म का बन्ध अधिक से अधिक 30 कोडा कोड़ी सागर और कम से कम अन्तर्मुहुर्त तक के लिये होता है।

प्रश्न 15 . दर्शनावरण कर्म के अभाव में आत्मा में कौन-सा गुण प्रकट होता है ?

उत्तर . दर्शनारवण के अभाव में आत्मा में "**अनन्त दर्शन**" गुण प्रकट होता है।

सम्माइट्ठी जीवो उवइट्ठं पवयणं तु सद्दहदि।
असब्भावं अजाणमाणो गुरू णियोगा।।
सुत्तादो तं सम्मं दरसिज्जतं जदा ण सद्दहदि।
सो चेव हवई मिच्छा इट्ठी जीवों तदि पहुदी।।

अर्थ– अरहन्त देव का ऐसा ही उपदेश है ऐसा समझकर यदि कोई कदाचित् किसी पदार्थ का विपरीत श्रद्धान भी करता है तो भी वह सम्यक् दृष्टि ही है क्योकि उसने देव का उपदेश समझकर उस पदार्थ का वैसा श्रद्धान किया है। परन्तु आगम में दिखाकर, समीचीन पदार्थ के समझाने पर भी यदि वह पूर्व में अज्ञान से किये हुए अतत्व श्रद्धान को न छोड़े तो वह उसी काल से मिथ्या दृष्टि कहा जाता है क्योंकि गणधर द्वारा कथित सूत्र का श्रद्धान न करने से जिनाज्ञा का उल्लंघन सुप्रसिद्ध है।

सूर्य आकाश में उगता है तपना धरती को पड़ता है।
दर्शन वीर के होते हैं भगना कर्मों को पड़ता है।।

वेदनीय कर्म

85

सुख दुःख को वेदन करवाता, वेदनीय यह कर्म कथा।
साता असाता भेद कहे दो, शहद लपेटी खड्ग यथा।
देवादि गतियों में जो सुख, तन-मन का वह साता है।
जिसके फल से कष्ट मिले, वह वेदनीय असाता है।।84।।

अर्थ

सुख और दुःख का वेदन कराना वेदनीय कर्म का कार्य है। इसके साता और असाता दो भेद है। वेदनीय कर्म शब्द से लिपटी हुई तलवार के समान है। देवादि गतियों मे जो सुख है, वह साता वेदनीय है तथा जिसके फल से दुःख, क्लेश, कष्ट मिले वह असाता वेदनीय है।

प्रश्न 1 . वेदनीय कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से जीव को सुख एवं दुःख की प्राप्ति होती है उसे "**वेदनीय कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . वेदनीय कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर . वेदनीय कर्म के **दो** भेद हैं –
1. साता वेदनीय 2. असाता वेदनीय

प्रश्न 3 . साता वेदनीय कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से देवादि गतियों में इष्ट सामग्री तथा शारीरिक एवं मानसिक सुखों की प्राप्ति होती है। उसे "**साता वेदनीय कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 4 . असाता वेदनीय कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से नरकादि गतियों में अनिष्ट सामग्री तथा शारीरिक व मानसिक दुःखो की प्राप्ति होती है उसे "**असाता वेदनीय कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 5 . वेदनीय कर्म की स्थिति कैसी हैं ?

उत्तर . वेदनीय कर्म की स्थिति शहद में लिपटी हुई तलवार के समान है। जिसमें मिठास का सुख है और काटने का दुःख भी है।

प्रश्न 6 . वेदनीय कर्म का बन्ध कैसे होता है ?

उत्तर . रोने, मारने, चिल्लाने, शोक करने, हिंसक व्यापार करने से **"असाता वेदनीय कर्म"** का बन्ध होता है व दया पालन, संयम पालन, सभी से प्रेम करने से **"साता वेदनीय कर्म"** का बन्ध होता है।

प्रश्न 7 . वेदनीय कर्म का बन्ध कितने समय तक होता हैं ?

उत्तर . वेदनीय कर्म का बन्ध कम से कम अन्तर्मुहुर्त व अधिक से अधिक 30 कोडा कोड़ी सागर का होता है।

प्रश्न 8 . वेदनीय कर्म के अभाव से आत्मा में कौन सा गुण प्रकट होता है ?

उत्तर . वेदनीय कर्म के अभाव में आत्मा से **"अव्यावाध गुण"** प्रकट होता है। जिसे अतीन्द्रिय आनन्द कहते हैं।

स्वर्गस्तस्य ग्रहांगणं सहचारी साम्राज्य लक्ष्मी शुभाः।
सौभाग्यादि गुणावलि र्विलसति स्वैरं वपुर्वेश्मनि।।
संसारः सुतरः शिवंकर तल क्रोडे लठुत्यंजसा।
यः श्रद्धाभर भाजनं जिनपतेः पूजां विधत्ते जनः।।

अर्थ– जो निकट भव्य जिनेन्द्र देव की पूजा भाव सहित करता है उसके लिए स्वर्ग इस प्रकार निकटता को प्राप्त होता है जैसे घर का ऑगन चक्रवर्ती जैसी सम्पत्ति साथ मे रहने वाली सखी के समान हो जाती है। सौभाग्य धैर्य, उदारता सज्जनता, क्षमादि विशेष गुणों की पंक्ति स्वभाव से शरीर रूपी घर मे निवास करने लग जाती है। जिनेन्द्र पूजा संसार सम्बन्धी दुःखों से छुडाकर सुखपूर्वक पार करने में समर्थ है मोक्ष को शीघ्र ही हथेली पर विराजमान के समान हो जाती इसलिए हे भव्य ! मन में विवेक लाकर भगवान जिनेन्द्र की भाव सहित पूजा करो।

मोहनीय कर्म

86

संसारी प्राणी को भैय्या, मोहित करता मोह करम।
दर्शन अरूं चारित्र भेद से, गिनती कर लो अठवीसम्।।
तीन खण्ड दर्शन के करना, दूजे के करना पच्चीस।
मोह महा-मदिरा तज प्यारे, समता धर बन जा तू ईश।।86।।

अर्थ

संसारी प्राणी को जो मोहित करता है वह मोहनीय कर्म है। मोहनीय कर्म के मूल मे दो भेद है। दर्शनमोहनीय और चारित्र मोहनीय इन दोनों के 27 भेद हैं। दर्शन मोहनीय के तीन व चारित्र मोहनीय के पच्चीस। यह मोह महामदिरा है। इसका त्याग करके समता को धारण कर भगवान बनना चाहिए।

प्रश्न 1 . मोहनीय कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से जीव अपने स्वरूप को भूलकर अन्य द्रव्य से मोहित होता है, उसे "**मोहनीय कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . मोहनीय कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर . मोहनीय कर्म के दो भेद हैं –
1. दर्शन मोहनीय 2. चारित्र मोहनीय।

प्रश्न 3 . दर्शन मोहनीय कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से आत्मा के सम्यकत्व गुण का घात होता है उसे "**दर्शन मोहनीय**" कर्म कहते हैं।

प्रश्न 4 . दर्शन मोहनीय कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर . दर्शन मोहनीय कर्म के **तीन** भेद हैं –
1. मिथ्यात्व 2. सम्यक् मिथ्यात्व 3. सम्यक् प्रकृति

प्रश्न 5 . मिथ्यात्व मोहनीय किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से सर्वज्ञ प्रणीत मार्ग से विमुखता हो व अतत्व श्रद्धान उत्पन्न हो। उसे "**मिथ्यात्व मोहनीय**" कहते हैं।

प्रश्न 6 . सम्यक् मिथ्यात्व मोहनीय किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से सम्यकाल और मिथ्यकत्व के मिले–जुले परिणाम होते हैं। उसे "**सम्यक् मिथ्यात्व मोहनीय**" कहते हैं।

प्रश्न 7 . सम्यक् प्रकृति मोहनीय किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से सम्यकत्व का मूल घात तो नहीं होता पर सम्यक्त्व में चल मल अगाढ़ दोष लगते हैं उसे "**सम्यक् प्रकृति मोहनीय**" कहते हैं।

प्रश्न 8 . चल दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . अपने द्वारा बनाये गये जिनबिम्ब मन्दिर आदि मेरे हैं। इस प्रकार के भाव को "**चल दोष**" कहते हैं।

प्रश्न 9 . मल दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . पच्चीस मल दोषों में किसी एक दोष के किञ्चित उदय होने से सम्यक्त्व में दूषण लगने को "**मल दोष**" कहते हैं।

प्रश्न 10 . अगाढ़ दोष किसे कहते हैं ?

उत्तर . शांतिनाथ शांति को देने वाले हैं पार्श्वनाथ मनवांछित फल देने वाले हैं। इस प्रकार का भाव रखकर पूजन करने को "**अगाढ़ दोष**" कहते हैं।

प्रश्न 11 . चारित्र मोहनीय कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से आत्मा के चारित्र गुण का घात होता है उसे "**चारित्र मोहनीय**" कर्म कहते हैं।

प्रश्न 12 . चारित्र मोहनीय कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर . चारित्र मोहनीय कर्म के 24 भेद हैं –

1. कषाय वेदक मोहनीय के 16
2. किञ्चित कषाय वेदक मोहनीय के 9

प्रश्न 13 . कषाय वेदक मोहनीय के 16 भेद कौन से हैं ?

उत्तर .

1. अनंतानुबंधी कषाय वेदक 4 क्रोध, मान, माया, लोभ।
2. अप्रत्याख्यान कषाय वेदक 4 क्रोध, मान, माया, लोभ।
3. प्रत्याख्यान कषाय वेदक 4 क्रोध, मान, माया, लोभ।
4. संज्जवलन कषाय वेदक 4 क्रोध, मान, माया, लोभ।

प्रश्न 14 . अनंतानुबंधी कषाय वेदक क्रोध, मान, माया, लोभ किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से आत्मा के सम्यकत्व गुण का घात होता है उसे "**अनंतानुबंधी कषाय वेदक क्रोध, मान, माया, लोभ**" कहते हैं।

प्रश्न 15 . अप्रत्याख्यान कषाय वेदक क्रोध, मान, माया, लोभ किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से आत्मा के देश चारित्र का घात होता है उसे "**अप्रत्याख्यान कषाय वेदक क्रोध, मान, माया, लोभ**" कहते हैं।

प्रश्न 16 . प्रत्याख्यान कषाय वेदक क्रोध, मान, माया, लोभ किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से आत्मा के सकल चारित्र का घात होता है। उसे "**प्रत्याख्यान कषाय वेदक क्रोध, मान, माया, लोभ**" कहते हैं।

प्रश्न 17 . संज्जवलन कषाय वेदक क्रोध, मान, माया, लोभ किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से आत्मा के यथाख्यात चारित्र का घात होता है उसे "**संज्जवलन कषाय वेदक क्रोध, मान, माया, लोभ**" कहते हैं।

प्रश्न 18 . किञ्चित कषाय वेदक मोहनीय के नौ भेद कौन-कौन से हैं ?

उत्तर . 1. हास्य 2. रति 3. अरति 4. शोक 5. भय 6. जुगप्सा 7. स्त्री वेद 8. पुरूष वेद 9. नपुंसक वेद।

प्रश्न 19 . हास्य कषाय वेदक मोहनीय किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से हँसी आवे, उसे "**हास्य कषाय वेदक मोहनीय**" कहते हैं।

प्रश्न 20 . रति कषाय वेदक मोहनीय किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से विषयों के प्रति स्नेह उत्पन्न हो उसे "**रति कषाय वेदक मोहनीय**" कहते हैं।

प्रश्न 21 . अरति कषाय वेदक मोहनीय किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से विषयों में अरूचि उत्पन्न हो उसे "**अरति कषाय वेदक मोहनीय**" कहते हैं।

प्रश्न 22 . शोक कषाय वेदक मोहनीय किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से विषाद उत्पन्न हो उसे "**शोक कषाय वेदक मोहनीय**" कहते है।

प्रश्न 23 . भय कषाय वेदक मोहनीय किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से डर उत्पन्न हो उसे "**भय कषाय वेदक मोहनीय**" कहते हैं।

प्रश्न 24 . जुगप्सा कषाय वेदक मोहनीय किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से ग्लानि उत्पन्न हो उसे "**जुगुप्सा कषाय वेदक मोहनीय**" कहते हैं।

प्रश्न 25 . स्त्रीवेद कषाय वेदक मोहनीय किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से पुरूष में रमने के भाव उत्पन्न हों उसे "**स्त्रीवेद कषाय वेदक मोहनीय**" कहते हैं।

प्रश्न 26 . पुरूष वेद कषाय वेदक मोहनीय किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से स्त्री में रमने के विचार उत्पन्न हों उसे "**पुरूष वेद कषाय वेदक मोहनीय**" कहते हैं।

प्रश्न 27 . नपुंसक वेद कषाय मोहनीय किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से स्त्री–पुरुष दोनों में रमने के विचार उत्पन्न हों उसे "**नपुंसक वेद कषाय वेदक मोहनीय**" कहते हैं।

प्रश्न 28 . नौ कषाय को किंञ्चित कषाय क्यों कहा हैं ?

उत्तर . यह कषाय अत्यल्प फल प्रदान करती है। इसीलिये इसे "**किंञ्चित कषाय**" कहा।

प्रश्न 29 . मोहनीय कर्म का बन्ध कैसे कहते हैं ?

उत्तर . केवली भगवान, शास्त्र, चतुर्विध संघ, धर्म देव आदि पर दोषारोपण करने से, मिथ्या देव, शास्त्र, गुरू की प्रशंसा करने से एवं तीव्र कषाय करने से मोहनीय कर्म का बन्ध होता है।

प्रश्न 30 . मोहनीय कर्म कैसा है ?

उत्तर . मोहनीय कर्म शराब के समान है। जिस प्रकार शराब पीकर व्यक्ति अपनी सुधबुध खो देता है। उसी प्रकार मोहनीय कर्म से युक्त जीव भी अपने आत्मस्वभाव को खो देता है।

प्रश्न 31 . मोहनीय कर्म का बन्ध कितने समय तक होता है ?

उत्तर . मोहनीय कर्म का बन्ध कम से कम अन्तर्मुहुर्त एवं अधिक से अधिक 70 कोड़ा–कोड़ी सागर प्रमाण तक होता है।

प्रश्न 32 . मोहनीय कर्म के अभाव में कौन-सा गुण प्रकट होता है ?

उत्तर . मोहनीय कर्म के अभाव में आत्मा में "**सम्यक्त्व**" गुण उत्पन्न होता है।

आयु कर्म

87

बाँध रहा है बेड़ी सा यह, चार गति के बन्धन को।
नारक मानुस देव पशु में, देता है यह क्रन्दन को।।
भूमि जल पावक वायु अरूँ, वनस्पति है एकेन्द्रिय।
विकलत्रय के मध्य इन्द्री अरूँ, पशु पक्षी है पंचेन्द्रिय।।87।।

अर्थ

जो बेडी के समान चार गति के बन्धन को बाँधता है वह आयु कर्म है। यह आयु कर्म मनुष्य, तिर्यच, नरक व देव गति मे रोक कर अनेक कष्टों को देता है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति एकेन्द्रिय तिर्यच हैं तथा दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चार इन्द्रिय जीव विकलत्रय तिर्यच है और पशु–पक्षी आदि पंचेन्द्रिय तिर्यच है।

प्रश्न 1 . आयु कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से आत्मा नरक, तिर्यन्च, मुनष्य व देव गति मे रूका रहता है उसे "**आयु कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . आयु कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर . आयु कर्म के **चार** भेद हैं –

1. नरकायु 2. तिर्यञ्चायु 3. मनुष्यायु 4. देवायु

प्रश्न 3 . नरकायु किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से जीव नरक गति में कम से कम 10 हजार वर्ष अधिक से अधिक 33 सागर तक रूका रहता है। उसे "**नरकायु**" कहते हैं।

प्रश्न 4 . तिर्यन्च आयु किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से जीव तिर्यन्च गति में कम से कम अन्तर्मुहूर्त, अधिक से अधिक तीन पल्य तक रूका रहता है। उसे "**तिर्यन्च आयु**" कहते है।

प्रश्न 5 . तिर्यन्च कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर . तिर्यन्च **तीन** प्रकार के होते हैं –

1. स्थावर तिर्यन्च 2. विकलत्रय तिर्यन्च 3. पंचेन्द्रिय तिर्यन्च

प्रश्न 6 . स्थावर तिर्यन्च कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर . पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु व वनस्पति जीव को ''**स्थावर तिर्यन्च**'' कहते हैं।

प्रश्न 7 . स्थावर तिर्यन्च की उत्कृष्ट आयु कितनी हैं ?

उत्तर . स्थावर तिर्यन्च में पृथ्वी की आयु "22 हजार वर्ष" जल की "सात हजार वर्ष" अग्नि की "तीन दिन–रात, वायु की तीन हजार वर्ष" वनस्पति की "दस हजार वर्ष" की उत्कृष्ट आयु होती है।

प्रश्न 8 . विकलत्रय तिर्यन्च किसे कहते हैं ?

उत्तर . दो, तीन, चार इन्द्रिय को ''**विकलत्रय तिर्यन्च**'' कहते हैं।

प्रश्न 9 . विकत्रलय तिर्यन्च की उत्कृष्टि आयु कितनी होती है ?

उत्तर . शंख आदि दो इन्द्रिय जीवो की 12 वर्ष, जुआँ, खटमल आदि तीन इन्द्रिय जीवों की उनचास दिन, भौरा आदि चार इन्द्रिय जीवों की छह माह की उत्कृष्ट आयु होती है।

प्रश्न 10 . पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च किसे कहते हैं ?

उत्तर . पाँच इन्द्रिय युक्त पशु–पक्षी आदि जीवों को ''**पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च**'' कहते है।

प्रश्न 11 . पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च की उत्कृष्ट आयु कितनी होती है ?

उत्तर . पंचेन्द्रिय तिर्यञ्यों में मत्स्य एवं असंज्ञी पंचेन्द्रिय ही एक पूर्व कोटी, सर्प की 42 हजार वर्ष, पक्षी की 72 (बहत्तर) हजार वर्ष होती है बाकी सभी पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च एक पूर्व कोटि वर्ष से कम आयु वाले होते हैं।

प्रश्न 12 . एक पूर्व कितने वर्ष का होता है ?

उत्तर . एक पूर्व सत्तर लाख छप्पन हजार करोड वर्ष का होता है।

प्रश्न 13 . मनुष्य आयु किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से जीव अधिक से अधिक तीन पल्य, कम से कम अन्तर्मुहुर्त तक मनुष्य गति में रूका रहता है उसे ''**मनुष्य आयु**'' कहते हैं।

प्रश्न 14 . देवायु किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से जीव अधिक से अधिक 33 सागर कम से कम 10 हजार वर्ष तक देवगति में रूका रहता है। उसे ''**देवायु**'' कहते हैं।

प्रश्न 15 . आयु कर्म का बन्ध कैसे होता है ?

उत्तर . तीव्र हिंसा से नरकायु, मायाचारी से तिर्यञ्च आयु, थोड़ा आरम्भ परिग्रह से मनुष्यायु, व्रत पालन, सम्यक्त्व, समतासे दुःख सहन करने से देवायु का बन्ध होता है।

प्रश्न 16 . आयु कर्म का स्वभाव कैसा है ?

उत्तर . आयु कर्म का स्वभाव बेड़ी के समान है।

जैसे : बेड़ी मनुष्य को एक स्थान में बॉधे रखती है। उसी प्रकार आयु कर्म भी जीव को एक गति में बाँधे रखता है।

प्रश्न 17 . आयु कर्म के अभाव में आत्मा में कौन सा गुण प्रकट होता है ?

उत्तर . आयु कर्म के अभाव में आत्मा में "**अवगाहनत्व गुण**" प्रकट होता है।

गुरौमानुष्य बुद्धिस्तु मन्त्रोचाक्षर बुद्धिकम्।
प्रतिमायां शिलाबुद्धिं कुर्वाणो नरकं व्रजेत।।

अर्थ– निर्ग्रन्थ गुरू में सामान्य मनुष्य की बुद्धि रखने वाला णमोकार मंत्र को सामान्य अक्षर समसने वाला तथा अरहन्त प्रतिमा में सामान्य पत्थर की कल्पना करने वाला नरक बिल में जाता है।

जीवन और मृत्यु जिव्हा के वश में है इसलिए अपने जिव्हा से किसी अनुचित् शब्द का प्रयोग न करें।

नाम कर्म

88

नाना रूपों में जो तन की, रचना करता नाम करम।
चित्रकार ज्यों आकृति देता, वैसी माया इसका धरम।।
गति जाति तन आंगोपांग है, आनुपूर्वी बंधन संघात।
आतप सहंनन गगन गमन अरूँ, अगुरू लघु उपघात परघात।।88।।

89

है निर्वाण परस उच्छ्वास, गन्ध वर्ण रस शुभ संस्थान।
पर्याप्ति उद्योत सूक्ष्म थिर, त्रस स्वर तन प्रत्येक सुजान।।
यश कीर्ति आदेय सुभग, ये दश इसके विपरीत कहो।
तीर्थकर सह भेद तिरानवे, नाम कर्म के भेद अहो।।89।।

अर्थ

अनेक प्रकार के रूपों मे जो जीवों के शरीर की रचना करता है उसे नाम कर्म कहते है। चित्रकार जैसी अनेक आकृतियों को बना देना ही इसकी माया है इसका धर्म है। नाम कर्म के तिरानवे भेद हैं गति 4, जाति 5, शरीर 5, आगोपाग 3, आनुपूर्वी 4, संघात 5, आतप, सहंनन 6, गगनागमन (विहायोगति) 2, अगुरू लघु, उपघात, परघात, स्पर्श 8, उच्छ्वास, गन्ध 2, वर्ण 5, इस 5, शुभ–संस्थान 6, पर्याप्ति उद्योत, सूक्ष्म, स्थिर, त्रस, सुस्वर, प्रत्येक शरीर, यश कीर्ति, आदय, सुभग इनके विपरीत अपर्याप्त, आतप, बादर, अस्थिर, दुस्वर, साधारण शरीर, अयश कीर्ति, अनादेय, दुभर्ग तथा तीर्थकर ये नाम कर्म की कुल 93 प्रकृतियॉ है।

प्रश्न 1 . नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से अनेक प्रकार की शरीरों की रचना होती है उसे "**नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . नाम कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर . नाम कर्म के 93 भेद हैं।

प्रश्न 3 . गति नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से जीव भव–भावन्तर की पर्याय की प्राप्त होता है उसे "**गति नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 4 . गति के कितने भेद हैं ?

उत्तर . गति के **चार** भेद हैं –

1. नरक गति 2. तिर्यञ्च गति
3. मनुष्य गति 4. देव गति

प्रश्न 5 . जाति नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से जीव में समान अवस्था पाई जाये, उसे "**जाति नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 6 . यहाँ सामान्य अवस्था से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर . यहाँ सामान्य अवस्था से जल–जल के रूप में, पृथ्वी–पृथ्वी के रूप में, चीटी चींटी के रूप में, हाथी–हाथी के रूप में, मनुष्य–मनुष्य के रूप में देव–देव के रूप में, ही झो अन्य रूप में नही होगा, यह तात्पर्य है।

प्रश्न 7 . जाति नाम कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर . जाति नाम कर्म के **पॉच** भेद हैं।

1. एकेन्द्रिय जाति 2. दो इन्द्रिय जाति
3. तीन इन्द्रिय जाति 4. चार इन्द्रिय जाति
5. पॉच इन्द्रिय जाति।

प्रश्न 8 . एक इन्द्रिय जाति नाम किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से मात्र स्पर्श इन्द्रिय युक्त जीवन प्राप्त होता है उसे "**एक इन्द्रिय जाति नाम कर्म**" कहते है।

प्रश्न 9 . दो इन्द्रिय जाति नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से मात्र स्पर्श एवं रसना इन्द्रिय युक्त जीवन प्राप्त होता है उसे "**दो इन्द्रिय जाति नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 10 . तीन इन्द्रिय जाति नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से मात्र स्पर्श, रसना एवं घ्राण इन्द्रिय युक्त जीवन प्राप्त होता है उसे "**तीन इन्द्रिय जाति नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 11 . चार इन्द्रिय जाति नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से मात्र स्पर्श, रसना, घ्राण एवं चक्षु इन्द्रिय युक्त शरीर प्राप्त होता है उसे "**चार इन्द्रिय जाति नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 12 . पाँच इन्द्रिय जाति नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से स्पर्श, रसना, घ्राण, चक्षु एवं कर्ण इन्द्रिय युक्त जीवन प्राप्त होता है उसे "**पाँच इन्द्रिय जाति नाम कर्ज**" कहते हैं।

प्रश्न 13 . शरीर नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से आत्मा के शरीर की रचना होती है, उसे "**शरीर नाम कर्म**" कहते है।

प्रश्न 14 . शरीर नाम कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर . शरीर नाम कर्म के **पाँच** भेद हैं –

1. औदारिक शरीर
2. वैक्रियक शरीर
3. आहारक शरीर
4. तैजस शरीर
5. कार्मण शरीर

प्रश्न 15 . औदारिक शरीर नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से जीव के द्वारा ग्रहण किये गये आहार वर्गणा के पुद्गल स्कन्ध सप्त धातु रूप परिणत होवें उसे "**औदारिक शरीर नाम कर्म**" कहते है।

प्रश्न 16 . औदारिक शरीर किसके होता है ?

उत्तर . औदारिक शरीर मनुष्य एवं तिर्यञ्च जीव के होता है।

प्रश्न 17 . वैक्रियक शरीर नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से जीव द्वारा ग्रहण किये गये आहार वर्गणा के पुद्गल स्कन्ध धातु रहित अनेक रूप बनाने योग्य गुणों से युक्त परिणत हो उसे "**वैक्रियक शरीर नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 18 . वैक्रियक शरीर किसके होता है ?

उत्तर . वैक्रियक शरीर देव एवं नारकीय जीवों के होता है।

प्रश्न 19 . आहारक शरीर नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से जीव द्वारा ग्रहण किये गये आहार वर्गणा के पुद्गल स्कन्ध, शुभ अवयव रूप परिणत होते हैं उसे "**आहारक शरीर नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 20 . आहारक शरीर किसके होता है ?

उत्तर . आहारक शरीर छठे गुणस्थान वर्ती दिगम्बर मुनियों के होता है। जब किसी दिगम्बर मुनिराज के मन में किसी प्रकार की शंका उत्पन्न होती है अथवा संयम की रक्षा हेतु जो उसके मस्तक से एक हाथ का पुतला निकलता है। उस पुतले को **"आहारक शरीर"** कहते हैं।

प्रश्न 21 . तैजस शरीर नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से जीव द्वारा ग्रहण किये गये तैजस वर्गणा के पुद्‌गल स्कन्ध शरीर में कान्ति उत्पन्न करती है। उसे **"तैजस शरीर नाम कर्म"** कहते है।

प्रश्न 22 . कार्मण शरीर नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से जीव द्वारा ग्रहण किये गये कार्मण वर्गणा के पुद्‌गल स्कन्ध कर्म रूप परिणत होते हैं उस **"कार्मण शरीर नाम कर्म"** कहते हैं।

प्रश्न 23 . तैजस और कार्मण शरीर किसके होता है ?

उत्तर . तैजस और कर्मण शरीर सभी संसारी जीवों के होता है।

प्रश्न 24 . आंङ्गोपाङ्ग नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से अंग और उपांग की रचना होती है। उसे **"आंङ्गोपाङ्ग नाम कर्म"** कहते हैं।

प्रश्न 25 . अंग कितने व कौन से होते हैं ?

उत्तर . 1. दो हाथ 2. दो पैर 3. सिर
4. पीठ 5. हृदय 6. पेट

प्रश्न 26 . उपांग कौन-कौन से हैं ?

उत्तर . कान, नाक, ऑख, नाभि, गाल, होंठ आदि अनेक उपांग है।

प्रश्न 27 . आंङोपाङ नाम कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर . आंङ्गोपाङ्ग नाम कर्म के तीन भेद हैं –

1. औदारिक शरीर आंङ्गोपाङ्ग
2. वेक्रियक शरीर आंङ्गोपाङ्ग
3. आहारक शरीर आंङ्गोपाङ्ग

प्रश्न 28 . औदारिक, वैक्रियक, आहारक शरीर आंङ्गोपाङ्ग नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से औदारिक, वैक्रियक, आहारक शरीर आंङ्गोपाङ्ग की प्राप्ति होती है। उसे औदारिक, वैक्रियक, आहारक शरीर आंङ्गोपाङ्ग नाम कर्म कहते हैं।

प्रश्न 29 . निर्माण नाम कर्ण किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से यथायोग्य अपने–अपने स्थान पर आंग्डोपाग्ड की रचना होती है उसे "**निर्माण नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 30 . बंधन नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . शरीर नाम कर्म के उदय से जीव द्वारा ग्रहण किये गये पुद्‌गल स्कन्धों का परस्पर संश्लेष सम्बन्ध हो उसे "**बंधन नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 31 . बंधन नाम कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर . बन्धन नाम के **पाँच** भेद हैं –

1. औदारिक बन्धन 2. वैक्रियक बंधन 3. आहारक बन्धन
4. तैजस बन्धन 5. कार्मण बन्धन

प्रश्न 32 . औदारिकादि बन्धन नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से जीव द्वारा ग्रहण किये गये पुद्‌गल स्कन्ध औदारिकादि शरीर रूप परिणत होकर तदनुरूप परस्पर संश्लेष सम्बन्ध को प्राप्त होते हैं। उसे "**औदारिकादि बंधन**" नाम कर्म कहते हैं।

प्रश्न 33 . संघात नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से जीव द्वारा ग्रहण किये गये पुद्‌गल स्कन्ध परस्पर छिद्र रहित एकता को प्राप्त होते है। उसे "**संघात नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 34 . संघात नाम कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर . संघात नाम कर्म के **पाँच** भेद हैं –

1. औदारिक संघात 2. वैक्रियक संघात 3. आहारक संघात
4. तैजस संघात 5. कार्मण संघात।

प्रश्न 35 . औदारिक संघात नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से जीव द्वारा ग्रहण किये गये पुद्गल स्कन्ध औदारिकादि शरीर रूप परिणत होकर तदनुरूप पररूपर छिद्र रहित एकता को प्राप्त होते हैं। उसे "**औदारिक संघात नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 36 . बंधन और संघात नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . बंधन नाम कर्म के उदय से शरीर "**तिल के लड्डू**" के समान छिद्र रहित एकता को प्राप्त होते हैं। और संघात नाम कर्म के उदय से "**शरीर आटे के लड्डू**" के समान चिकनापन लिये छिद्र रहित एकता को प्राप्त होते हैं।

प्रश्न 37 . संस्थान नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर जिस कर्म के उदय से शरीर की आकृति बनती है उसे "**संस्थान नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 38 . संस्थान नाम कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर . संस्थान नाम कर्म के **छः** भेद है –

1. समचतुरस्र संस्थान
2. न्यग्रोध परिमडल सस्थान
3. स्वाति संस्थान
4. वामन संस्थान
5. कुब्जक संस्थान
6. हुण्डक संस्थान

प्रश्न 39 . समचतुरस्र संस्थान नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर अरहन्त प्रतिमा के समान ऊपर नीचे व मध्य भाग से सम सुन्दर आकृति को लिये हो, उसे "**समचतुरस्र संस्थान**" कहते है।

प्रश्न 40 . न्याग्रोध परिमण्डल संस्थान किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर वटवृक्ष की तरह नाभि के ऊपर मोटा व नाभि के नीचे पतला हो उसे "**न्यग्रोध परिमण्डल संस्थान**" नाम कर्म कहते हैं।

प्रश्न 41 . स्वाति संस्थान नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदग से शरीर साँप की बॉमी के समान नाभि के ऊपर पतला व नाभि के नीचे मोटा हो उसे "**स्वाति संस्थान नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 42 . वामन संस्थान नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर ठिगना (बौना) होता है। उसे "**वामन संस्थान नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 43 . कुब्जक संस्थान नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर कुबड़ा (पीठ में माँस के पिण्ड का निकलना) होता है उसे "**कुब्जक संस्थान नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 44 . हुण्डक संस्थान नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर विचित्र विभिन्न अटपटे अनेक प्रकार को लिये हुए होता है उसे "**हुण्डक संस्थान**" कहते हैं।

प्रश्न 45 . संहनन नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से हड्डियों की सन्धियों में विशेष बन्धन होता है। उसे "**संहनन नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 46 . संहनन नाम कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर . संहनन नाम कर्म के **छः** भेद हैं –

1. वज्र वृषभ नारांच संहनन
2. वज्र नारांच संहनन
3. नारांच संहनन
4. अर्द्ध नारांच संहनन
5. कीलक संहनन
6. असम्प्राप्तासृपाटिका संहनन।

प्रश्न 47 . वज्र वृषभ नारांच संहनन नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर वज्र की हड्डियो से युक्त वज्र की वेठन (स्नायु) से वेष्ठित एवं वज्र की कीलियों से कीलित हो उसे "**वज्र वृषभ नारांच संहनन**" नाम कर्म कहते हैं।

प्रश्न 48 . वज्र नारांच संहनन नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर वज्र की हड्डियों से युक्त एवं वज्र की कीलियों से कीलित हो उसे "**वज्र नारांच संहनन**" नाम कर्म कहते हैं।

प्रश्न 49 . नारांच संहनन नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर हड्डियों व वेष्ठनों से युक्त एवं वज्र की कीलियों से कीलित हो उसे "**नारांच संहनन**" नाम कर्म कहते हैं।

प्रश्न 50 . अर्द्ध नारांच संहनन नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर की हड्डियाँ अर्द्ध कीलित हों उसे "**अर्द्ध नारॉच संहनन**" नाम कर्म कहते हैं।

प्रश्न 51 . कीलक संहनन नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर की हड्डियों के छोरों में कील लगी हों उसे "**कीलक संहनन**" नाम कर्म कहते हैं।

प्रश्न 52 . असम्प्राप्तासृपाटिका संहनन नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर की हड्डियाँ परस्पर नसों के जाल से बँधी हों उसे "**असम्प्राप्तासृपाटिका संहनन**" नाम कर्म कहते हैं।

प्रश्न 53 . स्पर्श नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर में स्पर्श गुण होता है। उसे "**स्पर्श नाम कर्म**" होता हैं।

प्रश्न 54 . स्पर्श नाम कर्म के आठ भेद हैं ?

उत्तर . स्पर्श नाम कर्म के **आठ** भेद हैं –

1. कर्कश 2. मृदु 3. गुरू 4. लघु
5. स्निग्ध 6. रूक्ष 7. शीत 8. ऊष्ण

प्रश्न 55 . कर्कश स्पर्श नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर के अवयव कठोर होते हैं उसे "**कर्कश स्पर्श**" नाम कर्म कहते हैं।

प्रश्न 56 . मृदु स्पर्श नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर के अवयव मुलायम होते हैं उसे "**मृदु स्पर्श**" नाम कर्म कहते हैं।

प्रश्न 57 . गुरू स्पर्श नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर के अवयव भारी होते हैं उसे "**गुरू स्पर्श नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 58 . लघु स्पर्श नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर के अवयव हल्के होते हैं उसे "**लघु स्पर्श नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 59 . स्निग्ध स्पर्श नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर के अवयव चिकने होते हैं, उसे ''**स्निग्ध स्पर्श नाम कर्म**'' कहते हैं।

प्रश्न 60 . रूक्ष स्पर्श नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर के अवयव रूखे होते हैं उसे ''**रूक्ष स्पर्श नाम कर्म**'' कहते हैं।

प्रश्न 61 . शीत स्पर्श नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर के अवयव ठण्डे होते हैं, उसे ''**शीत स्पर्श नाम कर्म**'' कहते हैं।

प्रश्न 62 . ऊष्ण स्पर्श नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर के अवयव गरम होते हैं, उसे ''**ऊष्ण स्पर्श नाम कर्म**'' कहते हैं।

प्रश्न 63 . रस नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर जिस कर्म के उदय से शरीर में रस की उत्पत्ति होती है, उसे ''**रस नाम कर्म**'' कहते हैं।

प्रश्न 64 . रस नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . रस नाम कर्म के **पाँच** भेद हैं –

1. अम्ल रस 2. मधुर रस 3. कडुक रस
4. तिक्त रस 5. कषायित रस।

प्रश्न 65 . अम्ल रस नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर में ''**खट्टे रस**'' की उत्पत्ति होती है उसे ''**अम्ल रस**'' नाम कर्म कहते हैं।

प्रश्न 66 . मधुर रस नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर में ''**मीठे रस**'' की उत्पत्ति होती है उसे ''**मधुर रस**'' नाम कर्म कहते हैं।

प्रश्न 67 . कडुक रस नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर में "**कड़वे रस**" की उत्पत्ति होती है उसे ''**कडुक रस**'' नाम कर्म कहते हैं।

प्रश्न 68 . तिक्त रस नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर में **"तीखे रस"** की उत्पत्ति होती है। उसे **''तिक्त रस''** नाम कर्म कहते हैं।

प्रश्न 69 . कषायित रस नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर में **"कषैले रस"** की उत्पत्ति होती है उसे **''कषायित रस''** नाम कर्म कहते हैं।

प्रश्न 70 . गन्ध नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर में गन्ध की उत्पत्ति होती है उसे **''गन्ध नाम कर्म''** कहते हैं।

प्रश्न 71 . गन्ध नाम कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर . गन्ध नाम कर्म के **दो** भेद हैं –

1. सुरभि गन्ध 2. असुरभि गन्ध

प्रश्न 72 . सुरभि नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर के पुद्गल परमाणु सुगन्ध से युक्त होते हैं उसे **''सुरभि गन्ध''** नाम कर्म कहते है।

प्रश्न 73 . असुरभि नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर के पुद्गल परमाणु दुर्गन्ध से युक्त होते हैं उसे **''असुरभि गन्ध''** नाम कर्म कहते हैं।

प्रश्न 74 . वर्ण नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर में रंग की उत्पत्ति होती है। उसे **''वर्ण नाम कर्म''** कहते हैं।

प्रश्न 75 . वर्ण नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . वर्ण नाम कर्म के **पाँच** भेद हैं –

1. कृष्ण वर्ण 2. नील वर्ण 3. रक्त वर्ण
4. श्वेत वर्ण 5. हरित वर्ण या पीत वर्ण।

प्रश्न 76 . कृष्णादि नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर में काला, नीला, सफेद, पीला या हरा इन पाँचों रंगों की उत्पत्ति होती है। उसे **''कृष्णादि वर्ण''** नाम कर्म कहते हैं।

प्रश्न 77 . आनुपूर्वी नाम कर्म किसे कहत्ते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से आत्मा के प्रदेश मरण के बाद जन्म से पहले विग्रह गति में मरण के पहले आकार को लिये होता है। उसे "**आनुपूर्वी**" नाम कर्म कहते है।

प्रश्न 78 . विग्रहगति किसे कहते हैं ?

उत्तर . मरण के पश्चात् नवीन शरीर धारण हेतु जो जीव का गमन होता है, उसे "**विग्रहगति**" कहते हैं।

प्रश्न 79 . आनुपूर्वी के कितने भेद हैं ?

उत्तर . आनुपूर्वी के **चार** भेद है –

1. नरक गत्यानुपूर्वी
2. तिर्यञ्च गत्यानुपूर्वी
3. मनुष्य गत्यानुपूर्वी
4. देव गत्यानुपूर्वी।

प्रश्न 80 . नरक गत्यानुपूर्वी नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से किसी भी गति से मरकर नरक गति मे देह धारण करने से पूर्व जीव का आकार मनुष्य या तिर्यञ्च के रूप मे होता है। उसे नरक गत्यानुपूर्वी कहते हैं।

प्रश्न 81 . तिर्यञ्च गत्यानुपूर्वी नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से किसी गति से मरकर तिर्यञ्च गति में देह धारण करने से पूर्व जीव का आकार पूर्व देह के आकार का होता है उसे "**तिर्यञ्चगत्यानुपूर्वी नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 82 . मनुष्यगत्यानुपूर्वी नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से किसी भी गति से मरकर मनुष्य गति मे देह धारण करने के पूर्व जीव का आकार पूर्व देह के आकार का होता है उसे "**मनुष्य गत्यानुपूर्वी नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 83 . देवगत्यानुपूर्वी कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से मनुष्य या तिर्यञ्च गति से मरकर देवगति में देह धारण करने के पूर्व जीव का आकार मनुष्य या तिर्यञ्च के आकार का होता है उसे "**देवगत्यानुपूर्वी नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 84 अगुरूलघु नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से जीव का शरीर न तो लोहे के गोले की तरह भारी न आक के तूल की तरह हल्का होता है। उसे **''अगुरूलघु नाम कर्म''** कहते हैं।

प्रश्न 85 . उपघात नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से अपने ही शरीर का घात करने वाले अवयव की प्राप्ति होती है उसे **''उपघात नाम कर्म''** कहते हैं।

जैसे : लम्बे सींग, बड़ा पेट, गले में घेघा आदि।

प्रश्न 86 . परघात नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से पर प्राणी के घात करने वाले अवयव की प्राप्ति होती है उसे **''परघात नाम कर्म''** कहते हैं।

जैसे : सिंह, व्याघ्र, चीता आदि के नख, बिच्छू का डंक, सर्प का विष

प्रश्न 87 . आतप नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से दूसरों को संतापित करने वाला प्रकाश उत्पन्न हो उसे **''आतप नाम कर्म''** कहते हैं।

प्रश्न 88 . उद्योत नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से चमक के लिए ठंडा प्रकाश उत्पन्न होता है उसे **''उद्योग नाम कर्म''** कहते हैं।

जैसे - चन्द्रमा का विमान, जुगनू आदि।

प्रश्न 89 .. उच्छ्वास नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से जीव में श्वांस प्रगट होता है उसे **''उच्छ्वास नाम कर्म''** कहते हैं।

प्रश्न 90 . विहायोगति नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से आकाश में गमन होता है उसे **''विहायोगति नाम कर्म''** कहते हैं।

प्रश्न 91 . विहायोगति नाम कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर . विहायोगति नाम कर्म के **दो** भेद हैं –

1. प्रशस्त विहायोगति नाम कर्म 2. अप्रशस्त विहायोगति नाम कर्म

प्रश्न 92 . प्रशस्त विहायोगति नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से चाल सिंह, हाथी, हंस, बैल आदि के समान सुन्दर हो "**प्रशस्त विहायोगति नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 93 . अप्रशस्त विहायोगति नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से चाल ऊँट, सियार, गधा, कुत्ता आदि के समान असुन्दर हो उसे "**प्रशस्त विहायोगति नाम कर्म**" कहते है।

प्रश्न 94 . प्रत्येक शरीर नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से एक शरीर का स्वामी का एक ही जीव होता है उसे "**प्रत्येक शरीर नाम कर्म**" कहते है।

प्रश्न 95 . साधारण शरीर नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से एक शरीर के स्वामी अनेक जीव होते हैं उसे "**साधारण शरीर नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 96 . त्रस नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से जीव दो इन्द्रिय से पचेन्द्रिय तक की पर्याय मे उत्पन्न होता है उसे "**त्रस नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 97 . स्थावर नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से एक इन्द्रिय की पॉच स्थावर कायों में उत्पन्न होता है उसे "**स्थावर नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 98 . सुभग नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से अन्य जीवो को अपने से प्रीति उत्पन्न हो उसे "**सुभग नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 99 . दुर्भग नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से अन्य जीवों में प्रीति उत्पन्न नहीं होती है उसे "**दुर्भग नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 100 . सुस्वर नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से सुमधुर स्वर की प्राप्ति होती है उसे "**सुस्वर नाम कर्म**" कहते है।

प्रश्न 101 . दुस्वर नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से अमधुर स्वर की प्राप्ति होती है उसे "**दुस्वर नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 102 . शुभ नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर के अंगोपांग सुन्दर होते हैं उसे "**शुभ नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 103 . अशुभ नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर के आंगोपांग असुन्दर होते है उसे "**अशुभ नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 104 . सूक्ष्म नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर जिस कर्म के उदय से ऐसे शरीर की प्राप्ति होती हो जो न किसी से रोका जा सकता हो और न किसी को रोक सकता हो उसे "**सूक्ष्म नाम कर्म**" कहते है।

प्रश्न 105 . बादर नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर जिस कर्म के उदय से ऐसे शरीर की प्राप्ति हो जो दूसरे से रोका जा सकता हो या दूसरे से रूक सकता हो उसे "**बादर नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 106 . पर्याप्ति नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से अपने-अपने योग्य पर्याप्तियाँ पूर्ण हो उसे "**पर्याप्ति नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 107 . पर्याप्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर . आहार वर्गणा, भाषा वर्गणा, मनो वर्गणा के परमाणुओं को शरीर तथा इन्द्रिय रूप परिणमावने के कारण भूत की जीव की शक्ति की पूर्णता को "**पर्याप्ति**" कहते हैं।

प्रश्न 108 . पर्याप्ति के कितने भेद हैं ?

उत्तर . पर्याप्ति के **छः** भेद हैं –

1. आहार पर्याप्ति
2. शरीर पर्याप्ति
3. इन्द्रिस पर्याप्ति
4. स्वासोच्छ्वास पर्याप्ति
5. भाषा पर्याप्ति
6. मन. पर्याप्ति।

प्रश्न 109 . आहार पर्याप्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर . आहार वर्गणा के परमाणुओं को खल व रस रूप परिणमाने के कारण भूत जीव की शक्ति की पूर्णता को ''**आहार पर्याप्ति**'' कहते है।

प्रश्न 110 . शरीर पर्याप्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर . आहार वर्गणा के जो परमाणु खल व रस रूप परिणमे थे उन परमाणुओं को हड्डी व रक्तादि धातु रूप परिणमने के कारण भूत जीव की शक्ति की पूर्णता को ''शरीर पर्याप्ति'' कहते हैं।

प्रश्न 111 . इन्द्रिय पर्याप्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर . आहार वर्गणा के परमाणु को इन्द्रियादि रूप परिणभाकर उसके द्वारा विषय ग्रहण करने का भूत जीव की शक्ति की पूर्णता को ''**इन्द्रिय पर्याप्ति**'' कहते हैं।

प्रश्न 112 . स्वासोच्छ्वास पर्याप्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर . आहार वर्गणा के परमाणुओ को स्वासोच्छ्वास रूप परिणमाने के कारण भूत जीव की शक्ति की पूर्णता का ''**स्वासोच्छ्वास पर्याप्ति**'' कहते हैं।

प्रश्न 113 . भाषा पर्याप्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर . आहार वर्गणा के परमाणुओ को वचन रूप परिणमाने के कारण से भूत जीव की शक्ति की पूर्णता को ''**भाषा पर्याप्ति**'' कहते हैं।

प्रश्न 114 . मनः पर्याप्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर . मनो वर्गणा के परमाणुओं को हृदय स्थान में अष्ट कमल के आकार का परिणमाकर उसके द्वारा सोचने–विचारने के कारण भूत जीव की शक्ति की पूर्णता को ''**मनः पर्याप्ति**'' कहते हैं।

प्रश्न 115 . किस जीव की कितनी पर्याप्तियाँ होती है ?

उत्तर . एक इन्द्रिय जीव के भाषा व मन के बिना चार पर्याप्तियाँ विकलत्रय व असैनी पंचेन्द्रिय जीव के मन के बिना पाँच पर्याप्तियाँ तथा सैनी पंचेन्द्रिय जीव के छह पर्याप्तियाँ होती हैं।

प्रश्न 116 . पर्याप्तियों के प्रारंभ व पूर्णता का समय कितना है ?

उत्तर . पर्याप्तियों का प्रारम्भ एक साथ होता है पर पूर्णता क्रमशः अन्तर्मुहुत में होती है।

प्रश्न 117 . क्या सभी पर्याप्तियॉ एक साथ पूर्ण होती हैं ?

उत्तर . नही, पहली से दूसरी का, दूसरी से तीसरी का इस प्रकार छठी पर्याप्ति तक का काल क्रम से बडा–बडा अन्तर्मुहुत है।

प्रश्न 118 . अपर्याप्त नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से पर्याप्तियॉ पूर्ण नहीं होती हैं उसे ''**अपर्याप्त नाम कर्म**'' कहते हैं।

प्रश्न 119 . अपर्याप्त नाम कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर . अपर्याप्त नाम कर्म के **दो** भेद है –

1. लब्ध अपर्याप्तक 2. निवृत्ति अपर्याप्तक

प्रश्न 120 . लब्ध अपर्याप्तक किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म की एक पर्याप्ति पूर्ण नहीं होती है तथा स्वॉस अठारहवें भाग में मरण हो जाता है उसे ''**लब्ध अपर्याप्तक**'' कहते हैं।

प्रश्न 121 . निवृत्य पर्याप्तक किसे कहते हैं ?

उत्तर . नियम से जो जीव अपनी पर्याप्त पूर्ण करता है उसे ''**निवृत्यपर्याप्तक**'' कहते हैं।

प्रश्न 122 . स्थिर नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शरीर की धातु अपधातु अपने–अपने स्थान पर स्थिर रहे, शरीर स्वस्थ रहे उसे ''**स्थिर नाम कर्म**'' कहते हैं।

प्रश्न 123 . अस्थिर नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से धातु उपधातु रहे शरीर अस्वस्थ रहे उसे ''**अस्थिर नाम कर्म**'' कहते हैं।

प्रश्न 124 . आदेय नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से जीव की बहुत मान्यता है उसे "**आदेय नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 125 . अनादेय नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से जीव की मान्यता नहीं होती उसे "**अनादेय नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 126 . यश कीर्ति नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से विद्यमान अविद्यमान पुण्य गुणों की प्रसिद्धि होती है उसे "**यश कीर्ति नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 127 . अयश कीर्ति नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से विद्यमान अविद्यमान दोषों की प्रसिद्धि होती है उसे "**अयश कीर्ति नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 128 . तीर्थकर नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से समवशरण विभूति अर्हंत पद की प्राप्ति होती है उसे "**तीर्थकर नाम कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 129 . नाम कर्म किसके समान हैं ?

उत्तर नाम कर्म चित्रकार के समान है जिस प्रकार चित्रकार छोटे–बड़े सुन्दर–असुन्दर अनेक चित्रों का निर्माण करता है उसी प्रकार नाम कर्म भी विविध रूपो में जीव का निर्माण करता है।

प्रश्न 130 . नाम कर्म का बन्ध कैसे होता है ?

उत्तर . मन वचन काय की कुटिलता, विसंवाद, आंगोपांग का छेदन, शौकीन भेष धारण कर रूपाभिमान, अत्याधिक श्रृंगार, निर्वाल्य, द्रव्य ग्रहण, उद्यान, आश्रय, स्थान, प्रतिमास्थान, विनाश, पाप कर्म जीविका आदि से अशुभ नाम कर्म का एवं मन वचन काय की सरलता अविसंवाद धार्मिक जीवों के प्रति आदर–भाव संसार भीरूता अप्रमोद आदि से शुभ नाम कर्म का बन्ध होता है।

प्रश्न 131 . नाम कर्म का बन्ध कितने समय तक होता है ?

उत्तर . नाम कर्म का उत्कृष्ट बन्ध 20 कोड़ा–कोड़ी सागर जघन्य बन्ध 8 मुहुर्त का होता है।

प्रश्न 132 . नाम कर्म के अभाव से कौन सा गुण प्रकट होता है ?

उत्तर . नाम कर्म के अभाव से "सूक्ष्मत्व गुण" प्रकट होता है।

अति परिचयादवज्ञा संतत गमनान्निरादो भवति।
मलये भिल्ल पुरन्ध्री चन्दन तरू मिन्धनं कुरुते।।

अर्थ– अधिक परिचय से अवज्ञा होने लगती है किसी के घर निरन्तर जाने से अनादर होने लगता है क्योंकि मलयांचल पर रहने वाली भिलनी चन्दन वृक्ष को ईधन बना लेती है।

मक्षिकाः वृणंइच्छान्ति धनमिच्छन्ति पार्थिवाः।
नीचाः कलहमिच्छन्ति शान्तिमिच्छन्ति साधवाः।।

अर्थ– मक्खियाँ घाव चाहती हैं, राजा धन चाहते हैं, नीच कलह चाहते हैं और साधु शान्ति चाहते है।

ब्याजे स्यात् द्विगुणं वित्तं व्यापारे च चर्तुगुणं।
क्षेत्रे शत गुणं वित्तं दानेऽनन्त गुणं भवेत्।।

अर्थ– ब्याज से दुगुना, व्यापार से चौगुना, खेत से सौ गुना और दान देने से अनन्त गुणा लाभ होता है।

गोत्र कर्म

90

मुनियों सा आचार करे, या साधु की संगत करते।
लोक पूज्य कुल में जन्में, जो उच्च गोत्री वे होते।।
इनसे जो विपरीत रहें, वह नीच गोत्र है दुखकारी।
कुम्भकार सा ऊँचा नीचा, कर्म करे यह अति भारी।।90।।

अर्थ

मुनियो के समान जिनका आचरण है। या जो साधु की सगति करता है। लोक पूज्य कुलों मे उत्पन्न हुआ है वह गोत्री कहलाता है तथा जो इनमे विपरीत है वह नीच गोत्री है वह नीच गोत्री है। यह नीच गोत्र दुखकारी है, गोत्र कर्म कुम्भकार के समान ऊँचा–नीचा करता रहता है।

प्रश्न 1 . गोत्र कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर जिस कर्म के उदय से ऊँच या नीच कुलों में जन्म होता है उसे **''गोत्र कर्म''** कहते हैं।

प्रश्न 2 . गोत्र कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर . गोत्र कर्म के **दो** भेद हैं।

1. उच्च गोत्र 2. नीच गोत्र

प्रश्न 3 . उच्च नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से लोक पूजित कुल मे जन्म होता है उसे **''उच्च गोत्र''** कहते है।

अथवा

जो जिन दीक्षा के योग्य आचरण करते हैं, साधु की संगति करते हैं। उनकी परम्परा को **''उच्च गोत्र''** कहते हैं।

प्रश्न 4 . नीच गोत्र किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से नीच कुल में जन्म होता है। उसे **''नीच गोत्र''** कहते हैं।

प्रश्न 5 . गोत्र कर्म किसके समान है ?

उत्तर . गोत्र कर्म कुम्भकार के समान है।

जैसे : कुम्भकार छोटे–बडे बर्तनों का निर्माण करता है उसी प्रकार गोत्र कर्म भी ऊँच–नीच कुलों में जीव को **जन्म देता है।**

प्रश्न 6 . गोत्र कर्म का बन्ध कैसे होता है ?

उत्तर . आठ मद करने से, पर की निन्दा करने से, धार्मिक जन की हँसी से, झूठा यश लूटने से, गुरू का तिरस्कार करने से नीच गोत्र का, एव आठ मद न करने से, बड़प्पन का मान होने से, धार्मिक व्यक्ति की हँसी न करने से, गुरूजनों का आदर करने से उच्च गोत्र का बन्ध होता है।

प्रश्न 7 . गोत्र कर्म का बन्ध कितने समय तक होता है ?

उत्तर . गोत्र कर्म का बन्ध अधिक से अधिक 20 कोडा–कोडी सागर कम से कम अन्तर्मुहूर्त का बन्ध होता है।

प्रश्न 8 . गोत्र कर्म के अभाव में कौन सा गुण प्रकट होता है ?

उत्तर . जिस गोत्र कर्म के अभाव से "**अगुरू लघुत्व गुण**" प्रकट होता है।

जात रूपधरान् दृष्टवा साधून व्रत गुणान्तिता।
सञ्जुगुप्सा करिष्यन्ति महामोहान्वितास्तु ते।।

अर्थ– जो व्रत रूपी गुणो से सहित दिगम्बर मुद्राधारी साधुओं को देखकर ग्लानि करते हैं वे तीव्र मिथ्यात्व से राहित हैं।

देवनिन्दी दरिद्री स्यात् गुरूनिन्दी च पातकी।
शास्त्र निन्दी भवेत् कुष्ठी गोत्र निन्दी कुलक्षयी।।

अर्थ– देव की निन्दा करने वाला दरिद्र होता है, गुरू की निन्दा करने वाला पातकी होता है, शास्त्र की निन्दा करने वाली कुष्ठी होता है और गोत्र की निन्दा करने वाला कुलक्षयी होता है।

अन्तराय कर्म

91

स्वपर अनुग्रह करने में यह, विघ्न ही डाला करता है।
भण्डारी सा रोक लगाकर, कार्य निकाला करता है।।
पंच प्रकृति इसकी बलशाली, दान लाभ अरूँ भोग कहाँ।
शक्ति को जो क्षीण करें, वह वीर्य अरूँ उपभोग महा।।91।।

अर्थ

स्व पर अनुग्रह करने मे जो विघ्न डालता है। वह अन्तराय कर्म है। अन्तराय कर्म भण्डारी सा रोक लगाकर अपना कार्य करता है। इस कर्म की बलशाली पॉच प्रकृतियॉ है। दान, लाभ, भोग, उपभोग और शक्ति को क्षीण करने वाला वीर्यान्तराय कर्म है।

प्रश्न 1 . अन्तराय कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से स्व और पर के उपकार मे विघ्न उत्पन्न होता है। उसे "**अन्तराय कार्य**" कहते है।

प्रश्न 2 . अन्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . अन्तराय कर्म के **पाँच** भेद है –

1. दानान्तराय
2. लाभान्तराय
3. भोगान्तराय
4. उपभोगान्तराय
5. वीर्यान्तराय कर्म

प्रश्न 3 . दानान्तराय किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से दान देने में विघ्न उत्पन्न हाता है। उसे "**दानान्तराय कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 4 . लाभान्तराय कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से इच्छित वस्तु की प्राप्ति में विघ्न उत्पन्न होता है उसे "**लाभान्तराय कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 5 . भोगान्तराय कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से भोग वस्तु की प्राप्ति में विघ्न उत्पन्न होता है उसे "**भोगान्तराय कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 6 . उपभोगान्तराय कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से बार–बार उपभोग में आने वाली वस्तुओं की प्राप्ति में विघ्न उत्पन्न होता है उसे "**उपभोगान्तराय कर्म**" कहते हैं।

प्रश्न 7 . वीर्यान्तराय कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस कर्म के उदय से शक्ति के विकास में विघ्न उत्पन्न होता है उसे "**वीर्यान्तराय कर्म**" कहते है।

प्रश्न 8 1 . अन्तराय कर्म किसके समान है ?

उत्तर . अन्तराय कर्म भण्डारी के समान है। जिस प्रकार भण्डारी (खजांची) किसी को कुछ देने में विघ्न उत्पन्न करता है। उसी प्रकार अन्तराय कर्म भी दानादि करने में विघ्न उत्पन्न करता है।

प्रश्न 9 . अन्तराय कर्म का बन्ध कैसे होता होती है ?

उत्तर . शुभ कार्य में विघ्न उत्पन्न करने से, वैभव देखकर आश्चर्य करने से, द्रव्य का त्याग न करने से, निर्माल्य का द्रव्य खाने से, धर्म का नाश करने से, अंग छेदन करने से, शुद्ध अहिंसक भोगोपभोग सामग्री के उपयोग मे विघ्न करने से अन्तराय कर्म का बन्ध होता है।

प्रश्न 10 . अन्तराय कर्म के नाश से कौन सा गुण उत्पन्न होता है ?

उत्तर . अन्तराय कर्म के नाश से "**अनन्त वीर्य**" गुण प्रकट होता है।

विद्यामित्रं प्रवासेषु भार्या मित्रं ग्रहेसु च।
व्याधितस्यौषधं मित्रं धर्मोमित्रं मृतस्य च।।

अर्थ– प्रवास में विद्या मित्र है, घर में स्त्री मित्र है रोगी को औषध मित्र है और मृत मनुष्य को धर्म मित्र है।

संयम धारो तप करो मन मत करो अधीर।
तरूवर बढ़त फलत वही जो पावे शुचि नीर।।

दर्शन विशुद्धि-भावना

92

सम्यक दर्शन के बिन प्राणी, मिथ्या दृष्टि कहलाता।
दीर्घ काल तक फिरता रहता, दुर्गति के चक्कर खाता।।
दर्श विशुद्धि उनकी होती, दोष पचीसों जो तजता।
जल से भिन्न कमल् वत् रहता, स्व आतम को वह भजता।।92।।

अर्थ

सम्यक् दर्शन के बिना यह प्राणी मिथ्या दृष्टि कहलाता है। और दीर्घकाल तक दुर्गतियों में चक्कर खाता रहता है। इस ससार में जिस जीव का सम्यक् दर्शन शुद्ध होता है वह जीव 25 दोषों को त्याग देता है तथा संसार में जल से भिन्न कमल वत् रहता है। और आत्मा की भावना भाता रहता है।

प्रश्न 1 . **दर्शन विशुद्धि भावना किसे कहते हैं ?**

उत्तर . 25 दोषो को टालकर आत्म श्रद्धान को दृढ करना **"दर्शन विशुद्धि भावना"** है।

प्रश्न 2 . **सम्यक दर्शन के कितने भेद हैं ?**

उत्तर सम्यक् दर्शन के **तीन** भेद है –

1. उपशम् सम्यकदर्शन
2. क्षयोपशम सम्यकदर्शन
3. क्षायिक सम्यकदर्शन

प्रश्न 3 . **उपशम् सम्यकदर्शन किसे कहते हैं ?**

उत्तर अनन्तानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ मिथ्यात्व सम्यक् मिथ्यात्व सम्यक् प्रकृति के उपशम से जो सम्यकदर्शन होता है उसे **"उपशम सम्यकदर्शन"** कहते हैं।

प्रश्न 4 . **क्षयोपशम सम्यक् दर्शन किसे कहते हैं ?**

उत्तर . अनन्तानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ मिथ्यात्व सम्यक् मिथ्यात्व इन छः प्रकृति का उदयाभावी क्षय और इन्हीं का सद्अवस्था रूप उपशम तथा देशघाति सम्यक् प्रकृति का उदय में जो तत्वार्थ श्रद्धान होता है उसे **"क्षयोपशम सम्यक्दर्शन"** कहते हैं। अथवा सम्यक् प्रकृति का वेदन कराने वाले समयक् दर्शन को **"क्षयोपशम् सम्यकदर्शन"** कहते हैं।

प्रश्न 5 . **क्षायिक सम्यक् दर्शन किसे कहते हैं ?**

उत्तर . दर्शन मोहनीय के सर्वथा क्षय होने पर जो सम्यक् दर्शन होता है वह क्षायिक सम्यक् दर्शन है।

प्रश्न 6 . कौन सा सम्यक् दर्शन कितने समय तक होता है ?

उत्तर . उपशम् सम्यक दर्शन अन्तर्मुहूर्त क्षायोपशमिक सम्यकदर्शन 60 सागर तक क्षायिक सम्यकदर्शन होकर कभी छूटता नहीं है।

प्रश्न 7 . सम्यक् दर्शन के बिना इस जीव की क्या स्थिति होती है ?

उत्तर . सम्यक् दर्शन के बिना यह जीव मिथ्या दृष्टि कहलाता है। तथा दीर्घकाल तक दुर्गति रूप संसार में चक्कर लगाता है। जिससे उसकी दयनीय स्थिति होती है।

प्रश्न 8 . सम्यक् दर्शन रहित जीव किसके चक्कर लगाता है ?

उत्तर . सम्यक् दर्शन रहित जीव दुर्गति रूप ससार में 84 लाख योनियों के चक्कर लगाता है।

प्रश्न 9 . चौरासी लाख योनियाँ कौन सी है ?

उत्तर . चार गतियॉ होती हैं उसमे पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, इत्तर, निगोद, नित्य निगोद प्रत्येक की सात–सात लाख योनि, वनस्पति की 10 लाख योनि, 2 इन्द्रिय की 2 लाख योनि, 3 इन्द्रिय की 3 लाख योनि, 4 इन्द्रिय की 2 लाख योनि, पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चों की 4 लाख योनि, देवो की 4 लाख योनि, नारकीयों की 4 लाख योनि, मनुष्यों की 14 लाख योनियॉ हैं। इस प्रकार 84 लाख योनियॉ हैं। इन 84 लाख योनियॉ में सम्यक् दृष्टि, नारकीय देव, मनुष्य व पचेन्द्रिय तिर्यंच सम्यकत्व सहित होने के कारण सद्गति में हैं। सम्यकत्व रहित सभी जीव अपेक्षाकृत दुर्गति में है। मिथ्यात्व के कारण दुर्गति में चक्कर खाते है।

प्रश्न 10 . दर्शन विशुद्धि किसकी होती है ?

उत्तर . जो 25 दोषों को तजता है उसकी "दर्शन विशुद्धि" होती है।

प्रश्न 11 . 25 दोष कौन से हैं ?

उत्तर . 8 शंकादि दोष (आठ अगों के विपरीत मान्यता) 8 भेद (ज्ञान, पूजा, कुल, जाति, बल, ऋषि, तप, शरीर) मूढ़ता (देव, धर्म, गुरू) 6 अनायतन कुदेव, कुशास्त्र, कुगुरू एवं इन तीनों के सेवक ये 8+8+3+6=25 दोष हैं।

प्रश्न 12 . दर्शन विशुद्धि का धारक जीव संसार में कैसे रहता है ?

उत्तर . दर्शन विशुद्धि का धारक जीव जल से भिन्न कमलवत रहता है, और आत्मा का सदैव चिन्तवन करता है।

विनय सम्पन्नता-भावना

93

रत्नत्रयधारी मुनियों के, चरणों में जो झुकता है।
देव धरम संयमी विनय से, कर्माश्रव झट रूकता है।।
विनय मोक्ष का द्वार कहा, यह निराकारतन का दाता।
विनय से सम्पन्न जीव ही, अतिशय जन्म के दस पाता।।93।।

अर्थ

जो रत्नत्रयधारी मुनियों के चरणों मे झुकता है और देव धरम संयमी की विनय करता है, उस जीव का कर्माश्रव तुरन्त रूक जाता है क्योंकि विनय को मोक्ष का द्वार कहा है। यह विनय निराकार तन अर्थात् सिद्ध पद को प्रदान करने वाला है। विनय से सम्पन्न जीव ही जन्म के दस अतिशय को प्राप्त करता है।

प्रश्न 1 . विनय सम्पन्न भावना किसे कहते हैं ?
उत्तर . रत्नत्रयधारी मुनि एवं सच्चे देव धर्म संयमी पुरूषों के प्रति सत्कार सहित भक्ति पूर्ण व्यवहार करना "**विनय सम्पन्न भावना**" है।

प्रश्न 2 . विनय करने से क्या होता है ?
उत्तर . संयम सहित अपने से बडों की विनय करने से कर्म का आश्रव रूकता है।

प्रश्न 3 . विनय से क्या कहा है ?
उत्तर . विनय को मोक्ष का द्वार और निराकार तन अर्थात् सिद्ध पद का दाता कहा है।

प्रश्न 4 . विनय कितने प्रकार के होते है ?
उत्तर . विनय **तीन** प्रकार के होते हैं –
1. मानसिक विनय 2. वाचनिक विनय 3. कायिक विनय

प्रश्न 5 . मानसिक विनय किसे कहते हैं ?
उत्तर . हिंसादि पाप रूप, सम्यक्त्व विराधना, रूप परिणाम का न होना तथा दया धर्म उपकार रूप परिणाम का होना, मन से नम्र होना "**मानसिक विनय**" है।

प्रश्न 6 . वाचनिक विनय किसे कहते हैं ?

उत्तर . पूजा, प्रशंसा, रूप वचन, हित–प्रिय वचन, सूत्रानुसार वचन, अनिष्ठुर वचन और कर्कशता रहित वचन का बोलना "**वाचनिक विनय**" है।

प्रश्न 7 . कायिक विनय किसे कहते हैं ?

उत्तर . अपने से बड़ों को देखकर खड़े होना, नमस्कार करना, आसन देना, उपकरण देना, स्थान देना, वैय्यावृत्ति करना, ओदशानुसार कार्य करना "**कायिक विनय**" है।

प्रश्न 8 . विनय से कौन से गुण प्रकट होते हैं ?

उत्तर . विनय से कीर्ति की प्राप्ति होती है, सबसे मैत्री का भाव होता है, अपने मान का अभाव होता है; गुरूजनों से बहुमान प्राप्त होता है। तीर्थकरो की आज्ञा का पालन आदि अनेक गुण प्रकट होते है।

प्रश्न 9 . विनय से सम्पन्न जीव क्या प्राप्त करता है ?

उत्तर . विनय से सम्पन्न जीव जन्म से "दस अतिशय" को प्राप्त करता है।

प्रश्न 10 . जन्म के दस अतिशय कौन से हैं ?

उत्तर .

1. अत्यन्त सुन्दर शरीर
2. अत्यन्त सुगन्धित शरीर
3. पसीना रहित शरीर
4. मल मूत्र रहित शरीर
5. हित–मित प्रिय–वचन बोलना
6. अतुल्य बल
7. समचतुरस्त्र संस्थान
8. सफेद रक्त का होना
9. वज्र–वृषभ नारांच संहनन
10. शरीर में 108 लक्षण का होना।

प्रश्न 11 . जन्म के दस अतिशय किसके होते हैं ?

उत्तर . जन्म के बाद दस अतिशय तीर्थकर के होते हैं।

प्रश्न 12 . तीर्थकर किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो तीर्थ का संचालन करते हैं उसे "**तीर्थकर**" कहते हैं।

अतिथि देखकर तिथि गिने मनवा करे उदास।
"पुष्पदंत" उस जीव का मत करना विश्वास।।

शील व्रतेष्वनतिचार-भावना

94

सहस अठारह दोष रहित, जो शील व्रतों को अपनाता।
इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र आदि से, वह आदर को है पाता।।
अग्नि पानी शूली सिंहासन, अजगर माला बन जाता।
शीलव्रत की महिमा न्यारी, अपयश यश में ढल जाता।।94।।

अर्थ

अठारह हजार दोषों से रहित शीलव्रतों को जीव धारण करता है वह जीव इन्द्र नरेन्द्र, सरेन्द्र आदि से आदर को प्राप्त करता है। शील व्रतों के प्रभाव से अग्नि, पानी, शूली, सिहासन अजगर फूलों की माला हो जाती है। शील व्रत की महिमा अचिन्त्य है अनुपम है शील व्रत के कारण से अपयश भी यश मे परिवर्तित हो जाता है।

प्रश्न 1 . **शीलव्रतेष्वनतिचार भावना किसे कहते हैं ?**
उत्तर निरतिचार सप्त शील व्रतों का पालन करना ही "**शील व्रतेष्वनतिचार भावना**" है।

प्रश्न 2 . **18000 दोषों से रहित शील व्रतों को कौन धारण करते हैं ?**
उत्तर 18000 दोषो से रहित शील व्रतों को अरहंत भगवान धारण करते हैं।

प्रश्न 3 . **शील व्रतों को धारण करने वाला कितने इन्द्रों से आदर पाता है ?**
उत्तर शील व्रतों को धारण करने वाला 100 इन्द्रों से आदर पाता है।

प्रश्न 4 . **सौ इन्द्र कौन-कौन से हैं ?**
उत्तर . भवनवासी देवों के 40, व्यंतर देवों के 32, कल्पवासी देवों के 24, सूर्य, चन्द्रमा मुनष्यों का राजा चक्रवर्ती, तिर्यन्चों का राजा शेर – 40+31+24+1+1+1+1=100 इन्द्र होते हैं।

प्रश्न 5 . **शील व्रत की क्या महिमा है ?**
उत्तर . शील व्रत के प्रभाव से सीता ने अग्नि को पानी बनाया, सोमा सती ने अजगर को फूलों की माला बनाई, सुदर्शन सेठ ने शूली को सिहासन वनाया। ये सभी अतिशय शील व्रत के माध्यम से सहज हुए। यह शील व्रत की महिमा है।

प्रश्न 6 . **शील व्रत के माध्यम से क्या होता है ?**
उत्तर . शील व्रत के माध्यम से अपयश यश में बदल जाता है।
जैसे - मनोरमा, सीता, सुभद्रा, नीली, सोमा सुदर्शन के लाञ्छन कष्ट समाप्त हुए।

अभीक्षण ज्ञानोपयोग भावना

95

आलस तज कर मन प्रसन्न कर, जो जिन आगम पढ़ते हैं।
लोकालोक का ज्ञान करें, और आगम हिय में धरते हैं।।
केवल ज्ञान की प्राप्ति हेतु, करते ज्ञानाभ्यास हैं।
दिव्य ध्वनि प्रकटाने का तो, यही सफल प्रयास है।।95।।

अर्थ

जो आलस्य को छोडकर मन को प्रसन्न करके जिनेन्द्र देव कथित आगम को पढते है वे लोक आलोक का ज्ञान प्राप्त करते है और आगम को अपने ह्रदय मे धारण करते हैं। केवल ज्ञान की प्राप्ति हेतु पुण्यात्मा प्रतिक्षण ज्ञान का अभ्यास करते है। क्योंकि अभीक्षण ज्ञानोपयोग ही दिव्य ध्वनि प्रकटाने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है।

प्रश्न 1 . अभीक्षण ज्ञानोपयोग किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिनेन्द्र देव कथित आगम का पढना–पढ़ाना उपदेश करना, श्रुत ज्ञान में निरन्तर मन लगाये रखना, "अभीक्षण ज्ञानोपयोग" है।

प्रश्न 2 . ज्ञान किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिससे तत्व का बोध हो, मन का निरोध हो, आत्मा शुद्ध हो उरो "**ज्ञान**" कहते हैं।

प्रश्न 3 . ज्ञानाभ्यास कैसे करना चाहिए ?

उत्तर . आलस्य को छोड़कर मन को प्रसन्न कर ज्ञानाभ्यास करना चाहिए।

प्रश्न 4 . आलस्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . श्रेष्ठ कार्य करने की सामर्थ्य होने के उपरान्त भी कार्य करने की इच्छा न होना "**आलस्य**" है।

प्रश्न 5 . ज्ञानार्जन हेतु कितनी बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

उत्तर . ज्ञानार्जन हेतु **आठ** बातों का ध्यान रखना चाहिए –

1. कालाचार 2. विनायाचार 3. उपाधानाचार
4. बहुमानाचार 5. अनिहन्वाचार 6. व्यञ्जनाचार
7. अर्थाचार 8. उभयाचार

प्रश्न 6 . कालाचार किसे कहते हैं ?

उत्तर . स्वाध्याय के समय में ही सम्यक् शास्त्रों का पढना एवं व्याख्यान करना "**कालाचार**" है।

प्रश्न 7 . स्वाध्याय का समय कौन सा है ?

उत्तर . सूर्योदय के 48 मिनट बाद से लेकर दोपहर के 48 मिनट पूर्व तक तथा दोपहर के 48 मिनट बाद से सायंकाल के 48 मिनट पूर्व तक तथा सूर्यास्त के 48 मिनट से लेकर अर्द्धरात्रि के 48 मिनट पूर्व तक तथा अर्द्धरात्रि के 48 मिनट बाद से लेकर सूर्यास्त के 48 मिनट पूर्व तक स्वाध्याय का समय है।

प्रश्न 8 . स्वाध्याय के प्रारंभ में एवं अन्त में क्या करना चाहिए ?

उत्तर . स्वाध्याय के प्रारम्भ मे मंगलाचारण कर नौ बार णमोकार मंत्र एवं अन्त मे क्षमा मॉगकर नौ बार णमोकार मंत्र पढकर स्वाध्याय का अन्त करना चाहिए।

प्रश्न 9 . कौन-कौन से दिन स्वाध्याय नहीं कर सकते ?

उत्तर . अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा, अमावस्या एवं अष्टान्हिका पर्व में सूत्र ग्रन्थों का स्वाध्याय नही करना चाहिए।

प्रश्न 10 . कौन से ग्रन्थ को असमय में नहीं पढ़ सकते ?

उत्तर . षट्खण्डागम, कषायपाहुड, महाबंध ग्रन्थ को अर्थात् सूत्र ग्रन्थ को असमय मे नही पढ सकते। तथा आराधना, मरण स्तुति, आवश्यक क्रिया ग्रन्थ धर्म कथा सम्बन्धी पुराण ग्रन्थ का स्वाध्याय असमय मे किया जा सकता है।

प्रश्न 11 . असमय में अध्ययन करने से क्या हानि होती है ?

उत्तर . असमय में अर्थात् अष्टमी को सूत्र ग्रन्थ का अध्ययन करने से गुरू शिष्य का वियोग होता है। कृष्ण चतुर्दशी और अमावस्या को अध्ययन करने से विद्या एवं उपवास आदि तप का नाश होता है। पूर्णमासी का अध्ययन कलह और चतुर्दशी का अध्ययन विघ्न को करता है। मध्यान्ह काल में किया गया अध्ययन जिन रूप को नष्ट करता है। दोनों संध्या कालों में किया गया अध्ययन व्याधि रोग को उत्पन्न करता है। तथा मध्यरात्रि को किया गया अध्ययन द्वेष को उत्पन्न करता है।

प्रश्न 12 . विनयाचार किसे कहते हैं ?

उत्तर . मन–वचन–काय की शुद्धि पूर्वक तथा सूत्र के अनुसार अर्थ को समझते हुए प्रणाम करके ग्रन्थ का अध्ययन "**विनयाचार**" है।

प्रश्न 13 . उपधानाचार किसे कहते हैं ?

उत्तर . सूत्र ग्रन्थ प्रारम्भ करने से पूर्व ग्रन्थ की समाप्ति तक के लिये किसी भी वस्तु के त्याग का संकल्प ग्रहण करना "**उपधानाचार**" है।

प्रश्न 14 . बहुमानाचार किसे कहते हैं ?

उत्तर . पूजा, सत्कार आदि करके निर्जरा हेतु ग्रन्थ का अध्ययन करना "**बहुमानाचार**" है।

प्रश्न 15 . अनिहन्वाचार किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस ग्रन्थ को पढकर या जिस गुरू से ग्रन्थ अध्ययन कर ज्ञानी हुये हैं। उनका नाम न छुपाना "**अनिहन्वाचार**" है।

प्रश्न 16 . व्यञ्जनाचार किसे कहते हैं ?

उत्तर . वर्ण, पद, वाक्य एवं व्याकरण की शुद्धिपूर्वक शुद्ध पाठ का उच्चारण करना "व्यञ्जनाचार" है।

प्रश्न 17 . अर्थाचार किसे कहते हैं ?

उत्तर . सूत्रों के अर्थ को समझना अर्थात् अनेकान्तात्मक अर्थ को समझकर पाठ करना "**अर्थाचार**" है।

प्रश्न 18 . उभयाचार किसे कहते हैं ?

उत्तर . शब्द का अर्थ की शुद्धि के साथ ग्रन्थों का अध्ययन करना "**उभयाचार**" हैं।

प्रश्न 19 . विनयपूर्वक स्वाध्याय करने से क्या लाभ है ?

उत्तर . विनयपूर्वक स्वाध्याय करने से शास्त्र प्रमाद से विस्मृत हो जाये तो वह अगले भव में प्रकट होता है और ज्ञान को प्राप्त करा देता है।

प्रश्न 20 . अभीक्षण ज्ञानोपयोग भावना का क्या फल है ?

उत्तर . अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग से केवल ज्ञान की प्राप्ति होती है और दिव्य ध्वनि सर्वांग से ख़िरती है।

संवेग-भावना

96

वैराग्य भाव से भरे हुए हैं, माता भ्राता पर माने।
तन से मोह ममत्व तजे, वे अन्तर आतम प्रकटाने।।
पर से प्रीति विशेष करें, और धर्म ध्वजा फहराते हैं।
कल्याणक वे पंच प्राप्त कर, सिद्ध शिला बस जाते हैं।।96।।

अर्थ

जो वैराग्य भाव से परिपूर्ण है माता–पिता, भाई–बहन आदि को पर मानते है तथा स्वयं के परमात्मा को प्रकट करने तन से मोह और ममत्व को छोडते है पर जीवों से विशेष प्रीति करते हैं और पंच कल्याणक से सुशोभित हो सिद्ध शिला में बस जाते है।

प्रश्न 1 . संवेग भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर . संसार शरीर भोगों से भयभीत होकर वैराग्य की भावना से परिपूर्ण होना "**संवेग भावना**" है।

प्रश्न 2 . वैराग्य किसे कहते हैं ?

उत्तर संसार से हटकर संन्यास को धारण करना वैराग्य है।

प्रश्न 3 . वैरागी जीव किसको क्या मानता है ?

उत्तर . वैरागी जीव मोहाभिभूत माता–पिता, भाई–बहन आदि को साक्षात् ससार का कारण मानता है।

प्रश्न 4 . वैरागी जीव क्या करता हैं ?

उत्तर . वैरागी जीव अपनी आत्मा को प्राप्त करने तथा मन से मोक्ष ममत्व हटाने का प्रयास करता है।

प्रश्न 5 . मोह किसे कहते हैं ?

उत्तर . पर वस्तु के प्रति आसक्ति के भाव को मोह करते है।

प्रश्न 6 . धर्म ध्वजा कौन फहराते हैं ?

उत्तर . जो गृहस्थ दया दान शील उपवास से पूर्ण होते हैं तथा जो साधन ज्ञान ध्यान तप आचरण से युक्त होते हैं वे धर्म ध्वजा फहराते हैं।

प्रश्न 7 . धर्म ध्वजा फहराने वाले क्या करते हैं ?

उत्तर . धर्म ध्वजा फहराने वाले जीव संसार के समस्त जीवों के सुख की कामना के साथ विशेष प्रीति रखते हैं।

प्रश्न 8 . समस्त जीवों के प्रीति भाव रखने वाले जीव किसे प्राप्त करते हैं ?

उत्तर . समस्त संसारी जीवों के प्रति प्रीति भाव रखने वाले जीव पंचकल्याणक को प्राप्त करते हैं।

प्रश्न 9 . पंचकल्याणक किसे कहते हैं ?

उत्तर . तीर्थकर के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, निर्वाण के समय होने वाले उत्सव विशेष को पंचकल्याणक कहते हैं।

प्रश्न 10 . कल्याणक कितने व कौन-कौन से हैं ?

उत्तर . कल्याणक **पाँच** होते हैं –

1. गर्भ कल्याणक 2. जन्म कल्याणक 3 तप कल्याणक 4 ज्ञान कल्याणक 5. मोक्ष कल्याणक

प्रश्न 11 . गर्भ कल्याणक किसे कहते हैं ?

उत्तर . तीर्थकर बालक के गर्भ में आने से पूर्व कुबेर द्वारा रत्नो का बरसाना, देवियों द्वारा माता की सेवा होना, माता को शुभ 16 स्वप्न दिखना स्वप्न का फल अपने स्वामी से पूछना, स्वप्न का फल तीर्थकर होना आदि क्रियाओं को गर्भ कल्याणक कहते हैं।

प्रश्न 12 . कुबेर कितने रत्नों की वर्षा करता है ?

उत्तर . कुबेर प्रतिदिन साढे तीन करोड रत्नो की वर्षा करता है।

प्रश्न 13 . माता की सेवा कितनी देवियॉ करती हैं ?

उत्तर . माता की सेवा 56 देवियॉ (कुमारियॉ) करती है।

प्रश्न 14 . माता को सोलह स्वप्न कौन-कौन से दिखाई पड़ते हैं ?

उत्तर . 1. हाथी 2. सिंह 3. कलश करती गज लक्ष्मी 4. बैल 5. युगल माला 6. सूर्य 7. चन्द्रमा 8. युगल मछली 9. युगल कलश 10. मल युक्त सरोवर 11. समुद्र 12. सिंहासन 13. देव विमान 14. धणेन्द्र विमान 15. रत्न राशि 16. निर्धूम अग्नि।

प्रश्न 15 . जन्म कल्याणक किसे कहते हैं ?

उत्तर . इन्द्रासन का कम्पायमान होना, सौधर्म से इन्द्र का आना, शची द्वारा बालक को प्रसूति ग्रह से बाहर लाना, बालक को एरावत हाथी पर बैठाकर सुमेरू पर्वत पर अभिषेक पूर्वक विशेष उत्सव कराना **''जन्म कल्याणक''** है।

प्रश्न 16 . सौधर्म इन्द्र कौन हैं ?

उत्तर . सौधर्म इन्द्र प्रथम स्वर्ग का राजा है।

प्रश्न 17 . ऐरावत हाथी क्या है ?

उत्तर . ऐरावत हाथी सौधर्म इन्द्र का प्रमुख वाहन है। यह ऐरावत हाथी एक लाख योजन का होता है इसके 100 मुख होते हैं मुख में आठ–आठ दाँत होते हैं प्रत्येक दाँत में एक–एक तालाब होता है प्रत्येक तालाब में 125 कमलिनी होती हैं प्रत्येक कमलिनी में 25. 25 कमल के 108 पत्ते एवं उन पर एक–एक देवी नृत्य करती है इसी हाथी को ऐरावत हाथी कहते हैं।

प्रश्न 18 . सुमेरू पर्वत पर अभिषेक कितने कलशों से होता है ?

उत्तर . सुमेरू पर्वत पर तीर्थकर बालक का अभिषेक 1008 कलशों से होता हैं।

प्रश्न 19 . एक कलश कितना बड़ा होता है ?

उत्तर . एक कलश का मुख एक योजन चौडा, चार योजन लम्बा, गहराई आठ योजन की होती है यह देवीपुनीत होता है। (एक योजन चार कोस) का होता है।

प्रश्न 20 . तप किसे कहते हैं ?

उत्तर . तीर्थकर संसार से विरक्त होकर जब दीक्षा को तत्पर होते हैं उस समय देवों द्वारा मनाये गये विशेष उत्सव को तप कल्याणक कहते हैं।

प्रश्न 21 . तप कल्याणक के समय कौन-कौन से देव आते हैं ?

उत्तर . तप कल्याणक के समय 5 वें स्वर्ग से बाल ब्रह्मचारी श्वेत वस्त्रधारी एक भवावतारी लोकान्तिक देव आते हैं और तीर्थकर के द्वारा भाये गये बारह भावना (वैराग्य भावना) की अनुमोदना करते हैं।

प्रश्न 22 . तीर्थंकर के गुरू कौन होते हैं ?

उत्तर . तीर्थंकर स्वयंभू होते हैं वे पंच मुष्ठि केश लोंच कर "**नमः सिद्धेभ्यः**" का उच्चारण कर स्वतः दीक्षा लेते हैं।

प्रश्न 23 . ज्ञान कल्याणक किसे कहते हैं ?

उत्तर . चार घातिया कर्मों के नाश होने पर जो समवशरण की रचना होती है एवं देवों द्वारा चौदह अतिशय प्रगट होते है उसे "**ज्ञान कल्याणक**" कहते है।

प्रश्न 24 . देव कृत चौदह अतिशय कौन से हैं ?

उत्तर . 1. भगवान की अर्धमागधी भाषा का होना। 2. सभी जीवों में आपस में मित्रता का होना। 3. सभी दिशाओ का निर्मल होना। 4. आकाश का निर्मल होना। 5. सभी ऋतुओ के फल फूल एक साथ होना। 6. कॉच के समान पृथ्वी का निर्मल होना। 7. भगवान कि विहार के समय चरणों के नीचे स्वर्ण कमलो की रचना होना। 8. आकाश मे जय–जय शब्द होना। 9. मन्द–मन्द सुगन्धित हवा का चलना। 10. सुगन्धित जल की वृष्टि होना। 11. कटक रहित पृथ्वी का होना। 12. सभी जीवों को आनन्द होना। 13. भगवान के आगे धर्म चक्र का चलना। 14. अष्ट मंगल द्रव्य का साथ होना। ये 14 अतिशय देव कृत होते है।

प्रश्न 25 . मोक्ष कल्याणक किसे कहते हैं ?

उत्तर . अष्ट कर्मों से मुक्त होने पर तीर्थंकर सिद्धशिला पर विराजमान हो जाते हैं और उनके नख और केश पृथ्वी पर छूट जाते है जिनका अग्नि कुमार नामक देव अग्नि सरकार करता है तथा निर्वाण की पूजा होती है इसी उत्सव को मोक्ष कल्याणक कहते है।

प्रश्न 26 . संवेग भावना क्यों पाई जाती है ?

उत्तर . जीवन को पच कल्याणकों से सुशोभित करने तथा सिद्धशिला को प्राप्त करने संवेग भावना पाई जाती है।

तीर्थंकर जगत की महान् आत्मा है वे गृहस्थ धर्म एवं मुनिधर्म दोनों का प्ररूपण करते हैं तब तक मुनि अवस्था में किसी गृहस्थ के यहाँ आहार ग्रहण नहीं कर लेते तब तक कितनी भी साधना कर लेवें वे मुक्ति के पात्र नहीं होते। तीर्थंकर को आहार देने वाला उसी भव में अथवा तीसरे भव में मोक्ष जाता है दाता के भवन में कम से कम 125000 रत्नों की वर्षा तथा अधिक से अधिक साढ़े बारह करोड़ रत्नों की बरसात होती है।

शक्ति तस्त्याग-भावना

97

मुनि आर्यिका श्रावक श्राविका, को नित देते चारों दान।
निज शक्ति के अनुसार ही, करते पात्रों का सम्मान।।
भोग भूमि सु प्राप्त करें, वे और स्वर्गों में राज करें।
देव गति से चयकर प्राणी, नर भव धर स्वराज वरें।।97।।

अर्थ

अपनी शक्ति के अनुसार ही मुनि आर्यिका, श्रावक, श्राविका को चारों प्रकार का दान देना तथा उनका सम्मान करना चाहिए जो शक्ति के अनुसार त्याग को अपनाते है वे देव गति को प्राप्त करते है तथा स्वर्गों मे राज करते है। और वहाँ से च्युत होकर मनुष्य गति को प्राप्त होकर वे अपनी आत्मा को प्राप्त करते है।

प्रश्न 1 . शक्ति तस्त्याग किसे कहते हैं ?

उत्तर अपनी शक्ति के अनुसार स्व और पर के उपकार के लिये चारों प्रकार का दान देना "**शक्ति तस्त्याग**" है।

प्रश्न 2 . चार प्रकार के दान कौन-कौन से हैं ?

उत्तर . 1. आहार दान 2. औषध दान 3. ज्ञान दान 4. अभय दान

प्रश्न 3 . चार प्रकार के दान किसे देने चाहिए ?

उत्तर . अपनी शक्ति के अनुसार पात्रों को चतुर्विध संघ को चार प्रकार का दान देना चाहिए।

प्रश्न 4 . दान करने से क्या होता है ?

उत्तर . दान करने से सुभोग भूमि की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 5 . भोग भूमि किसे कहते हैं ?

उत्तर . जहाँ असि, मसि, कृषि, वाणिज्य, शिल्प, कला ये षट् कर्म नहीं होते तथा भोगों की प्रधानता होती है उसे "**भोग भूमि**" कहते हैं।

प्रश्न 6 . भोग भूमि से मरकर जीव कहाँ जाता है ?

उत्तर . भोग भूमि से मरकर जीव नियम से देव गति जाता है देव गति में भी उत्कृष्ट से दूसरे स्वर्ग तक जाता है।

प्रश्न 7 . देवा गति को प्राप्त कर वह जीव क्या करता हैं ?

उत्तर . देवगति को प्राप्त कर वह जीव अगर सम्यक् दृष्टि होता है तो धरम–ध्यान करता है, तीर्थो की समवशरण आदि की वन्दना करता है, मिथ्या दृष्टि भोगो में लीन रहकर संसार बढ़ता है।

प्रश्न 8 . देव गति में च्युत होकर जीव कहाँ जाता है ?

उत्तर . सम्यक् दृष्टि जीव देवगति चयकर मनुष्य होता है और संयम साधकर स्वराज (मोक्ष) को प्राप्त करता है। तथा मिथ्या दृष्टि जीव मनुष्य तथा तिर्यन्च गति को प्राप्त करता है।

संतोषस्थूलमूलः प्रशमपरिकर स्कन्धं बन्ध प्रप चः।
प याक्षीरोधशाखः स्फुरितशमदलः शील संपत्प्रवालः।।
श्रद्धाम्भः पूरसेकाद् विपुलबल युतैश्वर्य सौन्दर्यभोगः।
स्वर्गादिप्राप्त पुष्पः शिवपदफलदः स्यात्तपः पादपोऽयम्।।

अर्थ– संतोष ही जिसकी मोटी जड है शान्ति समुद्र ही जिसका सुविस्तृत स्कन्ध तना है पञ्चेन्द्रिय दमन ही जिसकी शाखाएँ हैं, प्रकट शान्ति परिणाम ही जिसके पत्ते हैं सपत् ही जिसके पल्लव हैं श्रद्धा रूपी जल के सिचन से जिसका सबल एवं सुविस्तृत सौन्दर्य भोग है स्वर्गादिक जिसमें पुष्प है तथा जो मोक्ष रूपी फल को देने वाला है ऐसा यह तप रूपी वृक्ष है। त्यागरूपी वृक्ष है।

काय पाय कर तप नहीं कीना, आगम पढ़ नहीं मिटी कषाय
धन को जोड़ दान नहीं दीना, कौन काम कीना यहाँ आय

शक्ति तस्तप-भावना

98

भव अर्णव के पार करन को, शक्ति तस्तप अपनावे।
अनशन आदि बारह तप कर, भव अर्णव से तर जावे।।
ग्रीष्म ऋतु पर्वत के ऊपर, शीत ऋतु में नदी समीप।
वर्षा में वे वृक्ष तले, तप कर जलाते केवल दीप।।98।।

अर्थ

भव समुद्र के पार होने के लिए अनशन आदि बारह प्रकार के तपों को अपनाना चाहिए, संसार समुद्र से पार उतारने के लिए नौका के समान है। जो साधक ग्रीष्म ऋतु मे पर्वतो के ऊपर, शीत ऋतु मे नदी के समीप बैठकर तथा वर्षा तथा वर्षा ऋतु में वृक्षों के नीचे तपस्या करते हैं। वे केवल ज्ञान का दीप जलाते हैं।

प्रश्न 1 . शक्ति तस्तप किसे कहते हैं ?

उत्तर . अपनी शक्ति के अनुसार बारह प्रकार के तपों का तपना "**शक्ति तस्तप**" है।

प्रश्न 2 . तप क्या करता है ?

उत्तर . तप संसार रूपी समुद्र से जीव को पार उतारने में नौका का कार्य करता है।

प्रश्न 3 . तपस्या करने वाले साधक को क्या करना चाहिए ?

उत्तर . तपस्या करने वाले साधक को ग्रीष्म ऋतु में पर्वत के ऊपर शीत ऋतु में नदी के तट पर तथा वर्षा ऋतु में वृक्ष के नीचे साधना करनी चाहिए।

प्रश्न 4 . ऐसी साधना करने से क्या होता है ?

उत्तर . ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति में साधना करने से कर्मों की निर्जरा अत्यधिक होती है।

प्रश्न 5 . कर्मो की निर्जरा से क्या होता है ?

उत्तर . कर्मों की निर्जरा होने से केवल ज्ञान का दीप प्रज्ज्वलित होता है।

साधु समाधि-भावना

99

भाव समाधि का इस जग में, बड़े पुण्य से होता है।
साधु समाधि तब भी धारे, रहित कर्म से होता है।।
दो या तीन भवों को पाता, जो करता समाधिमरण।
देवी देवता झट आ करके, सर धरते हैं उनके चरण।।99।।

अर्थ

समाधि का भाव इस ससार मे बहुत पुण्य के उदय से होता है। जब कोई साधु समाधि को धारण करता है   तब कर्मो से रहित होता है। समाधिमरण करने वाला जीव अधिक से अधिक सात–आठ भव और कम से कम दो–तीन भव ससार मे रहता है। समाधिमरण करने वाले जीव के चरणो मे देवी–देवता भी आकर प्रणाम करते है।

प्रश्न 1 . साधु समाधि भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर . उपाधि रहित समाधि को ग्रहण करना अथवा समाधि ग्रहण करने वाले साधक की सेवा करना "**साधु समाधि भावना**" है।

प्रश्न 2 . समाधि कब ग्रहण की जाती है ?

उत्तर . रोग होने पर, वृद्धावस्था मे, देव–मनुष्य–तिर्यञ्च अचेतन कृत उपसर्ग होने पर, शरीर की शक्ति क्षीण होने पर धर्म एव संयम की रक्षा के लिये समाधि ग्रहण की जाती है।

प्रश्न 3 . समाधि कितने प्रकार की होती ?

उत्तर . समाधि **तीन** प्रकार की होती है –

1. प्रयोगमन समाधिमरण 2. इगीनि समाधिमरण
3. भक्त प्रत्याख्यान समाधिमरण।

प्रश्न 4 . प्रयोगमन समाधिमरण किसे कहते हैं ?

उत्तर . स्व और पर के द्वारा सेवा–सुश्रुषा का त्याग करना "**प्रयोगमन समाधिमरण**" है।

प्रश्न 5 . प्रयोगमन समाधिमरण की क्या विशेषता है ?

उत्तर . प्रयोगमन मरण करने वाला साधक एक स्थान पर खड़गासन, पदमासन या शवासन में स्थित रहता है। मल–मत्र का भी त्याग

नहीं करता है तथा कोई देव–दानव मानव उपसर्ग करें, फेंक दें तो भी निश्चल निस्प्रह बने रहते हैं यही "**प्रयोगमन समाधिमरण**" हैं।

प्रश्न 6 . इंगिनी समाधिमरण किसे कहते हैं ?

उत्तर . पर के द्वारा किये गये सेवा–सुश्रुषा का त्याग करना "**इंगिनी समाधिकमरण**" है।

प्रश्न 7 . इंगिनी समाधिमरण की क्या विशेषता है ?

उत्तर . इंगिनी समाधिमरण करने वाला वैय्यावृत्ति चलना, उठना मलमूत्र आदि विसर्जन करना, आहारादि मे प्रवृत्ति आदि क्रिया को स्वय की करता है, अन्य किसी से नहीं कराता है यह इंगिनी समाधिमरण की विशेषता है।

प्रश्न 8 . भक्त प्रत्याख्यान समाधिमरण किसे कहते है ?

उत्तर . मरण का समय निकट जानकर खाद्य, स्वाद, लेय, पेय, इन चार प्रकार के आहार का त्याग करके समता भाव से शरीर का त्याग करना "**भक्त प्रत्याख्यान समाधि**" है।

प्रश्न 9 . भक्त प्रत्याख्यान समाधिमरण के कितने भेद हैं ?

उत्तर . भक्त प्रत्याख्यान समाधिमरण के **तीन** भेद हैं –

1. उत्तम 2. मध्यम 3. जघन्य

प्रश्न 10 . उत्तम भक्त प्रत्याख्यान समाधिमरण किसे कहते हैं ?

उत्तर . 12 वर्ष की सल्लेखना ग्रहण करना अर्थात् प्रारम्भ के 4 वर्ष उत्कृष्ट उपवास आदि काय–क्लेश में व्यतीत करना 4 वर्षो तक दूध–दही आदि 6 रसों का त्याग करना तथा 2 वर्ष तक चावल पानी या चावल, छाछ या नीरस भोजन करना, 1 वर्ष मात्र चावल पानी, छः माह तपस्या एवं छः माह उपवास आदि उत्कृष्ट काय–क्लेश में व्यतीत करना शरीर का त्याग करना "**उत्तम भक्त प्रत्याख्यान समाधिमरण**" है।

प्रश्न 11 . जघन्य भक्त प्रत्याख्यान समाधिमरण किसे कहते हैं ?

उत्तर . अकस्मात मृत्यु के कारण उपस्थित हो जाने पर अन्तर्मुहूर्त (48 मिनट) में आहार पानी का त्याग कर समता भावों से शरीर का त्याग करना "**जघन्य भक्त प्रत्याख्यान समाधिमरण**" है।

प्रश्न 12 . मध्यम भक्त प्रत्याख्यान समाधिमरण किसे कहते हैं ?

उत्तर . उत्तम एवं जघन्य के बीच में मरण की जो भी स्थिति बने उस स्थिति में समता परिणाम धारण कर शरीर का विसर्जन करना **''मध्यम भक्त प्रत्याख्यान समाधिकरण''** है।

प्रश्न 13 . समाधिमरण धारण करने का भाव किसके होता है ?

उत्तर . जिस जीव के नरक तिर्यन्च एवं मनुष्य आयु का बन्ध नहीं हुआ ऐसे पुण्यवान् जीव के समाधिमरण करने का भाव उत्पन्न होता है।

प्रश्न 14 . समाधि धारण करने वाला कब कर्मों से रहित होता है ?

उत्तर . समाधि धारण करने वाला जीव अधिक से अधिक 7 . 8 भव एवं कम से कम 2-3 भवों में कर्मों से रहित होता है।

प्रश्न 15 . मसाधिमरण करने वाले की पूजा कौन करता है ?

उत्तर . समाधिमरण धारण करने वाले की पूजा, अर्चना, वन्दना सभी देवी–देवता करते हैं।

संप्रत्यस्ति न केवली किल किलौ त्रैलोक्य चूड़ामणि।
तद्वाचः परमासतेऽत्र भरतक्षेत्रे जगदंद्योतिकाः।।
सद्रत्नत्रयधारिणो यति वरास्तासां स्यालंबनं।
तत्पूजा जिनवाचि पूजनमतः साक्षाज्जिनः पूजितः।।

अर्थ– भगवान नहीं है फिर भी लोक को प्रकाशित करने वाले अनके वचन तो यहाँ विद्यमान हैं और वचनो का आलम्बन लेने वाले रत्नत्रयधारी श्रेष्ठ यति गण भी मौजूद हैं इसलिए उन मुनियों की पूजा जिन वचनों की पूजा है और जिन वचन की पूजा जिन वचनो की पूजा है जिन वचन की पूजा से साक्षात् जिनदेव की पूजा की गई है ऐसा समझना चाहिए।

सत्संगति से दुष्टों में भी साधुता आ जाती है पर दुष्टों की संगति से साधु में दुष्टता नहीं आती मिट्टी ही फूलों की सुगन्ध धारण करती है पर फूल कभी भी मिट्टी की गन्ध को धारण नहीं करते है।

वैय्यावृति करण-भावना

कर्म उदय से व्याधि उपजि, तन मन से सेवा करना।
पत्थ्य अपत्थय विचार करके, औषधि वैय्यावृत्त करना।।
दश विध मुनियों के चरणों में, जा सर्व रोग को दूर करो।
वैय्यावृत्ति उनकी करके, निरोगता को शीघ्र वरो।।100।।

अर्थ

कर्म के उदय से किसी साधक के शरीर में व्याधि उत्पन्न हो जाये तो पत्थ्य–अपत्थ्य का विचार करके औषधि आदि के माध्यम से तन–मन से सेवा मे वैय्यावृत्ति करनी चाहिए जो जीव दस प्रकार के मुनियों के चरणों में जाकर उनकी वैय्यावृत्ति आदि करके रोग को दूर करते हैं। वे सदैव निरोग रहते हैं।

प्रश्न 1 . वैय्यावृत्ति करण भावना किसे कहते हैं ?
उत्तर रोगी, बाल, वृद्ध आदि मनुष्यों की तन–मन से औषधि आदि से सेवा करना "**वैय्यावृत्ति करण भावना**" है।

प्रश्न 2 . वैय्यावृत्ति किसकी करनी चाहिये ?
उत्तर . कर्म के उदय से जिनके शरीर में व्याधि उत्पन्न हो जाती है उनकी विशेष रूप से वैय्यावृत्ति करनी चाहिए।

प्रश्न 3 . वैय्यावृत्ति कैसे करनी चाहिए ?
उत्तर . रोगी शरीर की प्रकृति को देखकर पत्थ्य–अपत्थ्य का विचार करके ओषधि आदि देकर वैय्यावृत्ति करनी चाहिए।

प्रश्न 4 . मुनि कितने प्रकार के होते हैं ?
उत्तर . मुनि **दस** प्रकार के होते हैं –
1. आचार्य 2. उपाध्याय 3. तपस्वी 4. शैक्ष 5. ग्लान
6. गण 7. कुल 8. संघ 9. साधु 10. मनोज्ञ

प्रश्न 5 . आचार्य किसे कहते हैं ?
उत्तर . पंचाचार पालने में तत्पर शास्त्रों के ज्ञाता, प्रायश्चित देने में कुशल संघ के नायक छत्तीस मूल गुण के धारी को "**आचार्य**" कहते हैं।

प्रश्न 6 . उपाध्याय किसे कहते हैं ?
उत्तर . जिन वीतरागी गुरू के समीप आत्म कल्याणार्थी, संवेगी जीव अध्ययन करते हैं ऐसे पच्चीस मूल गुण धारी मुनि को "**उपाध्याय**" कहते हैं।

प्रश्न 7 . तपस्वी किसे कहते हैं ?

उत्तर . महान व्रत उपवास ध्यान करने वाले मुनि को "**तपस्वी**" कहते हैं।

प्रश्न 8 . शैक्ष किसे कहते हैं ?

उत्तर . सिद्धान्त शास्त्र अध्ययनरत मुनिराज को "**शैक्ष**" कहते हैं।

प्रश्न 9 . ग्लान किसे कहते हैं ?

उत्तर . रोग से पीड़ित मुनिराज को "**ग्लान**" कहते हैं।

प्रश्न 10 . गण किसे कहते हैं ?

उत्तर . ज्ञानवृद्ध, अनुभव वृद्ध एवं वयोवृद्ध मुनिराज के अनुसार चलने वाले मुनिराज को "**गुण**" कहते हैं।

प्रश्न 11 . कुल किसे कहते हैं ?

उत्तर . दीक्षा देने वाले आचार्य एवं उनके शिष्य परम्परा को "**कुल**" कहते हैं।

प्रश्न 12 . संघ किसे कहते हैं ?

उत्तर . ऋषि, मुनि, यति, अनगार या मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका के समूह को "**सघ**" कहते है।

प्रश्न 13 . साधु किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो निज शुद्ध आत्मा की साधना में तल्लीन है उन्हे "**साधु**" कहते हैं।

प्रश्न 14 . मनोज्ञ किसे कहते हैं ?

उत्तर . लोक में जिनकी प्रशंसा बढ रही है अथवा अच्छे वक्ता, साधु को "**मनोज्ञ**" कहते है।

प्रश्न 15 . दस प्रकार के मुनियों की वैय्यावृत्ति कैसे करनी चाहिये ?

उत्तर . दस प्रकार के मुनियों की आज्ञा मानकर आवश्यक उपकरण आदि दान कर उनके विचारो की प्रभावना कर तन–मन–धन से वैय्यावृत्ति करनी चाहिए।

प्रश्न 16 . मुनियों की वैय्यावृत्ति करने से किसकी प्राप्ति होती है ?

उत्तर . मुनियों की वैय्यावृत्ति करने से उत्कृष्ट वज्र–वृषभ–नारांच–संहनन की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 17 . संसार में निरोग कौन रहता है ?

उत्तर . जो जीव मुनियों की सेवा करता है वह सदैव निरोग रहता है।

अरहन्त भक्ति-भावना

101

ओम ध्वनि जिनकी खि़रती है, केवल ज्ञान से पूर्ण हैं।
दोष अठारह रहित हुये, और किये कर्म को चूर्ण हैं।।
आठ प्रतिहार्यों से शोभित अनन्त चतुष्य धारी हैं।
ऐसे अरहन्त की पूजा कर, सुख मिलता अति भारी हैं।।101।।

अर्थ

जिनकी ओम रूपी दिव्य ध्वनि खिरती है, जो केवल ज्ञान से पूर्ण है जो अठारह दोषो से रहित है, चार कर्मो को नाश कर दिया है जो आठ प्रतिहार्यो से सुशोभित है। अनन्त चतुष्ट्य के धारी है। ऐसे अरहन्त भगवान की सदैव पूजा भक्ति करनी चाहिए इससे सुख की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 1 . अरहन्त भक्ति भावना किसे कहते हैं ?
उत्तर आठ प्रतिहार्य युक्त, अनन्त, चतुष्ट्य धारी केवल ज्ञानी परमात्मा के गुणों में अनुराग करना "**अरहन्त भक्ति**" है।

प्रश्न 2 . भक्ति किसे कहते हैं ?
उत्तर . पूज्य के गुणों के प्रति विशेष अनुराग को "**भक्ति**" कहते है।

प्रश्न 3 . अरहंत परमात्मा की कौन सी ध्वनि खिरती हैं ?
उत्तर . अरहंत परमात्मा को ओम रूप "**दिव्य ध्वनि**" खिरती है।

प्रश्न 4 . अरहंत परमात्मा किससे परिपूर्ण हैं ?
उत्तर अरहंत परमात्मा "**केवल ज्ञान**" से परिपूर्ण हैं।

प्रश्न 5 . अरहंत परमात्मा किससे रहित हैं ?
उत्तर . अरहन्त परमात्मा 18 दोषों से तथा ज्ञानावर्णी, दर्शनावर्णी मोहनीय एवं अन्तराय कर्म से रहित हैं।

प्रश्न 6 . अरहंत परमात्मा किससे सुशोभित हैं ?
उत्तर . अरहंत परमात्मा 8 प्रतिहार्यो से सुशोभित हैं।

प्रश्न 7 . प्रतिहार्य किसे कहते हैं ?
उत्तर . विशेष महिमाकारी चिन्ह को "**प्रतिहार्य**" कहते हैं।

प्रश्न 8 . प्रतिहार्य कितने होते हैं ?

उत्तर . प्रतिहार्य **आठ** होते हैं –

1. अशोक वृक्ष 2. सिंहासन 3. चँवर 4. छात्र
5. दुन्दुभि 6. पुष्प वृष्टि 7. भामण्डल 8. दिव्य ध्वनि

प्रश्न 9 . अशोक वृक्ष किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिस वृक्ष के समीप जाने से समस्त शोक समाप्त हो जाते हैं, उसे "**अशोक वृक्ष**" कहते हैं।

प्रश्न 10 . सिंहासन किसे कहते हैं ?

उत्तर . अरहत भगवान जिसमें विराजमान होते है, ऐसे मणिमय आसन को "**सिंहासन**" कहते हैं।

प्रश्न 11 . चँवर किसे कहते हैं ?

उत्तर . अरहंत भगवान के दोनों ओर पंखे हिलाये जाते है उसे "चँवर" कहते हैं। ये चौसठ (64) चौंसठ ऋिद्धि के प्रतीक होते हैं।

प्रश्न 12 . छत्र किसे कहते हैं ?

उत्तर . अरहंत भगवान के मस्तक के ऊपर लगने वाले वस्तु–विशेष को "**छात्र**" कहते है। ये तीन होते हैं जो तीन लोक के सम्राट का प्रतीक है।

प्रश्न 13 . दुन्दुभि किसे कहते हैं ?

उत्तर . देवताओं द्वारा निर्मित दिव्य ध्वनि को "**दुन्दुभि**" कहते हैं। देवताओ द्वारा बजाये जाने वाले वाद्य विशेष को दुन्दुभि कहते हैं।

प्रश्न 14 . पुष्प वृष्टि किसे कहते हैं ?

उत्तर . आकाश से दिव्य पुष्पों की वर्षा को "**पुष्प वृष्टि**" कहते है।

प्रश्न 15 . भामण्डल किसे कहते हैं ?

उत्तर . अरहन्त भगवान के पीछे दर्पण के समान स्वच्छ मण्डल को "**भामण्डल**" कहते हैं। (यह जीव के तीन अतीत, तीन भविष्य एवं एक वर्तमान इस प्रकार सात भवों का ज्ञान कराता है।

प्रश्न 16 . दिव्य ध्वनि किसे कहते हैं ?

उत्तर . अरहन्त भगवान के देह से 18 महाभाषा एवं सात सौ लघुभाषा में निकलने वाली ओम ध्वनि को "दिव्य ध्वनि" कहते है।

प्रश्न 17 . अनन्त चतुष्ट्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . अनन्त दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त सुख, अनन्त वीर्य को "**अनन्त चतुष्ट्य**" कहते हैं।

प्रश्न 18 . अरहंत भगवान की पूजा करने से किस सुख की प्राप्ति होती है ?

उत्तर . अरहंत भगवान की पूजा करने से सांसारिक एवं परिमार्थिक सुख की प्राप्ति होती है।

जैनेन्द्रं यो मतं लब्ध्वा नियमे तस्य तिष्ठति।
अशेषं किल्विषं दग्ध्वा सुस्थानं सोऽधिगच्छति।।

अर्थ– जो जैन मत को प्राप्त कर उसके नियम मे स्थित रहता है वह समस्त पाप को जलाकर उत्तम स्थान को प्राप्त होता है।

अरहन्त भगवान छः कर्म की 63 प्रकृतियों को समाप्त कर चुके है जिसमे ज्ञानावरणी की 5, दर्शनावरणी की 9, मोहनीय की 28, अन्तराय की 5, आयु कर्म की तीन, मनुष्यायु छोडकर और नाम कर्म की 13 प्रकृति नरकगति, नरक गत्यानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चार इन्द्रिय जाति, स्थावर आतप, उद्योत, सूक्ष्म, साधारण, तिर्यञ्च गति, तिर्यञ्च गत्यानुपूर्वी ये 63 प्रकृति है।

अमंत्रमंक्षरं नास्ति नास्ति मूल मनौषधम्।
अयोग्यः पुरूषो नास्ति योजकस्तत्र दुर्लभः।।

अर्थ– कोई भी अक्षर तंत्र रहित नहीं है, कोई वृक्ष का अवयव औषधि रहित नहीं है, कोई भी व्यक्ति योग्यता विहीन नहीं है इसकी योजना करके इसको लाभप्रद बनाने वाला ही दुर्लभ है।

आचार्य भक्ति-भावना

102

धर्मोपदेशक धर्म धुरन्धर, मेधावी आचार्य है।
छत्तीस गुणों का पालन करते, शिष्यानुग्रह कार्य है।।
तीर्थंकर के प्रतिनिधि हैं, करते पर उपकार हैं।
आचार्यो की भक्ति करके, पाते जीवन सार हैं।।102।।

अर्थ

जो धर्मोपदेशक हैं, धर्म धुरन्धर हैं, मेधावी अर्थात् प्रज्ञा सम्पन्न है, छत्तीस गुणो का पालन करते है, शिष्यो पर अनुग्रह करते है, तीर्थंकर के प्रतिनिधि है, पर जीवो पर उपकार करते है। वे आचार्य कहलाते है। जा आचार्यो की भक्ति करता है वह जीवन सार चारित्र एव मोक्ष को प्राप्त करता है।

प्रश्न 1 . आचार्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . छत्तीस मूल गुणों के धारक, शिष्यानुग्रह के कुशल, आचार्यो के गुणों में अनुराग रखना "**आचार्य भक्ति**" है।

प्रश्न 2 . छत्तीस मूल गुण कौन से हैं ?

उत्तर . 12 तप, 10 धर्म, 5 आचार, 6 आवश्यक, 3 गुप्ति।
12+10+4+6+3=36 मूल गुण हैं।

प्रश्न 3 . धर्मोपदेशक आचार्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . उत्तम सुख प्रदान कराने वाले मधुर वचन के उच्चारक आचार्य को "**धर्मोपदेशक आचार्य**" कहते हैं।

प्रश्न 4 . धर्म धुरन्धर आचार्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो जिन धर्म में स्वयं दृढ रहते हों या अन्यों को भी दृढ करते हों ऐसे आचार्य को "**धर्म धुरन्धर आचार्य**" कहते हैं।

प्रश्न 5 . मेधावी आचार्य किसे कहते हैं ?

उत्तर . प्रखर ज्ञान से सम्पन्न आचार्य को "मेधावी आचार्य" कहते हैं।

प्रश्न 6 . आचार्य परमेष्ठी क्या करते हैं ?

उत्तर . आचार्य परमेष्ठी शिष्यों को दीक्षा देकर अनुग्रह एव संसारी जीवों को कल्याणप्रद उपदेश देकर उपकार करते हैं।

प्रश्न 7 . आचार्य किसके प्रतिनिधि होते हैं ?

उत्तर . आचार्य तीर्थकर के प्रतिनिधि होते हैं।

प्रश्न 8 . जीवन का सार कौन प्राप्त करते हैं ?

उत्तर . जो आचार्यो की भक्ति करते हैं। वे जीवन का सार (मोक्ष) प्राप्त करते हैं।

भूपर्यङ्को मृदुभुजलतागेन्दुकः खं वितानं।
दीपश्चन्द्र स्वरतिवनितासंग लब्ध प्रमोदः।।
दिक्कन्याभिः पवनचमरेः वीज्यमानोऽनुकुलं।
भिक्षु शेते नृपइव सदा वीतरागो जितात्मा।।

अर्थ– पृथ्वि की जिनका पलग है, कोमल भुजलता ही जिसका सिराहना है, आकाश की चदेवा है, चन्द्रमा ही दीपक है, आत्म प्रीति रूपी स्त्री के संग से जिन्होंने हर्ष हो प्राप्त किया है और दिशा रूप कल्याऐं जिन्हें वायुरूप चमरों के द्वारा अनुकूल हवा कर रही है ऐसे जितेन्द्रिय वीतराग साधु राजा के समान सदा शयन करते हैं।

पाहन मारे बालका तरू दे फल ये अपार।
ऐसी संत गुणीश हैं जीव करे उद्धार।।

बहत्तार कला जीव की तामें दो सरदार।
एक जीव की जीविका एक जीव उद्धार।।

बहुश्रुत भक्ति-भावना

103

जिन आगम के ज्ञाता हैं, वे ज्ञान के ही पुञ्ज हैं।
विद्यादायक अध्ययन में रत, शॉति के निकुञ्ज हैं।।
ऐसे साधु उपाध्याय की, निशदिन जो भक्ति करते।
अतिशय केवल ज्ञान का पाकर, शिव सिद्धि मुक्ति वरते।।103।।

अर्थ

जो जिनागम के ज्ञाता है, ज्ञान के भण्डार है, विद्या देने वाले है। अध्ययन मे लीन रहते है, शाति के आलम हैं, ऐसे साधु उपाध्याय परमेष्ठी की निशदिन भक्ति जो करते है केवल ज्ञान के दश अतिशय पाकर शिव सिद्धि मोक्ष को प्राप्त करते है।

प्रश्न 1 . बहुश्रुत भक्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर . ज्ञान के भण्डार शाति के आलय, विद्या दाता उपाध्याय के गुणों मे अनुराग रखता "**बहुश्रुत भक्ति**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . उपाध्याय परमेष्ठी किसे कहते हैं ?

उत्तर . आगम के ज्ञाता, ज्ञान के भण्डार, विद्या देने में निपुण, शन्ति के आलय, द्वादशाग के ज्ञाता को "**उपाध्याय परमेष्ठी**" कहते हैं।

प्रश्न 3 . उपाध्याय के कितने मूल गुण होते हैं ?

उत्तर . उपाध्याय परमेष्ठी के पच्चीस मूल गुण होते हैं, 11 अंग, 14 पूर्व इसे ही द्वादशाँग कहते हैं।

प्रश्न 4 . द्वादशांग कौन-कौन से हैं ?

उत्तर . 1. आचाराङ्ग 2. सूत्रकृताङ्ग 3. स्थानाङ्ग
4. समवायाङ्ग 5. व्याख्याप्रज्ञप्त्याङ्ग 6. ज्ञातृधर्मकथाङ्ग
7. उपासकाध्ययनाङ्ग 8. अन्तःकृद्दशाङ्ग 9. अनुत्तरोपपादिकदशङ्ग
10.प्रश्नव्याकरणाङ्ग 11. विपाकसुत्राङ्ग 12. दृष्टिवादाङ्ग
ये द्वादशाँग हैं।

प्रश्न 5 . आचाराङ्ग में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?

उत्तर . आचाराङ्ग में आचरण रूप पॉच समिति तीन गुप्ति आदि का वर्णन है इस अंग में 8 हजार पद हैं।

प्रश्न 6 . एक पद में कितने अक्षर होते हैं ?

उत्तर . एक पद में 163, 48, 36, 888 अक्षर होते हैं।
(1 अरब, 63 करोड, 48 लाख, 36 हजार, 8 सौ, 88)

प्रश्न 7 . सूत्रकृताङ्ग में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?

उत्तर . सूत्रकृताङ्ग में ज्ञान प्राप्ति के लिये ज्ञान की विनय और अध्ययन के कारण व्यवहार धर्म क्रिया व स्वसमय परसमय का वर्णन है। इस अंग में 36 हजार पद हैं।

प्रश्न 8 . स्थानाङ्ग में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?

उत्तर . स्थानाङ्ग में सभी द्रव्यों के एक से लेकर अनेक स्थानों तक का वर्णन है।
जैसे - जीव एक है, जीव दो हैं, संसारी और मुक्त, जीव तीन है, कर्म जीव, जीवन मुक्त जीव, संसारी जीव। इस अंग की पद सख्या 42 हजार है।

प्रश्न 9 . समवायाङ्ग में किसका वर्णन है एवं कितने भेद हैं ?

उत्तर . समवायाङ्ग में द्रव्य क्षेत्र काल भाव की अपेक्षा से द्रव्यों में जो परस्पर समानता हो सकती है। उसका वर्णन है। उसका वर्णन है। **जैसे** - धर्म, अधर्म लोकाकाश और एक जीव के प्रवेश समान है। यह द्रव्य की अपेक्षा समान है। जम्बूद्वीप, अप्रतिष्ठान नरक, नंदीश्वर द्वीप सर्वार्थ सिद्धि विमान और सिद्धालय का समान क्षेत्र है। यह क्षेत्र की अपेक्षा समान है। उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी ये दोनों 10 कोडा–कोडी सागर प्रमाण होने से काल की अपेक्षा समान है। क्षायिक ज्ञान और क्षायिक दर्शन दोनों भावों की अपेक्षा समान है। इस अंग की पद संख्या 1 लाख 64 हजार है।

प्रश्न 10 . व्याख्या प्रज्ञस्याङ्ग में किसका वर्णन है और कितने पद हैं ?

उत्तर . व्याख्या प्रज्ञस्याङ्ग में गणधर देव द्वारा 60 हजार प्रश्न पूछे गये थे। उनके उत्तर हैं।
जैसे - जीव है या नहीं ? इस अंग की पद संख्या 2 लाख 28 हजार है।

प्रश्न 11 . ज्ञातृकथांग में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?

उत्तर . ज्ञातृकथांग में तीर्थंकर गणधरों की कथाओं का दिव्य ध्वनि का समय एवं अन्य महापुरूषों की कथाओं का वर्णन है। इस अंग की पद संख्या 5 लाख 56 हजार है।

प्रश्न 12 . उपासकाध्ययनांग में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?

उत्तर उपासकाध्ययनांग में श्रावकों के समस्त आचरण प्रतिमा क्रिया अनुष्ठान आदि का वर्णन है। इस अंग की पद संख्या 11 लाख 70 हजार है।

प्रश्न 13 . अन्तकृदशांग में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?

उत्तर . प्रत्येक तीर्थकरों के तीर्थ में दस-दस मुनीश्वर ऐसे होते हैं जो भयंकर उपसर्गो को सहन कर समस्त कर्मो का नाश कर मोक्ष को जाते हैं। उनका वर्णन इस अंग में है। इस अंग की पद संख्या 23 लाख 28 हजार है।

जैसे – भगवान महावीर के समय में नमि, मतंग, सोमिल, रामपुत्र, सुदर्शन यमलीक-वलीक निष्कम्बल पाल और अम्बष्टपुत्र ये दस अन्तकृत केवली हुए।

प्रश्न 14 . अनुत्तरोपपादिक दशांग में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?

उत्तर . प्रत्येक तीर्थकरो के तीर्थ में घोर उपसर्ग सहन कर समाधि मरण से अपने प्राणो का त्याग कर विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित और सर्वार्थ सिद्धि इस अनुत्तर विमानों में उत्पन्न होते है उनका वर्णन है इस अंग की पद संख्या 92 लाख 44 हजार है। जैसे – महावीर कि समय ऋषिदास वान्य सुनक्षत्र कार्तिक नन्दनन्दन शीलभद्र अभय वारिषेण और चिलात पुत्र ये इस मुनि हुए।

प्रश्न 15 . प्रश्नव्याकरणांग में किसका वर्णन है एवं इसमें कितने पद हैं ?

उत्तर युक्ति और नयो के द्वारा अनेक आक्षेप निक्षेप रूप प्रश्नो का उत्तर दिया गया है। तीन काल सम्बन्धी धनधान्यादि लाभ, अलाभ, सुख, दुःख, जय, पराजय, जीवन, मरण आदि का वर्णन है इस अंग की पद संख्या 93 लाख 16 हजार है।

प्रश्न 16 . विपाक सूत्रांग में किसका वर्णन है एवं इसमें कितने पद हैं ?

उत्तर . विपाक सूत्र में द्रव्य क्षेत्र काल भाव के अनुसार शुभ अशुभ कर्मो के उदय व उनके फल का वर्णन है इस अंग की पद संख्या 1 करोड़ 84 लाख है।

प्रश्न 17 . समस्त ग्यारह अंगों की कुल पद संख्या कितनी है ?

उत्तर . समस्त ग्यारह अंगों की कुल पद संख्या चार करोड पन्द्रह लाख दो हजार है।

प्रश्न 18 . दृष्टि वादांग में किसका वर्णन है एवं इसमें कितने पद हैं ?

उत्तर . दृष्टिवादांग में 363 मिथ्या मतों का वर्णन और निराकरण है तथा लोक मंत्र कला कथा आदि का भी वर्णन है इस अंग की पद संख्या 108 करोड़ 68 लाख 56 हजार 5 पद है।

प्रश्न 19 . 363 मिथ्या मत कौन से हैं ?

उत्तर . क्रियावादि के 180ए अक्रियावादि के 84ए अज्ञानवादि के 67 और वैनिनियक के 32 इस प्रकार 363 मिथ्या मत हैं।

प्रश्न 20 . दृष्टिवादांग कि कितने भेद हैं ?

उत्तर . दृष्टिवादॉग के **पाँच** भेद है –

1. परिकर्म 2. सूत्र 3. प्रथमानुयोग
4. पूर्वगत 5. चूलिका

प्रश्न 21 . परिकर्म दृष्टिवादांग किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिसमे गणित की व्याख्या कर उसका पूर्ण ज्ञान विवेचन किया गया है उसे "परिकर्म दृष्टिवादांग" कहते हैं।

प्रश्न 22 . परिकर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर . परिकर्म के **पाँच** भेद हैं –

1. चन्द्र प्रज्ञप्ति 2. सूर्य प्रज्ञप्ति 3. जम्बूद्वीप प्रज्ञाप्ति
4. द्वीप सागर प्रज्ञाप्ति 5. व्याख्या प्रज्ञप्ति

प्रश्न 23 . चन्द्र प्रज्ञाप्ति में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?

उत्तर . चन्द्र प्रज्ञाप्ति मे चन्द्रमा की आयु, गति, परिवार विमान आदि का वर्णन है इसकी पद संख्या 36 लाख 5 हजार है।

प्रश्न 24 . सूर्य प्रज्ञप्ति में किसका वर्णन है उवं कितने पद हैं ?

उत्तर . जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति में सूर्य की आयु, गति, परिवार विमान आदि का वर्णन है। इसकी पद संख्या 5 लाख 3 हजार है।

प्रश्न 25 . जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं 0?

उत्तर . जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति मे जम्बूद्वीप के सात क्षेत्र कुलांचल, पर्वत, नदियों अकृत्रिम चैत्यालय व्यन्तरों के आवास का वर्णन है इसकी पद संख्या 3 लाख 25 हजार है।

प्रश्न 26 . द्वीप सागर प्रज्ञाप्ति में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?

उत्तर . द्वीप सागर प्रज्ञाप्ति में असंख्यात द्वीप सागर क्षेत्र के विस्तार रचना आदि का वर्णन है इसकी पद संख्या 52 लाख 36 हजार है।

प्रश्न 27 . व्याख्या प्रज्ञप्ति में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?

उत्तर . व्याख्या प्रज्ञप्ति मे रूपी–अरूपी द्रव्य जीव अजीव द्रव्य आदि अनेक पदार्थो का वर्णन है इसकी पद सख्या 84 लाख 36 हजार है।

प्रश्न 28 . परिकर्म की कुल पद संख्या कितनी हैं ?

उत्तर . परिकर्म की कुल पद संख्या 1 करोड़ 81 लाख 5 हजार है।

प्रश्न 29 . सूत्र दृष्टिवादांग में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?

उत्तर . सूत्र दृष्टिवादाग में जीव के कर्ता, भोक्ता, शरीर, प्रमाण, संसारी पना, उपयोग मय पाना आदि का यथार्य निरूपण किया गया है और समस्त पूर्ण पक्षों का निराकरण है। न्यायशास्त्रों का जन्मदाता यह अंग है उसकी पर संख्या 88 लाख है।

प्रश्न 30 . प्रथमानुयोग दृष्टिवादांग किसे कहते हैं एवं कितने पद हैं ?

उत्तर . जिसमें तीर्थकर चक्रवर्ती बलभद्र नारायण प्रतिनारायण आदि 63 शालाका के पुरूषो का वर्णन है उस "**प्रथमानुयोग दृष्टिवादांग**" कहते है इसकी पद सख्या पॉच हजार है।

प्रश्न 31 . पूर्वगत दृष्टिवादांग किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिसमे उत्पाद आदि 14 पूर्वो का वर्णन है उसे "**पूर्वगत दृष्टिवादांग**" कहते है।

प्रश्न 32 . चौदह पूर्व कौन-कौन से हैं ?

उत्तर .

1. उत्पाद पूर्व
2. अग्रायणीय पूर्व
3. वीर्यानुप्रवाद
4. अस्ति नास्ति प्रवाद पूर्व
5. ज्ञान प्रवाद पूर्व
6. सत्यप्रवाद पूर्व
7. आत्म प्रवाद पूर्व
8. कर्म प्रवाद पूर्व
9. प्रत्याख्यान पूर्व
10. विद्यानुवाद पूर्व
11. कल्याणवाद पूर्व
12. प्राणानुवाद पूर्व
13. क्रियाविशाल पूर्व
14. लोक बिन्दुसार पूर्व।

प्रश्न 33 . उत्पाद पर्व में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?

उत्तर . उत्पाद पूर्व में समस्त द्रव्यो के उत्पाद व्यय ध्रोव्य का तथा उसके संयोगी धर्म का वर्णन है इसकी पद संख्या एक करोड है।

प्रश्न 34 . आग्रयणीय पूर्व में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?

उत्तर . आग्रयणीय पर्व में 5 अस्तिकाय, 6 द्रव्य, 7 तत्त्व, 700 सुनय, 700 दुर्नय का वर्णन है। इसकी पद संख्या 96 लाख है।

प्रश्न 35 . वीर्यानुवाद पूर्व में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?
उत्तर . वीर्यानुवाद पूर्व में आत्मा की, पदार्थ की, द्रव्य की, काल की तपस्या की शाक्ति का वर्णन है इसकी पद संख्या 70 लाख है।

प्रश्न 36 . आस्ति-नास्ति प्रवाद पूर्व में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?
उत्तर . आस्ति–नास्ति पूर्व में छः द्रव्यों का अस्तित्व और नास्तित्व रूप सात अंगों का वर्णन है। इसकी पद संख्या 60 लाख है।

प्रश्न 37 . ज्ञान प्रवाद पूर्व में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?
उत्तर . ज्ञान प्रवाद पूर्व में 5 सम्यक् ज्ञान 3 मिथ्या ज्ञान के स्वरूप भेद विषय फल आदि का वर्णन है इसकी पद संख्या एक कम एक करोड है।

प्रश्न 38 . सत्य प्रवाद पूर्व में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?
उत्तर . सत्य प्रवाद पूर्व में वचन गुप्ति वचनों के संस्कार शब्दोच्चारण के कण्ठ तालु आदि 8 स्थान का, 12 प्रकार की भाषा का, 10 प्रकार के सत्य वचन का, 2 इन्द्रिय से 5 इन्द्रिय से शुभ–अशुभ वचनों के प्रयोगो का वर्णन है। इसकी पद सख्या एक करोड छः है।

प्रश्न 39 . आत्म प्रवाद पूर्व में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?
उत्तर . कर्म प्रवाद पूर्व में कर्मो का बन्ध, उदय उदीरणा, उपशम और निर्जरा आदि का वर्णन है इसकी पद संख्या 1 करोड 80 लाख है।

प्रश्न 40 . कर्म प्रवाद पूर्व में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?
उत्तर . कर्म प्रवाद पूर्व में आत्मा के ज्ञान सुख कर्त्तव्य आदि विषयों का वर्णन है उसकी पद संख्या 1 करोड़ 80 लाख है।

प्रश्न 41 . प्रत्याख्यान पूर्व में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?
उत्तर . द्रव्य क्षेत्र काल भाव व सहनन के अनुसार त्याग उपवास व्रत समिति गुप्ति प्रतिक्रमण आदि का वर्णन है इसकी पद संख्या 84 लाख है।

प्रश्न 42 . विद्यानुवाद पूर्व में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?
उत्तर . विद्यानुवाद पूर्व में अगुष्ट प्रसेन आदि 700 लघु विद्या 500 महाविद्याओं का एवं उसके साधना विधि सामर्थ्य तंत्र–मंत्र एवं सिद्ध विद्याओं का वर्णन है इसकी पद संख्या 1 करोड़ 10 लाख है।

प्रश्न 43 . कल्याणवाद पूर्व में किसका वर्णन है एवं कितने भेद हैं ?

उत्तर . कल्याणवाद में तीर्थकरों के पंचकल्याणक 16 कारण भावना ग्रहण शकुन आदि का वर्णन है इसकी पद संख्या 26 करोड़ है।

प्रश्न 44 . प्राणानुवाद पूर्व में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?

उत्तर . प्राणानुवाद पूर्व में प्राण आयुर्वेद शास्त्र औषध के गुण अवगुण आदि का वर्णन है इसकी पद संख्या 13 करोड़ है।

प्रश्न 45 . क्रिया विशाल पूर्व में किसका वर्णन है एवं कितने भेद हैं ?

उत्तर . क्रिया विशाल पूर्व में संगीत काव्य अलकार आदि 72 कलाओं का, गर्भाधान आदि क्रियाओं का वर्णन है इसकी पद संख्या 9 करोड है।

प्रश्न 46 . लोक बिन्दुसार पूर्व में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?

उत्तर . लोक बिन्दुसार पूर्व में मोक्ष स्वरूप का उसके साधन उपाय ध्यान आदि का वर्णन है, इसकी पद संख्या 12 करोड 50 लाख है।

प्रश्न 47 . चूलिका में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?

उत्तर . चूलिका में जलगता, स्थलगता, मायागता, रूपगता और आकाशगता का वर्णन है इसकी पद सख्या 10 करोड, 49 लाख 46 हजार है।

प्रश्न 48 . जलगता चूलिका में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?

उत्तर . जलगता मे जल में गमन करने के लिये, अग्नि जल का स्तम्भन भक्षण प्रवेश और उसमे बैठने आदि के तत्र–मंत्र तपश्चरण का वर्णन है। इसकी पद संख्या 2 करोड़ 9 लाख 89 हजार 200 है।

प्रश्न 49 . स्थलगता चूलिका में किसका वर्णन है, एवं कितने पद हैं ?

उत्तर . स्थलगता मे पृथ्वी पर गमन, वास्तु विद्या, मकान आदि बनवाने की विद्या मेरूपर्वत, भूमि प्रवेश आदि के तंत्र–मंत्र का वर्णन है इसकी पद संख्या 2 करोड़ 9 लाख 89 हजार 200 है।

प्रश्न 50 . मायागता चूलिका में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?

उत्तर . मायागता में इन्द्रजाल, गुप्त वस्तु बताना, आदि माया संबंधी तंत्र–मत्र का वर्णन है। इसकी पद संख्या 2 करोड 9 लाख 89 हजार 200 है।

प्रश्न 51 . रूपगता चूलिका में क़िसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?

उत्तर . रूपगता चूलिका में सिंह, बैल, हाथी अनेक रूप धारण करने के तंत्र–मंत्र आदि का वर्णन है दसकी पद संख्या 2 करोड़ 9 लाख 81 हजार 200 है।

प्रश्न 52 . आकाशगता चूलिका में किसका वर्णन है एवं कितने पद हैं ?

उत्तर . आकाशगता चूलिका में आकाश में गमन के कारण भूत मंत्र–तंत्रो का वर्णन है इसकी पद संख्या 2 करोड़ 9 लाख 81 हजार 200 है।

प्रश्न 53 . पूर्ण श्रुत ज्ञान किसे कहते हैं ?

उत्तर अंग बाह्य अंग प्रविष्ट रूप द्वादशांग के ज्ञान को "पूर्ण श्रुत ज्ञान" कहते है यह मात्र दिगम्बर मुनियों को ही होता है।

प्रश्न 54 . क्या समस्त उपाध्याय परमेष्ठी श्रुत ज्ञानी होते हैं ?

उत्तर . नहीं, उपाध्याय परमेष्ठी तात्कालीन समस्त शास्त्रों के ज्ञाता होते है तथा 11 अंग 14 पूर्व के ज्ञाता होते हैं जो पूर्ण श्रुत ज्ञानी होते हैं वे "श्रुत केवली" कहलाते हैं।

प्रश्न 55 . केवली व श्रुत केवली में क्या अन्तर हैं ?

उत्तर . केवली का सभी प्रत्यक्ष होता है तथा श्रतु केवली का समस्त ज्ञान परोक्ष होता है।

प्रश्न 56 . केवल ज्ञान के दस अतिशय कौन से हैं ?

उत्तर . केवल ज्ञान के **दस** अतिशय हैं –

1. 100 योजन तक सुभिक्ष
2. आकाश गमन होना
3. चार मुख होना
4. दया का उद्‌भाव
5. उपसर्ग रहितता
6. कवालाहार का न होना
7. विद्या का स्वामी
8. नख केश न बढ़ना
9. पलक न झपकना
10. छाया रहित शरीर होना

प्रश्न 57 . बहुश्रुत की भक्ति करने से क्या होता हैं ?

उत्तर . बहुश्रुत (उपाध्याय परमेष्ठी) की भक्ति करने से जीव केवल ज्ञान के दस अतिशय पाकर पूर्ण ज्ञानी होता है और मोक्ष को प्राप्त होता है।

प्रवचन भक्ति-भावना

104

अरहंत भाषित ग्रन्थ अनुपम, गणधर द्वारा गुंफित है।
चारों अनुयोगों से पूरित, संशय रहित वह बंदित है।।
भावों से पढ़ना आचरता, भक्ति पूजन है करता।
जिन आगम प्रवचन भक्ति से, सद्बुद्धि बहुश्रुत पाता।।104।।

अर्थ

अरहत द्वारा कहा गया अनुपम ग्रन्थ गणधरो के द्वारा गुंफित (गुथा) किया गया है वह चार अनुयोगो के परिपूरित है, वह सशय रहित व वंदित है जो जीव इस ग्रन्थ की भक्तिपूर्वक पढ़ता है आचरण में उतारता है और पूजन करता है वह जिन आगम प्रवचन भक्ति के बल पर सद्बुद्धि को प्राप्त करता है।

प्रश्न 1 . प्रवचन भक्ति भावना किसे कहते हैं ?
उत्तर . श्रुत ज्ञान के गुणों में अनुराग रखने को "**प्रवचन भक्ति**" कहते हैं।

प्रश्न 2 . श्रुत ज्ञान का आगमन कहाँ से हुआ ?
उत्तर . श्रुत ज्ञान का आगमन अरहंत भगवान के दिव्य देह से हुआ है।

प्रश्न 3 . श्रुत ज्ञान को ग्रन्थों में कितने गुंफित किया है ?
उत्तर . श्रुत ज्ञान को ग्रन्थो में गणधरों ने तथा आचार्यो ने गुंफित किया है।

प्रश्न 4 . श्रुत ज्ञान किसे कहते हैं ?
उत्तर . श्रुत ज्ञान चार अनुयोगों से परिपूरित संशय रहित व वन्दित है।

प्रश्न 5 . प्रवचन किसे कहते हैं ?
उत्तर . प्राशुक वचन को "**प्रवचन**" कहते हैं।

प्रश्न 6 . प्राशुक किसे कहते हैं ?
उत्तर . आचरण व अनुभव में उतारकर दिये गये वचन को "**प्राशुक वचन**" कहते हैं।

प्रश्न 7 . प्रवचन देने के अधिकारी कौन हैं ?
उत्तर . प्रवचन देने के अधिकारी तीर्थंकर गणधर और मुनिराज हैं।

प्रश्न 8 . प्रवचन कितने प्रकार का होता है ?
उत्तर . प्रवचन **चार** प्रकार का होता है –

1. सार्वजनिक प्रवचन 2. विद्वत प्रवचन
3. सामाजिक प्रवचन 4. व्यक्तिगत प्रवचन

प्रश्न 9 . सार्वजनिक प्रवचन किसे कहते हैं ?

उत्तर . सभी भव्य जीवों का कल्याण हो ऐसे 3 मकार 5 उदम्बर फल त्याग व्यसन त्याग वीतराग श्रद्धान रूप जो उपदेश होते हैं उसे "**सार्वजनिक प्रवचन**" कहते हैं।

प्रश्न 10 . विद्वत प्रवचन किसे कहते हैं ?

उत्तर . विशेष तत्व पदार्थ नय निक्षेप आगम कर्म सिद्धान्त आदि शास्त्रीय विचार मन्थन रूप उपदेश को "**विद्वन प्रवचन**" कहते हैं।

प्रश्न 11 . सामाजिक प्रवचन किसे कहते हैं ?

उत्तर . धर्म विरूद्ध परम्परा वशात समाज में फैली विकृति को निकालने हेतु मृत्यु भोज दहेज प्रथा के विरूद्ध उपदेश को "**सामाजिक प्रवचन**" कहते हैं।

प्रश्न 12 . व्यक्तिगत प्रवचन किसे कहते हैं ?

उत्तर . शंका समाधान युक्त आपसी विचार विमर्श रूप उपदेश को "**व्यक्तिगत प्रवचन**" कहते हैं।

प्रश्न 13 . प्रवचन भक्ति से क्या लाभ हैं ?

उत्तर . प्रवचन भक्ति से जीव श्रुत ज्ञान में निपुण होता है।

प्रश्न 14 . प्रवचन भक्ति कैसी करनी चाहिए ?

उत्तर . प्रवचन भक्ति पढकर, आचरण में उतारकर, पूजन आदि करके करनी चाहिए।

धर्म श्रवण प्रतिदिन करे ना धारे हिय माही।
समझो चलनी जल भरे श्रद्धा उनके नाहीं।।

आवश्यक परिहाणी भावना

105

सब जीवों पर समता रखे, स्तुति पढ़े नित भक्ति से।
देव गुरू को नमन करें, और ध्यान करें निज शक्ति से।।
प्रतिक्रमण कर क्षमा माँग, और प्रत्याख्यान को अपनावें।
आवश्यक क्रिया सब पाले, समवशरण वैभव पावें।।105।।

अर्थ

सभी जीवो पर समता भाव रखना, भक्ति के साथ तीर्थकरों की स्तुति पढना, देव शास्त्र गुरू को नमन करना, अपनी शक्ति के अनुसार ध्यान करना, प्रतिक्रमण कर सभी जीवो से क्षमा मॉगना और प्रत्याख्यान को अपनाना अर्थात् षट् आवश्यक क्रियाओ का पालन करना आवश्यक परिहाणी है जो निरतिचार आवश्यक क्रियाओ का पालन करता है वह समवशरण का वैभव प्राप्त करता है।

प्रश्न 1 . आवश्यक परिहाणी भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर . षट् आवश्यक क्रिया का निरतिचार पालन करना "**आवश्यक परिहाणी भावना**" है।

प्रश्न 2 . आवश्यक क्रिया किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो आत्मा में रत्नत्रय का आवास कराते है उसे "आवश्यक" कहते हैं तथा अवश्य करने योग्य धार्मिक कार्य को "**आवश्यक क्रिया**" कहते हैं।

प्रश्न 3 . अवश्यक करने योग्य कार्य कितने हैं ?

उत्तर . अवश्य करने योग्य कार्य छः हैं।

प्रश्न 4 . आवश्यक छः कार्य कौन से हैं ?

उत्तर . मुनियों के समता, स्तुति, वन्दना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान, कायोत्सर्ग ये छः आवश्यक एवं गृहस्थों के देव पूजा, गुरू उपास्ति, स्वाध्याय, संयम तप, दान ये छः आवश्यक कार्य है।

प्रश्न 5 . षट् आवश्यक क्रिया पालन करने से क्या होता है ?

उत्तर . षट् आवश्यक क्रिया पालन करने से समवशरण की विभूति प्राप्त होती है।

प्रश्न 6 . समवशरण किसे कहते हैं ?

उत्तर . तीर्थकर केवली के लिए रचे गये विशेष सभा मण्डल को ''**समवशरण**'' कहते हैं।

प्रश्न 7 . समवशरण की रचना कौन करता है ?

उत्तर . समवशरण की रचना सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से ''**कुबेर**'' करते हैं।

प्रश्न 8 . समवशरण की रचना कहाँ होती है ?

उत्तर . समवशरण की रचना भव्य जीवों के पुण्योदय से तीर्थकर केवली जहॉ रूकते हैं उस पृथ्वी से 5000 धनुष ऊपरब होती है जिसमें पहुॅचने के लिये 20,000 सीढ़ियॉ होती है।

प्रश्न 9 . समवशरण पहुॅचने में कितना समय लगता है ?

उत्तर . समवशरण पहुँचने में मात्र अन्तर्मुहूर्त (48 मिनट से कम) समय लगता है।

प्रश्न 10 . समवशरण की रचना किस प्रकार की होती है ?

उत्तर . समवशरण की रचना कमलाकार होती है। वहॉ की भूमि इन्द्रनील मणी के वर्ण वाली होती है। इस भूमि के चारों दिशाओं में चार मान स्तम्भ होते हैं, मान स्तम्भ के आगे सरोवर होता है जिसकी कोट चॉदी की होती है। कोट के चारों ओर खाई और वन होता है। कोट के चारो दिशाओं में व्यन्तर जाति के देव सशास्त्र द्वारपाल की भाँति खड़े रहते हैं, चारों दिशाओं के द्वारों के भीतर 4 करोड़ 69 लाख 36 हजार से कुछ अधिक ध्वजायें होती हैं चाँदी के कोट समान स्वर्ण और स्फाटिक के दो कोट और होती हैं जिसमें कल्पवृक्ष होते हैं व मुनि देवताओं के बैठने योग्य विशेष सभा मण्डप होता है जहाँ भवनवासी व कल्पवासी देव पहरेदार की तरह खडे रहते हैं समवशरण मंलतागृह स्तूप आदि व श्री मण्डप आदि होते हैं तथा मध्य में गन्ध कुटी की रचना होती है गन्ध कुटी के सब ओर 12 सभाएँ होती हैं।

प्रश्न 11 . समवशरण के 12 सभाओं में कौन बैठते हैं ?

उत्तर . समवशरण के **बारह** सभाओं में क्रम से –

1. मुनि 2. कल्पवासी देवियाँ 3. आर्यिकायें
4. ज्योतिषी देवियाँ 5. व्यन्तर देवियाँ 6. भवनवासी देवियां
7. भवनवासी देव 8. व्यन्तर देव 9. ज्योतिष देव
10. कल्पवासी देव 11. मनुष्य 12. तिर्यञ्च बैठते हैं।

प्रश्न 12 . क्या बारह सभा में विराजित जीव सदैव भगवान के साथ रहते हैं ?

उत्तर . नहीं, जब तक समवशरण रहता है तब साथ रहते हैं। समवशरण विघटित होने के बाद कुछ जीव साथ रहते हैं और कुछ अपने स्थान में चले जाते हैं।

प्रश्न 13 . समवशरण में कौन नहीं जा सकता है ?

उत्तर . समवशरण में पापी के विरूद्ध कार्य करने वाले, पाखण्डी, विकलेन्द्रिय, भ्रान्त चित्त वाले, असंज्ञी नारकी अभव्य एव विविध प्रकार की विपरीतताओं से युक्त जीव नही जा सकते हैं।

प्रश्न 14 . समवशरण में भगवान की क्रिया देवापुनीत है या स्वाभाविक ?

उत्तर . समवशरण में भगवान की दिव्य ध्वनि आदि सभी क्रियायें स्वाभाविक होती हैं।

प्रश्न 15 . समवशरण किसका लगता है ?

उत्तर . समवशरण षट् आवश्यक क्रिया पालन कर तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध करने वाले जीवों के ही लगता है। अन्य केवली के मात्र गन्ध कुटी लगती है।

गुरूर्विधाता गुरूरेव दाता।
गुरूः स्वबन्धु र्गुणरत्न सिन्धुः।।
गुरूर्विनेता गुरूरेव तातो।
गुरूर्विमोक्षो हत कर्म पक्षः।।

अर्थ– गुरू ही विधाता है, गुरू ही दाता है, गुरू ही स्वकीय बन्धु है, गुरू ही गुणरूपी रत्नों के सागर हैं, गुरू की शिक्षक हैं, गुरू ही पिता हैं और कर्म समूह को नष्ट करने वाले गुरू ही मोक्ष हैं। निर्ग्रन्थ गुरूदेव को नमस्कार हो।

मार्ग प्रभावना-भावना

106

तीर्थ यात्रा करवाकर, या रचवाकर पूजन विधान।
चमत्कार या जप करके करें, प्रभावना जिन भगवान।।
जुलूस निकले गाँव शहर, और जगह-जगह दे जिन उपदेश।
जिन मारग प्रभावना करके, पले सच्चा स्व परिवेश।।106।।

अर्थ

तीर्थ यात्रा करवाकर, पूजन विधान आदि रचवाकर, चमत्कार जापनुष्ठान तप की वृद्धि करके, जुलूस आदिनिकालकर नगर–नगर चौराहे आदि में उपदेश देकर जिन धर्म की प्रभावना करनी चाहिए। प्रभावना करने से सच्चा परिवेश मुक्ति की प्राप्ति होती है।

प्रश्न 1 . मार्ग भावना किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिन धर्म का प्रभाव दिखाकर वीतराग धर्म की प्रभावना करना **''मार्ग प्रभावना''** है।

प्रश्न 2 . मार्ग प्रभावना कितने प्रकार से करनी चाहिए ?

उत्तर . मार्ग प्रभावना अनेक प्रकार से करनी चाहिए।

जैसे - तीर्थ यात्रा करवाकर, पूजन विधान करवाकर, चमत्कार दिखाकर, जप–तप करके, जुलूस आदि निकालकर, साधु–सन्तों के चौराहे नगर स्कूल आदि में धर्मोपदेश करवाकर, जिनवाणी छपवाकर धर्म की प्रभावना करनी चाहिए।

प्रश्न 3 . तीर्थयात्रा किसे कहते हैं ?

उत्तर . अहंकार को छोड़कर, गरीबों को तीर्थकरों के पंचकल्याणक स्थल, वीतरागता के चमत्कारिक स्थल अतिशय क्षेत्र मुनिराज जहाँ विराजमान हो उस स्थल का दर्शन करना **''तीर्थयात्रा''** है।

प्रश्न 4 . पूजन किसे कहते हैं ?

उत्तर . आराध्य की प्राप्ति हेतु वीतरागता की आराधना करना **''पूजन''** है।

प्रश्न 5 . विधान किसे कहते हैं ?

उत्तर . नगर मौहल्ला जिनालय सजाकर, महोत्सव पूर्वक इन्द्र ध्वज, सिद्ध चक्र, कल्पद्रुम आदि का पाठ करना **''विधान''** है।

प्रश्न 6 . चमत्कार किसे कहते हैं ?

उत्तर . मंत्र–तंत्र के माध्यम से अनहोनी घटना को प्रदर्शित करना या मनवांछित फल प्रदान करना "**चमत्कार**" है।

प्रश्न 7 . जप किसे कहते हैं ?

उत्तर . मौन या मुखर होकर आत्मशुद्धि या वातावरण शुद्धि हेतु मंत्र उच्चारण करना "**जाप**" है।

प्रश्न 8 . तप किसे कहते हैं ?

उत्तर . स्वयं की आत्मा को निखारने का सम्यक् पुरूषार्थ करना "**तप**" है।

प्रश्न 9 . उपदेश किसे कहते हैं ?

उत्तर . पर जीवों के कल्याणार्थ आचरण को जन्म देने वाले वचनों का उच्चारण करना "**उपदेश**" है।

प्रश्न 10 . जुलूस किसे कहते हैं ?

उत्तर . जिनेन्द्र भगवान का रथ निकालकर नगर परिक्रमा देना "**जुलूस**" है।

प्रश्न 11 . मार्ग प्रभावना करने से क्या होता है ?

उत्तर . मार्ग प्रभावना करने से सभी जीवों की धर्म के प्रति आस्था जागृत होती है, परिणामों में निर्मलता आती है और स्वयं का परिवेश अर्थात् वीतरागता की प्राप्ति होती है।

जाम ण छंडई गेहं ताप ण परिहरई इंतयं पावं।
पावं अपरिहरंतो हेओ पुण्णस्समा चयऊ।।

अर्थ– जब तक यह जीव घर नहीं छोड़ता तब तक उसका पाप दूर नहीं हो सकता इसलिए पाप का परिहार हुए बिना पुण्य करना नहीं छोड़ना चाहिए।

पूजा भक्ति करे नहीं पाप करे दिन रात।
दुर्गति का मारग चुना सुगति कीना घात।।

प्रवचन वात्सल्य-भावना

107

रखती जैसे धेनु अपने, पुत्र के प्रति प्रीति भाव।
त्यागी व्रती साधर्मी के प्रति, रखना प्यारे निश्छल भाव।।
रखते गर वात्सल्य भावहम बंधती तीर्थंकर प्रकति।
स्वयं तिरे पर को तारे ओर, मिट जाती सारी विकृति।।107।।

अर्थ

जिस प्रकार गाय अपने बछड़े के प्रति निःस्वार्थ प्रीति भाव रखती है उसी प्रकार त्यागी व्रती साधर्मी के प्रति निःस्वार्थ निश्छल भाव रखना वात्सल्य भाव रखने वाला जीव स्वयं पार होता है एवं अन्य जीवों को पार लगाता है संसार की विकृति समाप्त करता है और तीर्थंकर का बन्ध होता है।

प्रश्न 1 . प्रवचन वात्सल्य भावना किसे कहते हैं ?
उत्तर . त्यागी व्रती धर्मात्मा के प्रति गाय और बछड़े के समान निःस्वार्थ प्रीति भाव रखना "**प्रवचन वात्सल्य भावना**" है।

प्रश्न 2 . गाय की प्रीति कैसे होती है ?
उत्तर . गाय की प्रीति अपने बछडे से निःस्वार्थ होती है (क्योंकि गाय भविष्य के सहारे की, उपकार की आकांक्षा न करके अपने बछड़े के मल को चाट–चाट कर साफ करती है और बड़ा करती है।)

प्रश्न 3 . प्रीति भाव किसके प्रति रखना चाहिए ?
उत्तर . प्रीति भाव त्यागी व्रती व साधर्मी के प्रति रखना चाहिए।

प्रश्न 4 . त्यागी किसे कहते हैं ?
उत्तर . दिशायें ही जिनका वस्त्र हों, भूमि ही जिनकी शय्या हो ऐसे पिच्छी धारी निस्पृही साधक को "त्यागी" कहते हैं।

प्रश्न 5 . व्रती किसे कहते हैं ?
उत्तर . निःशल्यता को प्राप्त प्रतिमाधारी जीवों को "व्रती" कहते हैं।

प्रश्न 6 . साधर्मी किसे कहते हैं ?
उत्तर . वीतरागता के उपासक श्रावकों को "साधर्मी" कहते हैं।

प्रश्न 7 . वात्सल्य भाव धारण करने से क्या होता है ?

उत्तर . वात्सल्य भाव धारण करने से तीर्थंकर प्रकृति बांधती है।

प्रश्न 8 . तीर्थंकर प्रकृति किसे कहते हैं ?

उत्तर . समवशरण की विभूति देने वाली विशेष वर्गणा को "**तीर्थंकर प्रकृति**" कहते हैं।

प्रश्न 9 . तीर्थंकर किसे कहते हैं ?

उत्तर . जो स्वयं संसार से तिरते हैं एवं भव्यों को तारते हैं उसे "**तीर्थंकर**" कहते हैं।

प्रश्न 10 . विकृति किसे कहते हैं ?

उत्तर . संसार बढ़ाने वाले आत्मा में विकार उत्पन्न करने वाले पर पदार्थ को "**विकृति**" कहते हैं।

प्रश्न 11 . विकृति किससे समाप्त होती है ?

उत्तर . वात्सल्य भाव से विकृति समाप्त होती है।

अंतो णत्थि सुईणं कालो थोवो वयं च दुम्मेहा।
तण्णवरि सिक्खियव्वं जं जम्ममरणक्खयं कुणई।।

अर्थ– शास्त्रों का अन्त नहीं समय अल्प है और हम दुर्बुद्धि है इसलिए हमें वह सीख लेना चाहिए जो जन्म मरण के क्षय में कारण हो।

नर भव पाकर हे सखा नेक करो कुछ काम।
दान दया तप व्रत करो पावों चिर विश्राम।।

ध्यान नसैनी मोक्ष की संत चढ़े क्षणमाय।
जिन-जिन मन पर निरखियाँ जनम-जनम पछताय।।

स्थान परिचय

108

शुभ भावों को केसर लेकर, लिखा काव्य यह सुन्दर है।
प्रतापगढ़ के मध्य में देखो, एक जुना जिन मन्दिर है।।
आदि प्रभु प्रतिमा के सामने, लिखा शतक सिद्धान्त है।
पढ़कर जो छोड़े अपनावें मिटता उसका ध्वान्त है।।108।।

अर्थ

इस सिद्धान्त शतक ग्रन्थ को मैनें शुभ भावों को केसर लेकर प्रतापगढ़ के मध्य जुना जिन मन्दिर नामक जिनालय में श्री आदिनाथ प्रतिमा के समक्ष लिखा है। जो भव्य इस ग्रन्थ को पढ़कर व्यसन पाप मिथ्यात्वादि को छोड़ता है, रत्नत्रय धर्म भावना आदि को अपनाता है। वह जीव अपने कर्म कालिमा को समाप्त करता है।

प्रश्न 1 . सिद्धान्त शतक ग्रन्थ को किससे लिखा ?

उत्तर . सिद्धान्त शतक ग्रन्थ को शुभ भावों की केसर से लिखा।

प्रश्न 2 . सिद्धान्त शतक ग्रन्थ कहाँ लिखा गया ?

उत्तर . सिद्धान्त शतक ग्रन्थ चित्तौड़गढ़ जिले के प्रतापगढ़ नगर में लिखा गया।

प्रश्न 3 . प्रतापगढ़ नगर के किस जिनालय में लिख गया ?

उत्तर . प्रतापगढ़ के भव्य जिनालयों में यह ग्रन्थ जुना मन्दिर जिनालय में लिखा गया।

प्रश्न 4 . सिद्धान्त शतक ग्रन्थ जुना मन्दिर में किस प्रतिमा के समक्ष लिखा गया ?

उत्तर . जुना मन्दिर के भव्य जिनालय में 4 बड़ी 2 छोटी वेदिकाएँ हैं उनमें एक वेदि आदिनाथ भगवान की है जो सवा फुट ऊँची पीतल की प्रतिमा जमीन पर ही विराजमान है उस प्रतिमा के समक्ष यह ग्रन्थ लिखा गया।

प्रश्न 5 . सिद्धान्त शतक ग्रन्थ किस सन् में लिखा गया ?

उत्तर . सिद्धान्त शतक ग्रन्थ का श्लोक सन् 1990 के वर्षायोग में लिखा गया। और इसकी प्रश्नोत्तरी टीका भिण्ड इटावा शहर में दो वर्ष पश्चात् लिखा।

प्रश्न 6 . सिद्धान्त शतक ग्रन्थ पढ़कर क्या करना चाहिए ?

उत्तर . सिद्धान्त शतक ग्रन्थ को पढकर व्यसन राग–द्वेष मिथ्यात्व कषाय मूढ़ता गति भ्रमण निमित्तक दुष्प्रवृत्ति को छोड़ना चाहिए तथा देव–शास्त्र–गुरू धर्म भावना रत्नत्रय कर्त्तव्य आदि को धारण कर अपने आत्मा के कल्मष को मिटाना चाहिए।

प्रश्न 7 . सिद्धान्त शतक ग्रन्थ की रचना क्यों की ?

उत्तर . सिद्धान्त शतक ग्रन्थ की रचना परिणामों की शुद्धि ज्ञान का विकास एवं भव्य जीवों को धर्म शिक्षा हेतु तथा रत्नकरण्ड श्रावकाचार, द्रव्य संग्रह, तत्वार्थ सूत्र, छहढाला आदि ग्रन्थों को सार संक्षिप्त करण के भावों को प्रदर्शित करने हेतु की।

प्रश्न 8 . इस ग्रन्थ के लेखन में किनका सहारा रहा है ?

उत्तर . इस ग्रन्थ के लेखन में आदिनाथ की दिव्यता माँ जिनवाणी की सौम्यता व आचार्य गुरूवर पुष्पदंत सागर जी की मृदुता का सबसे बड़ा सहारा रहा है।